शामे करबला

लेखक
हज़रत अल्लामा मौलाना
मुहम्मद शफ़ीअ ओकाड़वी

रज़वी किताब घर
425, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-110006

بسم الله الرحمن الرحيم

और जो अल्लाह की राह में क़त्ल किए जाते हैं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वह ज़िन्दा हैं, लेकिन तुम समझ नहीं सकते। (अल-कुरआनुल-करीम)

शामे करबला

लेखक

हज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती

मुहम्मद शफ़ीअ ओकाड़वी

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

425, उर्दू मार्किट, मटिया महल,
जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Phone : 011 - 23264524

 ISBN 01-89201-23-1

नाम किताब : **शामे करबला**

लेखक : मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी

बएहतेमाम : हाफ़िज़ मोहम्मद कमरुद्दीन रज़वी

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6

हिन्दी अनुवादक : मंज़ूरुल हक़ जलाल निज़ामी

प्रूफ़-रीडिंग : अली अहमद

हिन्दी एडीशन : पहली बार 2010

प्रकाशक : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

तादाद : 1100

सफ़हात : 256

क़ीमत :

मिलने के पते :

रज़वी किताब घर
425, मटिया महल,
जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006
फ़ोनः नं० : 011-23264524

महाराष्ट्र में मिलने का पताः
रज़वी किताब घर
114, ग़ैबी नगर, भिवंडी,
ज़िला : थाणा (महाराष्ट्र)
फ़ोनः नं० 02522-220609

न्यू रज़वी किताब घर
वफ़ा कम्पलैक्स, ग़ैबी पीर रोड, भिवंडी (महाराष्ट्र)

विषय सूची

उनवानात	सफ़्हा	उनवानात	सफ़्हा
शहादत	5	आपकी तक़रीर	66
शहादत की क़िस्में	6	दर्से इबरत	70
शहीद का माना	6	तरमाह बिन अ़दी का मशवरा	72
आपको ज़हर दिया गया	7	सरज़मीने करबला	76
असबाबे शहादत	15	अ़मर बिन सअ़द	78
मुहम्मद बिन हनफ़ीया का मशवरा	19	दर्से इबरत	79
एक शुबहा	20	पानी बन्द करने का हुक्म	82
मदीना मुनव्वरह से रिहलत	21	एक रात की मोहलत	87
अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मुलाक़ात	22	रुफ़का से इमाम का ख़िताब	88
अह्ले कूफ़ा के ख़ुतूत और वफ़ूद	23	रुफ़का का जवाब	89
हज़रत मुस्लिम कूफ़ा में	26	दस मुहर्रम ६१ हि.	94
यज़ीद को इत्तिला	27	शिम्र की गुस्ताख़ी	95
इब्ने ज़्याद का कूफ़ा में आना	29	इतमामे हुज्जत	95
शरीक बिन आवर	31	दर्से इबरत	99
मुस्लिम की तलाश और जासूस...	32	हुर का आना	100
हानी की गिरफ़्तारी	33	हुर का ख़िताब	102
हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़्याद	44	आग़ाज़े जंग	103
हज़रत मुस्लिम की शहादत	46	अब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी	104
हानी की शहादत	46	करामत	105
फ़रज़न्दाने मुस्लिम	46	हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम	117
रवानगी इमाम आ़ली मक़ाम	55	पिसराने हज़रत अक़ील	118
हज़रत क़ैस की शहादत	63	फ़रज़न्दाने हज़रत अली मुर्तज़ा	119
अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मुलाक़ात	63	फ़रज़न्दाने हज़रत इमाम हसन	120
ज़ुहैर बिन क़ैस अल-बिजली	64	सैयदना क़ासिम बिन हसन	121
शहादते मुस्लिम की ख़बर	64	हज़रत मुहम्मद व औ़न	125

उनवानात	सफ़्हा
हज़रत अब्बास अ़लमदार	126
इतमामे हुज्जत	128
हज़रत सैयदना अ़ली अक्बर	131
मासूमे करबला हज़रत अ़ली असग़र	140
ताजदारे करबला सैयदना इमाम हुसैन	144
इतमामे हुज्जत	150
शहादत के बाद के वाक़ेआत	158
शामे करबला	168
कूफ़ा रवानगी	171
शोहदा की तदफ़ीन	171
सरे अनवर पुरनूर और सफ़ेद परिन्दे	172
सरे अनवर और इब्ने ज़्याद	172
इब्ने ज़्याद और असीराने करबला	174
मस्जिदे कूफ़ा में ऐलाने फ़त्ह और	176
इब्ने अ़फ़ीफ़ की शहादत	176
दरबारे यज़ीद	182
पहली रिवायत	182
दूसरी रिवायत	183
तीसरी रिवायत	184
चौथी रिवायत	185
पाँचवीं रिवायत	187
नतीजा	187
यज़ीद के घर मातम	191
यज़ीद का सुलूक	192
अह्ले बैत की मदीना मुनव्वरा	192
करबला से गुज़र	193
तादादे शुहदाए अह्ले बैत	198
तादाद असीराने करबला	199
यज़ीदी मक़्तूलीन की तादाद	201
मदफ़न सरे अनवर	201
करामत सरे अनवर	202
वाक़िया करबला के बाद यज़ीद	204
मक्का मुकर्रमा पर हमला	208
मुआविया असग़र	211
क़ारेईने किराम	211
क़ातेलीन का अंजाम	214
अ़मर बिन सअ़द	223
ख़ौली बिन यज़ीद	224
शिम्र ज़िल-जौशन	224
हकीम बिन तुफ़ैल अत्ताई	226
ज़ैद बिन रक़ाद	227
अ़मर बिन सबीह	228
मुख़्तार का दाव-ए-नुबुव्वत	231
फ़ज़ीलते आशूरा	233
आमाले आशूरा	234
ज़िक्रे शहादत पर आँसू बहाना	238
सब्र और जज़ा व फ़ज़ा	246
शीआ़ मज़्हब की मोतबर कुतुब से	248
ज़िक्रे शहादत के मुख़्तसर फ़वाइद	254

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शहादत

शहादत आख़िरी मंज़िल है इंसानी सआ़दत की
वह ख़ुश क़िस्मत हैं मिल जाए जिन्हें दौलत शहादत की
शहीद इस दारेफ़ानी में हमेशा ज़िन्दा रहते हैं
ज़मीं पर चाँद तारों की तरह ताबिन्दा रहते हैं
यह शहादत इक सबक़ है हक़ परस्ती के लिए
इक सुतूने रौशनी है बहर हस्ती के लिए

अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है :

"और जो इताअ़त करते हैं अल्लाह और रसूल की तो वह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इंआ़म फरमाया यानी अंबिया और सिद्दीक़ीन और शोहदा और सालेहीन और यह साथी क्या ही अच्छे हैं।"

(सूरः निसा–69)

इस आयत से दो बातें साबित हुई एक यह कि जो लोग अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतीअ़ व फरमां बरदार हैं उनको नबियों, सिद्दीक़ों, शहीदों और सालेहीन की रिफ़ाक़त व मईयत हासिल होगी। दूसरा यह कि नुबुव्वत, सिद्दीक़ियत, शहादत और सालेहीयत अल्लाह तआ़ला के इंआ़मात हैं।

हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते अक़्दस में हर वह इंआ़म और हर वह कमाल जो किसी भी मख़्लूक़ को अ़ता हुआ बदरजा अतम मौजूद था।

बल्कि जिस किसी को कोई इंआ़म व कमाल मिला वह आप ही की बदौलत मिला। तमात अंबिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा और औलिया में जिस क़द्र भी जमाल व कमाल है वह ज़िल्ल और अ़क्स है जमाल व कमाले मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम का।

क्योंकि आप असल काइनात हैं। आपकी ज़ात काइनात के हर हर फर्द के लिए तमाम फ़ुयूज़ व बरकात का ज़रिया और वसीला है। जिस तरह जड़ पूरे दरख़्त की ताज़गी और फ़लों के जमाल व कमाल का बाइस होती है इसी तरह आपकी ज़ात तमाम आलमीन के लिए हर क़िस्म के इंआमात व कमालात का बाइस है।

शहादत की क़िस्में :

शहादते जहरी और शहादते सिर्री यानी ऐलानिया और पोशीदा, शहादते जहरी यह है कि एक मुसलमान अल्लाह की राह में आला-ए-कलिमतुल्लाह के लिए अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मनों से लड़ता हुआ और तरह तरह की तक्लीफ़ें और मुसीबतें बर्दाश्त करता हुआ ऐलानिया जान दे दे या मज़्लूमाना तौर पर क़त्ल हो जाए और शहादते सिर्री यह है कि किसी के ज़हर देने से या ताऊन की वबा से या अचानक किसी हादसा का शिकार हो जाए मसलन कोई इमारत गिर जाए और यह नीचे आकर दब जाए या कहीं आग लग जाए और यह जल जाए या तैरता और नहाता हुआ या सैलाब की वजह से डूब जाए या तलबे इल्मे दीन या सफरे हज, या पेट और सिल और दिक़ के मर्ज़ में इंतिक़ाल कर जाए और औरत हालते निफ़ास में मर जाए।

शहीद का माना :

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं।

शहीद वह शख़्स है जो अल्लाह तआला के दीन की सेहत व सदाक़त की कभी तो दलील व बुरहान और कुव्वते ब्यान से और कभी शम्शीर व सिनान से शहादत दे और अल्लाह की राह में क़त्ल होने वाले को भी इसी मुनासिबत से शहीद कहा जाता है कि वह अपनी जान कुरबान करके अल्लाह के दीन की हक़्क़ानियत की शहादत देता है।

इस माना के मुताबिक़ तस्लीम करना पड़ेगा कि शहादत का इंआम व कमाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते मुबारक में बदरजा अतम मौजूद था। इसलिए कि अल्लाह तआला के दीन की हक़्क़ानियत की जिस तरह आपने बेशुमार दलाइल व बराहीन और रौशन ब्यानात व मोजज़ात के साथ शहादत दी है और किसी ने नहीं दी। कौन नहीं जानता कि उसी दिन हक़ की सदाक़त की शहादत के सिलसिले में ही आपने मक्का मुकर्रमा में मुसलसल तेरह साल तक नाक़ाबिले बर्दाश्त अज़ीयतें बर्दाश्त कीं। गलियों, बाज़ारों और ताइफ़ के मैदान में पत्थर खाए और निहायत नाज़ेबा क़िस्म के कलिमात सुने। चुनांचे फरमाया जिस क़द्र मैं अल्लाह तआला की राह में सताया गया हूँ कोई पैग़म्बर नहीं सताया गया। यहाँ तक कि वतन और घर बार छोड़ दिया। मदीना मुनव्वरा में आ कर बहुत सी जंगों में बनफ़्से नफ़ीस शिर्कत फरमा कर शम्शीर व सिनान के

साथ भी गवाही दी। दन्दाने मुबारक शहीद हुआ ज़ख़्मी भी हुए। फ़र्क़ गया सिर्फ़ रूहे अक़्दस के निकलने का और वह मैदाने जंग में इसलिए नह निकली कि अल्लाह तआला ने आप से यह वादा फ़रमाया था **वल्लाहु यासिमुका मिनन्नास** और अल्लाह आपकी जान को लोगों से बचाएगा। तो अगर किसी जंग में आप किसी काफ़िर के हाथ से क़त्ल हो जाते और आपकी रूहे अनवर परवाज़ कर जाती तो काफ़िरों को अल्लाह तआला के वादा और कुरआन की तक्ज़ीब का मौक़ा मिल जाता कि उस नबी के खुदा ने तो लोगों से उनकी जान बचाने का वादा किया था तो फिर उसने क्यों नहीं बचाई। हमने तो फ़लाँ जंग में उनका काम तमाम कर दिया। साबित हुआ कि शहादते जहरी की हक़ीक़त आपकी ज़ात पर बदरज़ा अतम पूरी हुई।

आपको ज़हर दिया गया :

ग़ज़्व-ए-ख़ैबर में एक यहूदिया औरत ज़ैनब बिन्त अल-हारिस ने बकरी का भुना हुआ ज़हर आलूद गोश्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हदियतन भेजा। आपने उसमें से कुछ खा लिया तो उस भुने हुए गोश्त ने आपको ख़बर दी कि मैं ज़हर आलूद हूँ। आपने उसी वक़्त हाथ उठा लिया। आपके साथ आपके सहाबी हज़रत बशर बिन बरा ने भी खाया था जो उसी वक़्त उसके असर से शहीद हो गए।

आपने उस यहूदिया को बुला कर पूछा कि तुझे इस हरकत पर किस चीज़ ने उक्साया? उसने कहा।

मैंने चाहा कि मैं (बतौर इम्तिहान) मालूम करूं कि (आप नबी हैं या बादशाह) अगर आप नबी होंगे तो आपको नुक़्सान नहीं पहुँचाएगा और अगर आप बादशाह होंगे तो मैं लोगों को आप से राहत व आराम दिला दूँगी। (तबक़ात इब्ने सअद स० 172/1)

चुनांचे वह हज़रत बशर की शहादत के केसास (बदल) में आपके हुक्म से क़त्ल कर दी गई।

अल्लामा ज़रक़ानी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं :

"और बेशक यह बात साबित हो गई है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहादत की वफ़ात पाई इसलिए कि आपने ख़ैबर के दिन ऐसी ज़हर मिलाई हुई बकरी के गोश्त में से खाया जिसका ज़हर ऐसा कातिल था कि उसी वक़्त मौत वाक़े हो जाए।

चुनांचे उस ज़हर के असर से बशर बिन बरा बिन मारूर उसी वक़्त

फौत हो गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बाक़ी रहना मोजज़ा हो गया वह ज़हर आपको अक्सर तक्लीफ़ देता रहता था यहाँ तक कि उसी के असर से आप की वफ़ात हुई।"

(ज़रक़ानी अलल-मवाहिब स० 313/8)

अल्लामा इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं।

"इमाम बुख़ारी और इबाम बैहक़ी ने हज़रत आइशा से रिवायत की उन्होंने फ़रमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम अपने मर्ज़े वफ़ात में फ़रमाते थे कि मैंने ख़ैबर में जो ज़हर आलूद गोश्त खाया था उसकी तक्लीफ़ हमेशा महसूस करता रहा हूँ तो अब वह वक़्त आ पहुँचा कि उसी ज़हर के असर से मेरी रगे जान मुन्क़तअ हो।"

(अंबा-उल-अज़्किया बहयातुल-अंबिया स० 149)

मालूम हुआ कि जिस तरह शहादते ज़हरी की हक़ीक़त आपकी ज़ात पर पूरी हुई थी उसी तरह शहादते सिर्री की हक़ीक़त भी आपकी ज़ात पर पूरी हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़हर दिया गया मगर उसके असर से फ़िल-फ़ौर आपकी वफ़ात वाक़े न हुई इसलिए यहाँ भी वही वाद-ए-ख़ुदावन्दी **वल्लाहु यासिमुका मिनन्नासे** इसके लिए मानेअ हुआ और ज़हर का आप पर असर अंदाज़ न होना आपका मोजज़ा हो गया।

जब यह साबित हो गया कि दोनों शहादतों की हक़ीक़त आपकी ज़ात पर पूरी हुई। तो अब यह देखिए कि उन दोनों शहादतों का ज़ुहूर कहाँ जा कर हुआ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है।

"कि बेशक हसन और हुसैन दुनिया में मेरे दो फूल हैं।" (मिश्कात)

और ज़ाहिर है फल और फूल में जमाल व कमाल हक़ीक़त में अस्ल का ही होता है तो उन दोनों फूलों को अस्ल से जमाल का फ़ैज़ भी मिला और कमाल का फ़ैज़ भी। चुनांचे अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं।

"कि हसन सीने से लेकर सर तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुशाबेह और हुसैन सीने से ले कर नीचे तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुशाबेह हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

आला हज़रत इमाम अह्ले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ाँ साहब

रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं।

एक सीना तक मुशाबेह इक वहाँ से पाँव तक
हुस्ने सिब्तैन उन के जामों में है नीमा नूर का
साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयाँ
ख़ते तवाम में लिखा है यह दो वरक़ा नूर का
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

तो जिस तरह यह दोनों शाहज़ादे मज़हरे जमाले मुस्तफ़ा थे इसी तरह मज़हरे कमाले मुस्तफ़ा भी थे। यानी जिस तरह इन दोनों में जमाले मुस्तफ़ा तक़्सीम हुआ इसी तरह कमाले मुस्तफ़ा भी तक़्सीम हुआ। चुनांचे बड़े शाहज़ादे को शहादते सिर्री का फ़ैज़ मिला और छोटे को शहादते जहरी का। साबित हुआ कि हसनैन करीमैन की ज़ात मज़हरे जमाले मुस्तफ़ा भी है और मज़हरे कमाले मुस्तफ़ा भी। (सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम) चूंकि बड़े शाहज़ादे के हिस्सा में शहादते सिर्री आई थी और सिर्र ख़िफ़ा व पोशीदगी (छुपी) को कहते हैं। यही वजह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उसको पोशीदा रखा और किसी को उसकी इत्तिला न दी, यहाँ तक कि ख़ुद हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने भी ज़हर देने वाले का नाम न बताया और फ़रमाया कि मैं उसका बदला ख़ुदा तआ़ला पर छोड़ता हूँ वह मुंतक़िम हक़ीक़ी है।

और छोटे शहज़ादा के हिस्सा में शहादते जहरी आई थी और जहर ऐलान व इज़हार को कहते हैं यही वजह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका ऐलाने आम फ़रमा दिया था चुनांचे।

उम्मुल-मुमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

मुझको जिब्रीले अमीन ने ख़बर दी कि मेरा बेटा हुसैन मेरे बाद ज़मीने तफ़ में क़त्ल कर दिया जाएगा और जिब्रील मेरे पास (उस ज़मीन की) यह मिट्टी लाए हैं और उन्होंने मुझे ख़बर दी है वही उनके लेटने (मदफ़ून होने) की जगह है।

(सवाइक़े मुहरिक़ा स० 190, सिर्रुश्शहादतैन स० 24, ख़साइसे कुबरा स० 125/2)

हज़रत उम्मुल-फ़ज़्ल बिन्त अल-हारिस रज़ि अल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं

कि एक दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हुसैन को लेकर हाज़िर हुई तो मैंने हुसैन को आपकी गोद में रख दिया फिर जो मैंने देखा तो आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

"तो आपने फरमाया कि मेरे पास जिब्रील आए और उन्होंने मुझे ख़बर दी है, कि अंक़रीब मेरी उम्मत मेरे इस बेटे को क़त्ल कर देगी और उन्होंने मुझे उस ज़मीन की थोड़ी सी सुर्ख़ मिट्टी दी है"।

(ख़साइसे कुबरा स० **125/2**, सवाइके मुहरिक़ा, स० **190**, सिर्रुश्शहादतैन स० **24**, अल्मुस्तदरक स० **177/3**)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"कि मेरे घर में एक फ़रिश्ता आया जो इससे पहले कभी मेरे पास न आया था। तो उसने मुझ से कहा कि आपका यह बेटा हुसैन क़त्ल किया जाएगा। अगर आप चाहें तो मैं आपको उस ज़मीन की मिट्टी दिखाऊं जहाँ यह क़त्ल किया जाएगा। फिर उसने थोड़ी सी सुर्ख़ मिट्टी निकाली"। (अल-बिदायह वन्निहायह स० **199/8**, ख़साइसे कुबरा स० **125/2**, सिर्रुश्शहादतैन स० **25**, सवाइक़े मुहरिक़ा स० **190**)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि बारिश पर मुअक्किल फ़रिश्ता ने अल्लाह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त माँगी तो अल्लाह ने उसे इजाज़त दीं वह आया तो हुसैन भी आपकी ख़िदमत में आए और आपके कंधों पर चढ़ गए। आपने उन से प्यार किया।

तो फ़रिश्ता ने कहा : क्या आप इसको महबूब रखते हैं? फ़रमाया हाँ! फ़रिश्ता ने कहा! बेशक आपकी उम्मत इसको क़त्ल कर देगी और अगर आप चाहें तो मैं आपको वह मकान दिखा दूँ जहाँ यह क़त्ल किए जाएंगे पस, उसने अपना हाथ मारा और आपको सुर्ख़ मिट्टी दिखाई तो वह मिट्टी उम्मे सलमा ने ले ली और अपने कपड़े के कोने में बांध ली। रावी फरमाते हैं : हम सुना करते थे कि हुसैन करबला में शहीद होंगे"।

(ख़साइसे कुबरा स० **125/2**, अल-बिदायह वन्निहायह स० **199/8**)
(सिर्रुश्शहादतैन स० **25**, सवाइक़े मुहरिक़ा स० **190**)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं :

"कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम करवट सो रहे

थे कि अचानक जाग पड़े और आप परेशान व मलूल थे और आपके हाथ में सुर्ख़ मिट्टी थी। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह मिट्टी क्या है? फ़रमाया मुझे जिब्रील ने ख़बर दी है कि यह हुसैन इराक़ की ज़मीन पर क़त्ल कर दिया जाएगा और यह वहाँ की मिट्टी है"।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हसन और हुसैन दोनों मेरे घर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खेल रहे थे कि जिब्रीले अमीन नाज़िल हुए और कहा :

"ऐ मुहम्मद! बेशक आपकी उम्मत आप के इस बेटे को आपके बाद क़त्ल कर देगी और आपको (वहाँ की थोड़ी सी) मिट्टी दी। आपने उस मिट्टी को सूंघा और फ़रमाया इस में रंज व बला की बू है। पस, आपने हुसैन को अपने सीना मुबारक से चिमटा लिया और रोए। फिर फ़रमाया ऐ उम्मे सलमा जब यह मिट्टी ख़ून हो जाए तो जान लीजियो कि मेरा यह बेटा क़त्ल हो गया। उम्मे सलमा ने उस मिट्टी को बोतल में रख दिया था और वह हर रोज़ उसको देखतीं और फरमातीं जिस दिन यह मिट्टी ख़ून हो जाएगी वह दिन अज़ीम दिन होगा"। (तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **347/2** ख़साइसे कुबरा स० **125/2**, सवाइक़े मुहरिक़ा स० **191**, सिर्रुश्शहादतैन स० **28**)

हज़रत अनस बिन हारिस रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, फरमाया :

"बेशक मेरा बेटा हुसैन क़त्ल कर दिया जाएगा उस ज़मीन में जिसका नाम करबला है सो जो शख़्स तुम लोगों में से वहाँ मौजूद हो तो उसको चाहिए वह उसकी मदद करे तो अनस बिन हारिस करबला गए और इमाम हुसैन के साथ शहीद हुए"।

(ख़साइसे कुबरा स० **125/2**, अल-बिदायह वन्निहायह स० **199/8**,
सिरुश्शहादतैन स० **29**, दलाइलुन्नुबुव्वत अबू नईम स० **486**)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि :

"हमें और अक्सर अह्ले बैत को इस बात में कोई शक व शुबह न था कि हुसैन ज़मीने तफ़ करबला में शहीद होंगे।

(सिर्रुश्शहादतैन स० **30**, अल-मुस्तदरक स० **179/3**,
खसाइले कुबरा स० **126/2**)

हज़रत यह्या हज़रमी रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं सफ़रे सफ़्फ़ैन में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के साथ था।

तो जब आप नैनवा के बराबर पहुँचे तो आपने पुकारा ऐ अबू अब्दुल्लाह! फ़ुरात के किनारे सब्र करना। मैंने अर्ज़ किया यह क्या किया? आपने फरमाया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुझे जिब्रील ने बताया है कि हुसैन फ़ुरात के किनारे क़त्ल होगा और मुझे वहाँ की मुट्ठी भर मिट्टी दिखाई। (ख़साइसे कुबरा स० 126/2, सवाइक़े मुहरेक़ा स० 191, अल-बिदायह वन्निहायह स० 199/8, सिर्रुश्शहादतैन स० 30, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 347/2)

हज़रत असबग़ बिन बुग़ाता रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि :

हम (हज़रत) अली के साथ क़बरे हुसैन की जगह पर आए तो आपने फरमाया यह उनके ऊंटों के बैठने की जगह है और यह उनके कजावे रखने की जगह है और यह उनके ख़ून बहने का मक़ाम है। कितने जवान आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खुले मैदान में क़त्ल किए जाएंगे। उन पर ज़मीन व आसमान रोयेंगे।

(ख़साइसे कुबरा स० 126/2, सिर्रुश्शहादतैन स० 31, दलाइलुन्नबुव्वत अबू नईम स० 509)

अबू अ़ब्दुल्लाह अज़्ज़बीबी फ़रमाते हैं कि जब अली बिन हरसम जंगे सफ़्फ़ैन से वापस आए तो हम लोग उनको मिलने गए। उन्होंने फरमाया कि जब हम अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के साथ सफ़्फ़ैन से वापस आ रहे थे तो हमने ज़मीने करबला पर हज़रत अली के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा की।

फिर आपने मेंगनियों वाली ज़मीन से एक मुट्ठी खाक ली और उसको सूंघा और फ़रमाया ओह, ओह। इस सर ज़मीन पर एक जमाअ़त क़त्ल होगी। वह बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल होंगे।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 348/2, अल-बिदायह स० 199/8)

इन रिवायात से साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत का इज़हार व ऐलान फ़रमा दिया था और बहुत से सहाबा व अह्ले बैत को मालूम था कि हुसैन शहीद होंगे और उनकी शहादतगाह करबला है।

और यह किसी रिवायत में नहीं पढ़ा कि किसी ने दुआ की हो कि इलाही करबला में होने वाला वाक़िया और आने वाले मसाइब न आएं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ फ़रमा देते हज़रत अली व हज़रत

फ़ातिमा व हज़रत हसन और ख़ुद हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम ही दुआ फ़रमा देते। क्योंकि कामिलैन की दुआ तक़्दीरे मुबरम को भी बदल देती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशादे गिरामी है।

तरजमा : "कि दुआ ज़्यादा करो। बेशक दुआ क़ज़ाए मुबरम को भी टाल देती है। (कंजुल अमान सफ़ह 29/2)

तरजमा : तो किसी ने दुआ क्यों नहीं फरमाई, इसलिए कि राज़ी बरज़ा थे और जानते थे कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से यह एक इम्तिहान और आज़माइश होगी और अल्लाह तआला अपने बन्दों का इम्तिहान लिया करता है, यह उसकी सुन्नत है। चुनांचे फ़रमाया।

क्या लोगों का यह गुमान है कि उनको छोड़ दिया जाएगा सिर्फ़ इतना कहने पर कि हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी? और बेशक हमने उनको भी आज़माया जो उन से पहले थे (और उनको भी आज़माएंगे) ताकि देख ले अल्लाह (और ज़ाहिर कर दे) उनको जो सच्चे हैं और उनको भी जो झूठे हैं। (अल अंकबूत)

तरजमा : क्या तुम इस (गुमान में हो कि यूं ही) जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि तुम पर उन लोगों की मिस्ल हालात नहीं गुज़रे जो तुम से पहले हुए हैं कि उन्हें (इस क़द्र) सख़्ती और मुसीबत पहुँची और वह लरज़ उठे यहाँ तक कि रसूल और जो उसके साथ ईमान लाए थे, कहने लगे कि अल्लाह की मदद कब आएगी? सुन लो, बेशक! अल्लाह की मदद क़रीब है।

(सूरः बक़रा 214)

तरजमा : क्या तुम इस गुमान में हो कि जन्नत में चले जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने इम्तिहान नहीं किया उनका जो तुम में मुजाहिद हैं और न उनका जो सब्र करने वाले हैं। (सूरः आले इमरान 142)

तरजमा : और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे कुछ ख़ौफ़ और भूख से और मालों और जानों और फलों के नुक़्सान से और उन सब्र करने वालों को खुशख़बरी दीजिए कि जब उनको कोई मुसीबत पहुँचती है तो कहते हैं कि बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और बेशक हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं। यही वह लोग हैं जिन पर उनके रब की तरफ़ से सलवात और रहमत है और यही वह लोग हैं जो हिदायत याफ़्ता हैं। इन आयात से साबित हुआ कि सिर्फ़ ज़ुबानी कलामी दाव-ए-ईमान व इस्लाम काफ़ी और ज़रिय-ए-नजात नहीं बल्कि तरह तरह के हवादिस व मसाइब और रंज

व ग़म से दो चार होना पड़ता है। (सूरः बक़रा 155)

यह शहादत गहे उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना

बिला शुबह खर और खोटे, सच्चे और झूठे की पहचान होती है तो इम्तिहान के मैदान ही में होती है और हर शख़्स का इम्तिहान उसकी दीनी व ईमानी हैसियत के मुताबिक़ होता है। जिस क़द्र कोई दीन व ईमान में मज़बूत और सख़्त होता है उसी क़द्र उसके इम्तिहान में सख़्ती की जाती है। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि सबसे ज़्यादा सख़्त इम्तिहान अंबिया का है। उनके बाद सालेहीन का फिर दरजा-ब-दरजा उन लोगों का जो उनके साथ मुशाबेहत रखते हों।

और यह अह्लुल्लाह असल में उश्शाक़ होते हैं और उश्शाक़ का तो कहना ही क्या है! उनकी दुनिया ही निराली है वह महबूब की राह में आने वाली तक्लीफ़ व मुसीबत में भी लज़्ज़त व राहत ही पाते हैं और महबूब की राह में जिस क़द्र उनको ज़िल्लत नसीब होती है इसी क़द्र महबूब की निगाह में उनको इज़्ज़त हासिल होती है चुनांचे रोज़ादार के मुँह की बू अल्लाह के नज़्दीक मुश्क व अंबर की खुशबू से बेहतर है। यानी ब-ज़ाहिर ख़राब ब-बातिन उम्दा।

लिहाज़ा जो अल्लाह की राह में ज़िल्लत उठाते हैं वह अल्लाह के नज़्दीक कमाल दरजा की इज़्ज़त पाते हैं। हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जंगे उहुद के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु, पर गुज़रे, देखा कि उनके कान और नाक वग़ैरह सब काट दिए गए थे।

तो फ़रमाया कि अगर सफ़ीया के ग़म का ख़्याल न होता तो मैं उनको इसी हालत में छोड़ देता ताकि उनको परिन्दे और दरिन्दे खा लेते और क़्यामत के दिन अल्लाह उनका हश्र दरिन्दों और परिन्दों के पेटों में से करता। (अलमुस्तदरक 196/3) फिर एक कम्बल में लपेट कर उनको दफन कर दिया देखिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरादा था कि उनकी लाश इसी तरह बेहुरमती के साथ पड़ी रहे और जानवर खा जाएं ताकि ज़िल्लत कमाल दरजा को पहुँच जाए और इस तरह यह अल्लाह तआला की बारगाह में कमाल दरजा की इज़्ज़त के हक़दार हो जाएं, लेनिक हज़रत सफ़ीया के ग़म के ख़्याल से आपने इस क़सद को तर्क

फरमा दिया। मगर इसके बावजूद वह सैय्यदुश्शोहदा का मक़ाम व मरतबा पा गए।

इमामे आली मक़ाम हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके अह्ले बैते किराम ने राज़ी बरज़ा हो कर यही चाहा कि उनका इम्तिहान हो और ऐसा इम्तिहान हो कि तकालीफ़ व मसाइब के पहाड़ टूटें और बेबसी और बेकसी की इंतिहा हो जाए।

चुनांचे ज़हर बिन क़ैस जो वाक़िया करबला में लश्करे यज़ीद में था जब यज़ीद को फतह की खुशख़बरी सुनाने आया तो मिन जुमला और वाक़ेआत के यह भी सुनाया।

तरजमा : कि उनके अज्साद बरहना (नंगे जिस्म) और उनके कपड़े ख़ून में लत पत और उनके रुख़सार ख़ाक आलूद हैं और धूप उनके जिस्मों को पिघला रही है और हवाएं उन पर खाक डाल रही हैं और उनकी ज़ियारत करने वाले मुरदार ख़ोर परिन्दे हैं और वह चटयल मैदान में पड़े हुए हैं।

(इब्ने असीर स० 34/4)

गोया ज़ाहिर बीनों के नज़्दीक ज़िल्लत की इंतिहा हो जाए और अल्लाह तआला के नज़्दीक वह इज़्ज़त व रिफ़अ़त के आला दरजा को पहुँच जाएं और सैय्यदुश्शोहदा हज़रत हम्ज़ा की शहादत के वक़्त जो बात रह गई है उसकी भी तक्मील हो जाए।

असबाबे शहादत :

जब कोई चीज़ यक़ीनी होने वाली होती है तो उसके होने के असबाब भी पैदा हो जाते हैं। इमाम आली मक़ाम की शहादत के असबाब इस तरह पैदा हुए कि जब **60** हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ और यज़ीद (जिसके लिए वह अपनी ज़िन्दगी ही में बैअत ले चुके थे)उनका जाँनशीन हुआ। तख़्ते हुकूमत पर बैठने के बाद उसके लिए सबसे अहम मस्अला हज़रत इमाम हुसैन, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुम की बैअ़त का था। क्योंकि इन हज़रात ने यज़ीद की वली अहदी को तस्लीम नहीं किया था। अलावा अज़ी इन हज़रात से यज़ीद को यह भी ख़तरा था कि कहीं उनमें से कोई ख़िलाफ़त का दावा न कर दे और ऐसा न हो कि सारा हिजाज़ मेरे ख़िलाफ़ उठ खड़ा हो और हज़रत इमाम हुसैन के दाव-ए-ख़िलाफ़त की सूरत में इराक़ में बग़ावत का सख़्त अन्देशा था। इन वजूह की बिना पर

यज़ीद के पेशे नज़र सबसे बड़ा मस्अला अपनी हुकूमत की बक़ा और तहफ़्फ़ुज़ का था। इसलिए उसने उन हज़रात से बैअ़त लेना ज़रूरी समझा। चुनांचे उसने वलीद बिन उक़्बा गवर्नर मदीना को अमीर मुआ़विया की वफ़ात की ख़बर दी और साथ ही उन हज़रात से बैअ़त लेने के लिए सख़्त ताकीदी हुक्म भेजा।

तरजमा : "पस हुसैन, अब्दुल्लाह बिन उमर और इब्ने ज़ुबैर को बैअ़त के लिए इस तरह पकड़ो कि जब तक बैअ़त न कर लें मुतलक़ न छोड़ो"।

(इब्नुल-असीर स० 4/4)

अभी तक अह्ले मदीना को अमीर मुआ़विया की वफ़ात की ख़बर न थी। वलीद यज़ीद के इस हुक्म से बहुत घबराया क्योंकि उसके लिए उसकी तामील बहुत मुश्किल थी और उसके अंजाम को भी अच्छी तरह समझता था। उसने अपने नाइब मरवान बिन हकम को बुलाया और उस से इस मुआ़मले में मशवरा तलब किया। मरवान संग दिल और सख़्त मिज़ाज था। उसने कहा मेरी राय यह है कि उन तीनों को इसी वक़्त बुलाएं और बैअ़त का हुक्म दें, अगर वह बैअ़त कर लें तो बेहतर और अगर वह इंकार करें तो तीनों का सर क़लम कर दो। अगर तुमने ऐसा न किया तो जब उनको वफ़ाते मुआ़विया की ख़बर मिलेगी यह तीनों एक एक मक़ाम पर जा कर मुद्दई ख़िलाफ़त बन कर खड़े हो जाएंगे, फिर उन पर क़ाबू पाना सख़्त मुश्किल हो जाएगा। अल्बत्ता इब्ने उमर को मैं जानता हूँ उन से तवक़्क़ो कम है, वह जिदाल व क़िताल करना नहीं चाहते सिवाए इसके कि यह अम्रे ख़िलाफ़त खुद-ब-खुद उनको दे दिया जाए।

इस मशवरा के बाद वलीद ने उन तीनो हज़रात को बुला भेजा। उस वक़्त इमाम हुसैन और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर दोनों मस्जिदे नब्वी में थे और वह वक़्त भी ऐसा था कि उसमें वलीद किसी से मिलता मिलाता न था। क़ासिद ने उन दोनों को अमीर का पैग़ाम दिया। उन्होंने क़ासिद से कहा तुम चलो हम अभी आते हैं। इब्ने ज़ुबैर ने इमाम से कहा आपका क्या ख़्याल है अमीर ने ऐसे वक़्त में जबकि वह किसी से मिलते मिलाते नहीं हमें क्यों बुलाया है? इमाम ने फरमाया मेरा यह गुमान है कि अमीर मुआ़विया फ़ौत हो गए हैं और हमें इसलिए बुलाया है कि उनकी वफ़ात की ख़बर आम होने से पहले वह हम से यज़ीद की बैअ़त ले लें। इब्ने ज़ुबैर ने कहा मेरा गुमान भी यही है। अब आपका क्या इरादा है? फरमाया मैं अपने

चन्द जवानों को साथ लेकर जाता हूँ क्योंकि इंकार की सूरत में हो र.क़ता है कि मुआमला नाज़ुक सूरत इख़्तियार कर जाए। चुनांचे अपनी हिफ़ाज़त का सामान करके वलीद के पास पहुँचे और मकान के बाहर अपने जवानों को मुतऐयन कर दिया और उन से कहा कि अगर मैं तुम्हें बुलाऊं या तुम सुनो कि मेरी आवाज़ बुलन्द हो रही है तो फ़ौरन अन्दर आ जाना और जब तक मैं बाहर न आऊं यहाँ से हरगिज़ न सरकना। आप अन्दर गए। और सलाम के अल्फ़ाज़ कह कर बैठ गए। वलीद ने आपको अमीर मुआ़विया की वफ़ात की ख़बर सुनाई और यज़ीद की बैअ़त के लिए कहा। आपने ताज़ियत के बाद फरमाया मेरे जैसा आदमी इस तरह छुप कर बैअ़त नहीं कर सकता और न मेरे लिए इस तरह खुफ़िया बैअत करना मुनासिब है अगर आप बाहर निकल कर आम लोगों को और उनके साथ हमें भी बैअत की दावत दें तो यह एक बात होगी। वलीद अमन और सुलह पसन्द आदमी था। उसने कहा अच्छा, आप तशरीफ़ ले जाएं। आप उठ कर चले तो मरवान ने बहुत बेरहम हो कर वलीद से कहा अगर तुमने इस वक़्त इनको जाने दिया और बैअ़त न ली तो फिर उन पर क़ाबू न पा सकोगे ता वक़्त कि बहुत से लोग क़त्ल न हो जाएं। इनको कै़द कर दो अगर यह बैअत कर लें तो ख़ैर वरना इनको क़त्ल कर दो। इमाम यह सुनकर खड़े हो गए और फरमाया ऐ इब्नुज़्ज़रक़ा क्या तू मुझे क़त्ल करेगा या यह करेंगे? खुदा की क़सम! तू झूठा है और कमीना है। यह कह कर आप तशरीफ़ ले आए। मरवान ने वलीद से कहा तुमने मेरी बात न मानी। खुदा की क़सम! अब तुम उन पर क़ाबू नहीं पा सकोगे यह बेहतरीन मौक़ा था कि तुम उनको क़त्ल कर देते। वलीद ने कहा तुम पर अफ़सोस! तुम मुझे ऐसा मशवरा दे रहे हो जिसमें मेरे दीन की तबाही है। क्या मैं सिर्फ़ इस वजह से नवासा-ए-रसूल को क़त्ल कर देता कि वह यज़ीद की बैअ़त नहीं करते। अगर मुझे दुनिया भर का माल व मता मिल जाए तो भी मैं उनके ख़ून से अपने हाथों को आलूदा न करूं। खुदा की क़सम! क़्यामत के दिन जिस से ख़ूने हुसैन की बाज़ पुर्स होगी वह ज़रूर अल्लाह के सामने ख़फ़ीफ़ुल-मीज़ान होगा। मरवान ने कहा तुम ठीक कहते हो। उसने सिर्फ़ ज़ाहिरदारी के लिहाज़ से कह दिया था वरना दिल में वलीद की बात को नापसन्द करता था। (इब्ने असीर, तबरी)

वलीद के पास से वापस आने के बाद इमाम आली मक़ाम सख़्त कश्मकश में मुब्तला थे। यज़ीद की बैअ़त आपको क़लबी तौर पर सख़्त

नापसन्द थी क्योंकि वह नाअह्ल था और उसका तक़र्रुर भी ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के इस्लामी तरीक़-ए-इंतिख़ाब के बिल्कुल ख़िलाफ़ और ग़ैर शरई तौर पर हुआ था बल्कि आपके नज़्दीक यह क़ैसर व किसरा के तर्ज़ की पहली शख़्सी हुकूमत थी। इसलिए आप एहतिजाजन उसके ख़िलाफ़ थे और दूसरी तरफ़ हालात इजाज़त नहीं देते थे कि आप अलल-ऐलान उसके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करें। उधर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर तरह तरह के हीलों से वलीद के क़ासिदों को टालते रहे और वलीद के पास न आए और दूसरे दिन मदीना मुनव्वरह से मक्का मुकर्रमा को निकल गए। वलीद का अमला सारा दिन उनकी तलाश में सरगरदां रहा मगर वह न मिल सके। उधर शाम के वक़्त फिर वलीद ने इमाम के पास आदमी भेजा। आपने फ़रमाया इस वक़्त तो मैं नहीं आ सकता और सुबह होने दो फिर देखेंगे क्या होता है। वलीद ने यह बात मान ली और आपने उसी रात अपने अह्ल व अयाल और अज़ीज़ व अक़ारिब को साथ लेकर मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा की तरफ हिजरत का इरादा कर लिया। घर वालों को फ़रमाया कि तुम तैयारी करो और आप खुद मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में रौज़-ए-रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर हाज़िर हुए। नवाफ़िल अदा करके जूं ही चेहर-ए-रसूल के सामने पहुँच कर दस्त बस्ता सलाम के अल्फ़ाज़ अदा किए बेसाख़्ता आँखों से अश्क रवां हो गए। जवारे रसूल से दूरी और शहरे रसूल से जुदाई के ग़म अंगेज़ ख़्याल ने आप पर रिक़्क़त तारी कर दी। यही वह शहर था जिसमें आपने उमरे अज़ीज़ का अब तक बेश्तर हिस्सा गुज़ारा था। बचपन से अब तक उसी शहर की पुर नूर फ़िज़ाओं और मुअत्तर हवाओं में रोज़ व शब का सिलसिला रहा था। यह शहर आपके नाना जान का शहर था। आप इस गुलशने रसूल के महकते फूल थे मगर अब इस शहर में आपका रहना मुश्किल हो गया था। इसी शहर में आपकी वालिदा माजिदा का मदफन था। आपके भाई इसी शहर में आराम फ़रमा थे। उस वक़्त इमाम पाक की क्या कैफ़ियत होगी, वह रौज़-ए-रसूल पर अपने जज़्बात व एहसासात का इज़्हार कर रहे थे, नाना जान के रू-ब-रू अपना अहवाल ब्यान कर रहे थे।

मज़ारे मुस्तफ़ा पर शाम होते ही इमाम आए
इजाज़त की ग़रज़ से आख़िरी करने सलाम आए
कहा रो कर सलाम ऐ ताजदार आलमे इमकाँ

सलाम एक सैयदे आलम सलाम ऐ सरवरे ज़ी शान
ज़रा देखो तो चेहरा से उठा कर गोश-ए-दामाँ
हुसैन इब्ने अली पर तंग हैं तैबा की अब गलियाँ
ज़रा हुजरा से निकलो ऐ मकीने गुंबदे ख़िज़रा
ज़रा देखो तो अह्ले बैत पर हैं सख़्तियाँ क्या क्या
यज़ीदी दौर है, इस्लाम है सरकार ख़तरे में
नवासा आपका इस वक़्त है दुश्मन के नरग़े में
मैं कुरबाँ ऐ मुझे नाज़ व नेअ़म से पालने वाले
मसाइब आने वाले दम ज़दन में टालने वाले
हमारी बेकसी दरमांदगी की लाज रख लेना
हमें नज़रों में अपनी साहिबे मेअ़राज रख लेना
बस अब ऐ क़िब्ला दीं मुझको जाने की इजाज़त हो
लबे अतहर से फ़रमा दो हुसैन अब जाओ रुख़्सत हो
मदीने से शहे कौनैन का नूरे नज़र निकला
वतन से बेवतन हो कर वतन का ताजवर निकला

इमाम पाक अपने अह्ल व अयाल को साथ लेकर मदीना मुनव्वरह से मक्का मुकर्रमा हिजरत कर गए। (इब्ने असीर स० 6/4, तबरी स० 190/6,)

मुहम्मद बिन हन्फ़ीया का मशवरा :

हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया ने आपसे कहा भाई मैं तुम से ज़्यादा किसी को महबूब और अज़ीज़ नहीं रखता और तमाम ख़ल्क़े ख़ुदा में किसी को इसका मुस्तहिक़ नहीं समझता कि उसके साथ आपसे ज़्यादा ख़ैर ख़्वाही करूं लिहाज़ा मेरा मशवरा यह है कि जहाँ तक हो सके आप यज़ीद की बैअ़त और किसी मख़्सूस शहर के इरादा से अलग रहें और देहात और रेगिस्तान में क़्याम करें और लोगों के पास अपने क़ासिद भेज कर उनको अपनी बैअ़त की दावत दें। अगर वह लोग बैअ़त कर लें तो आप उस पर अल्लाह का शुक्र करें और अगर वह किसी और शख़्स पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं तो उस से आपके औसाफ़ व कमालात और फ़ज़ीलत में अल्लाह कुछ कमी और कुछ फ़र्क़ न आने देगा। मुझे ख़ौफ़ है कि इन हालात में अगर आप किसी मख़्सूस शहर या किसी मख़्सूस जमाअ़त के पास जाएंगे तो उनमें इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा। एक गरोह आपके साथ होगा और दूसरा आपके ख़िलाफ़। फिर उन दोनों में जंग व जिदाल की नौबत आएगी और

सबसे पहले आप उन के नेज़ों का निशाना बनेंगे। ऐसी सूरत में एक मुअज़्ज़ज़ और शरीफ़ तरीन शख़्स जो बलिहाज़ हस्ब व नसब इस सारी उम्मत से बेहतर है उसका ख़ून सबसे ज़्यादा अरज़ाँ हो जाएगा और उसके अह्ल व अयाल को ज़लील किया जाएगा।

यह सुनकर आपने फ़रमाया भाई फिर मैं कहाँ जाऊं? मुहम्मद बिन हन्फ़ीया ने कहा मक्का! अगर वहाँ आपको इत्मीनान हासिल हो जाए तो कोई न कोई सबील पैदा हो जाएगी और अगर इत्मीनान हासिल न हो तो फिर रेगिस्तानों और पहाड़ों की तरफ चले जाएं और एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम की तरफ मुंतक़िल होते रहें और लोगों के बदलते हुए हालात देखते रहें फिर आप किसी न किसी नतीजा पर पहुँच जाएंगे क्योंकि जब वाक़ेआत सामने आ जाते हैं तो राय बहुत ज़्यादा सही हो जाती है। आपने फ़रमाया भाई तुमने ख़ैर ख़्वाही और शफ़क़त फ़रमाई है। मुझे उम्मीद है कि इंशाअल्लाह तुम्हारी राय दुरुस्त और मुवाफ़िक़ साबित होगी। यह कह कर आप यज़ीद बिन मुज़रग के यह अशआर बतौर मिसाल पढ़ते हुए मस्जिद में दाख़िल हुए।

तरजमा : जिस दिन कि ज़ुल्म व सितम से मेरा गला घूँट दिया जाएगा और मौत मेरा इंतिज़ार कर रही होगी अगर मैं मैदान छोड़ जाऊं तो (फिर कभी भी) सुबह के वक़्त ग़ारत गरी के लिए ऊंटों को न चौंकाऊंगा और न ही अपना नाम यज़ीद रखूंगा। (इब्ने असीर स० 6/4, तबरी स० 190/6)

एक शुबहा :

"ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद" के मुअल्लिफ़ ने लिखा है कि मुहम्मद बिन हन्फ़ीया इमाम हुसैन के ख़ुरूज को तलबे हुकूमत व ख़िलाफ़त का एक ऐसा सियासी मस्अला समझते थे जो ज़माने के तक़ाज़ों और अहकामे शिरअ के ऐतबार से जाइज़ और मुनासिब न था। (स० 79)

इसके मुतअल्लिक़ अर्ज़ यह है कि अगर मुहम्मद बिन हन्फ़ीया के नज़्दीक ख़ुरूजे इमाम ज़माने के तक़ाज़ों और अहकामे शिरअ के ऐतबार से नाजाइज़ और ना-मुनासिब होता तो फिर वह इमाम को यह क्यों कहते कि यज़ीद की बैअ़त से अलग रहो और अपनी बैअ़त की दावत दो बल्कि वह वाज़ेह अल्फ़ाज़ में यूं कहते कि तुम्हारे लिए अज़रू-ए-शरीअत किसी हालत में भी यह ख़ुरूज जाइज़ नहीं और तुम्हें ख़लीफ़-ए-राशिद व आदिल के होते हुए यह हक़ नहीं पहुँचता है कि तुम उसके ख़िलाफ़ बग़ावत करो।

उनको ख़ुरूज से न रोकना और तदबीरें बताना कि दिहात और पहाड़ों में क़याम करो और लोगों के पास वफ़ूद भेजो और उनको अपनी बैअ़त की दावत दो इस बात की वाज़ेह दलील है कि उनके नज़्दीक इमाम का ख़ुरूज शरई तौर पर नाजाइज़ न था बल्कि इमाम जो तरीक़ा इख़्तियार कर रहे थे वह तरीक़ा उनके नज़्दीक मसलेहत के ख़िलाफ़ और ग़ैर मुफ़ीद था। रहा ख़ुद उनका बैअ़त करना तो वह बाज़ सहाबा की तरह फ़ित्ना व फ़साद से बचने के लिए था न कि ख़लीफ़ा के किरदार की ख़ूबी या उसके बरहक़ होने की बिना पर था।

साबित हुआ कि मुहम्मद बिन हन्फ़ीया भी दूसरे बाज़ सहाबा की तरह फ़ी नफ़सेही यज़ीद के ख़िलाफ़ ख़ुरूज को नाजाइज़ या बुरा नहीं जानते थे बल्कि ख़ार्जी असबाब व वजूह की बिना पर उसे ग़ैर मुअस्सिर और ख़िलाफ़े मसलेहत समझते थे। लिहाज़ा ख़िलाफ़ते मुआविया व यज़ीद के मुअल्लिफ़ का यह कहना मुहम्मद बिन हन्फ़ीया इमाम के ख़ुरूज को शरई तौर पर नाजाइज़ समझते थे बिल्कुल ग़लत और तारीख़ की खुली तक्ज़ीब है।

इसमें कोई शुबहा नहीं कि हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया का मशवरा दूर अन्देशी और मसलेहत पर मब्नी था। अरबाबे अक़्ल व दानिश इस क़िस्म की मस्लेहत आमेज़ियों और दूर अन्देशियों से काम लेते हैं और दूसरों को भी इसकी तरग़ीब देते हैं और बाज़ मौक़ो पर मसलेहत से काम लेना कोई बुरी बात भी नहीं है। लेकिन अह्ले इश्क़ व मुहब्बत का मिज़ाज कुछ इस से मुख़्तलिफ़ ही वाक़े हुआ है।

मदीना मुनव्वरह से रिहलत :

इमाम आली मक़ाम मदीना मुनव्वरह को छोड़ते वक़्त जब अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़-ए-अनवर पर हाज़िर हुए होंगे और सलात व सलाम अर्ज़ करके रुख़्सत व इजाज़त तलब की होगी, उस वक़्त आपकी क्या कैफ़ियत हुई होगी। बिला शुबह दीद-ए-ख़ून बार ने अश्के ग़म की बारिश की होगी। क़ल्बे हज़ीं सदम-ए-जुदाई व फ़िराक़ से घायल हो रहा होगा और लबों पर यह अल्फ़ाज़ होंगे। कन्धों पर चढ़ा कर खिलाने वाले नाना, आग़ोशे रहमत व मुहब्बत में लेकर लोरियां सुनाने वाले नाना, माथे, रुख़्सार और लबों को चूमने वाले नाना ऐ मेरे नाज़ उठाने वाले नाना आज मेरा हाल देखिए, मैं ग़मगीन व परेशान हूँ। अश्कबार हूँ। इसलिए कि आपका यह मुक़द्दस शहर छोड़ रहा हूँ वह शहर जो मुझे सबसे

ज़्यादा अज़ीज़ और महबूब है लेकिन मैं क्या करूं मेरा यहाँ रहना दुशवार हो गया है। मैं जा रहा हूँ मुझे इजाज़त दीजिए और इधर रौज़-ए-अक़्दस में नाज़ों से पालने वाले नाना जान हुज़ूर सैय्यदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम की क्या हालत होगी। यह तसव्वुर दिलों को पाश पाश कर देता है यह दिन कैसा दिन था। सख़्त रंज व अलम का दिन था कि नवास-ए-नबी जिगर गोश- ए-अली, नूर दीद-ए-ज़हरा, सुरूरे क़ल्ब हसन मुज्तबा जा रहा है और हमेशा हमेशा के लिए जा रहा है।

हाँ निगाहे ग़ौर से देख ऐ गरोहे मुमिनीन
जा रहा है करबला ख़ैरुल-बशर का जानशीन
आसमां है लरज़ा बर अन्दाम जुंबिश में ज़मीं
फ़र्क़ पर है साया अफ़्गन शह पर रूहुल-अमीं
ऐ शगूफ़ुस्सलाम ऐ खुफ़्ता कलियों अल-विदा
ऐ मदीना की नज़र अफ़रोज़ गलियों अल-विदा

फिर आप यह आयत पढ़ते हुए शाबान **60** हिजरी में मआ अह्ल व अयाल मक्का मुकर्रमा की तरफ चल पड़े।

तरजमा : तो वह उस शहर से निकला डरता हुआ इस इंतिज़ार में कि अब क्या होता है। कहा ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात अता फ़रमा। (अलकेसस 20)

अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मुलाक़ात :

रास्ता में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मुलाक़ात हुई। उन्होंने आपको मआ अह्ल व अयाल मदीना मुनव्वरा से जाते हुए देख कर पूछा मैं आप पर फिदा हो जाऊं आप कहाँ तशरीफ़ ले जा रहे हैं? फरमाया फ़िलहाल तो मक्का मुकर्रमा जा रहा हूँ। वहाँ जा कर अल्लाह तआला से इस्तिख़ारा करूँगा कि कहाँ जाऊं! अब्दुल्लाह ने कहा। अल्लाह आपको ख़ैर व आफ़ियत से रखे और हमें आप पर फिदा करे। जब आप मक्का पहुँच जाएं तो कूफ़ा का हरगिज़ इरादा न फरमाएं क्योंकि वह एक मंहूस शहर है वहीं आपके वालिद माजिद शहीद हुए और वहीं आपके भाई हज़रत हसन को बेयार व मदद छोड़ दिया गया और उन पर बरछी का वार किया गया क़रीब था कि वह जाँबहक़ तस्लीम हो जाते, आप मक्का ही में रहें उसको न छोड़ें आप अरब के सरदार हैं। अह्ले हिजाज़ आपके बराबर किसी को नहीं समझते। हर तरफ से लोग आपके पास आएंगे। मेरे चचा

और मामूं आप पर निसार हों आप हरमे काबा को हरगिज़-हरगिज़ न छोड़िएगा। ख़ुदा की क़सम! अगर ख़ुदानख़्वास्ता आप क़त्ल हो गए तो आपके बाद हम सब गुलाम बनाए जाएंगे।

जब आप मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो यह आयत पढ़ी।

तरजमा : और जब मदयन की तरफ मुतवज्जेह हुआ कहा उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधी राह चलाएगा। (अल-क़ेसस स० 20/7)

आपके मक्का मुकर्रमा पहुँचने की ख़बर सुन कर लोग जूक़ दर जूक़ आपके पास आने लगे और ज़्यारत का शर्फ़ हासिल करने लगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर भी मक्का ही में थे वह भी आपके पास आते जाते। अह्ले मक्का को आपके आने की बहुत ख़ुशी हुई थी वह आपके दीदार पुर अनवार से अपने दीदा व दिल को रौशन व मुनव्वर करते हुए कह रहे थे।

अह्ले कूफ़ा के ख़ुतूत और वफ़ूद :

कूफ़ा हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के शीओं और मुहिब्बों का मरकज़ और गढ़ था इसलिए कि आपने अपने अह्दे ख़िलाफ़त में दारुल-ख़िलाफ़ा मदीना मुनव्वरह से मुंतक़िल करके कूफ़ा में क़ाइम किया था। लिहाज़ा आपके सब मुहिब्ब वहीं जा कर आबाद हो गए थे। यह अमीर मुआविया के ज़माना में भी इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में कूफ़ा तशरीफ़ आवरी की दरख़्वास्तें भेज चुके थे। अब जब अह्ले कूफ़ा को हज़रत मुआविया का इंतिक़ाल करना और इमाम आली मक़ाम और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर का बैअ़ते यज़ीद से इंकार करना मालूम हुआ तो कूफ़ा के तमाम शीआ़ सुलेमान बिन सर्दुल-ख़ज़ामी के घर जमा हुए। मुहम्मद बिन बशर हम्दानी का ब्यान है।

कि तमाम शीआ सुलेमान बिन सर्द के घर जमा हुए और मुआविया के मरने का ज़िक्र करके सबने अल्लाह का शुक्र किया फिर सुलेमान बिन सर्द ने सबसे कहा कि मुआविया हलाक हो गया है और इमाम हुसैन ने यज़ीद की बैअत से इंकार किया है और मक्का चले गए हैं और तुम लोग उनके और उनके बाप के शीआ हो। पस तुम ख़ूब जान लो कि अगर तुम उनके मददगार बन सकते हो और उनके दुश्मनों से जिहाद कर सकते हो तो उनको लिखो और अगर तुम्हें अपनी कमज़ोरी और बुज़्दिली का अन्देशा हो तो उनको धोखा न दो सबने कहा नहीं हम उनको धोखा नहीं देंगे बल्कि हम उनके दुश्मनों से जंग करेंगे और उन पर अपनी जानें निसार करेंगे।

सुलेमान ने कहा फिर लिखो तो उन्होंने आपकी तरफ लिखा।

शीआ मज़्हब की मोतबर किताब "जिला-उल-उयून" मुसन्नफ़ा मुल्ला बाक़र मज्लिसी अस्फ़हानी में है।

"जब यह ख़बरें अह्ले कूफ़ा को पहुँचीं शीआने कूफ़ा सुलेमान बिन सर्द ख़ज़ामी के घर में जमा हुए। हम्द व सना-ए-इलाही बजा लाए और दरबार-ए-फ़ौते मुआविया व बैअ़ते यज़ीद में गुफ़्तगू की। सुलेमान ने कहा जब कि मुआविया मर गया और इमाम हुसैन बैअ़ते यज़ीद से इंकार करके मक्का मुअज़्ज़मा चले गए और तुम उनके शीआ हो और उनके पिदर बुज़ुर्गवार के शीआ हो अगर जानते हो कि उनकी नुसरत कर सकोगे और यह जान व माल उनकी नुसरत में कोशिश कर सकोगे एक अ़रीज़ा उनकी ख़िदमत में लिख कर यहाँ बुला लो और अगर उनकी नुसरत में सुस्ती व काहिली करोगे यह जान लो कि शर्त नेक ख़्वाही और मुताबेअत की बजा आवरी न करोगे तो उनको फ़रेब न दो और हलाकत में न डालो। शीओं ने कहा जब हज़रत उस शहर को अपने नूरे क़दम से मुनव्वर करेंगे हम सब बक़दम इख़्लास उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो के उन से बैअत करेंगे और उनकी नुसरत में जांफ़शानी और दुशमनों से हिफ़ाज़त में कोशिश करेंगे।"

(जिला-उल-उयून मुतरजम स० **138/2**, शाए करदा शीआ जनरल बुक ऐजेंसी मुहल्ला शीआ लाहौर)

साबित हुआ कि इमाम आली मक़ाम को कूफ़ा में बुलाने वाले सब शीआ ही थे। चुनांचे ख़ुतूत और वफ़ूद का तांता लग गया। यहाँ तक कि बक़ौल मुल्ला बाक़र मज्लिसी बारह हज़ार ख़ुतूत शीआ मुमिनीन के इमाम के पास पहुँचे। मज़ामीन का ख़ुलासा यह है कि आप जल्द अज़ जल्द कूफ़ा तशरीफ़ लाएं मसनदे ख़िलाफ़त आपके लिए ख़ाली है मुमिनीन शीओं के अमवाल और उनकी गर्दनें आपके लिए हाज़िर हैं सबके सब आपके मुंतज़िर और मुश्ताक़े दीद हैं। आपके सिवा कोई हमारा इमाम व पेशवा नहीं है आपकी मदद के लिए यहाँ लश्कर मुहैया व हाज़िर है। नौमान बिन बशीर हाकिमे कूफ़ा दारुल-इमारात में बैठा है हम जुमा व ईदैन की नमाज़ पढ़ने नहीं जाते। जब आप तशरीफ़ लाएंगे हम उसको कूफ़ा से निकाल देंगे। (जिला-उल-उयून स० **139/2**)

आख़िरी खत आने के बाद इमाम आली मक़ाम ने उनको जवाब लिखा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह ख़त हुसैन बिन अली शीओं मोमिनों

मुसलमानों अह्ले कूफ़ा की तरफ है अम्मा बाद! बहुत से क़ासिदों और ख़ुतूत के आने के बाद जो तुमने ख़त हानी व सईद के हाथ मुझे भेजा है वह मुझे पहुँचा। सब तुम्हारे ख़ुतूत मेरे पास पहुँचे और सबके मज़ामीन से मुत्तला हुआ। तुमने सब ख़ुतूत में मुझे लिखा है कि हमारा कोई इमाम नहीं बहुत जल्द हमारे पास तशरीफ़ लाइए ख़ुदा आपकी बरकत से हमको बहक़्क़े हिदायत करे। वाज़ेह हो कि मैं बिल-फ़ेअ़ल तुम्हारे पास अपने बिरादरे अ़म व महल ऐतमाद मुस्लिम बिन अक़ील को भेजता हूँ अगर मुस्लिम मुझे लिखें जो कुछ तुमने मुझे ख़ुतूत में लिखा है बमशवरा उक़ला व दानायान व अशराफ़ व बुज़ुर्गाने क़ौम लिखा है उस वक़्त मैं बहुत जल्द इंशाअल्लाह तुम्हारे पास चला आऊंगा मैं अपनी जान की क़सम खाता हूँ कि इमाम वही है जो दरम्याने मर्दुम बकिताबे ख़ुदा हुक्म और व अ़दालत क़्याम करे और क़दम जाद-ए-शरीअ़ते मुक़द्दसा से बाहर न रखे और लोगों को दीने हक़ पर मुस्तक़ीम रखे। वस्सलाम। (जला-उल-उयून स० **140/2**)

इमाम आली मक़ाम ने जब अह्ले कूफ़ा के ख़ुतूत और वफ़ूद से उनके जज़्बाते अक़ीदत व मुहब्बत जान व माल क़ुरबान करने की तमन्नाओं और कूफ़ा आने की इल्तिजाओं को देखा तो फ़ैसला किया कि पहले अपने चचाज़ाद भाई हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील को तहक़ीक़े हाल के लिए भेजना चाहिए। चुनांचे आपने उनको एक ख़त दिया जो आपने अह्ले कूफ़ा के नाम तहरीर फरमाया था और फरमाया कि आप कूफ़ा जा कर बज़ाते ख़ुद बराहे रास्त हालात का सही अंदाज़ा लगाएं और इत्तिला दें अगर हालात साज़गार होंगे तो मैं भी आ जाऊंगा और अगर हालात दुरुस्त न हों तो वापस आ जाएं।

सदरुल-अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं। अगरचे इमाम की शहादत की ख़बर मशहूर थी और कूफ़ियों की बेवफ़ाई का पहले भी तजरबा हो चुका था मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उसकी हुकूमत व सलतनत दीन के लिए ख़तरा थी और इस वजह से उसकी बैअत नारवा थी और वह तरह तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उसकी बैअत करें उन हालात में कूफ़ियों का बपा से मिल्लत यज़ीद की बैअत से दस्त कशी करना और हज़रत इमाम से बैअत होना इमाम पर लाज़िम करता था कि उनकी दरख़्वास्त कुबूल फ़रमाएं। जब एक क़ौम ज़ालिम व फ़ासिक़ की

बैअत पर राज़ी न हो और साहिबे इस्तिहक़ाक़े अह्ल से दरख़्वास्ते बैअत करे इस पर अगर वह उनकी इस्तिदआ क़ुबूल न करे तो उसके यह माना होता हैं कि वह उस क़ौम को उस जाबिर ही के हवाले करना चाहता है इमाम अगर उस वक़्त कूफ़ियों की दरख़्वास्त क़ुबूल न फरमाते तो बारगाहे इलाही में कूफ़ियों के इस मुतालबे का इमाम के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दर पै हुए मगर इमाम बैअ़त के लिए राज़ी न हुए। बदीं वजह हमें यज़ीद के ज़ुल्म व तशद्दुद से मज्बूर हो कर उसकी बैअ़त करना पड़ी अगर इमाम हाथ बढ़ाते तो हम उन पर जानें फ़िदा करने के लिए हाज़िर थे। यह मस्अला ऐसा दर पेश आया जिसका हल बजुज़ इसके और कुछ न था कि हज़रत इमाम उनकी दावत पर लब्बैक फ़रमाएं। अगरचे अकाबिरे सहाबा किराम हज़रत इब्ने अब्बास व हज़रत इब्ने उमर व हज़रत जाबिर व हज़रत अबू वाक़िद लैसी वग़ैरहुम हज़रत इमाम की इस राय से मुत्तफ़िक़ न थे और उन्हें कूफ़ियों के अहद व मवासीक़ का ऐतबार न था। इमाम की मुहब्बत और शहादत इमाम की शोहरत उन सबके दिलों में इख़्तिलाज पैदा कर रही थी गो कि यह यक़ीन करने की भी कोई वजह न थी, कि शहादत का यही वक़्त है और इसी सफ़र में यह मरहला दर पेश होगा लेकिन अन्देशा माने था हज़रत इमाम के सामने मस्अला की यह सूरत दर पेश थी कि इस इस्तिदआ को रद करने के लिए उज़्रे शरई क्या है उधर ऐसे जलीलुल-क़द्र सहाबा के शदीद इसरार का लिहाज़। उधर अह्ले कूफ़ा की इस्तिदुआ रद फरमाने के लिए कोई उज़्रे शरई न होना। हज़रत इमाम के लिए निहायत पेचीदा मस्अला था जिसका हल बजुज़ इसके कुछ नज़र न आया कि पहले हज़रत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए अगर कूफ़ियों ने बद अहदी व बेवफ़ाई की तो उज़्रे शरई मिल जाएगा और अगर वह अपने अह्द पर क़ाइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी।

(सवानेह करबला स० 52)

हज़रत मुस्लिम कूफ़ा में :

हज़रत मुस्लिम अपने दोनों सग़ीरुस्सिन्न साहबज़ादों मुहम्मद और इब्राहीम को साथ लेकर कूफ़ा पहुँचे। कूफ़ा वाले मुंतज़िर और चश्मे बराह थे। उन्होंने आपके आने पर बेपनाह अक़ीदत व मुहब्बत का इज़्हार किया। आपने मुख़्तार बिन अबू उबैदा सक़फ़ी और बक़ौल बाज़ इब्ने औसजा के हाँ क़याम फरमाया। मुहिब्बाने अह्ले बैत बड़े जोशे अक़ीदत से बैअत करने

लगे और बैअत के वक़्त बड़ी बड़ी क़समें खाते थे कि जान व माल क़ुरबान कर देंगे और आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। इमाम मुस्लिम ने जब उनके जज़्बाते अक़ीदत व मुहब्बत को देखा तो इमामे आली मक़ाम की ख़िदमत में अ़रीज़ा लिखा इसमें हालात की इत्तिला दी और यह कि अब तक अट्ठारह हज़ार आदमी बैअ़त कर चुके हैं आप ज़रूर तशरीफ़ लाएं ताकि मिल्लते इस्लामिया को यज़ीद के नापाक तसल्लुत से नजात मिले और लोग इमामे बरहक़ और ख़लीफ़ा आदिल व राशिद की बैअ़त के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हों और दीने हक़ की ताईद हो।

किया इज़्हार अरबाबे अक़ीदत ने मसर्रत का
हुआ सामान घर घर ख़ैर से मुस्लिम की दावत का
बकसरत निज़्द मुस्लिम लोग आए शादमां हो कर
इमामे पाक का यह ख़त सुनाते तरजमां हो कर
तरक़्क़ी रात दिन होने लगी अह्ले अक़ीदत की
हज़ारों कूफ़ियों ने हज़रत मुस्लिम से बैअ़त की
मुवाफ़िक़ जब फ़िज़ाए कूफ़ा मुस्लिम को नज़र आई
जमाअ़त लड़ने मरने के लिए भी मुस्तइद पाई
लिखे हालात सब मुस्लिम ने फरज़न्दे पयम्बर को
बुलाया जानिबे कूफ़ा हुसैन व आले हैदर को

यज़ीद को इत्तिला :

हज़रत मुस्लिम के आने का चरचा और अह्ले कूफ़ा का जोशे अक़ीदत से बैअत करना और दिन बदिन उनके जोश में इज़ाफ़ा देख कर यज़ीद के हामियों अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम और अमारा बिन वलीद ने यज़ीद को इत्तिला कर दी कि इमाम हुसैन (रज़ि अल्लाहु अन्हु) की तरफ से मुस्लिम बिन अक़ील कूफ़ा में आ गए हैं और हज़ारों की तादाद में लोग उनके हाथ पर बैअत कर चुके हैं और नोमान बिन बशीर गवर्नर कूफ़ा ने उनके ख़िलाफ़ अब तक कोई ख़ास कार्रवाई नहीं की और न ही वह कोई इंसिदादी तदाबीर अमल में लाए हैं लिहाज़ा अगर सलतनत की बक़ा मन्ज़ूर है तो फ़ौरन उसका तदारुक किया जाए और सख़्त क़दम उठाया जाए वरना फ़िलहाल इराक़ हाथ से जाता है।

यह इत्तिला पाते ही यज़ीद सख़्त ग़ज़बनाक हुआ और उसने अपने ख़ास दोस्तों से मशवरा किया। उन्होंने कहा कि फ़ौरन किसी सख़्त तरीन

आदमी को मुक़र्रर किया जाए जो किसी का लिहाज़ और परवाह न करे और वह उबैदुल्लाह बिन ज़्याद है। चुनांचे यज़ीद ने हज़रत नौमान बिन बशीर गवर्नर कूफ़ा को माज़ूल कर दिया और उनकी जगह इब्ने ज़्याद को जो उन दिनों बसरा का गवर्नर था मुक़र्रर कर दिया और उसको हुक्म दिया कि फ़ौरन कूफ़ा जाए और मुस्लिम को गिरफ़्तार कर ले और मुल्क बद्र कर दे और अगर वह उसमें मुज़ाहमत करें तो क़त्ल कर दे और बैअ़त करने वालों को डराए धमकाए कि वह बाज़ आ जाएं वरना उनको भी ख़त्म कर दे और हुसैन आएं तो उन से भी मेरी बैअ़त तलब करे अगर वह बैअ़त कर लें तो बेहतर वरना उनको भी क़त्ल कर दे।

इब्ने ज़्याद को यज़ीद का यह हुक्म नामा बसरा में मिला। इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन इमाम आली मक़ाम की जानिब से एक क़ासिद अह्ले बसरा के नाम आपका एक ख़त लाया था क्योंकि अह्ले बसरा भी आपकी तरफ माइल थे आपने इस ख़त में अह्ले बसरा को लिखा था।

मैंने अपना क़ासिद तुम्हारे पास यह मक्तूब देकर भेजा है और मैं तुम्हें किताबुल्लाह और उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की तरफ बुलाता हूँ। इसलिए कि सुन्नत मिटा दी गई है और बिदअ़त को ज़िन्दा किया गया है अगर तुम लोग मेरी बात सुनोगे और मानोगे तो मैं तुम्हें राहे हिदायत पर चलाऊंगा। वस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाह।

अशराफ़े बसरा ने इस ख़त को पढ़ा और उसको पोशीदा रखा मगर मुंज़िर इब्नुल-जारूद को यह अन्देशा और गुमान हुआ कि यह क़ासिद कहीं इब्ने ज़्याद का जासूस न हो और उसने इम्तिहानन अशराफ़े बसरा के पास भेजा हो वह ख़त और क़ासिद को लेकर इब्ने ज़्याद के पास आया और उसको ख़त भी दिखाया। इब्ने ज़्याद ने उसी वक़्त इमाम के क़ासिद को गिरफ़्तार करके क़त्ल करवा दिया और जामे बसरा में लोगों के सामने सख़्त तहदीद आमेज़ तक़रीर की। अम्मा बअद!

"अमीरुल-मुमिनीन ने मुझे बसरा के साथ कूफ़ा की हुकूमत भी अता फ़रमाई है, इस लिए मैं कूफ़ा जा रहा हूँ मेरी ग़ैर मौजूदी में मेरा भाई उसमान बिन ज़्याद मेरा नाइब होगा तुम लोग इख़्तिलाफ़ और बग़ावत से इज्तिनाब करो वरना ख़ुदा की क़सम! जिस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ भी मुझे मालूम होगा कि वह इख़्तिलाफ़ और बग़ावत में हिस्सा ले रहा है उसको और उसके सब हामियों को और दोस्तों को भी नहीं छोड़ूंगा। मैं क़रीब को

बईद के एवज़ पकड़ूँगा और सबको मौत के घाट उतारूँगा। यहाँ तक कि तुम सब लोग राहे रास्त पर आ जाओ और मुख़ालिफ़त का नाम व निशान न रहे। याद रखो मैं ज़्याद का बेटा हूँ और ठीक ठीक अपने बाप के मुशाबेह हूँ।" (इब्ने असीर स० **9/4**, तबरी **200/6**)

इब्ने ज़्याद का कूफ़ा में आना :

इब्ने ज़्याद ने अपने घर वालों के अलावा पाँच सौ आदमी अपने साथ लिए बसरा से चला। उनमें से कुछ रास्ते ही में ठहर गए मगर उसने उनकी कुछ परवाह न की और बराबर चलता रहा। क़ादसीया पहुँच कर उसने अपने सिपाहियों को वहीं छोड़ा और बराहे फ़रेब हिजाज़ी लिबास पहना, ऊंट पर सवार हुआ और बीस आदमी अपने साथ लेकर उस रास्ता से जो हिजाज़ से कूफ़ा आता था, मग़्रिब व इशा के दरम्यान रात की तारीकी में कूफ़ा आया। इस मक्र व फ़रेब से इसका मतलब यह था कि इस वक़्त कूफ़ियों में बहुत जोश है, यज़ीद के ख़िलाफ़ एक लहर दौड़ी हुई है, ऐसे तौर पर दाख़िल होना चाहिए कि लोग न पहचानें बल्कि यह समझें कि इमाम हुसैन तशरीफ़ ले आए और वह इस तरह अम्न व आफ़ियत के साथ कूफ़ा में दाख़िल हो जाए, नीज़ लोगों के जज़्बात का भी पता चल जाएगा और यह भी मालूम हो जाएगा कि ज़्यादा कौन लोग पेश पेश हैं।

अह्ले कूफ़ा जो हमा तन चश्मे इंतिज़ार हज़रत इमामे अबरार थे, उन्होंने शब की तारीकी में हिजाज़ी लिबास और हिजाज़ी राह से आते देख कर धोखा खाया, समझे कि हज़रत इमाम तशरीफ़ ले आए। नारा हाए मुसर्रत बलन्द किए, मरासिम अक़ीदत व सलाम बजा लाए और **मरहबन बिक या इब्न रसूलिल्लाहे** और **क़दिम्त ख़ैरा मक़्दम** कहते हुए उसके आगे पीछे चले, शोर सुन कर और लोग भी घरों से बाहर आ गए और एक अच्छे ख़ासे जुलूस की शक्ल बन गई। इब्ने ज़्याद बद निहाद दिल में जलता और कुढ़ता हुआ चुप चाप चलता रहा। उसने अच्छी तरह समझ लिया कि यह लोग इमाम के बेचैनी और शिद्दत से मुंतज़िर हैं और उनके दिल किस क़द्र उनकी तरफ़ माइल हैं। जब वह दारुल-इमारत (गवर्नर हाउस) के क़रीब पहुँचा तो हज़रत नौमान बिन बशीर ने शोर व गुल सुन कर और कसरते हुजूम देख कर समझ लिया कि इमाम तशरीफ़ ले आए। उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर लिया और छत पर चढ़ कर पुकारे कि ऐ इब्ने रसूलुल्लाह। आप यहाँ से चले जाएं। ख़ुदा की क़सम! मैं अपनी अमानत

आपके हवाले नहीं करूँगा और न मैं आप से लडूंगा, यह सुन कर इब्ने ज़्याद क़रीब हुआ और कहा: अरे दरवाज़ा खोल तेरा भला न हो। उसके पीछे एक आदमी खड़ा था। उसने उसकी आवाज़ से उसको पहचान लिया और पीछे हट कर लोगों से कहा ख़ुदा की क़सम! यह तो इब्ने मरजाना है। नौमान ने दरवाज़ा खोल दिया। इब्ने ज़्याद ने क़सरे इमारत में दाख़िल हो कर दरवाज़ा बन्द कर लिया और लोग बड़े अफ़सोस और मायूसी के साथ मुंतशिर हो गए। रात गुज़ार कर सुबह इब्ने ज़्याद ने लोगों को जमा किया और उनके सामने यह तक़रीर की।

"अमीरुल-मोमिनीन यज़ीद ने मुझे कूफ़ा का गवर्नर मुक़र्रर किया है और मुझे हुक्म दिया है कि मैं मज़्लूम के साथ इंसाफ़ करूँ और मुतीअ व फ़रमां बरदार के साथ एहसान करूं और नाफ़रमानों के साथ सख़्ती करूं। मैं इस हुक्म की सख़्ती से पाबन्दी करूंगा। जो शख़्स मुतीअ व फ़रमांबरदार है उसके साथ शफ़क़त से पेश आऊंगा और जो शख़्स नाफ़रमान है उसके लिए मेरा चाबुक और मेरी तल्वार है। तुम्हें चाहिए तुम अपनी ख़ैर मनाओ और अपने ऊपर रहम करो।"

इस तक़रीर के बाद उसने मशाहीरे कूफ़ा को गिरफ़्तार किया और उन सबसे कहा कि तहरीरी ज़मानत दो कि तुम और तुम्हारे क़बीले के लोग किसी मुख़ालिफ़ को अपने यहां पनाह नहीं देंगे और न किसी क़िस्म की मुख़ालिफ़ाना सरगर्मियों में हिस्सा लेंगे और अगर किसी ने किसी मुख़ालिफ़ को पनाह दे रखी है तो वह उसको पेश करेगा। जो लिख कर देगा और उस पर पाबन्दी करेगा वह बरी हो जाएगा और जो ऐसा नहीं करेगा उसका माल व जान दोनों हम पर हलाल होंगे। हम उसको क़त्ल करके उसी के दरवाज़ा पर लटका देंगे और उसके तमाम मुतअल्लेक़ीन को भी नहीं छोड़ेंगे। इब्ने ज़्याद के आने और डराने धमकाने से अह्ले कूफ़ा घबरा गए और ख़ौफ़ज़दा हो गए और उनके ख़्यालात में तब्दीली आने लगी। हालात के पेशे नज़र हज़रत मुस्लिम ने मुख़्तार बिन उबैदा के यहां रहना मुनासिब न समझा और रात के वक़्त वहाँ से निकल कर अकाबिरे कूफ़ा में से एक मुहिब्बे अह्ले बैत हानी बिन उरवा मज़हजी के यहां आए। हानी को आपका आना सख़्त नागवार हुआ कहने लगा अगर आप यहाँ न आते तो अच्छा था। आपने फ़रमाया : मैं खानदाने रिसालत का एक ग़रीबुल-वतन मुसाफिर हूँ, मुझे पनाह दो। हानी ने कहा अगर आप मेरे मकान में दाख़िल न हो गए होते तो मैं यही कहता कि आप चले जाएं। लेकिन अब यह मेरी ग़ैरत के ख़िलाफ़ है कि आपको घर से निकाल दूँ। हानी ने मकान के ज़नाना हिस्से के एक महफ़ूज़ कमरे में आपको छुपा दिया।

शरीक बिन आवर :

शरीक बिन आवर सलमा जो मुहिब्बाने अह्ले बैत में से एक बड़ा मुहिब्ब था और रउसाए बसरा में से एक रईस और मुअज़्ज़ज़ शख़्स था और इब्ने ज़्याद के साथ बसरा से कूफ़ा आया था। वह भी हानी बिन उरवा का मेहमान था। इब्ने ज़्याद और दीगर उमरा के नज़्दीक वह बड़ा मुकर्रम था वह बीमार हो गया। इब्ने ज़्याद ने उसको पैग़ाम भेजा कि मैं शाम को तुम्हारी अयादत को आऊंगा। शरीक ने हज़रत मुस्लिम से कहा कि अगर मैं आपको इब्ने ज़्याद के क़त्ल का मौक़ा फ़राहम कर दूँ तो आप उसे क़त्ल करेंगे? आपने फरमाया हां। शरीक ने कहा वह मरदूद आज शाम को मेरी अयादत के लिए आ रहा है, आप तल्वार हाथ में ले कर छुप कर बैठ जाएं और जब मैं कहूं मुझे पानी पिला दो तो आप एक दम उस पर वार करके उसका काम तमाम कर दें। फिर बड़ी आसानी के साथ दारुल-इमारत और कूफ़ा पर क़ब्ज़ा हो जाएगा और अगर मेरा मर्ज़ अच्छा हो गया तो बसरा जा कर आपके लिए वहाँ का सब इंतिज़ाम कर लूँगा।

शाम को इब्ने ज़्याद ख़ास मुहाफ़िज़ (बाडी गार्ड) के साथ हानी के घर आया और शरीक के बिस्तर के पास बैठ कर मिज़ाज पुर्सी करने लगा। उसका मुहाफ़िज़ भी उसके पास खड़ा था। शरीक ने बुलन्द आवाज़ से कहा। मुझे पानी पिलाओ। पानी पिलाओ। तीसरी मरतबा कहा अफसोस तुम पर तुम लोग मुझे पानी से परहेज़ कराते हो, पानी पिला दो ख़्वाह उसमें मेरी जान चली जाए। हज़रत मुस्लिम न निकले तो शरीक को अफ़सोस हुआ कि कैसा ज़र्री मौक़ा खो रहे हैं।

सलमा को सलाम करने में तुम्हें अब क्या इंतिज़ार है मुझे पिला दो ख़्वाह उसमें मेरी जान भी चली जाए मुहाफ़िज़ ताड़ गया और उसने इब्ने ज़्याद को आंख से इशारतन चलने को कहा। इब्ने ज़्याद उठ खड़ा हुआ। शरीक ने कहा ऐ अमीर! मैं तुम्हें वसीयत करना चाहता हूँ। इब्ने ज़्याद ने कहा : मैं फिर आऊंगा। मुहाफ़िज़ उसे धकेलता हुआ बाहर ले गया और कहा ख़ुदा की क़सम तुम्हारे क़त्ल की साज़िश थी। इब्ने ज़्याद ने कहा यह कैसे हो सकता है मैं तो शरीक की ख़ातिर व इज़्ज़त करता हूँ और फिर यह हानी

बिन उरवा का मकान है और उस पर मेरे बाप के एहसानात हैं। मुहाफ़िज़ ने कहा जो मैं कहता हूँ वह बिल्कुल दुरुस्त है, आपको मालूम हो जाएगा।

इब्ने ज़्याद के जाने के बाद मुस्लिम परदा से बाहर आए तो शरीक ने कहा अफसोस! आपको उसके क़त्ल से किस चीज़ ने रोका? फ़रमायाः दो बातों ने, एक तो मेरे मेज़बान हानी को यह पसन्द नहीं था कि उसके घर में इब्ने ज़्याद का क़त्ल हो। दूसरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान ने कि किसी को दग़ा से क़त्ल करना मोमिन की शान नहीं।

अल्लाह! अल्लाह! इन पाक लोगों के अद्ल व इंसाफ़ और पाबन्दी-ए-शरीअत व सुन्नत को देखिए कि ऐसे बदतरीन दुश्मन के साथ ख़िलाफ़े सुन्नत सुलूक को मुनासिब नहीं समझते वरना एक सख़्त तरीन दुश्मन को ख़त्म करने का यह बेहतरीन मौक़ा था और बाज़ रिवायतों में यह भी आया है कि आपने फरमाया : मैंने सुना कोई कहता है :

या मुस्लिमु ला तख़्रुज हत्ता यब्लुग़ल-किताबु अजलहू।

ऐ मुस्लिम! न निकल यहाँ तक कि कातिबे तक़्दीर का लिखा हुआ अपनी मुद्दत को पहुँच जाए।

तीन दिन के बाद शरीक ने वफात पाई और इब्ने ज़्याद ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। बाद में जब उसको मालूम हुआ कि शरीक ने मुस्लिम को उसके क़त्ल के लिए कहा था तो उसने कहा : ख़ुदा की क़सम! मैं किसी इराक़ी की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढूँगा और वल्लाह! अगर मेरे बाप ज़्याद की क़बर यहाँ न होती तो मैं ज़रूर शरीक की क़बर खोदवा डालता।

मुस्लिम की तलाश और जासूस की जासूसी :

हज़रत मुस्लिम हानी के घर में छिपे हुए थे और मोतक़ेदीन वहाँ भी खुफ़िया तौर पर मुलाक़ात के लिए आते जाते थे और बैअत का सिलसिला बराबर जारी था। बाज़ रिवायतों में आता है कि चालीस हज़ार अफ़राद ने बैअत कर ली थी।

उधर इब्ने ज़्याद बराबर इस तजस्सुस में था कि पता चले किसने उनको पनाह दे रखी है और हानी पर उसको शुबहा तक भी नही था। आख़िर उसने अपने गुलाम माक़ल को इस काम पर मामूर किया और उसको तीन हज़ार दिरहम देकर सुराग़ लगाने के तरीक़े समझा दिए। इस क़िस्म के राज़ मालूम करने के लिए बेहतरीन मक़ामात मस्जिदें होती हैं क्योंकि मस्जिदों में हर क़िस्म के लोग आते हैं। चुनांचे वह गुलाम भी

सीधा जामे मस्जिद में पहुँचा और बैठा रहा। उसने देखा कि एक साहब मुसलसल नमाज़ पढ़ रहे हैं। यह मुस्लिम बिन औसजा अल-असदी थे। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो वह ग़ुलाम आपके पास गया और कहने लगा मैं एक शामी ग़ुलाम हूँ और मुहिब्बे अह्ले बैत हूँ। मेरे पास यह तीन हज़ार दिरहम हैं। मैंने सुना है कि खानदाने रिसालत के एक साहब यहाँ आए हुए हैं और लोगों से फ़रज़न्दे रसूल सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की बैअत लेते हैं, मैं उनकी ख़िदमत में यह रक़म बतौर नज़रान-ए-अक़ीदत पेश करना चाहता हूँ ताकि वह इसको किसी कारे ख़ैर में सर्फ़ करें और मुझे नहीं मालूम कि वह हज़रत कहाँ ठहरे हुए हैं। मुस्लिम बिन औसजा ने कहा मस्जिद में और लोग भी थे तुमने उन से यह क्यों नहीं कहा : मुझसे क्यों कह रहे हो? उसने कहा : आपके चेहरे पर ख़ैर व बरकत के आसार यह बता रहे हैं कि आप यक़ीनन उनके दोस्तों में से हैं इसलिए मैंने आपसे पूछा है, ख़ुदा रा आप मुझे इस सआदत से महरूम न करें और उनका पता ज़रूर बता दें।

ग़र्ज़ कि मुस्लिम बिन औसजा पर उसकी पुर-फरेब गुफ़्तगू असर कर गई और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि यह वाक़ई अह्ले बैत का मुहिब्ब व मोतक़िद है। दूसरे दिन वह उसको हज़रत मुस्लिम के पास ले गए और उसकी अक़ीदतमन्दी की ख़ुद तौसीक़ भी कर दी। उसने तीन हज़ार दिरहम नज़र पेश करके बैअत की। बैअत के बाद वह बड़ी अक़ीदत से रोज़ाना आपकी ख़िदमत में सुबह सबसे पहले आता और रात को सबसे बाद जाता और जो कुछ देखता सुनता उसकी पूरी रिपोर्ट इब्ने ज़्याद तक पहुँचा देता। आपने वह तीन हज़ार दिरहम अबू समामा साइदी को दिए कि उन से हथियार ख़रीदो।

हानी की गिरफ्तारी :

हानी बिन उरवा कूफ़ा में एक मुक़्तदिर शख़्सियत थे और इब्ने ज़्याद के साथ उनके पहले कुछ तअल्लुक़ात भी थे। हज़रत मुस्लिम के आने से पहले वह इब्ने ज़्याद के पास जाते और मिलते रहे। जब से हज़रत मुस्लिम उनके यहाँ आए उस दिन से उन्होंने बीमारी का बहाना करके आना जाना और मिलना छोड़ दिया था। उधर इब्ने ज़्याद को सब हालात मालूम हो चुके थे। एक दिन उसके पास मुहम्मद बिन अशअस (जअदा का भाई जिसने इमाम हसन को ज़हर दिया था) और असमा बिन खारजा आए।

इब्ने ज़्याद ने उनसे पूछा : हानी का क्या हाल है? उन्होंने कहा बीमार हैं? इब्ने ज़्याद ने कहा मुझे मालूम हुआ है कि वह अच्छा भला है और सारा दिन अपने दरवाज़ा पर बैठा रहता है। तुम जाओ और उस से कहो कि इताअत और मुलाक़ात दोनों ज़रूरी हैं उन्हें तर्क न करे। वह गए और जाकर कहा कि इब्ने ज़्याद को इत्तिला मिली है कि आप अच्छे भले हैं और सारा दिन अपने दरवाज़ा पर बैठे रहते हैं और मुलाक़ात को नहीं आते। उनको कुछ बदगुमानी सी हो गई है तो आप अभी हमारे साथ चलें ताकि सफ़ाई हो जाए और बदगुमानी दूर हो जाए। हानी अन्दर गए और हज़रत मुस्लिम से यह बात की और तैयार हो कर आ गए और उनके साथ चले गए। दारुल-इमारत के अन्दर पहुँच कर इब्ने ज़्याद को सलाम किया मगर उसने जवाब न दिया। हानी इस ख़िलाफ़े मामूल सुलूक पर मुतअ़ज्जुब हुए और दिल में खटका और ख़ौफ महसूस किया, कुछ देर तक इसी तरह खड़े रहे। इब्ने ज़्याद ने कहा: हानी यह कैसी बात है कि तुमने मुस्लिम बिन अ़क़ील को अपने घर में छुपा रखा है और रोज़ाना तुम्हारे घर में अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद की हुकूमत के ख़िलाफ़ मंसूबे बनते रहते हैं और हथियार ख़रीदे जाते हैं और लोगों से जंग करने पर बैअत ली जाती है? हानी ने कहा : यह बिल्कुल ग़लत है। इब्ने ज़्याद ने उसी वक़्त उस जासूस माक़ल को तलब किया। वह आ गया तो कहा इसको जानते हो? माक़ल को देख कर हानी के होश उड़ गए। अब वह समझे कि यह ज़ालिम अ़क़ीदत व मुहब्बत के पसे परदा दुशमनी और जासूसी कर रहा था। इस ऐनी मुशाहिद के होते हुए इंकार की गुंजाइश न थी इसलिए उन्होंने इक़रार करके साफ़-साफ ब्यान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम! मैंने मुस्लिम को बुलाया नहीं और न उन्होंने मुझे इत्तिला दी थी कि मैं तुम्हारे घर आ रहा हूँ। अचानक जब वह मेरे दरवाज़ा पर आ गए और मुझ से पनाह तलब की तो मुझे शर्म आई कि खानदाने रिसालत के एक फ़र्द को घर से निकाल दूँ। अब मैं तुम से पक्का वादा करता हूँ और जैसी ज़मानत तुम चाहो पेश कर देता हूँ, मैं अभी जा कर उनको अपने घर से निकाल देता हूँ ताकि जहाँ उनकी मर्ज़ी हो वह चले जाएं और फिर तुम्हारे पास वापस आ जाता हूँ। मुझे इतनी देर के लिए मोहलत दे दो। इब्ने ज़्याद ने कहा ख़ुदा की क़सम! तुम इस जगह से उस वक़्त तक हरकत नहीं कर सकते जब तक यह अ़हद न करो कि तुम मुस्लिम को हमारे हवाले करोगे। हानी ने कहा ख़ुदा की

क़सम! मैं अपने इस मेहमान को जिसको मैं पनाह दे चुका हूँ क़त्ल के लिए कभी तुम्हारे हवाले न करूंगा। इब्ने ज़्याद ने कहाः तुम्हें हवाले करना होगा। हानी ने कहाः ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हारे हवाले नहीं करूंगा। तक्रार से जब बात बढ़ने लगी तो मुस्लिम इब्ने अ़मर अल-बाहली उठा और कहाः ख़ुदा अमीर का भला करे ज़रा मुझे हानी से गुफ़्तगू का मौक़ा दिया जाए? इब्ने ज़्याद ने इजाज़त दी तो बाहली, हानी को लेकर एक तरफ कुछ फ़ासिले पर खड़ा हो गया कि इब्ने ज़्याद दोनों को देख रहा था। बाहली ने हानी को बहुत समझाया कि तुम मुस्लिम को अमीर के हवाले कर दो और इंकार करके अपनी जान और अपनी क़ौम को हलाकत में न डालो। अमीर न उनको क़त्ल करेंगे और न उनको ज़रर पहुँचाएंगे। हानी ने कहा इसमें मेरी सख़्त ज़िल्लत और रुसवाई है। बाहली ने कहाः कोई ज़िल्लत नहीं है। हानी ने कहाः अब तो मैं ख़ुद भी बाहिम्मत व ताक़त हूँ और मेरे आवान व अंसार भी बहुत मौजूद हैं, ख़ुदा की क़सम! अगर मैं तन्हा होता और मेरा कोई यार व मददगार न होता तो भी मैं पनाह दिए हुए मेहमान को दुश्मन के हवाले न करता। बाहली उनको मज्बूर कर रहा और क़समें दे रहा था, मगर हानी बराबर इंकार कर रहे थे। इब्ने ज़्याद यह देख कर बेताब हो गया और बाहली से कहने लगा उसे मेरे पास लाओ। चुनांचे हानी को उसके पास ले गए। उसने ग़ज़बनाक हो कर हानी से कहा मुस्लिम को मेरे हवाले कर दो वरना मैं तुम्हारी गर्दन मार दूँगा। हानी ने कहाः फिर तो तुम्हारे ईद गिर्द भी चमकती हुई तल्वारें होंगी। यह सुन कर इब्ने ज़्याद ने हानी के मुँह पर पै दर पै डंडे मारे कि हानी की नाक फट गई और अबरू की हड्डी टूट गई और कपड़े ख़ून में लत पत हो गए! हानी ने एक सिपाही की तल्वार के क़ब्ज़ा पर हाथ डाला मगर उसने ज़ोर से छुड़ा लिया। इब्ने ज़्याद ने कहा अब तो तूने अपना ख़ून भी हमारे लिए मुबाह कर दिया। फिर हुक्म दिया कि उनको एक कमरे में बन्द कर दो और पहरा बिठा दो। असमा बिन ख़ारजा उठे और इब्ने ज़्याद से कहा : ओ दग़ाबाज़! उनको छोड़ दे तूने हमें हुक्म दिया था कि हम उन्हें तेरे पास लाएं। जब हम ले आए तो तूने उनका मुँह तोड़ दिया और उनका ख़ून बहाया और उनको क़त्ल करने को भी कह रहा है। इब्ने ज़्याद ने कहा : उसको भी पकड़ो और मारो। चुनांचे सिपाहियों ने उनको भी बहुत मारा पीटा और फिर उनको भी क़ैद कर दिया। मुहम्मद बिन अशअ़स ने कहा कि अमीर जो कुछ भी करे

हम तो उस पर राज़ी हैं।

शहर में यह अफ़्वाह उड़ गई कि हानी क़त्ल कर दिए गए। इस अफ़्वाह को सुन कर हानी के क़बीला वाले हजारों की तादाद में इंतिक़ाम इंतिक़ाम का नारा लगाते हुए आए और उन्होंने क़सरे इमारात का मुहासरा कर लिया। उस क़बीला के सरदार उमर बिन हुज्जाज ने पुकार कर कहा मैं उमर बिन अल-हुज्जाज हूँ और मेरे साथ क़बीला मुज़जह के शह सवार हैं। हमने कभी इताअ़त से इंहिराफ़ नहीं किया और न जमाअ़त से अलाहिदगी अख़्तियार की है फिर हमारे सरदार को क़त्ल कर दिया गया है। हम इंतिक़ाम लेंगे। सबने फिर इंतिकाम, इंतिक़ाम के नारे बुलन्द किए। इब्ने ज़्याद इस नाज़ुक सूरत को देख कर बहुत घबराया। उसने क़ाज़ी शरीह से कहा आप हानी को अपनी आँखों से पहले देख लें और फिर हानी के क़बीला वालों से कह दें कि वह ज़िन्दा है और क़त्ल की अफ़्वाह ग़लत है।

क़ाज़ी साहब हानी को देखने गए। हानी अपने क़बीला के लोगों का शोर व हंगामा सुन रहे थे। उन्होंने क़ाज़ी साहब को देख कर कहा : यह आवाज़ें मेरे क़बीला के लोगों की हैं। आप उन से मेरा हाल बता कर सिर्फ़ इतना कह दें कि अगर दस आदमी भी इस वक़्त अन्दर आ जाएं तो मैं छूट सकता हूँ। इस वक़्त भी उनका ख़ून बह रहा था। क़ाज़ी साहब बाहर आए तो इब्ने ज़्याद ने अपना एक ख़ास जासूस हमीद बिन बकर अहमरी को उनके साथ कर दिया और कहा आप लोगों से सिर्फ़ इतना कहें कि हानी ज़िन्दा है। क़ाज़ी साहब फ़रमाते हैं ख़ुदा की क़सम! अगर वह जासूस मेरे साथ न होता तो मैं हानी का पैग़ाम ज़रूर उनके क़बीला तक पहुँचा देता। ग़रज़ क़ाज़ी साहब ने लोगों के सामने आकर कहा कि हानी ज़िन्दा है। उसके क़त्ल की ख़बर जो तुम तक पहुँची है वह ग़लत है। क़ाज़ी साहब की शहादत सुन कर उन लोगों ने कहा: अगर वह क़त्ल नहीं किए गए तो ख़ुदा का शुक्र है और सब मुंतशिर हो गए।

उधर हज़रत मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन हाज़िम को क़सरे इमारत की तरफ भेजा कि जाओ देख कर आओ हानी पर क्या गुज़री। उन्होंने जा कर हालात मालूम किए और हज़रत मुस्लिम को आ कर बताया कि इब्ने ज़्याद ने हानी को मार मार के ज़ख़्मी कर दिया है और अब वह क़ैद में हैं। हानी के क़बीला की औरतें उस वक़्त फरियाद व वावेला कर रही थीं। हज़रत मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन हाज़िम से कहा **या मंसूर उम्मत** पुकार कर

अपने मददगारों को जमा करो। जूंही उन्होंने पुकारा तो वह चार हज़ार अफराद जो ख़ास मुहिब्बाने अहले बैत थे और इर्द गिर्द के मकानों में छुपे हुए उसी वक़्त के इंतिज़ार में थे फौरन निकल आए। आन की आन में यह नारा पूरे कूफ़ा में गूंज गया और वह सब लोग जिन्होंने हज़रत मुस्लिम के हाथ पर बैअत की थी जमा हो गए।

अट्ठारह हज़ार आदमियों के साथ हज़रत मुस्लिम आगे बढ़े और क़सरे अमारत को घेर लिया और लोग भी आ कर मुहासेरीन के साथ शरीक होते गए यहाँ तक कि चालीस हज़ार हो गए और यह सब इब्ने ज़्याद और उसके बाप को बुरा भला कह रहे थे।

इब्ने ज़्याद के पास उस वक़्त सिर्फ़ पचास आदमी थे। तीस पुलिस के अफ़्राद और बीस रुउसाए कूफ़ा। उनके अलावा और कोई ताक़त मुदाफ़िअ़त के लिए न थी। वह सख़्त घबराया और उसने क़सरे इमारत का दरवाज़ा बन्द करा दिया।

वह वक़्त ऐसा था कि अगर हज़रत मुस्लिम हमला करने का हुक्म दे देते तो उसी वक़्त क़सरे इमारत पर क़ब्ज़ा हो जाता और इब्ने ज़्याद और उसके साथियों को जान बचाने के लिए कोई राह न मिलती और यही लशकर सैलाब की तरह आगे बढ़ता और यज़ीद के इक़्तिदार को तिनके की तरह बहा कर ले जाता। मगर आपने हमले का हुक्म न दिया।

अगरचे यज़ीद व इब्ने ज़्याद की अदावत अज़हर मिनश्शम्स थी मगर फिर भी आपने एहतियात को हाथ से न जाने दिया और इस इंतिज़ार में रहे कि पहले गुफ़्तगू से हुज्जत कर ली जाए। शायद कोई सुलह की सूरत पैदा हो जाए और मुसलमानों में किश्त व ख़ून न हो। लेकिन यह इंतिज़ार दुश्मन के लिए बड़ा मुफ़ीद साबित हुआ। उसने उस से फ़ाइदा उठाया और इन अशराफ़े कूफ़ा से कहा जो उसके पास थे कि तुम लोग क़सरे इमारत की छत पर चढ़ कर अपने अपने क़बीला के लोगों को मेरी और यज़ीद की हिमायत में इंआम व इकराम का तमअ़ व लालच दिलाओ और नाफ़रमानी करने पर इंआम व एहसान से महरूम रहने और सख़्त सज़ा पाने का ख़ौफ़ दिलाओ और उनको यह बताओ कि यज़ीद की फौजें शाम से रवाना हो चुकी हैं जो पहुँचने ही वाली हैं। फिर तुम समझ लो कि तुम्हारा क्या हाल होगा। ग़रज़ जिस तरह भी हो सके उनको मुस्लिम से अलग कर दो। चुनांचे कसीर बिन शहाबुल-हारेसी, मुहम्मद बिन अशअस। क़अ़क़अ़ बिन शोर

अज़्ज़हली, शबस बिन रबीई तमीमी। हिजार बिन अल-जबर अल-अजली, शिम्र बिन ज़िल-जौशन ज़बाबी वग़ैरह ने क़सरे इमारत की छत पर खड़े हो कर लोगों से कहना शुरू किया।

"लोगो! अपने घरों को वापस चले जाओ। शर और फ़साद न फैलाओ। खुद को हलाकत में न डालो। अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद की फ़ौजें शाम से कूफ़ा के लिए रवाना हो चुकी हैं। तुम किस तरह उनका मुक़ाबला कर सकोगे। अमीर इब्ने ज़्याद ने ख़ुदा से अ़हद कर लिया है कि अगर तुम इसी वक़्त वापस न हुए और जंग पर आमादा रहे तो वह तुम से बहुत बुरा सुलूक करेगा और सख़्त तरीन सज़ाएं देगा। तुम्हारे बच्चों को क़त्ल करेगा। तुम्हारा माल लूट लेगा। तुम्हारी जाइदादें ज़ब्त कर लेगा। तुम लोग अपने अंजाम पर नज़र डालो और अगर तुम इताअ़त करोगे तो वह तुम्हें एज़ाज़ात और इंआमात देगा। तुम अपने और हमारे हाल पर रहम करो और अपने घरों को वापस चले जाओ।"

अशराफ़े कूफ़ा की ख़ौफ़ज़दा कर देने वाली तक़रीरों से मुतअस्सिर हो कर लोग मुतफ़र्रिक़ और मुंतशिर होने लगे। औरतों और मर्दों ने अपने भाईयों और बेटों को बुला बुला कर समझाना और साथ छोड़ने पर मजबूर करना शुरू कर दिया। लोग जाने लगे। दस इधर से बीस उधर से। इस तरह लोग साथ छोड़ते गए यहाँ तक कि मग़्रिब की नमाज़ के वक़्त तक सिर्फ़ तीस आदमी हज़रत मुस्लिम के साथ रह गए। जब आपने अपने हामियों की यह ग़द्दारी और बद अहदी देखी तो बहुत मायूस हुए। नमाज़ के बाद उन तीस आदमियों के साथ आप कुन्दा के मुहल्ला की तरफ चले। इस मुहल्ला तक पहुँचते पहुँचते यह तीस आदमी भी एक एक करके साथ छोड़ गए और हज़रत मुस्लिम तन्हा रह गए। कसमपुर्सी का आलम है। जिस मुहिब्ब के दरवाज़े पर जाते हैं दरवाज़ा बन्द पाते हैं। भरे शहर में कोई महफ़ूज़ जगह नज़र नहीं आती जहाँ रात गुज़ार सकें।

आह! यह अह्ले कूफ़ा वही मुहिब्बाने अह्ले बैत और शीआ़ने अली थे जिन्होंने सैंकड़ों ख़ुतूत और वफ़ूद भेज कर और बेपनाह अ़क़ीदत व मुहब्बत का इज़हार करके बुलाया था। यह वही थे जिन्होंने बड़ी बड़ी क़समें खा खा कर बैअ़त की थी कि जान व माल कुरबान कर देंगे मगर आपका साथ नहीं छोड़ेंगे और आज यह हालत है कि मामूली धमकियों से मरऊब हो कर और दुनिया के माल व ज़र के लालच में आ कर साथ छोड़ गए। अन्दर

घुस कर दरवाज़े बन्द कर लिए और खानदाने रिसालत के चश्म व चिराग़ हज़रत इमाम आ़ली मक़ाम के नाइब और भाई आ़लमे ग़ुर्बत व मुसाफ़िरत में सख़्त परेशान हैं किधर जाएं। इस परेशानी के साथ एक और तसव्वुर जो दिल को तड़पा रहा था वह यह कि मैंने तो हज़रत इमाम हुसैन को ख़त लिख दिया है और तशरीफ़ आवरी की "पुर ज़ोर इल्तिजा की है, यक़ीनन इमाम मेरी इल्तिजा रद्द नहीं फ़रमाएंगे। और ज़रूर मआ़ अह्ल व अ़याल तशरीफ़ ले आएंगे तो इन कूफ़ियों की बेवफ़ाई की वजह से उन पर क्या क्या मसाइब आएंगे।

हज़रत मुस्लिम इन तसव्वुरात में खोए हुए इंतिहाई परेशानी के आ़लम में थे कि एक औरत तूआ़ नामी अपने मकान के दरवाज़े पर बैठी नज़र आई वह अपने बेटे के इंतिज़ार में थी, आपने उससे पानी मांगा। उसने पानी लाकर दिया। आपने पिया वह बर्तन अन्दर रख कर फिर बाहर आई तो आपको वहीं बैठे पा कर कहा: ऐ अल्लाह के बन्दे क्या तूने पानी नहीं पी लिया? आपने फ़रमाया हाँ पी लिया है कहने लगी तो अब अपने घर जाओ। आप ख़ामोश रहे। उसने तीन बार यही कहा। फिर आप ख़ामोश रहे तो उसने कहा आपका रात के वक़्त मेरे दरवाज़े पर बैठना मुनासिब नहीं, मैं कहती हूँ अपने घर जाओ। आपने फ़रमाया: इस शहर में मेरा कोई घर और ठिकाना नहीं मैं एक मुसाफ़िर हूँ और इस वक़्त सख़्त मुसीबत में मुब्तला हूँ। ऐसे में क्या तुम मेरे साथ कोई नेकी कर सकती हो? शायद मैं किसी वक़्त इसका बदला दे सकूं वरना अल्लाह तआ़ला और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें इसका अज्र देंगे। उसने कहा किस क़िस्म की नेकी? फ़रमाया मैं मुस्लिम बिन अ़क़ील हूँ। कूफ़ा वालों ने मेरे साथ ग़द्दारी की है मुझे धोखा दिया और सबने मेरा साथ छोड़ दिया है और अब मैं जिस हाल में हूँ तुम देख रही हो। कोई जगह मेरे लिए ऐसी नहीं जहाँ मैं रात गुज़ार सकूं? उसने कहा आप मुस्लिम बिन अक़ील हैं? फ़रमाया हाँ! इस ख़ुदा तरस नेक औरत ने आपको अन्दर बुला लिया और अपने मकान के एक कमरे में फ़र्श बिछा दिया। आप उस पर बैठ गए। उसने खाना पेश किया। आपने खाया नहीं और उसको दुआएं दीं।

उधर जब इब्ने ज़्याद को मालूम हुआ कि तमाम अह्ले कूफ़ा मुस्लिम का साथ छोड़ गए और अब कोई उनके साथ नहीं रहा तो उसने ऐलान किया कि जिसने मुस्लिम को अपने घर में पनाह दी उसके लिए अमान नहीं

और जो उनको गिरफ़्तार करके लाए या गिरफ़्तार कराए उसे इंआम दिया जाएगा। इस ऐलान के बाद उसने रईसुश्शर्त (आई जी पुलिस) हिसीन बिन नुमैर को हुक्म दिया कि शहर की नाका बन्दी करके गली कूचों में आदमी मुक़र्रर कर दो और घर घर की तलाशी लो और ख़बरदार यह शख़्स (मुस्लिम) किसी रास्ते और किसी तरीक़े से भी जाने न पाए। अगर यह शख़्स किसी तरह निकल गया और तुम उसको गिरफ़्तार करके मेरे पास न लाए तो तुम्हारी भी ख़ैर नहीं।

इधर कुछ देर के बाद उस औरत का वह लड़का जिसकी वह मुंतज़िर थी, आ गया। जब उसने अपनी मां को बार बार उस कमरे में आते जाते देखा तो सबब पूछा। बुढ़िया ने पहले तो छुपाया, लेकिन जब बेटे ने बहुत ज़्यादा इसरार किया तो राज़दारी का अ़हद व पैमान लेकर बता दिया। यह लड़का शराबी और आवारा क़िस्म का था।

इब्ने ज़्याद के इस ऐलान पर वह ज़ालिम लड़का दिल ही दिल में खुश हो रहा था और हुसूले इंआम का लालच उसके दिल में ऐसा पैदा हुआ कि रात काटनी मुश्किल हो गई। सुबह होते ही वह घर से निकला और जा कर अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन अशअ़स के पास गया। इब्ने अशअस इब्ने ज़्याद के पास क़सरे इमारत में था। अ़ब्दुर्रहमान ने अपने बाप इब्ने अशअ़स को एक तरफ़ बुला कर सब बात बता दी और इब्ने अशअ़स ने इब्ने ज़्याद को बता दिया। इस तरह इब्ने ज़्याद को हज़रत मुस्लिम का पता चल गया।

इब्ने ज़्याद ने उसी वक़्त इब्ने अशअ़स से कहा कि अभी जाओ और मुस्लिम को गिरफ़्तार करके मेरे पास लाओ और अमर बिन उबैदुल्लाह बिन अब्बास अस्सलमी को बनू क़ैस के सत्तर या अस्सी आदमी दे कर उसके हमराह कर दिया। उन्होंने उस बुढ़िया के मकान पर पहुँच कर एहाता कर लिया और आपको गिरफ़्तार करने के लिए चन्द आदमी तल्वारें लेकर अन्दर दाख़िल हुए। आपने उनका मुक़ाबला किया और उनको बाहर निकाल दिया। उन्होंने फिर अन्दर घुस कर सख़्त हमला किया। आपने निहायत शुजाअ़त व बहादुरी के साथ उन सबका मुक़ाबला किया और उनको फिर निकाल बाहर किया। इसी तरह आप इन सबका डट कर मुक़ाबला कर रहे थे। यहाँ तक कि उनके बहुत से आदमी ज़ख़्मी हो गए। इतने में बकीर बिन हमरान अहमरी ने आपके चेहरे पर ऐसा वार किया कि ऊपर और नीचे का होंठ कट गया और सामने के दो दाँत टूट गए। हज़रत

मुस्लिम ने उसके सर पर तल्वार मारी जिससे उसका सर फट गया दूसरा वार उसके कन्धे पर ऐसा किया कि आपकी तल्वार उसके सीना तक उतर गई।

जब उन लोगों ने आपकी शुजाअ़त व बहादुरी का आलम देखा तो आपकी तल्वार ख़ूंख़्वार और ज़र्बे हैदरी से बचने के लिए कुछ तो बाहर भाग गए और कुछ मकान के छत पर चढ़ गए और ऊपर से आप पर संग बारी करने और लकड़ियाँ जला जला कर फेंकने लगे। जब आपने उनकी यह बुज़्दिलाना तर्ज़े लड़ाई देखी तो तल्वार लिए हुए मकान से बाहर गली में आ गए और उन लोगों से लड़ने लगे जो बाहर थे।

मुहम्मद बिन अशअ़स ने जब आपकी शुजाअ़त और अपने साथियों की बुज़्दिली व कमज़ोरी देखी तो पुर-फ़रेब चाल चली और आगे बढ़ के कहने लगा कि अकेले कब तक मुक़ाबला करोगे ख़्वाह मख़्वाह अपने आप को हलाकत में न डालो। सुनो आपके लिए अमान है। हम लोग आपके साथ लड़ने के लिए नहीं आए थे और न यह चाहते हैं कि आपस में तल्वार चले। मक़सद सिर्फ़ यह है कि इब्ने ज़्याद के पास तशरीफ़ ले चलें ताकि गुफ़्तगू के ज़रिए मुआमला तय हो जाए मगर आप यह अशआ़र पढ़ते हुए बराबर आगे बढ़ते जा रहे थे।

"मैंने क़सम खाई है कि सिवाए शरीफ़ और आज़ाद के किसी को क़त्ल न करूंगा। अगरचे मैं देखता हूँ मौत को एक सख़्त ना मरग़ूब चीज़। हर शख़्स को एक न एक दिन ज़रूर सख़्ती व मुसीबत का सामना करना पड़ता है और ठंडा मीठा, गर्म व तल्ख़ से ज़रूर मख़्लूत होता है। जब आफताब की चमकती हुई शुआ (जैसी हकीक़त) को रद किया गया है फिर साबित रहना (कैसे हो सकता है) मुझे अन्देशा है कि मुझ से झूठ कहा जाएगा या मुझे धोखा दिया जाएगा।"

इब्ने अशअ़स ने यक़ीन दिलाया कि आपके साथ न कोई झूठ बोलेगा न धोखा व फ़रेब करेगा। न कोई आपको मारेगा और न क़त्ल करेगा। यह सब आपकी बिरादरी के लोग हैं। हज़रत मुस्लिम लड़ते लड़ते ज़ख़्मों से चूर चूर हो चुके थे और मज़ीद मुक़ाबला की ताक़त बाक़ी न रही थी। इसलिए इसी मकान की दीवार से टेक लगा कर खड़े हो गए और फ़रमाया मेरा इरादा भी जंग नहीं जब मेरे साथ चालीस हज़ार थे और हमने दारुल-इमारत का मुहासरा किया हुआ था उस वक़्त भी मैंने जंग नहीं की

और इसी इंतिज़ार में रहा कि गुफ़्तगू के ज़रिए मुसालेहत की कोई शक्ल पैदा हो जाए और खूंरेज़ी न हो।

इब्ने अशअ़स ने क़रीब आ कर कहाः आपके लिए अमान है। फ़रमायाः मेरे लिए अमान है? इब्ने अशअ़स और सबने कहा आपके लिए अमान है, लेकिन अमर बिन उबैदुल्लाह अस्सलमी ने उस से इत्तिफ़ाक़ न किया।

ग़रज़ इसी हालत में आपको एक ख़च्चर पर सवार किया गया और तल्वार आप से छीन ली गई। तल्वार छिन जाने से आपको अपनी ज़िन्दगी से मायूसी हो गई, आँखों में आँसू भर लाए और फ़रमाया यह पहला धोखा है। इब्ने अशअ़स ने फिर इत्मीनान व यक़ीन दिलाया कि आपके लिए अमान है। आपको कोई ख़तरा पेश नहीं आएगा। आपने फ़रमाया अब अमान कहाँ अब तो सिर्फ़ उम्मीद ही उम्मीद है। तुमने मेरी तल्वार छीन ली अब मैं बेदस्त व पा हूँ। यह कह कर आप रोने लगे और इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा।

अमर बिन उबैदुल्लाह ने रोने पर तअ़ना करते हुए कहा रोते क्यों हो? जो शख़्स मुद्दई हुकूमत व ख़िलाफ़त हो कर मुख़ालेफ़ीन से टक्कर ले उसको मसाइब से घबरा कर रोना नहीं चाहिए? आपने फरमाया मैं अपने लिए नहीं रोता बल्कि अपने अह्ल व अयाल और हुसैन और आले हुसैन के लिए रोता हूँ, जो तुम्हारे बुलाने पर यहाँ आ रहे हैं। यह ख़्याल मुझे रुला रहा है कि उन पर क्या क्या मुसीबतें आएंगी?

कहा मुस्लिम ने मैं रोता नहीं रोना तो इसका है
हुसैन इब्ने अली को मैंने ख़त लिख कर बुलाया है
चला दुनिया से मैं काबा से वह अब चलने वाले हैं
यह रोना है कि अहकामे क़ज़ा कब टलने वाले हैं
मुझे आता है रोना उस क़्यामत ख़ेज़ मंज़र पर
मुसीबत आएगी मेरी बदौलत आले अतहर पर

आपने मुहम्मद बिन अशअ़स से कहा मैं देखता हूँ कि थोड़ी देर के बाद तुम अपनी दी हुई अमान को पूरा करने में आजिज़ हो जाओगे। बहरहाल हमारे साथ इतना सुलूक तो कर दो कि किसी तरह हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन के पास मेरे यह हालात और पैग़ाम भेज दो कि मुहिब्बाने अह्ले कूफ़ा ने मेरे साथ ग़द्दारी व धोखा किया है। यह वही अह्ले कूफ़ा हैं जिन से छुटकारा हासिल करने के लिए आपके वालिद माजिद मौत या क़त्ल की

आरज़ू करते थे। यह झूठे हैं उनके पास हरगिज़ न आएं बल्कि अपने अह्ले बैत के साथ वापस चले जाएं। इब्ने अशअ़स ने कहा खुदा की क़सम! मैं ज़रूर ऐसा करूंगा। चुनांचे इस ने यह वादा पूरा किया। **कमा सैय्येयाती।**

इब्ने अशअ़स हज़रत मुस्लिम को लिए हुए क़सरे अमारत के पास पहुँचा। आपको दरवाज़े के पास छोड़ कर खुद अन्दर गया और इब्ने ज़्याद से सारा हाल ब्यान किया और कहा कि मैंने उनको अमान दी है। इब्ने ज़्याद ने कहाः तुम अमान देने वाले कौन हो? मैंने तुम्हें सिर्फ़ गिरफ़्तार करने के लिए भेजा था अमान देने के लिए नहीं? इब्ने अशअ़स दम बखुद हो गया।

हज़रत मुस्लिम बहुत प्यासे थे। आपने क़सरे अमारत के दरवाज़ा पर ठंडे पानी का एक घड़ा देख कर फ़रमायाः मुझे इसमें से पानी पिला दो। मस्लिम बिन अमर अल-बाहिली ने कहाः देखते हो कैसा ठंडा पानी है मगर खुदा की क़सम! तुम्हें इसमें से एक बूंद भी न देंगे अब तो तुम्हारी क़िसमत में जहन्नम का खौलता हुआ पानी ही है। आपने फ़रमाया तू कौन है? उसने कहा मैं वह हूँ जिसने हक़ को पहचाना जबकि तुमने उसे तर्क कर दिया। मैं वह हूँ जिसने उम्मते मुस्लेमा और इमाम की ख़ैर ख़्वाही की जब कि तुमने नाफरमानी और सरकशी की। (मआ़ज़ल्लाह) मैं मुस्लिम बिन अमर अल-बाहिली हूँ, आपने फरमाया खुदा करे तेरी माँ तुझे रोए तू कैसा ज़ालिम और संग दिल है। ऐ बाहिला के बच्चे तो मुझसे ज़्यादा नारे जहीम और माए जहीम का मुस्तहिक़ है।

अम्मारा बिन उक़्बा को आपकी हालत पर तरस आया। उसने अपने गुलाम को भेजा। वह ठंडे पानी की एक मटकी और कटोरा लाया। कटोरा भर कर आपको दिया जूं ही आपने उसको मुँह लगाया उसमें आपके मुँह से ख़ून गिरा और वह सारा पानी ख़ून हो गया। गुलाम ने दूसरी मरतबा कटोरा भर कर दिया वह भी ख़ून से भर गया। तीसरी मरतबा फिर दिया जब पीने लगे तो सामने के दो दाँत मुबारक जो मुँह में अटके हुए थे वह कटोरे में आ रहे। आपने फरमाया अल्हम्दु-लिल्लाह मेरे मुक़द्दर में अब दुनिया का पानी नहीं है। उसके बाद आपको उसी तिशना लबी की हालत में जबकि आपका मुँह और कपड़े ख़ून में लत पत थे इब्ने ज़्याद के पास ले गए। आपने क़ाइदा के मुताबिक़ उसको सलाम न किया। एक सिपाही बोलाः क्या तुम अमीर को सलाम नहीं करते? फरमायाः अगर अमीर मुझे क़त्ल करना चाहता है तो फिर उस पर मेरा सलाम नहीं और अगर क़त्ल

का इरादा नहीं तो फिर उस पर बहुत से सलाम होंगे। इब्ने ज़्याद ने कहा बिला शुबह मैं तुम्हें ज़रूर क़त्ल करूंगा। फ़रमाया : वाक़ई? इब्ने ज़्याद ने कहा हाँ! फ़रमाया अच्छा फिर मुझे इतनी मोहलत दो कि मैं अपनी क़ौम के किसी शख़्स को कुछ वसीयत कर लूँ। कहा हाँ कर लो।

आपने अमर बिन सअ्द से फ़रमायाः मेरे तुम्हारे दरम्यान क़राबत है इस लिए मैं तुम से तख़्लिया में कुछ कहना चाहता हूँ। इब्ने सअ्द ने इंकार कर दिया। इब्ने ज़्याद ने इब्ने सअ्द से कहा तुम्हें अपने इब्ने अ़म्म की बात सुनने से इंकार नहीं करना चाहिए। इब्ने सअद उठ कर आपके साथ एक तरफ़ चला गया। आपने फ़रमाया मैंने कूफ़े में फ़लां शख़्स से सात सौ दिरहम क़र्ज़ ले कर अपनी ज़रूरतों में सर्फ़ किए हैं वह क़र्ज़ अदा कर देना और मेरे क़त्ल होने के बाद मेरी लाश को दफ़न कर देना और हज़रत हुसैन के पास किसी शख़्स को भेज देना जो उनको रास्ते से वापस कर दे।

इब्ने सअ्द ने इब्ने ज़्याद से इन वसीयतों के बारे में पूछा। इब्ने ज़्याद ने कहा जो वसीयत क़र्ज़ से मुतअल्लिक़ है उसमें तुम्हें इख़्तियार है जैसा चाहो करो। हुसैन के मुतअल्लिक़ यह है कि अगर वह यहाँ नहीं आएंगे तो हम भी उनका पीछा नहीं करेंगे और अगर वह यहाँ आए तो फिर हम उन्हें नहीं छोड़ेंगे।

हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़्याद

उसके बाद इब्ने ज़्याद ने हज़रत मुस्लिम से कहा लोग आपस में मुत्तहिद और मुत्तफ़िक़ थे तुमने आ कर उनमें तफ़रक़ा और इख़्तिलाफ़ पैदा कर दिया और उनको हमारी मुख़ालिफ़त पर बर अंगेख़्ता किया। आपने फ़रमाया ऐसा हरगिज़ नहीं है मैं इसलिए नहीं आया बल्कि यहाँ के बाशिन्दे यह कहते हैं कि तुम्हारे बाप ने उनके बुज़ुर्गों और सालेहीन लोगों को क़त्ल किया और ख़ूंरेज़ी की और उन पर कैसर व किसरा की तरह हुकूमत की, इस लिए उन लोगों ने हमें बुलाया और हम यहाँ आए कि लोगों से अ़द्ल व इंसाफ़ करें और किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अमल करने की दावत दें। इब्ने ज़्यादा यह सुन कर ग़ज़बनाक हो गया। उसने कहा ओ फ़ासिक़ (मआज़ल्लाह) तू और यह दावा? जिस ज़माना में तू मदीना में शराब पिया करता था उस वक़्त तो तुझे ख़्याल न आया था कि लोगों में अद्ल व इंसाफ़ करने आए? आपने फ़रमाया कि मैं शराब पीता था? ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा तआला जानता है

और ख़ुद तुझे भी यक़ीन है कि तू झूठ बोल रहा है और नापाक इत्तिहाम लगा रहा है मैं हरगिज़ ऐसा नहीं हूँ। शराब नोशी करने वाला और शराबी कहलाने वाला वह शख़्स है जिसने बेगुनाह मुसलमानों का ख़ून बहाया है। महज़ ज़ाती अदावत और ग़ैज़ व गुस्सा से उनको क़त्ल करता है जिनका क़त्ल अल्लाह ने हराम फ़रमाया है और ज़ुल्म व सितम को उसने लह्व व लइब समझ रखा है।

इब्ने ज़्याद ने कहा : ख़ुदा मुझको मारे अगर मैं तुझे इस तरह क़त्ल न करूं कि आज तक इस्लाम में इस तरह कोई क़त्ल न हुआ हो। फ़रमाया : बेशक! इस्लाम में ऐसी बुराइयों और बिदअ़तों के जारी करने में तुझ से ज़्यादा कोई मुस्तहिक़ नहीं। हाँ तुम मुझे बहुत बुरी तरह क़त्ल करना। बुरे तरीक़ा से मिसला करना और कोई बुराई न छोड़ना क्योंकि यह तुम्हें ज़्यादा सज़ावार है। इन तल्ख़ हक़ाइक़ से इब्ने ज़्याद झल्ला उठा और बिल्कुल बेक़ाबू हो गया। ज़ालिम ने आपको और आपके वालिद माजिद हज़रत अक़ील को और हज़रत अली **और** हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम को गालियाँ देना शुरू कर दीं। आप ख़ामोश रहे और फिर उस से कोई कलाम न किया।

हज़रत मुस्लिम की शहादत

इसके बाद इब्ने ज़्याद ने जल्लादों को हुक्म दिया कि इनको इस महल की छत पर ले जाकर क़त्ल कर दो और सर और धड़ इस तरह नीचे फेंको कि हड्डियां चकना चूर हो जाएं। आपने इब्ने अशअ़स से कहा अगर तूने अमान न दी होती तो मैं इस तरह इसके क़ब्ज़े में न आता। अब तू मेरे वास्ते अपनी तल्वार उठा और बरीयुज़्ज़िम्मा हो। मगर वह ख़ामोश रहा।

जल्लाद आपको बालाए क़सर (महल के ऊपर) ले गए। आप उस वक़्त तस्बीह व तक्बीर और दुरूद व सलाम पढ़ रहे थे और साथ साथ यह भी कह रहे थे।

ऐ अल्लाह! हमारे और उन लोगों के दरम्यान तू ही फ़ैसला फ़रमाने वाला है जिन्होंने हम से झूठ बोला और हमें धोखा दिया और हमारा साथ छोड़ कर ज़लील किया और फिर हमें क़त्ल किया। आपने अपना रुख़े अनवर मक्का मुकर्रमा की तरफ़ किया।

जल्लाद ने पै दर पै वार करके आपको शहीद कर दिया (इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन) और आपका सर और धड़ मुबारक नीचे फेंक दिया।

हानी की शहादत :

हज़रत मुस्लिम की शहादत के बाद इब्ने अशअ़स ने हज़रत हानी के बारे में इब्ने ज़्याद से कहा आप जानते हैं कि हानी का मरतबा इस शहर में और उसकी क़ौम में क्या है और उसकी क़ौम जानती है कि मैं और मेरे दो साथी उसको तुम्हारे पास लाए थे। मैं तुम्हें खुदा का वास्ता देता हूँ कि मेरी ख़ातिर उसको बख़्श दो वरना उसकी क़ौम की अदावत व इंतिक़ाम का मुझे ख़ौफ़ है। इब्ने ज़्याद ने पहले तो मुआ़फ़ कर देने का वादा किया लेकिन मुस्लिम का ख़्याल करते ही उसका इरादा बदल गया और उसने हानी की गर्दन मारने का भी हुक्म दे दिया। चुनांचे उसके तुर्की गुलाम ने हज़रत हानी को भी शहीद कर दिया।

इब्ने ज़्याद ने हज़रत मुस्लिम और हज़रत हानी के सरों को यज़ीद के पास भेज दिया और सब हालात से मुत्तला कर दिया। हज़रत मुस्लिम की शहादत ज़िल-हिज्जा ६० हिजरी को हुई।

चलने लगी कुछ ऐसी हवा इंक़लाब की
काँटों में घिर गए चमने मुस्तफ़ा के फूल
मासूम मिटने वालों को दी है खुदा ने दाद
बाग़े जिनाँ में भेज दिया उनको बना के फूल

फ़रज़न्दाने मुस्लिम :

हज़रत मुस्लिम ने दारुल-अमारत के मुहासरा के वक़्त और बक़ौल बाज़ तौआ के घर में क़याम के वक़्त अपने दोनों फ़रज़न्दों को क़ाज़ी शरीह के यहाँ भेज दिया था और उनको कहलवा दिया था कि इनको किसी तरह बहिफ़ाज़त मदीनतुन्नबी पहुँचा देना। जब हज़रत मुस्लिम शहीद हो गए। क़ाज़ी साहब ने आपके दोनों साहबज़ादों को बुला कर प्यार किया और बा दीद-ए-पुरनम उनके सरों पर हाथ फेरा। यह देख कर उन्होंने कहा चचा जान! आपकी आँखों में आँसू हैं और आप यूं हमारे सरों पर हाथ फेर रहे हैं कहीं हम यतीम तो नहीं हो गए? क़ाज़ी साहब की हिचकियाँ बंध गईं फरमाया हाँ! प्यारे बच्चो तुम्हारे अब्बा जान को शहीद कर दिया गया है! यह सुनते ही दोनों शहज़ादों पर कोहे अलम टूट पड़ा। **व इब्ताहु व इग़रीबाहु** कह कर दोनों एक दूसरे से गले मिल कर रोने और तड़पने लगे। क़ाज़ी शरीह ने बच्चों से कहा मुझे इब्ने ज़्याद बद निहाद से तुम्हारे बारे में कोई अच्छी उम्मीद नहीं और तुम्हारा यहाँ रहना ख़तरे से ख़ाली नहीं।

मैं चाहता हूँ कि किसी तरह तुम्हारी जान बच जाए और तुम बहिफ़ाज़त मदीना मुनव्वरा पहुँच जाओ।

आलमे गुर्बत में यतीम हो जाने वाले नौ निहालों पर बेकसी की इंतिहा हो गई। एक तरफ़ बाप की जुदाई का ग़म और दूसरी तरफ अपनी जानों का ख़ौफ़, चमने रिसालत के यह फूल कुमला गए।

अब क़ाज़ी साहब के पेशे नज़र उन दोनों बच्चों की जानों का मस्अला था। चुनांचे उन्होंने अपने बेटे असद को बुला कर कहा "मैंने सुना है कि आज बाबुल-इराक़ीन से एक कारवाँ मदीना मुनव्वरा जाने वाला है। इन दोनों बच्चों को वहाँ ले जाओ और किसी हमदर्द और मुहिब्बे अह्ले बैत के सिपुर्द करके उसको हालात से आगाह कर देना और ताकीद कर देना कि इनको बहिफ़ाज़त मदीना मुनव्वरा पहुँचा दे। असद दोनों साहबज़ादों को साथ लेकर बाबुल-इराक़ीन आया और मालूम किया तो पता चला कि कारवाँ कुछ देर पहले जा चुका है। वह दोनों बच्चों के साथ उसी राह पर चला। कुछ दूर गए तो गर्दे कारवां नज़र आई वह कहने लगा कि देखो यह गर्दे कारवां है और ज़्यादा दूर नहीं अब तुम जल्दी से जा कर उस कारवां में मिल जाओ और देखो अपने बारे में किसी को बताना नहीं और क़ाफ़िले से जुदा न होना। मैं अब वापस जाता हूँ। यह कह कर असद वापस आ गया और बच्चे तेज़ी से चलने लगे। कुछ देर के बाद तह गर्द भी ग़ायब हो गई और कारवाँ भी न मिला।

यह फूल से यतीम बच्चे आलमे तंहाई में इंतिहाई परेशानी का शिकार हो कर फिर एक दूसरे से गले मिल कर रोने लगे और नाज़ों से पालने वाले माँ बाप का नाम लेकर जान खोने लगे।

पारा पारा न हों क्यों देख के दोनों के जिगर
उम्र में देखा था कब आँख से ऐसा मंज़र
ऐसा सदमा नहीं गुज़रा कभी नन्हें दिल पर
ख़ाक व ख़ूँ में तड़पता है पिदर पेशे नज़र
सुर मगीं आँखों से थे ख़ून के आँसू जारी
क्या बयाँ हो सके उन बच्चों की आह व ज़ारी

उधर इब्ने ज़्याद को मालूम हुआ कि हज़रत मुस्लिम के साथ उनके दो फरज़न्द मुहम्मद व इब्राहीम भी आए थे और वह भी कूफ़े में किसी घर में हैं। चुनांचे उस बद निहाद ने ऐलान कराया कि जो मुस्लिम के दोनों

बच्चों को हमारे पास लाएगा वह इंआम पाएगा और जो उन्हें छुपाएगा या उनको यहाँ से निकालने में उनकी मदद करेगा वह सख़्त सज़ा का मुस्तहिक़ होगा। इस ऐलान से माल व ज़र की हवस रखने वाले चन्द सिपाही क़िसमत आज़माई के लिए निकले और उन्होंने थोड़ी सी मेहनत के बाद सुराग़ लगा कर बच्चों को पा लिया और पकड़ लाए और कोतवाल (अफ़्सर पुलसि) के हवाले कर दिया। कोतवाल उन बच्चों को इब्ने ज़्याद के पास ले गया। इब्ने ज़्याद ने हुक्म दिया कि उनको उस वक़्त तक जेल में रखा जाए जब तक उनके मुतअल्लिक़ मैं यज़ीद से न पूछ लूँ कि उनके साथ क्या सुलूक किया जाए।

दारोग़-ए-हवालात (सुप्रिंटेंडेंट) मशकूर नामी एक परहेज़गार शख़्स और मुहिब्बे अह्ले बैत था। उसने जब इन यतीमों की मज़्लूमी और बेकसी का हाल देखा तो उसको बहुत तरस आया और उसके जज़्ब-ए-ईमानी में एक तलातुम पैदा हुआ। उसने अज़्मे समीम कर लिया कि उन बच्चों की जान बचानी है ख़्वाह अपनी जान चली जाए। चुनांचे उसने रात के अंधेरे में गुलशने अक़ील के उन फूलों को जेल से निकाला और अपने घर में ला के खाना खिलाया और फिर शहर के बाहर क़ादसीया की राह पर ला कर अपनी अंगूठी बतौरे निशानी दी और कहा कि यह सीधा रास्ता क़ादसीया को जाता है इस राह पर चले जाओ। वहाँ पहुँच कर कोतवाल का पता पूछना वह मेरा भाई है उसको मिल कर मेरी यह अंगूठी दिखाना और अपना हाल सुनाना और कहना कि हमें मदीना मुनव्वरा पहुँचा दे वह तुम्हें बहिफ़ाज़ते तमाम मदीना पहुँचा देगा।

मुसीबत के मारे दोनों भाई चल पड़े लेकिन क़ज़ा व क़द्र के अहकाम जो नाफ़िज़ हो चुके होते हैं उनको बन्दों की तदाबीर नहीं बदल सकतीं। **ला राद्द लेक़ज़ाइही वला मुअक़्क़िब लेहुक्मेही।** रात भर चलते रहे मगर क़ादसीया न आया। जब सुबह की रौशनी हुई तो उन्होंने देखा कि वह उसी क़ादसीया की राह पर थे। क़रीब ही एक खोखला सा दरख़्त नज़र आया। उसके पास एक कुंआँ भी था। वह इस दरख़्त की आड़ में आ कर बैठ गए। सख़्त ख़ौफ लाहिक़ था कि कहीं फिर न कोई पकड़ कर इब्ने ज़्याद के पास ले जाए। इतने में एक कनीज़ पानी भरने आई। जब उसने इनको इस तरह छुपे बैठे देखा तो क़रीब आई और उनका हुस्न व जमाल और शाने शहज़ादगी देख कर कहा: ऐ शहज़ादो! तुम कौन हो और यहाँ

क्यों छुपे बैठे हो? उन्होंने कहा: हम तुझे क्या बताएं कि हम कौन हैं, हम यतीम व बेकस और सितम रसीदा गुम करदा राहे मुसाफिर हैं। कनीज़ ने कहा तुम किसके बच्चे हों तुम्हारे बाप का नाम क्या है? बाप का लफ़्ज़ सुनते ही उनकी आँख पुरनम हो गई कनीज़ ने कहा मैं गुमान करती हूँ कि तुम मुस्लिम बिन अक़ील के फ़रज़न्द हों बाप का नाम सुनते ही दोनों बच्चे हिचकियाँ भरने लगे। कनीज़ ने कहा साहबज़ादो! ग़म न करो। मैं उस ख़ातून की कनीज़ हूँ जो अह्ले बैत नुबुव्वत के साथ सच्ची अक़ीदत व मुहब्बत रखती है। बिल्कुल फ़िक्र न करो। आओ और मेरे साथ चलो तुम्हें उसके पास ले चलूं। दोनों शहज़ादे उसके साथ हो गए कनीज़ ने उनको उस ख़ातून के सामने पेश किया और सारा वाक़या सुनाया। उस ख़ातून को बड़ी खुशी हुई। उसने इस खुशी के सिला में अपनी उस कनीज़ को आज़ाद कर दिया और शहज़ादों के साथ बड़ी मुहब्बत से पेश आई। उनके क़दम चूमे। यतीमों की दास्ताने ग़म सुनकर आँसू बहाए और हर तरह तसल्ली व तशफ़्फ़ी दी कि फ़िक्र न करो और कनीज़ से कहा कि यह राज़ मेरे शौहर हारिस को न बताये।

घर में हारिस के जो वह यूसुफ़ ज़िंदाँ आए
मौत बोली कि सफ़र से मेरे मेहमाँ आए
ज़ने हारिस ने यतीमों के क़दम चूम लिए
कपड़े देखे जो फटे सूज़ने मज़्गाँ से सिए
पानी भी गरम किया पाँव धुलाने के लिए
और बिछा दिया फ़र्श भी उनको सुलाने के लिए
नहर पर सुबह बड़ी धूम से मेहमानी है
हलक़ है तेग़ है जल्लाद है क़ुरबानी है

उधर इब्ने ज़्याद को इत्तिला हो गई कि मशकूर ने दोनों बच्चों को रिहा कर दिया है। इब्ने ज़्याद ने मशकूर को बुलाया और पूछा कि तूने पिसराने मुस्लिम के साथ क्या किया है? मशकूर ने कहा: मैंने अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए उनको आज़ाद कर दिया है। इब्ने ज़्याद ने कहा तू मुझ से न डरा? मशकूर ने कहा जो भी अल्लाह तआला से डरने वाला है, वह किसी और से नहीं डरता। इब्ने ज़्याद ने कहा तुझे उनके रिहा करने में क्या मिला? मशकूर ने कहा ओ सितमगर उन बच्चों के पिदर बुज़ुर्गवार को शहीद करने में तुझे तो कुछ न मिलेगा मगर मुझे

इन बेगुनाह बच्चों को जो अपने जिगर पर यतीमी का दाग़ लिए हुए क़ैद व बन्द की मुसीबत में मुब्तला थे रिहा करने में उनके जद्दे आला से उम्मीदे शफ़ाअत है कि हुज़ूर सदरे कौनैन व सैयदे सक्लैन जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी इस ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाएंगे और मेरी शफ़ाअत फ़रमाएंगे जब कि तू इस दौलत से महरूम रहेगा। इस पर इब्ने ज़्याद ग़ज़बनाक हुआ और कहने लगा मैं अभी तुझे इसकी सज़ा दूँगा। मशकूर ने कहा मेरी हज़ार जानें भी हों तो आले नबी पर फ़िदा हैं।

इब्ने ज़्याद ने जल्लाद को हुक्म दिया कि इसको इतने कोड़े मारो कि यह मर जाए और फिर सर तन से जुदा कर दो। जल्लाद ने कोड़े मारने शुरू कर दिए। पहले कोड़े पर मशकूर ने कहा बिस्मिल्लाहिर- रहमानिर्रहीम दूसरे पर कहाः इलाही मुझे सब्र दे। तीसरे पर कहाः इलाही मुझे बख़्श दे चौथे पर कहाः इलाही मुझे फरज़न्दाने रसूल की मुहब्बत में यह सज़ा मिल रही है। पाँचवें पर कहा इलाही मुझे रसूलुल्लाह और उनके अह्ले बैत के पास पहुँचा दे। फिर मशकूर ख़ामोश हो गये और जल्लाद ने अपना काम पूरा कर दिया। **इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।**

उधर वह नेक ख़ातून दिन भर ब-दिल व जान बच्चों की ख़िदमत और दिलजूई में मशग़ूल रही। रात के वक़्त उनको एक अलाहिदा कमरे में सुला कर आई थी कि उसका शौहर (हारिस) आ गया। निहायत थका मांदा था। ख़ातून ने पूछा : आज सारा दिन तुम कहाँ रहे कि इतनी देर से आए? कहने लगा सुबह मैं अमीरे कूफ़ा इब्ने ज़्याद के पास गया था। वहाँ मुझे मालूम हुआ कि दारोग़ा-ए-जेल मशकूर ने पिसराने मुस्लिम बिन अक़ील को क़ैद से रिहा कर दिया है और अमीर ने ऐलान किया है कि जो उनको पकड़ लाए या उनकी ख़बर दे उसको घोड़ा व जोड़ा और बहुत सारा माल दिया जाएगा। बहुत से लोग उनकी तलाश में निकले हैं। मैं भी उन्हीं की तलाश में इधर उधर सरगरदाँ रहा और इस क़दर भाग दौड़ की कि मेरे घोड़े ने दम तोड़ दिया और मुझे पैदल उनकी जुस्तजू में फिरना पड़ा। इसलिए थकावट से चूर चूर हो गया हूँ। औरत ने कहा : ऐ बन्द-ए-ख़ुदा! अल्लाह से डर तुझे फ़रज़न्दाने रसूलुल्लाह से क्या काम है? कहने लगा तू ख़ामोश रह, तुझे नहीं मालूम इब्ने ज़्याद ने उस शख़्स को घोड़ा व जोड़ा और बहुत सा माल देने का वादा किया है जो उन बच्चों को उसके पास पहुँचाए या उनकी ख़बर दे। औरत ने कहाः किस क़दर बदबख़्त हैं वह लोग जो माले

दुनिया की ख़ातिर उन यतीमों को दुशमन के हवाले करने की जुस्तजू में लगे हुए हैं और दीन को दुनिया के एवज़ में दे रहे हैं। हारिस ने कहा तुझे इन बातों से क्या तअल्लुक़ तू खाना ला। औरत ने खाना ला कर दिया। और वह खा कर सो गया।

जब आधी रात हुई तो बड़े भाई (मुहम्मद बिन मुस्लिम) ने ख़्वाब देखा और बेदार हो कर अपने छोटे भाई (इब्राहीम) को जगाते हुए कहा भाई अब सोने का वक़्त नहीं रहा, उठो और तैयार हो जाओ। अब हमारा वक़्त भी क़रीब आ गया है मैंने अभी ख़्वाब में देखा है कि हमारे अब्बा जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली व हज़रत फ़ातिमा ज़हरा और हज़रत हसन मुज्तबा (रज़ि अल्लाहु अन्हुम) के साथ बहिश्ते बरीं में टहल रहे हैं कि अचानक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम दोनों की तरफ देख कर हमारे अब्बा जान से फ़रमाया मुस्लिम! तुम चले आए उन दोनों बच्चों को ज़ालिमों में छोड़ आए। अब्बा जान ने हमारी तरफ़ देख कर कहा या रसूलुल्लाह! मेरे यह बच्चे भी आने ही वाले हैं। यह सुन कर छोटे ने बड़े भाई के मुँह पर अपना मुँह रख के कहा **वा वैलाहु व मुस्लिमाहु!** और रोना शुरू कर दिया। बड़े के सब्र का पैमाना भी छलक उठा तो दोनों निहायत दर्द के साथ रोए और चिल्लाए। उन बच्चों के रोने चिल्लाने की आवाज़ से उस कम्बख़्त हारिस की आँख खुल गई। औरत से कहने लगा यह किन के रोने की आवाज़ है? मेरे घर में यह कौन हैं जो इस तरह रो रहे हैं? औरत बेचारी सहम गई और कुछ जवाब न दिया। उस ज़ालिम ने ख़ुद उठ कर चिराग़ जलाया और उस कमरे की तरफ़ चला जिससे रोने की आवाज़ आ रही थी। अन्दर दाख़िल हो कर देखा कि दोनों बच्चे गले मिल कर अब्बा अब्बा कह कर तड़प रहे हैं। कहने लगा कि तुम कौन हो? चूंकि उन बच्चों ने यही समझा था कि यह मुहिब्बों का घर और जाए पनाह है और अह्ले खाना हमारे ख़ैर ख़्वाह हैं इसलिए साफ कह दिया कि हम फ़रज़न्दाने मुस्लिम बिन अक़ील हैं। हारिस ने कहाः अजीब! मैं तो सारा दिन तुम्हारी तलाश में सरगरदां रहा। यहाँ तक कि मेरे घोड़े ने दम तोड़ दिया और तुम मेरे ही घर में मौजूद हो। यह सुन कर और उस ज़ालिम के तेवर देख कर बच्चे सहम गए और तस्वीरे हैरत बन गए। उस औरत ने अपने शौहर की जब यह संग दिली और बेरहमी देखी तो उसके क़दमों पर अपना सर रख कर आजिज़ी व ज़ारी करते हुए कहने लगी। इन ग़रीबुल-वतन

यतीमों बेकसों पर तरस खा।

कहने लगा ख़बरदार! अपनी जान की ख़ैर चाहती है तो ख़ामोश रह। औरत बेचारी सहम गई और ख़ामोश हो गई। हारिस ने कमरे का दरवाज़ा मुक़फ़्फ़ल कर दिया ताकि उसकी बीवी उन बच्चों को कहीं और मुंतक़िल न कर सके।

जब सुबह हुई तो उस संग दिल ने तल्वार हाथ में ली और उन दोनों बच्चों को साथ लेकर चला। औरत ने जब देखा तो उस से न रहा गया, नंगे पैर पीछे दौड़ी और मिन्नत व समाजत करती हुई कह रही थी अल्लाह से डर और इन यतीमों पर रहम कर।

जिस वक़्त नमूदार हुए सुबह के आसार
फिर ले के चला हाए यतीमों को जफ़ाकार
चिल्लाती चली पीछे ज़ईफ़ा जिगर अफ़गार
बिन बाप के बच्चे हैं यह ज़ालिम न इन्हें मार
क्यों फ़ातिमा ज़हरा को रुलाता है कफ़न में
दो फूल तो रहने दे मुहम्मद के चमन में

ज़ालिम पर बीवी की ज़ारी का कुछ असर न हुआ बल्कि उलटा उसको मारने को दौड़ा। बेचारी रुक गई उस ज़ालिम का एक खानाज़ाद गुलाम जो उसके बेटे का रज़ाई भाई भी था उसको मालूम हुआ तो वह पीछे दौड़ा। जब हारिस के पास पहुँचा हारिस ने उसको कहाः मुम्किन है कि कोई इन बच्चों को हम से छीन ले और हम उस इंआम से महरूम रह जाएं, लिहाज़ा यह तल्वार लो और इनको क़त्ल कर दो। गुलाम ने कहाः मैं इन बेगुनाह बच्चों को किस तरह क़त्ल कर दूँ! हारिस ने उसको सख़्ती से कहा कि मेरे हुक्म की तामील कर। उसने इंकार किया।

और कहा मुझ में इनके क़त्ल की हिम्मत नहीं मुझे रिसालत पनाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे अक़्दस से शरम आती है। उनके खानदान के बेगुनाह बच्चों को क़त्ल करके कल क़्यामत के दिन किस मुँह से उनके सामने जाऊँगा। हारिस ने कहा अगर तू इनको क़त्ल नहीं करेगा तो मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा। गुलाम ने कहा क़ब्ल इसके कि तू मुझे क़त्ल करे मैं तुझे क़त्ल कर दूँगा। हारिस फन्ने हरब में बहुत माहिर था। उसने अचानक आगे बढ़ कर गुलाम के सर के बाल पकड़ लिए। गुलाम ने उसकी दाढ़ी पकड़ ली और दोनों गुत्थम गुत्था हो कर बुरी तरह लड़ने लगे।

आख़िर ज़ालिम ने अपने गुलाम को शदीद ज़ख़्मी कर दिया। इतने में उसकी बीवी और लड़का भी पहुँच गए। लड़के ने कहाः ऐ बाप! यह गुलाम मेरा रज़ाई भाई है। इसको मारते हुए तुझे शर्म नहीं आई! ज़ालिम ने बेटे को कोई जवाब न दिया और गुलाम पर एक ऐसा वार किया कि वह जामे शहादत नोश करके जन्नतुल-फिरदौस पहुँच गया। बेटे ने कहा ऐ बाप! मैंने तुझ से ज़्यादा संगदिल और जफाकार कोई नहीं देखा। हारिस ने कहा ओ बेटे अपनी ज़ुबान रोक और यह तल्वार ले और उन दोनों बच्चों के सर क़लम कर बेटे ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं यह काम हरगिज़ न करूंगा और न तुझे यह काम करने दूँगा। हारिस की बीवी ने फिर मिन्नत व ज़ारी करते हुए कहा कि इन बेगुनाह बच्चों के ख़ून का वबाल अपने सर न ले अगर तू इनको नहीं छोड़ता तो इतनी बात मान ले कि इनको क़त्ल न कर और उनको ज़िन्दा इब्ने ज्याद के पास ले जा। इससे भी तेरा मक़्सूद हासिल हो जाएगा। कहने लगा मुझे अन्देशा है कि जब अह्ले कूफ़ा इनको देखेंगे तो शोर व गोग़ा करके इनको मुझ से छुड़ा लेंगे और मेरी मेहनत ज़ाए हो जाएगी।

आख़िर वह ज़ालिम तल्वार उठाए चमनिस्ताने रिसालत के उन फूलों को काटने के लिए उनकी तरफ बढ़ा।

जब सामने बच्चों के आया वह सितमगार
और देखी यतीमों ने चमकती हुई तल्वार
दिल हिल गए हिट हिट के यह की दोनों ने गुफ़्तार
कर रहम कि मासूम हैं हम बेकस व लाचार
मज़लूम हैं हामी कोई मुश्किल में नहीं है
ज़ालिम ने कहा रहम मेरे दिल में नहीं है

बीवी दौड़ कर हायल हो गई और कहने लगी ज़ालिम खुदा का ख़ौफ़ कर और अज़ाबे आख़िरत से डर। ज़ालिम ने बीवी पर वार कर दिया। वह ज़ख़्मी हो कर गिर गई और तड़पने लगी। बेटे ने माँ को खाक व ख़ून में तड़पते देखा, आगे बढ़ कर बाप का हाथ पकड़ लिया और कहा ओ बाप! होश में आ तुझे क्या हो गया। ज़ालिम ने बेटे पर भी वार करके मौत की नींद सुला दिया। माँ ने अपनी आँखों के सामने जब अपने लख़्ते जिगर को इस तरह कुशत-ए-शम्शीर जफा होते देखा, उसका कलेजा भी फट गया और वह भी राहिए जन्नत हुई।

अब वह ज़ालिम फिर दोनों बच्चों की तरफ आया। दोनों ने सरापा

इल्तिजा बन कर कहाः अगर तुझे यह अन्देशा है कि हमें ज़िन्दा ले जाने की सूरत में लोग शोर व ग़ोग़ा करके छुड़ा लेंगे और तू माल से महरूम रह जाएगा तो ऐसा कर कि हमारे गैसू काट कर गुलाम बना कर फरोख़्त कर दे। ज़ालिम ने कहाः अब तो मैं तुम्हें हरगिज़ न छोड़ूँगा। जब उसने तल्वार उठाई तो छोटे ने आगे बढ़ कर कहा पहले मुझे मार।

की बड़े भाई ने क़ातिल की यह मिन्नत उस आन
तुझ से इक अर्ज़ मैं करता हूँ अगर तू ले मान
सर मेरा पहले अगर काटे तो बड़ा हो एहसान
छोटे भाई पे मैं क़ुरबान मेरा सर क़ुरबान
शौक़ से और हर इक सदमा व ईज़ा दिखला
पर न भाई का मुझे नन्हा सा लाशा दिखला
नागाह चली ज़ुल्म की तल्वार बड़े पर
बालाए ज़मीन कट के सितारा सा गिरा सर
दरिया में सितम गार ने फेंका तने अतहर
चिल्ला के यह छोटे ने कहा हाए बरादर
देखा जो बड़े भाई का सर दस्ते अ़दू में
वह गिर के तड़पने लगा भाई के लहू में
आया जो शक़ी तेग़ अ़लम करके दोबारा
चिल्लाने लगा भाई को वह भाई का प्यारा
मादर को पुकारा कभी बाबा को पुकारा
जल्लाद ने सर तन पर से उसका भी उतारा
धब्बा भी न ख़ूँ का लगा शम्शीरे अ़दू में
भाई का लहू मिल गया भाई के लहू में
दोनों लाशों से जुदा कर दिए सरहाए सितम
फेंक दिए नहर में ज़ालिम ने वह लाशे उस दम
मिल के बहने लगे वह पैकरे नूरी बाहम
लहरें पानी की लगीं चूमने बढ़-बढ़ के क़दम
डूब कर नहर में कौसर के किनारे पहुँचे
आई मुस्लिम की सदा प्यारे हमारे पहुँचे

अल-ग़रज़! जब उस ज़ालिम ने उन मासूमों को शहीद कर दिया और सरों को जिस्मों से जुद। करके लाशे नहर में फेंक दिए तो सरों को तोबरा

में डाल कर इब्ने ज़्याद की तरफ़ चला। दोपहर का वक़्त था। क़सरे अमारत में दाख़िल हो कर रसाई हासिल की और तोबरा इब्ने ज़्याद के सामने रख दिया। इब्ने ज़्याद ने कहा इसमें क्या है? कहने लगा बउम्मीद इंआम व इकराम तेरे दुशमनों के सर काट कर लाया हूँ। इब्ने ज़्याद ने कहाः यह दुशमन कौन हैं? कहाः फ़रज़न्दाने मुस्लिम बिन अक़ील! इब्ने ज़्याद ने ग़ज़बनाक हो कर कहाः तूने किस के हुक्म से उनको क़त्ल किया है? बदबख़्त! मैंने यज़ीद को लिखा है कि अगर हुक्म हो तो ज़िन्दा भेज दूँ। अगर उसने ज़िन्दा भेजने का हुक्म दे दिया तो मैं क्या करूँगा? तू उनको मेरे पास ज़िन्दा क्यों नहीं लाया? कहने लगा मुझे अन्देशा था कि अह्ले शहर ग़ोग़ा करके मुझ से छीन लेंगे! इब्ने ज़्याद ने कहाः अगर यह अन्देशा था तो उन्हें किसी महफ़ूज़ मक़ाम पर ठेहरा कर मुझे इत्तिला कर देता, मैं ख़ुद मंगवा लेता। तूने बेग़ैर मेरे हुक्म के उनको क्यों क़त्ल किया? इब्ने ज़्याद ने अह्ले दरबार की तरफ़ देखा और मक़ातिल नामी एक शख़्स से कहा कि उसकी गर्दन मार दे। चुनांचे उसकी गर्दन मार दी गई और वह ख़सरुदुनिया वल-आख़िरह का मिस्दाक़ हुआ।

न ख़ुदा ही मिला न वेसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे

(रौज़तुश्शोहदा स० 150)

दुनिया से हाथ उठा लिए सिब्ते रसूल ने
दामन में अपने भर लिए सब्रो रज़ा के फूल
तुम्हारे अज़्मो इरादा की इस्तिक़ामत को
क़दम क़दम पे शुजाअ़त सलाम कहती है

रवानगी-ए-इमाम आली मक़ाम

गुज़श्ता सफ़्हात में ज़िक्र हो चुका है कि अह्ले कूफ़ा के खुतूत और वफ़ूद आने के बाद इमाम आ़ली मक़ाम ने हज़रत मुस्लिम बिन अ़क़ील को हालात की तहक़ीक़ के लिए कूफ़ा भेजा था। उन्होंने अह्ले कूफ़ा की बेपनाह अ़क़ीदत व मुहब्बत को देख कर इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में लिख भेजा था कि हज़ारों अफराद ने मेरे हाथ पर बैअ़त कर ली है और यहाँ के सब बाशिन्दे आपकी तशरीफ़ आवरी के मुंतज़िर हैं, आप फ़ौरन तशरीफ़ ले आएं।

इमाम आ़ली मक़ाम ने इस इत्तिला के बाद कूफ़ा जाने का अ़ज़्मे समीम कर लिया और उधर कूफ़ा में जो इंक़लाब बरपा हो चुका था उसकी आपको कोई इत्तिला न हुई थी। जब अह्ले मक्का को आपकी तैयारी का इल्म हुआ तो उन्होंने आपका कूफ़ा जाना पसन्द न किया क्योंकि वह अह्ले कूफ़ा की बेवफ़ाई ग़द्दारी को ख़ूब जानते थे। उनको इल्म था कि उन कूफ़ियों ने हज़रत अ़ली और हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के साथ क्या सुलूक किया था। चुनांचे उन्होंने आपको सख़्ती से रोका। सबसे पहले आपकी ख़िदमत में उमर बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया मुझे मालूम हुआ आप कूफ़ा जा रहे हैं। इस लिए मैं आप की ख़िदमत में महज ख़ैर ख़्वाही के लिए हाज़िर हुआ हूँ इजाज़त हो तो कुछ अर्ज़ करूं? फ़रमाया कहो तुम सच्चे और हम्दर्द और मुख़्लिस हो। उन्होंने कहा आप ऐसे शहर में जाने का इरादा फरमा रहे हैं जहाँ उस हुकूमत के उमरा और उम्माल मौजूद हैं जिसके क़ब्ज़े में बैतुलमाल का ख़ज़ाना है और आप जानते हैं अवाम तो दिरहम व दीनार के बन्दे होते हैं इसलिए मुझे अन्देशा है कि जिन लोगों ने आपको बुलाया और आपकी नुसरत का वादा किया है वही माल व दौलत के तमअ़ व लालच में आ कर आप से लड़ेंगे इसलिए आप कूफ़ा न जाएं।

इमाम आ़ली मक़ाम ने उनके हमदर्दाना मशवरा का शुक्रिया अदा किया और उनको दुआ दी। (इब्ने असीर स० 15/4, तबरी स० 215/6)

उनके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा आए और फ़रमाया भाई! लोगों में चर्चा हो रहा है कि आप कूफ़ा जा रहे हैं क्या यह दुरुस्त है? आपने फरमायाः हाँ इन्शाअल्लाह मैं एक दो रोज़ में जाने वाला हूँ! इब्ने अब्बास ने कहा आप को ख़ुदा का वास्ता देता हूँ कि ऐसा न कीजिए अल्बत्ता अह्ले कूफ़ा ने मौजूदा हुकूमत के हाकिम को क़त्ल और अपने दुश्मनों को वहाँ से निकाल दिया होता और हालात पर उनका पूरा–पूरा क़ाबू होता तो आपका जाना दुरुस्त था लेकिन अगर उन्होंने आपको ऐसी हालत में बुलाया है कि उनका अमीर उनमें मौजूद है और उसकी हुकूमत क़ायम है और उसके उम्माल ख़राज वसूल करते हैं तो आप जान लीजिए कि उन्होंने आपको सिर्फ़ जंग व जिदाल के लिए बुलाया है मुझे ख़ौफ़ है कि यह बुलाने वाले आपको धोखा देंगे झुठलायेंगे। बेयार व मददगार छोड़ेंगे बल्कि हुकूमते वक़्त से मिल कर आप से लड़ेंगे और सब से बड़े दुश्मन साबित होंगे।

इमाम पाक ने फरमाया मैं ख़ुदा तआला से ख़ैर का तालिब हूँ और देखता हूँ क्या होता है। (इब्ने असीर स० 15/4, तबरी स० 216/6)

उनके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा आए और कहा आपका क्या इरादा है? फ़रमाया मैं कूफ़ा जाने के लिए सोच रहा हूँ क्योंकि वहाँ के अशराफ़ और मेरे शीओं ने मुझे बुलाया है और मैं ख़ुदा से ख़ैर चाहता हूँ। इब्ने ज़ुबैर ने कहा अगर आपके शीओं की तरह मेरी वहाँ कोई जमाअ़त होती तो मैं ज़रूर जाता। फिर इब्ने ज़ुबैर को ख़्याल हुआ कि मेरी इस बात से इमाम को मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई शुबह या कोई बदगुमानी न पैदा हो जाए तो कहा कि अगर आप हिजाज़ ही में रह कर हुसूले ख़िलाफ़त की कोशिश फ़रमाएं तो हम सब आपकी बैअ़त करेंगे और आपका पूरा पूरा साथ देंगे और हर तरह की ख़ैर ख़्वाही करेंगे। इमाम ने फरमाया मैंने अपने वालिद माजिद से सुना है कि मक्का मुकर्रमा में एक मेंढा होगा जो मक्का की हुरमत को हलाल कर देगा मैं नहीं चाहता कि वह मेंढा मैं बनूं। ग़रज़ इब्ने ज़ुबैर ने बहुत इसरार किया कि आप हरमे मक्का ही में बैठे रहें और आपका सारा काम मैं करूंगा। इमाम ने फरमाया मुझे हरम के बाहर क़त्ल होना हरम के अन्दर क़त्ल होने से ज़्यादा पसन्द है और किसी तरह हरम में रहने के लिए तैयार न हुए। इब्ने ज़ुबैर के जाने के बाद आपने फरमाया इब्ने ज़ुबैर को दुनिया की कोई चीज़ इस से ज़्यादा अज़ीज़ नहीं कि मैं हिजाज़ से चला जाऊं और उसके लिए मैदान ख़ाली हो जाए। (इब्ने असीर स० 15/4, तबरी स० 216/6)

उसी दिन शाम को या दूसरे दिन सुबह को हज़रत इब्ने अब्बास आए और कहा भाई! मैं चाहता हूँ कि सब्र करूँ मगर मुझे सब्र नहीं आता इसलिए कि मुझे इस सफ़र में तुम्हारी हलाकत का ख़ौफ़ है। अह्ले इराक़ एक ग़द्दार क़ौम हैं। आप हरगिज़ उनके क़रीब न जाएं बल्कि इसी शहर में मुक़ीम रहें। आप अह्ले हिजाज़ के सरदार हैं। अगर अह्ले इराक़ अपने दावा-ए-मुहब्बत में सच्चे हैं और वाक़ई आपको चाहते हैं तो आप उनको लिखें कि पहले अपने आमिल (गवर्नर) और दुश्मनों को शहर से निकाल दें, फिर आप जाएं लेकिन अगर आप नहीं रुकते और यहाँ से ज़रूर ही जाना चाहते हैं तो यमन चले जाएं वह एक तवील व अरीज़ मुल्क है वहाँ क़िले और पहाड़ हैं और वहाँ आपके बाप के शीआ़ भी मौजूद हैं। वहाँ अलग थलग रह कर लोगों के पास अपना पैग़ाम भेजें मुझे उम्मीद है कि इस तरह अमन व

आफ़ियत के साथ आप अपने मक़्सद में कामयाबी हासिल कर लेंगे।

इमाम आली मक़ाम ने फ़रमाया बख़ुदा मुझे यक़ीन है कि आप मेरे मुश्फ़िक़ और ख़ैर ख़्वाह हैं लेकिन अब तो मैं जाने का मुसम्मम इरादा कर चुका हूँ। इब्ने अब्बास ने कहा: अच्छा ज़रूर ही जाना है तो औरतों और बच्चों को साथ न ले जाएं। मुझे डर है कि कहीं आप भी हज़रत उसमान रज़ि अल्लाहु अन्हु की तरह अपनी औरतों और बच्चों की आँखों के सामने क़त्ल न कर दिए जाएं। फिर कहा आपने इब्ने ज़ुबैर के लिए मैदान खाली करके उसकी आँखें ठंडी कर दीं। आपके होते हुए कोई उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं कर सकता था। खुदाए वहदहू ला शरीक की क़सम! अगर मैं यह समझता कि मैं आपसे दस्त व गरीबाँ हो जाऊँ यहाँ तक कि मेरा और आपका तमाशा देखने के लिए लोग जमा हो जाएं और आप मेरा कहना मान लेंगे तो मैं ऐसा भी कर गुज़रता। चूकि क़ज़ा व क़द्र के अहकाम नाफ़िज़ हो चुके थे, होना वही था जो अल्लाह तआला को मंज़ूर था। इसलिए हज़रत इब्ने अब्बास की कोशिश भी नाकाम साबित हुई और वह उठ कर चले गए। फिर हज़रत अबू बकर बिन हारिस हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि आपके वालिद माजिद मसनदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन थे और मुसलमानों का उनकी तरफ आम रुजहान भी था और उनके अहकाम पर सर भी झुकाते थे। शाम के अलावा तमाम ममालिके इस्लामिया उनके साथ थे। बावजूद इस असर व इक़्तिदार के जब वह मुआविया के मुक़ाबले में निकले तो दुनिया की तमअ़ में लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया और सिर्फ़ साथ ही छोड़ने पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि उनके सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और खुदा की मर्ज़ी पूरी हो कर रही। उनके बाद आपके भाई के साथ इराक़ियों ने जो कुछ किया वह भी आपको मालूम है। इन तजरबात के बाद भी आप अपने वालिद माजिद और अपने भाई के दुश्मनों के पास इस उम्मीद पर जा रहे हैं कि वह आपका साथ देंगे। यक़ीन जानिए कि इराक़ी दुनिया की तमअ़ और माल की हिर्स में आ कर आपका साथ छोड़ देंगे। यह सगाने दुनिया फ़ौरन आपके दुश्मनों से मिल जाएंगे यह आपकी मुहब्बत और मदद का दावा करने वाले ही आपके दुश्मन साबित होंगे।

(मुरव्वजुज़्ज़हब लिल-मस्ऊदी स० **134/5**)

अबू बकर बिन हारिस की पुरज़ोर तक़रीर भी आपके अज़्म व इस्तिक़्लाल में कोई तज़ल्ज़ुल पैदा न कर सकी और आपने फ़रमाया हाँ ख़ुदा की मर्ज़ी

पूरी हो कर रहेगी ग़रज़ कि और भी आपके चन्द अहबाब ने रोका मगर वह भी नाकाम हुए और आपके अज़्म रासिख़ में कोई तब्दीली न आई चुनांचे ज़िल-हिज्जा **60** हिजरी को अह्ले बैत नबुव्वत का क़ाफ़िला मक्का मुकर्रमा से रवाना हुआ।

और जब मुहम्मद (बिन हनफ़ीया) को अपने भाई हुसैन के करबला की तरफ़ रवाना होने की ख़बर पहुँची तो इतना रोए कि उनके आगे तश्त रखा था जिसमें वह वज़ू करते थे वह आँसुओं से भर गया। (नूरुल-अबसार स० **115**)

अमर बिन सईद बिनुल-आ़स ने जो यज़ीद की तरफ़ से हाकिमे मक्का थे अपने भाई यहया बिन सईद के हाथ चन्द सवारों को इस ग़रज़ से भेजा कि क़ाफ़िल-ए-इमाम को रोकें। चुनांचे उन्होंने सख़्त मुज़ाहमत की। यहाँ तक कि उनमें और इमाम के हमराहियों में मार पीट तक हुई। उन्होंने कहा: ऐ हुसैन! क्या तुम खुदा से नहीं डरते? जमाअ़त से निकले जाते हो और उम्मत में तफ़रक़ा डालते हो? आपने फ़रमाया।

यानी मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए तुम मेरे अमल से बरी और मैं तुम्हारे अमल से बरी।

मक़ामे सफ़्फ़ाह पर अरब के मशहूर शाइर फिरज़दक़ से मुलाक़ात हुई। आपने उस से इराक़ के हालात पूछे उसने कहा आपने एक बाख़बर शख़्स से हाल पूछा है हज़रत उन लोगों के दिल तो आपके साथ हैं लेकिन तल्वारें बनी उमैया के साथ हैं ताहम क़ज़ा-ए-इलाही आसमान से नाज़िल होती है खुदा जो चाहता है करता है। आपने फ़रमाया तुमने सच कहा :

तरजमा : अम्र अल्लाह के हाथ में है वह जो चाहता है करता है और हमारे रब की हर रोज़ एक नई ही शान होती है। अगर आसमानी फ़ैसला हमारी पसन्द के मुवाफ़िक़ हुआ तो हम उसकी नेअ़मतों पर उसके शुक्र गुज़ार होंगे और इस अदाए शुक्र में भी वही मुईन व मददगार है और अगर फ़ैसला उम्मीद के ख़िलाफ़ हुआ तो जिस शख़्स का मक़्सूद हक़ हो और तक़्वा उसका भेद और राज़ हो वह (यह) नहीं देखता (कि फ़ैसला मुवाफ़िक़ हुआ या मुख़ालिफ़)

(इब्ने असीर स० **16/4**, तबरी स० **218/6**, अल-बिदायह स० **166/8**)

फ़िरज़दक़ से गुफ़्तगू करने के बाद कारवाने इमाम आगे बढ़ा तो आपके भांजे हज़रत औन व मुहम्मद रज़ि अल्लाहु अन्हुमा अपने वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु का ख़त लेकर आए और

आपको रास्ते में मिल कर ख़त पेश किया उसमें लिखा था :

मैं आपको अल्लाह का वास्ता देकर दरख़्वास्त करता हूँ कि मेरा यह ख़त देखते ही फ़ौरन वापस आ जाएं क्योंकि जहाँ आप जा रहे हैं वहाँ आपकी हलाकत और आपके अह्ले बैत की बरबादी का अन्देशा है, अगर ख़ुदा नख़्वास्ता आप हलाक हो गए तो इस्लाम का नूर बुझ जाएगा और दुनिया में अंधेरा हो जाएगा। आप अह्ले हिदायत के रहनुमा और अह्ले ईमान की उम्मीद हैं आप रवानगी में जल्दी न करें। इस ख़त के पीछे पीछे मैं भी आ रहा हूँ। वस्सलाम। (तबरी स० 219/6)

फ़रज़न्दों के हाथ ख़त रवाना करके हज़रत अब्दुल्लाह ख़ुद अमर बिन सईद हाकिमे मक्का के पास गए और उस से गुफ़्तगू करके कहा कि तुम अपनी जानिब से एक ख़त हज़रत हुसैन के नाम जिसमें उन्हें अमान देने और उनके साथ नेकी और एहसान करने का वादा हो लिख कर उन्हें वापस आने के लिए कहो। अमर बिन सईद ने कहाः मज़्मून तुम ख़ुद लिख लो मैं उस पर मुहर कर दूँगा। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह ने अमर की तरफ़ से यह ख़त लिखा।

अमर बिन सईद (गवर्नर मक्का) की तरफ से हुसैन बिन अली के नाम। मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह आपको उस इरादा से बाज़ रखे जिसमें आपके लिए तबाही का सामना हो। आपको वह राह दिखाए जिसमें आपके लिए बेहतरी हो। मुझे मालूम हुआ है कि आप इराक़ जा रहे हैं। मैं ख़ुदा से उम्मीद करता हूँ कि वह आपको इख़्तिलाफ़ व इंशिक़ाक़ से बचाए इसलिए कि इसमें आपकी हलाकत का अन्देशा है। मैं आपके पास अब्दुल्लाह बिन जाफर और अपने भाई यहया बिन सईद को भेज रहा हूँ। आप उनके साथ वापस आ जाएं। मैं आपको अमान देता हूँ और आपके साथ नेकी और भलाई से पेश आऊँगा इस पर ख़ुदा गवाह और वकील है।

अमर ने इस तहरीर पर मुहर कर दी और हज़रत अब्दुल्लाह और यहया इस ख़त को लेकर इमाम के पास पहुँचे। आपने इस ख़त को पढ़ा और वापस होने से इंकार कर दिया। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा आख़िर क्या बात है आप जाने पर इस क़दर बज़िद क्यों हैं? फरमाया :

मैंने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़्यारत की है। आपने इस ख़्वाब में मुझे एक हुक्म दिया है जिसको मैं ज़रूर पूरा करूंगा ख़्वाह वह मेरे ख़िलाफ़ पड़े या मुवाफ़िक़। उन्होंने कहा वह ख़्वाब

क्या है? फ़रमाया मैंने अब तक न किसी से ब्यान किया है और न करूंगा। यहाँ तक कि मैं अपने रब तआला से जा मिलूँ।

छूट जाए अगर दौलते कौनेन तो क्या ग़म
छूटे न मगर हाथ से दामाने मुहम्मद
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

फिर आपने अमर बिन सईद के नाम इस ख़त का जवाब लिखा। अम्मा बाद!

जो शख़्स अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तरफ दावत दे और नेक आमाल भी करे वह अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मुख़ालिफ़त करने वाला क्यों कर हो सकता है। बेशक मैं एक मुसलमान हूँ। तुमने मुझे अमान, नेकी और सिला की दावत दी है। तो सुनो बेहतरीन अमान अल्लाह की अमान है जो शख़्स दुनिया में अल्लाह से नहीं डरता अल्लाह क़्यामत के दिन उसको हरगिज़ अमान न देगा। हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें दुनिया में अपना ख़ौफ़ अता फरमाए ताकि क़्यामत के दिन हम उसकी अमान के मुस्तहिक़ हो जाएं। अगर इस ख़त से वाक़ई तुमने मेरे साथ नेकी और सिला की नीयत की है तो अल्लाह तुम्हें दुनिया व आख़िरत में जज़ाए ख़ैर अता फरमाए। वस्सलाम।

ऐ मुसलमान! ऐ आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ौर कर और ख़ूब कर कि इमाम आली मक़ाम के दोस्तों और अज़ीज़ों ने अज़राहे अक़ीदत व मुहब्बत कितना समझाया और ज़ोर लगाया कि आप कूफ़ा न जाएं। वह लोग बेवफ़ा हैं, उनकी मुहब्बत के दावे सिर्फ़ ज़ुबानों तक महदूद हैं, क़ल्बी और अमली तौर पर वह साबित नहीं कर सकेंगे। बिला शुबह दोस्तों के मशवरे निहायत मुख़्लिसाना थे उनको इमाम के पाकीज़ा मक़्सद से हरगिज़ इख़्तिलाफ़ न था बल्कि अह्ले कूफ़ा की बेवफ़ाई के पेशे नज़र यह ख़दशा था कि इमाम तकालीफ़ व मसाइब का शिकार हो जाएंगे और अगर ख़ुदानख़्वास्ता आप शहीद हो गए तो इस्लाम का नूर बुझ जाएगा। दुनिया तारीक हो जाएगी और हम नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अपने रहनुमा और आक़ा से महरूम हो जाएंगे मगर बसद जान क़ुरबान जाएं। इमाम के पेशे नज़र तो नाना जान सैय्यदुल-इन्स वलजान हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही व सल्लम का वह हुक्मे मुबारक था जिसको उन्हें बहर सूरत पूरा करना था ख़्वाह कुछ भी होता चुनांचे उन्होंने कर दिखाया।

आजकल के ख़ाइन, बद दयानत और जाहिल लोग जो उन पाक लोगों की मुहब्बत से महरूम और असरारे मुहब्बत और रमूज़े मारिफ़त से बिल्कुल बेख़बर हैं वह अपनी शक़ावत व बद-नसीबी की बिना पर इमाम आली मक़ाम पर तरह तरह के नापाक इल्ज़ाम और बुहतान लगा रहे हैं। मआज़ल्लाह! वह इमाम के बुलन्द तरीन मक़ाम और आपके अज़ीमुश्शान किरदार की हक़ीक़त को क्या जानें! इमाम पाक के इरशादात को देखिए और हक़ व सदाक़त पर इस्तिक़्लाल को देखिए। बिलाशुबह आपने आने वाली नसलों के लिए अज़ीमत की मिसाल क़ाइम कर दी और अपने अमल से साबित कर दिया कि इस तरह ज़ालिमों और जाबिरों के सामने कलिम-ए-हक़ कहा और हक़ व सदाक़त के परचम को बुलन्द रखा जाता है। जिस तरह वह मरतबा के लिहाज़ से बहुत बुलन्द थे इसी क़दर उन्होंने अपने बुलन्द किरदार का मुज़ाहरा किया। उन्होंने दिखा दिया कि हिला देने वाले मसाइब और तड़पा देने वाली अज़ीयतें भी मेरे क़दमों में तज़लज़ुल पैदा नहीं कर सकीं उन्होंने सबक़ दे दिया कि हक़ व सदाक़त पर क़ायम रहते हुए महबूबे हक़ीक़ी पर अपना सब कुछ कुरबान कर देना और उसके लिए हर ज़िल्लत व मुसीबत को बर्दाश्त कर लेना यह शिकस्त नहीं यह ज़िल्लत नहीं बल्कि अज़ीमुश्शान फतह और दोजहान की इज़्ज़त है।

हुई नसीब जो मैदाने करबला में तुम्हें
वह कामयाब शहादत सलाम कहती है
ब-सद अक़ीदत, बसद इफ़्तिख़ार व अदब
तुम्हें रसूल की उम्मत सलाम कहती है

इब्ने ज़्याद बद निहाद को इत्तिला मिल चुकी थी कि कारवाने इमाम कूफ़े की तरफ़ रवाना हो चुका है और बराबर मंज़िलें तय कर रहा है। उसने इस कारवान से निपटने के इंतिज़ामात शुरू कर दिए चुनांचे उसने रईसुश्शर्त (इंस्पेक्टर जनरल पुलिस) हिसीन बिन नमीर तमीमी को हिदायात देकर उसके साथ एक लश्कर रवाना कर दिया। हिसीन बिन नमीर ने क़ादसीया पहुँच कर लश्कर को फैला दिया और रास्तों की नाकाबन्दी कर दी और चन्द सवार बराए जासूसी आगे भेजे ताकि आपकी नक़्ल व हरकत की ख़बरें भी मिलती रहें और अह्ले कूफ़ा और आपके दरम्यान पैग़ामे रसानी का सिलसिला क़ाइम न हो सके।

हज़रत क़ैस की शहादत :

इमाम पाक ने मक़ामे हाजिर में पहुँच कर अपने एक रफ़ीक़ क़ैस बिन मसहर अस्सैदावी को एक ख़त देकर कूफ़ा रवाना किया। उस ख़त में आपने अह्ले कूफ़ा को अपने आने की इत्तिला और तक्मीले मक़्सद के सिलसिले में पूरी तरह जद्दो जहद करने की हिदायत फ़रमाई थी। लेकिन रास्तों की नाकाबन्दी तो पहले ही हो चुकी थी। चुनांचे क़ैस जब क़ादसीया के क़रीब पहुँचे तो उनको गिरफ़्तार कर लिया गया। हिसीन ने उनको इब्ने ज़्याद के पास कूफ़ा भेज दिया। इब्ने ज़्याद ने उनको हुक्म दिया कि क़सरे अमारत की छत पर चढ़ो और कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अली को गालियां दो (मआज़ल्लाह) क़ैस ने अह्ले कूफ़ा को इमाम का पैग़ाम पहुँचाने के लिए मौक़ा ग़नीमत जाना, फ़ौरन इस हुक्म पर क़स्र के ऊपर चढ़ गए और अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद कहा लोगो! सैय्यदना हुसैन बिन अली फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लख़्ते जिगर और ख़ल्क़े ख़ुदा में सबसे बेहतर हैं। मैं उनका क़ासिद हूँ वह मक़ामे हाज़िर तक पहुँच चुके हैं उनकी दावत क़ुबूल करो। फिर उन्होंने इब्ने ज़्याद और उसके बाप पर लानत की और हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु के लिए दुआए बख़्शिश की। इस पर इब्ने ज़्याद ग़ज़बनाक हो गया। उसने हुक्म दिया कि उसको बहुत ऊंचा उछाल कर इस तरह नीचे गिराओ कि उसके टुकड़े टुकड़े हो जाएं। चुनांचे उसके हुक्म की तामील हुई और हज़रत क़ैस को इस तरह बेदर्दी से गिराया गया कि हड्डियाँ भी टूट गईं। कुछ रमक़ बाक़ी थी कि अब्दुल-मलिक बिन उमैर ने आगे बढ़ कर ज़बह कर दिया और इमाम पाक का यह सच्चा मुहिब्ब आप पर निसार हो गया, बिल्कुल ऐसा ही वाक़िया हज़रत अब्दुल्लाह बिन बक़्तर के साथ पेश आया जिनको इमाम ने ख़त देकर हज़रत मुस्लिम के पास भेजा था। रज़ि अल्लाहु अन्हु। (इब्ने असीर 17/4)

अब्दुल्लाह बिन मुतीअ से मुलाक़ात :

मुसाफ़िरे करबला अपने क़ाफ़िले के साथ बराबर आगे बढ़ रहा था। बतन ज़िर्रमा से आगे एक कुएँ पर पहुँचे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुतीअ से मुलाक़ात हुई। उन्होंने जब आपको देखा तो आगे बढ़ कर सलाम किया और कहाः ऐ इब्ने रसूल! मेरे माँ बाप आप पर क़ुरबान हों, आप यहाँ कैसे तशरीफ़ लाए? आपने अपने आने की वजह और असबाब ब्यान किए तो

उन्होंने कहा: ऐ इब्ने रसूलुल्लाह! मैं आपको हुरमते इस्लाम, हुरमते कुरैश और हुरमते अरब का वास्ता देता हूँ कि आप कूफ़े न जाएं वहाँ आप यक़ीनन शहीद कर दिए जाएंगे। आपने फरमाया : **लन युसीबना इल्ला मा कतबल्लाहु लना** हमें हरगिज़ कोई तक्लीफ़ न पहुँचेगी मगर वही जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है। (अख़बारुत्तवाल 255, इब्ने असीर स० 17/4)

जुहैर बिन क़ैन अल-बिजली :

अब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ से मुलाक़ात के बाद इमाम पाक ने मक़ामे ज़रूद में क़्याम किया। वहाँ क़रीब ही एक ख़ेमा नज़र आया। पूछा यह किसका ख़ेमा है? अर्ज़ किया गया : जुहैर बिन क़ैन अल-बिजली का। वह हज से फारिग़ हो कर कूफ़ा जा रहे हैं। आपने उनको बुलाया। उन्होंने उस बुलाने को नापसन्द किया। मगर चले गए जब मुलाक़ात की और क़ाफ़िल-ए-अह्ले बैत का मंज़र देखा तो दफ़अ़तन एक बात याद आई जिस से ख़्यालात की दुनिया बदल गई और चेहरा चमकने लगा। उसी वक़्त अपना ख़ेमा उखड़वा के आपके ख़ेमा के क़रीब नसब किया और बीवी को तलाक़ देकर कहा : तुम अपने भाई के साथ घर चली जाओ और अपने हमराहियों से कहा तुम से जो चाहे चला जाये जो चाहे मेरा साथ दे। वह सब हैरान हो गए कि माजरा क्या है? उन्होंने कहा सुनो! मैं तुम्हें बताऊँ। हमने बलतजर में जंग की थी, फतह के बाद बहुत सा माले ग़नीमत हाथ आया जिस से हम बहुत खुश हुए (हज़रत) सलमान फार्सी हमारे साथ थे। उन्होंने फ़रमाया : (एक वक़्त आएगा)

जब तुम हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घर के जवानों के सरदार (हज़रत हुसैन) को पाओगे और उनके साथ मिल कर (उनके दुश्मनों से) जंग करोगे तो आज जो तुम्हें माले ग़नीमत के मिलने पर ख़ुशी हुई है इस से बहुत ज़्यादा खुशी हासिल करोगे। पस मैं तुम्हें अल्लाह के सिपुर्द करता हूँ। (इब्ने असीर : 17/4, तबरी : 225/6) चुनांचे वह इमाम के साथ रहे और करबला में जामे शहादत नोश करके अबदी खुशियों से हम किनार हो गए। रज़ि अल्लाहु अन्हु।

अबरे रहमत उनके मरक़द पर गुहर बारी करे
हश्र में शाने करीमी नाज़ बरदारी करे

शहादते मुस्लिम की ख़बर :

इमाम पाक अभी तक कूफ़ा के हालात से बाख़बर न थे। जब आप मक़ामे सअ़लबीया में पहुँचे तो आपको हज़रत मुस्लिम और हानी बिन उरवा

की शहादत की ख़बर इस तरह मिली। अब्दुल्लाह बिन सलीम और भुज़री बिन मशअ़मल अल-असदी फ़रमाते हैं कि हम दोनों हज को गए थे। हज से फ़ारिग़ हुए तो हमें सब से ज़्यादा इस बात की ख़्वाहिश थी कि बहुत जल्दी जा कर देखें कि हज़रत हुसैन को क्या मुआ़मला पेश आया है। हम अपनी सवारियों को दौड़ाते हुए चले और मक़ामे ज़रूद में आपके क़ाफ़िले को मिले। जब हम आपके क़रीब हुए तो हमने देखा कि एक आदमी अह्ले कूफ़ा में से आपकी तरफ आ रहा था, आप उसे देख कर ठहर गए लेकिन वह दूसरी तरफ मुड़ गया। हमने आपस में कहा चलो इस से कूफ़ा की ख़बर मालूम करें। हम उसके पास पहुँचे और उसको सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया। हमने पूछा तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा मैं असदी हूँ और मेरा नाम बकीर बिन मुश्अ़बा है। हमने कहा हम दोनों भी असदी हैं। तआ़रुफ़ के बाद हमने उस से कूफ़ा की ख़बर पूछी तो उसने कहा कि मैं अभी कूफ़ा से नहीं निकला था कि मुस्लिम व हानी क़त्ल हो चुके थे।

मैंने देखा कि लोग उन दोनों के पाँव पकड़ कर उनको बाज़ार में घसीटते हुए लिए जा रहे थे। यह ख़बर सुन कर हम दोनों फिर इमाम के क़ाफ़िले के साथ आ मिले। शाम को जब इमाम ने मक़ामे सअ़लबिया में मंज़िल की तो हमने आपको यह सारा वाक़िया सुनाया। इस अलमनाक ख़बर को सुन कर आपने बार बार इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन रहमतुल्लाहे अलैहिमा पढ़ा।

जिस दम यह सुना शह ने मुसाफिर की जुबानी
आँखों से बहे अश्क जिगर हो गया पानी
फ़रमाया कि राहत में हमारी ख़लल आया
मंज़िल पे न पहुँचे कि प्यामे अजल आया

फिर हमने अर्ज़ किया : हम आपको खुदा का वास्ता देते हैं कि आप लौट जाएं। कूफ़ा में कोई भी आपका हामी व मददगार नहीं है। हमें अन्देशा है कि जो आपके दाई थे वही आपके दुश्मन हो जाएंगे उस पर बनू अक़ील ने जोश में आ कर कहा खुदा की क़सम! हम सर ज़मीने कूफ़ा को उस वक़्त तक न छोड़ेंगे जब तक अपने भाई मुस्लिम के ख़ून का बदला न लेंगे या उनकी तरह क़त्ल न हो जाएंगे। उनकी बात सुन कर इमाम ने फरमाया : **ला ख़ैरा फ़िल-ऐशे बअ़दा हाउलाइ।** उन लोगों के बाद ज़िन्दा रहने में कोई लुत्फ़ व भलाई नहीं।

आपके बाज़ साथियों ने कहा वल्लाह! आप मुस्लिम बिन अक़ील की

तरह नहीं। कुज़ा मुस्लिम कुजा आप? जूँही आप कूफ़ा तशरीफ़ ले जाएंगे और लोग आपको देखेंगे सब आपके साथ हो जाएंगे।

(तबरी स० 225/6)

क़ाफ़िला यहाँ से आगे चला। आप जिस जिस दिहात से गुज़रते थे लोग जूक़ दर जूक़ आपके साथ होते जाते थे। ज़बाला पहुँचे तो आपको अब्दुल्लाह बिन बक़्तर की शहादत की ख़बर मिली।

आपकी तक़रीर :

जब आपको इस क़िस्म की अलमनाक ख़बरें मिलीं तो आपने अपने सब रुफ़क़ा को जमा करके फ़रमाया : हमें मुस्लिम बिन अक़ील, हानी बिन उरवा और अब्दुल्लाह बिन बक़्तर के क़त्ल की ख़बरें मिल चुकी हैं। हमारे शीओं ने हमें छोड़ दिया है लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स वापस जाना चाहता है वह ख़ुशी से जा सकता है हमारी तरफ़ से उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

यह आपने इसलिए फ़रमाया था कि वह लोग जो किसी और ख़्याल के पेशे नज़र आपके साथ हो गए थे वह किसी ग़लतफ़हमी में न रहें और न अपने आपको आपके साथ रहने पर मजबूर समझें बल्कि वह आज़ादी से जहाँ चाहें चले जाएं और साथ वही लोग रह जाएं जो आपके मक़ासिद के साथ पूरे पूरे मुत्तफ़िक़ हों और बसद शौक़ राह में जान देने के लिए तैयार हों। आपके इस इरशाद को सुन कर वह लोग जो रास्ते में हमराह हो गए थे मुंतशिर हो गए क्योंकि वह बक़सद जंग नहीं बल्कि यह समझ कर साथ हुए थे कि कूफ़ा पर उनका क़ब्ज़ा हो गया है।

ज़बाला से चल कर बतने उक़्बा में पहुँचे। यहाँ बनी इकरमा में से एक शख़्स आपको मिला उसने आपसे पूछा आप कहाँ जा रहे हैं? आपने बताया कूफ़ा! उसने अर्ज़ किया। मैं आपको ख़ुदा का वास्ता व क़सम देता हूँ आप लौट जाएं। ख़ुदा की क़सम! आपको नेज़ों और तल्वारों से साबेक़ा पड़ेगा। जिन लोगों ने आपको बुलाया है अगर उन्होंने आपके लिए रास्ता साफ़ कर दिया होता और आपके साथ हो कर लड़ने मरने के लिए तैयार होते तो आपका जाना दुरुस्त था लेकिन जो हालात आपने बताए हैं ऐसे हालात में जाना किसी तरह भी मुनासिब नहीं।

फ़रमाया :

ऐ बन्द-ए-ख़ुदा! जो तुम कहते हो वह मुझ से पोशीदा नहीं लेकिन अल्लाह तआ़ला का कोई अम्र मग़लूब नहीं किया जा सकता।

दुनिया से हाथ उठा लिए सिब्ते रसूल ने
दामन में अपने भर लिए सब्र व रज़ा के फूल

बतने उक़्बा के बाद शराफ़ में पहुँचे। यहाँ से सुबह के वक़्त कोहे ज़ी हश्म की तरफ़ चले और पहाड़ के दामन में ख़ेमाज़न हुए। यहाँ हुर्र बिन यज़ीद रेयाही तमीमी जो हुकूमते यज़ीद की तरफ़ से आपको गिरफ़्तार करने के लिए भेजा गया था एक हज़ार मुसल्लह सवारों के साथ पहुँचा और आपके मुक़ाबिल आ कर ठहरा। ज़ुहर के वक़्त इमाम पाक ने अज़ान का हुक्म दिया। अज़ान के बाद आप दस्त-ए-हुर्र के सामने तशरीफ़ ले गए और हम्द व सना के बाद यह तक़रीर फ़रमाई।

तक़रीर :

ऐ लोगो! मैं अल्लाह तआ़ला और तुम लोगों से माज़रत करता हूँ। मैं तुम्हारे पास अज़ ख़ुद नहीं आया बल्कि मेरे पास तुम्हारे ख़ुतूत और क़ासिद पहुँचे कि हमारा कोई इमाम नहीं है। आप हमारे पास आएं मुम्किन है अल्लाह तआ़ला आपके ज़रिआ हमें राहे हिदायत पर लगा दे। अब मैं आया हूँ तो तुम लोग अपने क़ौल व इक़रार पर क़ाइम रहते हुए मुझ से ऐसे अ़हद व पैमान करो जिन से मुझे पूरा इत्मीनान हो जाए तो मैं तुम्हारे शहर को चलूं और अगर तुम ऐसा नहीं करते और मेरा आना तुम्हें नागवार है तो मैं जहाँ से आया हूँ वहीं वापस चला जाऊं।

यह सुन कर सब ख़ामोश रहे किसी ने कोई जवाब न दिया। आपने मुअज़्ज़िन से फ़रमाया : इक़ामत कहो और हुर्र से पूछा मेरे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अलग? हुर्र ने कहा अलग नहीं हम सब आके साथ नमाज़ पढ़ेंगे। चुनांचे आपने नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बाद आप अपने ख़ेमा में तशरीफ़ ले आए और हुर्र अपने मक़ाम पर चला गया। अस्र के वक़्त आपने अपने क़ाफ़िले को तैयारी का हुक्म दिया और मुअज़्ज़िन को अज़ान के लिए फ़रमाया : फिर सबने आपके पीछे नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद अल्लाह तआला की हम्द व सना करते हुए आपने फ़रमाया !

तक़रीर :

लोगो! अगर तुम अल्लाह से डरो और अह्ले हक़ के हक़ को पहचानो तो यह अल्लाह की रज़ामन्दी का बाइस होगा हम अह्ले बैते नुबुव्वत इन दावेदारों के मुक़ाबला में जो तुम पर ज़ुल्म व ज़्यादती के साथ हुकूमत

करते हैं जिसका उन्हें हक़ नहीं, ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। अगर तुम लोग हम को नापसन्द करते हो और हमारे हक़ को नहीं पहचानते हो और (आज) तुम्हारी राय इस से मुख़्तलिफ़ है जो तुम्हारे ख़ुतूत और तुम्हारे क़ासिदों ने मुझ पर ज़ाहिर की थीं तो मैं तुम्हारे पास से वापस चला जाऊं। हुर्र ने कहा ख़ुदा की क़सम! हमें इन ख़ुतूत और क़ासिद की जिनका आप ज़िक्र कर रहे हैं, ख़बर नहीं। आपने उक़्बा बिन सम्आन से फरमाया वह थैले लाओ जिन में उन लोगों के ख़ुतूत हैं। वह लाए। आपने उन थैलियों को सबके सामने उलट दिया। उन खतों को देख कर हुर्र ने कहा हम उन लोगों में से नहीं हैं जिन्होंने आपको यह ख़ुतूत लिखे हैं। हमें तो यह हुक्म मिला है कि जब हम आपसे मिलें आपका साथ न छोड़ें। यहाँ तक कि आपको कूफ़ा में इब्ने ज़्याद के पास पहुँचा दें। आपने फ़रमाया तुम्हारी मौत इस से ज़्यादा क़रीब है। फिर आपने अपने साथियों को सवार हो कर लौटने का हुक्म दिया। हुर्र ने मुज़ाहिमत की। आपने फ़रमाया : तेरी माँ तुझे रोए तू क्या चाहता है? हुर्र ने कहाः ख़ुदा की क़सम! आपके अलावा कोई और अरब यह कलिमा कहता ख़्वाह वह कोई भी होता तो मैं उसकी माँ के लिए भी यही कहता। लेकिन ख़ुदा की क़सम! मैं आपकी वालिदा का ज़िक्र अहसन तरीक़ा से ही करूँगा। आपने फ़रमाया : अच्छा! कहो तुम क्या चाहते हो? हुर्र ने कहा मैं यह चाहता हूँ कि आपको इब्ने ज़्याद के पास ले चलूँ। आपने फ़रमायाः ख़ुदा की क़सम! मैं इसमें तुम्हारी मुवाफ़िक़त नहीं करूंगा। हुर्र ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं भी आपको नहीं छोड़ूँगा। इसी तरह आपस में तक़रार और तल्ख़ कलामी होती रही। हुर्र ने कहाः मुझे आप से लड़ने का हुक्म नहीं है, मुझे सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया है कि जहाँ भी आप मिलें आपको छोड़ूँ नहीं जब तक आपको कूफ़ा न पहुँचा दूँ। तो आप ऐसा रास्ता इख़्तियार करें जो न आपको कूफ़ा पहुँचाए और न मदीना लौटाए। इस दौरान मैं इब्ने ज़्याद को लिखता हूँ और आप भी इब्ने ज़्याद या यज़ीद को लिखें शायद अल्लाह कोई ऐसी आफ़ियत की सूरत पैदा कर दे कि मैं भी आपके मुआमला में इब्तला व आज़माइश से बच जाऊँ। आप ग़दीब और क़ादसीया की राह से बाएं तरफ मुड़ कर चलने लगे। हुर्र भी साथ साथ चल रहा था। (तबरी स० **228/6**, इब्ने असीर स० **19/4**)

मक़ामे बैज़ा में पहुँच कर आपने अपने और हुर्र के साथियों के सामने एक पुरजोश तक़्रीर फरमाई।

तक़्रीर : हम्द व सना के बाद फ़रमाया :

"ऐ लोगो! बिला शुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स ऐसे ज़ालिम बादशाह को देखे जो अल्लाह के हराम करदा को हलाल करने वाला हो, अल्लाह के अह्द को तोड़ने वाला हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के ख़िलाफ़ करने वाला हो अल्लाह के बन्दों पर गुनाह और ज़्यादती से हुकूमत करता हो तो फिर वह बक़द्रे ताक़त फेअ्लन व क़ौलन उसको न बदले तो अल्लाह को हक़ पहुँचता है उस शख़्स को भी उस (बादशाह) के मुदख़ल यानी (दोज़ख़) में दाख़िल कर दे। आगाह हो जाओ! उन लोगों ने शैतान की इताअ़त इख़्तियार की है और रहमान की इताअ़त को छोड़ दिया है। मुल्क में फ़साद बरपा कर दिया है; हुदूदे शरअ़ को मुअ़त्तल कर दिया है; माले ग़नीमत को अपने लिए मख़्सूस कर लिया है, अल्लाह की हराम करदा अश्या को हलाल और हलाल करदा को हराम कर दिया है और मैं बनिस्बत किसी और के ज़्यादा हक़ रखता हूँ कि उनको बदलूँ और बेशक मेरे पास तुम्हारे ख़ुतूत और क़ासिद तुम्हारी बैअ़त के (अ़ह्द के) साथ आए और (इस अहद के साथ आए कि) तुम मुझे दुश्मन के सिपुर्द न करोगे और बे यारो मददगार न छोड़ोगे। पस अगर तुम अपनी बैअ़त पर क़ाइम रहोगे तो रुश्द व हिदायत पाओगे। सुनो! मैं हुसैन बिन अ़ली, फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरज़न्द हूँ। मेरी जान तुम्हारी जानों के साथ है और मेरे अह्ल तुम्हारे अह्ल के साथ हैं। मेरी ज़ात में तुम्हारे लिए नमूना है और अगर तुमने ऐसा न किया और अपने अह्द व पैमान को तोड़ा और मेरी बैअ़त का हलक़ा अपनी गर्दनों से उतार दिया तो मेरी जान की क़सम! यह तुम्हारे लिए कोई नई और अनोखी बात न होगी बल्कि इस से पहले तुम मेरे बाप और मेरे भाई और मेरे इब्ने अम्म मुस्लिम के साथ भी ऐसा कर चुके हो। वह फ़रेब ख़ूरदा है जो तुम्हारे धोखे में आ गया। तुम बदनसीब हो। तुमने अपने हिस्से को ज़ाए कर दिया और जिसने बद-अ़हदी की तो सिवाए इसके और कुछ नहीं कि इस बद अ़हदी का वबाल इसी की ज़ात पर है और मुझे तो अ़ंक़रीब अल्लाह तआ़ला तुम से बेनियाज़ कर देगा। वस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू।"

इस तक़्रीर को सुन कर हुर्र ने कहा मैं आपको आप ही की जान के बारे में ख़ुदा याद दिलाता हूँ और शहादत देता हूँ कि अगर आप हमला करेंगे तो भी

या आप पर हमला होगा तो भी आप ज़रूर क़त्ल कर दिए जाएंगे। आपने फरमाया क्या तुम मुझे मौत से डराते हो? और क्या तुम्हारी शक़ावत इस हद तक पहुँच जाएगी कि मुझे क़त्ल करोगे? मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हें क्या कहूं, लेकिन मैं वही कहता हूँ जो बनी औस में से एक सहाबी-ए-रसूल ने अपने इब्ने अ़म्म से कहा था (यह सहाबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मदद करना चाहते थे। तो उनके इब्ने अ़म्म ने उन से मिल कर कहाः कहाँ जाते हो मारे जाओगे। तो उन्होंने जवाब दिया था)

मैं अ़न्क़रीब अपने मक़सद को पूरा करूँगा और मौत जवाँ मर्द के लिए बाइसे नंग व आर नहीं जबकि उसकी नीयत नेक हो और मुसलमान रह कर जिहाद करे।

और अपनी जान से सालेहीन बन्दों की मदद करे और हलाक होने वाले की मुख़ालिफ़त करे और मुज्रिम से इलाहिदा रहे।

अगर मैं ज़िन्दा रहा तो मुझे कुछ निदामत न होगी और अगर मर गया तो कोई सदमा न होगा। लेकिन तुझे यही काफ़ी है कि तू ज़िल्लत व रुसवाई के साथ ज़िन्दगी बसर करेगा। (इब्ने असीर स० **20/4**)

दर्से इबरत :

इमाम आ़ली मक़ाम के साथ अ़क़ीदत व मुहब्बत का दावा करने वालों और खुसूसन आपकी औलाद, सादात हज़रात को आपके हालात और आपके खुतबात से सबक़ हासिल करना चाहिए कि आपने किस तरह हक़ पर साबित क़दम रहते हुए फ़िस्क़ व फुजूर का मुक़ाबला किया और आने वाली नसलों के लिए अज़ीमत की बेनज़ीर मिसाल क़ाइम की और फ़रमाया मैं बनिस्बत दूसरों के ज़्यादा हक़दार हूँगा कि गुलशने इस्लाम की हिफ़ाज़त करूँ इसलिए कि यह गुलशन मेरे नाना जान सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का है और मेरे नाना जान ने अपने ख़ून से इस की आबयारी की है और लरज़ा देने वाली तक्लीफ़ों को बर्दाश्त करके उसको परवान चढ़ाया और ताज़गी व शगुफ़्तगी बख़्शी और फिर आपके सच्चे जानशीनों हज़रत सिद्दीक़ व फ़ारूक़ और उसमान व हैदर रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने उसकी हिफ़ाज़त का पूरा पूरा हक़ अदा किया और अब मेरा ज़माना है और ख़िज़ाँ चाहती है कि उस गुलशन को शिकार करे और उसकी ताज़गियाँ और रअ़नाइयाँ छीन ले मगर मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। मैं अपना और अपने जिगर के टक्ड़ों का ख़ून दे दूँगा लेकिन इस गुलशन को ताज़ा और शगुफ़्ता

रखूँगा। बिलाशुबह आपने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया और इस उम्दगी से किया कि रहती दुनिया तक इस्लाम की बहारें आपकी मरहूने मिन्नत रहेंगी।

इसी मक़सद को ज़िन्दा यादगारे करबला समझो
हुसैन इब्ने अली की ज़िन्दगी का मुद्दआ समझो

अब अगर आपकी मुहब्बत के दावेदार खुद फ़िस्क़ व फुजूर में मुब्तला हों या फुस्साक़ व फुज्जार का साथ दें तो क्या इमाम की बारगाह में उनके ज़ुबानी व कलामी मुहब्बत के दावों की कोई वक़्अ़त या क़द्र होगी? हरगिज़ नहीं!

मुहब्बत को समझना है तो नासेह खुद मुहब्बत कर
किनारे से कभी अंदाज़-ए-तूफ़ाँ नहीं होता

याद रखिए! सिर्फ़ चन्द शरई व ग़ैर शरई रसमों के बजा लाने से या आप पर आने वाले मसाइब को सुन कर चन्द आँसू बहा लेने से इमाम पाक की रूह खुश नहीं होगी और न ही इमाम की बारगाहे अक़्दस में सआ़दत व क़ुबूलियत हासिल होगी।

ख़त्म है आँसू बहाने पर ही तेरी जुस्तजू
और हुसैन इब्ने अ़ली ने तो बहाया था लहू

अगर वाक़ई इमाम पाक से सच्ची मुहब्बत है तो इमाम की पैरवी करते हुए हक़ व सदाक़त के परचम को बुलन्द कीजिए और जिस मुक़द्दस और अ़ज़ीम मक़सद के लिए इमाम ने इतनी बड़ी कुरबानी दी उस मक़सद को ज़िन्दा और क़ाइम रखिए ख़्वाह जान व माल और अपना सब कुछ ही क्यों न कुरबान करना पड़े।

राहे ख़ुदा में अ़ज़्मते इस्लाम के लिए
हम भी करें वही जो किया है हुसैन ने
यह शहादत गहे उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना

बिला शुबह घर वालों पर ज़्यादा ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कि वह अपने घर की हिफ़ाज़त करें। सादाते किराम और इमाम पाक के मुहिब्बों का यह फ़र्ज़ है कि वह अ़मली तौर पर गुलशने इस्लाम की हिफ़ाज़त करें लेकिन अफ़्सोस कि बाज़ सादात और मुद्दइयाने मुहब्बत सख़्त बद अ़मली का शिकार हैं और उन्होंने यह समझ रखा है कि इमाम जो कुरबानी दे गए हैं वह क़यामत तक के नाम निहाद मुहिब्बों की बख़्शिश के लिए काफ़ी है और अब उन्हें अ़मल की कोई ज़रूरत नहीं जैसा कि ईसाइयों का यह

नज़रिया है कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम सलीब पर चढ़ कर क़यामत तक पैदा होने वाले ईसाईयों के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर गए। (मआ़ज़ल्लाह) याद रखिए।

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में न नूरी है न नारी है

तिरमाह बिन अ़दी की आमद :

कारवाने अह्ले बैत ग़दीबुल-हिजानात पहुँचा तो इमाम पाक ने चार सवारों को देखा जो तिरमाह बिन अदी की रहनुमाई में आपकी तरफ़ कूफ़ा की ख़बरें लेकर यह अश्आ़र पढ़ते हुए आ रहे थे।

ऐ मेरी ऊंटनी से मेरे डांटने, हंकारने से न घबरा और बहुत तेज़ी से चल और सुबह होने से पहले पहुँच।

अपने बेहतरीन सवारों के साथ बेहतर सफ़र करते हुए उस शख़्स के पास जा कर उतार।

जो करीमुल-हसब शरीफ़ुन्नसब और इज़्ज़त व मरतबा में बहुत बुलन्द और सख़ावत व फ़ैय्याज़ी में कुशादा दिल है। अल्लाह उसको एक अमरे ख़ैर के लिए लाया है। वह उसको रहती दुनिया तक बाक़ी व सलामत रखे। यह अश्आ़र सुन कर इमाम पाक ने फ़रमाया।

सुनो ख़ुदा की क़सम! बेशक मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला ने हमारे साथ जो कुछ चाहा है उसमें हमारे क़त्ल होने या ग़ालिब होने में ख़ैर ही ख़ैर है।

चमन में फूल का खिलना तो कोई बात नहीं
ज़हे वह फूल जो गुलशन बनाए सहरा को

हुर्र ने आगे बढ़ कर कहा : यह लोग आपके साथी नहीं हैं बल्कि यह कूफ़ा से आए हैं मैं इन्हें आपसे मिलने नहीं दूँगा बल्कि गिरफ़्तार करूँगा या वापस करूँगा। आपने फ़रमाया : मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। यह लोग मेरे मददगार हैं मैं अपनी जान की तरह इनकी हिफ़ाज़त करूँगा और तुम मुझ से कह चुके हो जब तक इब्ने ज़्याद का ख़त तुम्हारे पास नहीं आ जाता तुम मुझ से कोई तअ़र्रुज़ न करोगे। हुर्र ने कहा : यह दुरुस्त है लेकिन यह लोग आपके साथ तो नहीं आए? फ़रमाया अगरचे साथ नहीं आए मगर उनके बराबर हैं जो मेरे साथ आए हैं अगर तुमने उन से कुछ भी तअ़र्रुज़ किया तो मैं तुम से जंग करूँगा। यह सुन कर हुर्र उन से इलाहिदा हो गया।

आपने उन से अह्ले कूफ़ा के हालात पूछे। उन में से मज्मा बिन अब्दुल्लाह आमरी ने कहा : बड़े लोग तो बहुत बड़ी बड़ी रिशवतें लेकर हुकूमत के साथ मिल गए और अब वह सब आपके ख़िलाफ़ मुत्तहिद व मुश्तइल हैं। रहे अवाम तो उनके दिल तो आपकी तरफ माइल हैं मगर कल वह भी तल्वारें लिए हुए आपके मुक़ाबला में आ जाएंगे।

आपने उन से अपने क़ासिद क़ैस बिन मसहर अस्सैदावी के मुतअ़ल्लिक़ पूछा? उन्होंने कहा हिसीन बिन नमीर ने उसको गिरफ़्तार करके इब्ने ज़्याद के पास भेज दिया था। इब्ने ज़्याद ने उसको आप पर और आपके वालिद माजिद पर लानत भेजने का हुक्म दिया। उसने आप पर और आपके वालिद माजिद पर सलात भेजी और इब्ने ज़्याद और उसके बाप पर लानत की और लोगों को आपका पैग़ाम और आपके आने की ख़बर देकर आपकी नुसरत के लिए पुकारा। इस पर इब्ने ज़्याद ने हुक्म दिया कि उसको ईवान की चोटी से नीचे गिराया जाए। चुनांचे क़ैस को इस तरह गिराया गया कि उनकी हड्डियाँ टूट गईं, फिर उन्हें क़त्ल कर दिया गया। यह सुन कर आपकी आँखें आँसुओं से भर गईं और मुबारक रुख़सारों पर अश्कों की लड़ियाँ बहने लगीं और ज़ुबान पर यह आयत जारी हो गई।

तरजमा : पस उन में से कोई तो अपनी जान नज़्र कर गया और कोई मुंतज़िर है और उन्होंने कोई तग़ैय्युर व तबद्दुल नहीं किया। फिर आपने दुआ़ फरमाई।

ऐ अल्लाह! हमें और उनको नेअमते बहिश्त अ़ता फरमा और हमें और उनको अपनी रहमत के मुस्तक़र में जमा फ़रमा और अपने सवाब के ज़ख़ीरा का बेहतरीन हिस्सा अ़ता फ़रमा।

ज़िन्दा हो जाते हैं जो मरते हैं हक़ के नाम पर
अल्लाह अल्लाह मौत को किसने मसीहा कर दिया

तरमाह बिन अ़दी का मशवरा :

तरमाह बिन अ़दी ने अ़र्ज़ की हज़रत! हालात बहुत नाज़ुक सूरत इख़्तियार कर गए हैं और आपके साथ सिर्फ़ चन्द अफ़्राद हैं जो बग़र्ज़े जंग भी नहीं आए सिर्फ़ उनके मुक़ाबले में ही हुर्र का लशकर एक हज़ार पर मुश्तमिल है (और सब मुसल्लह हैं) यह ही बहुत ज़्यादा है और मैंने तो कूफ़े से निकलते वक़्त कूफ़े के बाहर इतना बड़ा लशकर देखा कि इससे पहले

मेरी आँखों ने किसी मक़ाम पर इतना बड़ा लश्कर नहीं देखा। मैंने एक शख़्स से पूछा कि यह लश्कर किसके मुक़ाबले के लिए जमा हो रहा है? तो उसने कहाः हुसैन बिन अ़ली के मुक़ाबले के लिए! इसलिए मैं आपको अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि अगर हो सके तो एक क़दम भी कूफ़ा की तरफ़ आगे न बढ़ें। अगर आप किसी ऐसे मक़ाम पर जाना चाहें जहाँ अल्लाह आपको हिफ़ाज़त से रखे और जो कुछ आप करना चाहते हैं इसके मुतअ़ल्लिक़ भी कोई राय और आख़िरी फ़ैसला कर लें तो आप मेरे साथ चलँ। मैं आपको अपने बुलन्द पहाड़ पर जिसे कोहे आजाह कहते हैं ले चलूं। ख़ुदा की क़सम! वह पहाड़ ऐसा है जिसकी वजह से हम सलातीने ग़ुस्सान व हमीर, नौमान बिन मुंज़िर और हर असवद व अहमर अक़्वाम से महफ़ूज़ रहे हैं। वल्लाह! हमको कभी कोई मुतीअ़ नहीं कर सका। मैं आपके साथ चल कर आपको वहाँ पहुँचा दूँगा और फिर कोहे आजाह व सलमा के बाशिन्दों में आपकी दावत पहुँचाऊँगा। ख़ुदा की क़सम! दस दिन भी गुज़रने न पाएंगे कि आपके पास क़बील-ए-तय के सवारों और प्यादों का हुजूम हो जाएगा। फिर जब तक आपका दिल चाहे हम में क़्याम फ़रमाएं और अगर आप जंग का इरादा फ़रमाएंगे तो मैं आपकी मदद के लिए बनू तय के बीस हज़ार आदमी फ़राहम करने की ज़िम्मेदारी लेता हूँ जो आपके सामने अपनी शुजाअ़त और शम्शीर ज़नी के जौहर दिखाएंगे और जब तक उनमें से एक भी ज़िन्दा होगा वह किसी दुश्मन को आपके क़रीब नहीं आने देगा। आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला तुझे और तेरी क़ौम को जज़ाए ख़ैर दे बात यह है कि हम में और उन लोगों में एक क़ौल हो चुका है जिस की वजह से हम वापस नहीं जा सकते और नहीं मालूम अब हमारे और उनके दरम्यान उमूर क्या तसर्रुफ़ात करेंगे।

इमाम पाक का यह जवाब सुन कर तरमाह ने कहा अल्लाह आपको जिन्न व इन्स के शर से महफ़ूज़ रखे मैं अपने अह्ल व अ़याल के लिए कूफ़ा से कुछ नान व नफ़्क़ा वग़ैरह लाया हूँ। यह मैं उन तक पहुँचा कर इंशाअल्लाह वापस आपके पास आऊँगा और आपके अंसार में शामिल हो जाऊँगा। आपने फ़रमाया अगर ऐसा करना है तो जल्दी जाओ, अल्लाह तुम पर रहमत करे! चुनांचे तरमाह चले गए और हस्बे वादा वापस भी आए मगर रास्ते में ही उनको आपकी शहादत की ख़बर मिल गई और वह वापस हो गए।

उसके बाद क़ाफ़िल-ए-इमाम ग़दीबुल-हिजानात से चल कर क़स्रे बनी

मक़ातिल में उतरा, आधी रात के वक़्त आपने रुफ़क़ा से फ़रमाया पानी भर लो और चलो। सफर करते हुए ज़रा आँख लग गई फिर एक दम चौंक पड़े और तीन बार कहा : इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। वल-हम्दु लिल्लाहे रब्बिल-आलमीन। यह सुन कर आपके फ़रज़न्द हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन (रज़ि अल्लाहु अ़न्हु) ने कहाः अब्बा जान मैं आप पर फ़िदा हो जाऊं इस वक़्त आपने यह कलिमात किस वजह से फ़रमाए? आपने फ़रमायाः मेरी आंख लग गई थी। मैंने ख़्वाब में एक सवार देखा जो कह रहा था लोग सफर कर रहे हैं और मौत उनकी तरफ़ बढ़ रही है। इससे मैं समझ गया कि हमें मौत की ख़बर दी गई है। फ़रज़न्दे इमाम ने कहा अल्लाह आपको बुरे वक़्त से महफ़ूज़ रखे! क्या हम हक़ पर नहीं हैं? फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसकी तरफ बन्दों ने लौटना है! हम हक़ पर हैं। बहादुर फ़रज़न्द ने कहा जब हम हक़ पर क़ाइम रह कर मरेंगे तो ऐसी मौत की परवाह नहीं है। इमाम पाक ने फ़रमायाः अल्लाह तुम्हें वह जज़ाए ख़ैर दे जो एक बाप की तरफ़ से बेटे को मिल सकती है।

(1) अगर दुनिया नफ़ीस और उम्दा चीज़ है तो सवाबे अल्लाह उस से कहीं आला व अशरफ़ है।

(2) और अगर जिस्मों की पैदाइश मरने के लिए होती है तो जवाँ मर्द का अल्लाह की राह में मरना बहुत ही बेहतर और अफ़्ज़ल है।

रंग जब महशर में लाएगी तो उड़ जाएगा रंग
यूँ न कहिए सुर्ख़ी-ए-ख़ूने शहीदाँ कुछ नहीं

सुबह के वक़्त एक मक़ाम पर क़्याम फ़रमा कर नमाज़ अदा फ़रमाई फिर रवाना हुए। हुर्र भी साथ साथ था यहाँ तक कि मैदाने नैनवा पहुँचे। यहाँ आपने एक सवार को देखा जो हथियार लगाए कन्धे पर भारी कमान रखे हुए आ रहा था। उसने आ कर आपको नहीं, हुर्र को सलाम किया और इब्ने ज़्याद का ख़त उसको दिया। उसमें यह लिखा था।

जब मेरा क़ासिद मेरा ख़त लेकर तुम्हारे पास पहुँचे तो (उसी वक़्त से) हुसैन पर सख़्ती करो और उसको सिवाए ऐसे खुले मैदान के जहाँ न कोई पनाहगाह हो और न ही पानी हो, कहीं और उतरने न दो। मैंने अपने क़ासिद को हुक्म दिया है कि वह तुम पर कड़ी निगरानी रखे और उस वक़्त तक तुम से अलग न हो जब तक मेरे पास यह ख़बर न आ जाए कि तुमने मेरे हुक्म पर अ़मल किया है। वस्सलाम

हुर्र ने यह ख़त इमाम और आपके रुफ़क़ा को सुना दिया और आप और आपके साथियों को सख़्ती से ऐसे मैदान की तरफ़ चलने और उतरने के लिए कहा जहाँ न कोई बस्ती और न पानी वग़ैरह था। आपके साथियों ने कहा : हमें छोड़ दो हम नैनवा या ग़ाज़रीया या शफ़ीया में उतरेंगे। हुर्र ने कहा : खुदा की क़सम! मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि उस शख़्स को मुझ पर बराबर निगरानी करने के लिए मुक़र्रर किया गया है।

उस पर जुहैर बिन क़ैन ने अर्ज़ की : या इब्ने रसूलुल्लाह! अभी हम उन लोगों से आसानी से लड़ सकते हैं लेकिन इसके बाद जो वक़्त आएगा वह बहुत सख़्त होगा। इस क़द्र ज़्यादा फौजे दुश्मन आएगी कि हम उसका मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे। फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया मैं अपनी तरफ से जंग की इब्तिदा नहीं करूँगा। जुहैर ने कहा अच्छा फिर ऐसा कीजिए कि यह सामने जो गाँव है उसमें नुज़ूल फ़रमाइए। यह कुछ महफ़ूज़ भी है और फुरात के किनारे पर भी है। अगर यह लोग हमें वहाँ जाने से रोकेंगे तो हम उन से मुक़ाबला करें और यह मुक़ाबला बाद में आने वाले लोगों के मुक़ाबला की बनिस्बत आसान होगा। आपने पूछा उस गाँव का नाम क्या है? अ़र्ज़ किया **"अ़क़र"** फ़रमाया मैं अ़क़र से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।

सर ज़मीने करबला :

ग़रज़ आप चलते चलते उसी मैदान में बतारीख़ **2** मुहर्रम **61** हिजरी बरोज़ जुमेरात मआ़ अपने असहाब और अह्ल व अ़याल ख़ेमाज़न हुए। हुर्र ने भी आपके मुक़ाबला में ख़ेमे नसब कर दिए थे अगरचे हुर्र के दिल में अह्ले बैते नुबुव्वत की अ़ज़्मत ज़रूर थी और उसने नमाज़ें भी आप ही की इक़्तिदा में अदा की थीं लेकिन वह इब्ने ज़्याद के हुक्म से मज्बूर था और यह भी जानता था कि अगर मैंने आपके साथ कोई रिआ़यत बरती तो एक हज़ार सिपाहियों के साथ होते हुए उसका छुपना नामुम्किन है और फिर जब इब्ने ज़्याद को मालूम होगा तो वह हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा बल्कि सख़्त सज़ा देगा इसलिए हुर्र इब्ने ज़्याद के हुक्म पर बराबर अ़मल करता रहा।

अगरचे बाज़ कुतुब में यह भी आया है कि हुर्र ने बमुक़्तज़ाए सआ़दते अज़लीया आपसे खुफ़िया तौर पर मिल कर बतरीक़ ख़ैर ख़्वाही कहा कि इब्ने ज़्याद की कसीर फौज आया चाहती है लिहाज़ा मसलेहत यह है कि आप रात के अंधेरे में यहाँ से कूच कर जाएं। मैं आपका तआ़क़ुब नहीं करूँगा और फिर

जो भी मुझ पर गुज़रेगी मैं बर्दाश्त कर लूँगा। चुनांचे इमाम पाक ने मआ़ अपने रुफ़क़ा रात भर सफ़र किया लेकिन अगली सुबह अपने आपको उसी मक़ाम पर पाया जहाँ से चले थे। (सआदतुल-कौनैन)

यह कैफ़ियत और इस दश्त व बयाबाँ की उदास और मग़मूम फ़िज़ा को देख कर आपने पूछा इस जगह का नाम क्या है? लोगों ने कहा इसको "करबला" कहते हैं। जूँ ही आपने लफ़्ज़ करबला सुना, फरमायाः

यह मक़ामे कर्ब व बला है। यही हमारे माल व असबाब के उतरने और हमारे ऊँटों के बैठने की जगह और हमारे आवान व अंसार का मक़्तल है।

इस दर्द अंगेज़ कलाम को सुनकर आपके फ़रज़न्दे अरजुमन्द हज़रत अ़ली अकबर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अ़र्ज़ की। अब्बा जान! यह आप क्या फ़रमा रहे हैं? फ़रमाया! जाने पिदर जब तुम्हारे जद्दे अम्जद हज़रत अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु जंगे सफ़्फ़ैन से वापस हुए थे तो इस मक़ाम पर उन्होंने फ़रमाया था कि इस जंगल में मेरा नूरे नज़र लख़्ते जिगर हुसैन इंतिहाई बेकसी के आ़लम में शहीद कर दिया जाएगा। फिर उन्होंने मुझ से पूछा था बेटा! तुम उस वक़्त क्या करोगे? मैंने अ़र्ज़ किया था कि सब्र करूंगा। उन्होंने फ़रमाया था कि हाँ सब्र ही करना इसलिए कि साबिरों के लिए बेहद व बेहिसाब अज्र व सवाब है। **(रौज़तुश्शोहदा स० 163)**

जब बसिलसिला-ए-इंसाबे ख़्याम ज़मीन पर मेख़ गाड़ते थे तो वहाँ से ताज़ा ख़ून निकल आता था। यह कैफ़ियत देख कर आपकी हमशीरा हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अ़न्हा ने कहा : भाई! यह तो ख़ूनी ज़मीन है। यहाँ मेरा दिल घबराता है। आपने फ़रमायाः राज़ी बरज़ा-ए-इलाही हो कर यहीं उतरो। यही मक़ामे शोहदा और वादा की जगह है और हमें हर हालत में सब्र लाज़िम है।

किसी ने जब वतन पूछा तो यूँ हज़रत ने फ़रमाया
मदीने वाले कहलाते थे अब हैं करबला वाले।

इधर तो कारवाने इमामे पाक ग़रीबुल-वतनी के आ़लम में करबला के मैदान में ख़ेमाज़न था और उधर यज़ीदी हुकूमत उन नुफ़ूसे क़ुदसीया पर क़यामत बरपा करने की भरपूर तैयारियों में मस्रूफ़ थी। चुनांचे दूसरे ही दिन अ़मर बिन सअ़द चार हज़ार सिपाहियों के साथ मुक़ाबला के लिए कूफ़ा से यहाँ पहुँच गया।

अ़मर बिन सअ़द :

अ़मर बिन सअ़द हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जलीलुल-क़द्र सहाबी हज़रत सअ़द बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु जो अशरा मुबश्शरा में से हैं और फ़ातहे ईरान का बेटा है, लेकिन माले दुनिया की हिर्स और इक़्तिदार की हवस ने इस बदनसीब को तबाह किया जिसका सबब यह हुआ कि उन्हीं अय्याम में दैलमियों (कुर्दों) ने बग़ावत करके दस्तब्ता पर हमला कर दिया था। इब्ने ज़्याद ने अमर बिन सअ़द को **"रय"** (तेहरान) का गवर्नर बना कर चार हज़ार सिपाहियों के साथ दैलमियों की सरकूबी के लिए मामूर किया था। इब्ने सअ़द चार हज़ार फ़ौज के साथ निकला। अभी वह "हम्मामे आयन" तक पहुँचा था कि इब्ने ज़्याद को बसिलसिला इमाम पाक किसी ऐसे शख़्स की ज़रूरत पेश आई जो उनका मुक़ाबला कर सके। चुनांचे उसने इब्ने सअ़द को वापस बुला भेजा। जब वह आया तो इब्ने ज़्याद ने कहा पहले हुसैन का मुक़ाबला करो। बाद में अपने ओहद-ए-हुकूमत पर फ़ाइज़ हो कर दूसरी मुहिम सर करना। इब्ने सअ़द ने कहा : अल्लाह आप पर रहम करे मुझे इस काम से माफ़ रखें। इब्ने ज़्याद ने कहा हाँ माफ़ी इस सूरत में हो सकती है कि "रय" (तेहरान) की हुकूमत छोड़ दो और हमारा हुक्म नामा वापस कर दो। इब्ने सअद ने उन दोनों सूरतों में से एक को इख़्तियार करने के लिए एक दिन की मोहलत मांगी। इब्ने ज़्याद ने मोहलत दे दी।

इब्ने सअ़द ने इस बारे में अपने दोस्तों से मशवरा तलब किया। सबने इमाम पाक का मुक़ाबला करने से मना किया। जब हम्ज़ा बिन मुग़ीरा बिन शोअ़बा (इब्ने सअ़द के भांजे) को मालूम हुआ तो उन्होंने आ कर कहा।

ऐ मामूँ! मैं तुझे अल्लाह का वास्ता देता हूँ कि हुसैन के मुक़ाबला के लिए जाकर अपने रब की मासिय्यत और क़तअ़े रहम का मुर्तकिब न होना। खुदा की क़सम! अगर तुम अपनी दुनिया, अपने माल व मता और रूए ज़मीन की हुकूमत से ख़ारिज कर दिए जाओ तो यह उस से कहीं बेहतर है कि तुम अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलो कि तुम्हारे हाथ ख़ूने हुसैन से आलूदा हों। इब्ने सअ़द ने कहा इंशाअल्लाह मैं मशवरा के मुताबिक़ ही करूंगा।

इब्ने सअ़द रात भर इस मुआ़मले पर ग़ौर करता रहा और यह अश्आ़र पढ़ता रहा।

"क्या मैं रय की हुकूमत छोड़ दूँ? और रय तो (मुझे) मरग़ूब है। या हुसैन के क़त्ल से मज़्मूम हो कर वापस आऊं।

उनके क़त्ल की सज़ा वह आग होगी जिसके आगे कोई हिजाब न होगा और रय की हुकूमत में आँखों की ठंडक है। (इब्ने असीर स० **22/4**)

अ़ब्दुल्लाह बिन यसार अल-जेहनी फ़रमाते हैं कि जब अ़मर बिन सअ़द को हज़रत हुसैन के मुक़ाबला के लिए जाने का हुक्म मिला तो मैं उसके पास गया। उसने मुझ से कहा कि अमीर ने मुझे हुसैन के मुक़ाबला में जाने का हुक्म दिया था और मैंने इंकार कर दिया है।

मैंने उस से कहा : अल्लाह ने तुझ से बहुत अच्छा करवाया, अल्लाह तुझे नेक हिदायत दे, ऐसा हरगिज़ न करना और उनके मुक़ाबले के लिए क़तअ़न न जाना। यह कह कर मैं उसके पास से चला आया। फिर मुझे किसी ने आ कर बताया कि इब्ने सअ़द तो हुसैन के मुक़ाबला के लिए लोगों को भड़का रहा है। यह सुन कर मैं दोबारा उसके पास गया तो उसने मुझे देख कर अपना मुँह फेर लिया। मैं समझ गया कि अब उसने उनके मुक़ाबले पर जाने का मुसम्मम इरादा कर लिया है। मैं वापस आ गया। (तबरी स० **232/6**)

इब्ने सअ़द, इब्ने ज़्याद के पास आया और कहा कि आपने मेरे लिए "रय" की हुकूमत का फ़रमान लिख दिया है और लोगों को मालूम भी हो गया है, लिहाज़ा उसका निफ़ाज़ कर दीजिए और हुसैन के मुक़ाबला के लिए फ़ुलाँ-फ़ुलाँ अशराफ़े कूफ़ा को मेरे साथ भेज दीजिए। इब्ने ज़्याद ने कहा : अपने इरादा में तुम्हारे किसी हुक्म का हरगिज़ पाबन्द नहीं हूँ कि जिनको तुम कहो उन्हीं को भेजूं। अगर तुम हमारे लश्कर के साथ जाने के लिए तैयार हो तो बताओ वरना हमारा फ़रमान (बमुतअ़ल्लिक़ हुकूमते रय) वापस कर दो। इब्ने सअ़द ने कहा : अच्छा मैं जाता हूँ।

(इब्ने असीर स० **22/4**)

चुनांचे इब्ने सअ़द **3**/मुहर्रम **61** हिजरी को चार हज़ार फ़ौज के साथ इमाम पाक के मुक़ाबले में करबला पहुँच गया।

दर्से इबरत :

जब किसी इंसान के अन्दर हिर्स व तमअ़ की बुराई पैदा हो जाती है तो वह अ़द्ल व इंसाफ़ सब्र व तवक्कुल और क़नाअ़त जैसी सिफ़ाते हसना से महरूम हो जाता है फिर उसमें ऐसे मज़्मूम जज़्बात पैदा हो जाते हैं कि

वह जाइज़ व नाजाइज़ और हलाल व हराम को नहीं देखता बल्कि बाज़ मरतबा यही जज़्ब-ए-हिर्स दूसरे की नाहक़ जान व माल लेने का मुर्तकिब बना देता है। चुनांचे हुज़ूर सैयदे आ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

हिर्स व तमअ़ से बचो, क्योंकि इसी ने तुमसे पहले लोगों को हलाक किया। इसी ने उनको ख़ूंरेज़ी पर उभारा और उसी ने हराम को हलाल बनाया।

एक और रिवायत में है कि मुख़्बिरे सादिक़ सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

कि दो भूखे भेड़िए जो बकरियों के झुण्ड में छोड़ दिए जाएं वह उनको इतना बरबाद नहीं करते जितनी माल व जाह की हिर्स इंसान के दीन व ईमान को बरबाद कर देती है। (तिर्मिज़ी, अबवाबुज़्ज़ैद)

ऐ इब्ने सअ़द "रय" की हुकूमत तो क्या मिली
जुल्म व जफा की जल्द ही तुझको सज़ा मिली
दुनिया परस्तो, दीन से मुँह मोड़ के तुम्हें
दुनिया मिली न ऐश व तरब की हवा मिली
रुसवाए ख़ल्क़ हो गये बरबाद हो गये
मरदूद व तुमको ज़िल्लत हर दूसरा मिली
तुमने उजाड़ा हज़रत ज़ोहरा का बोस्तां
अब देखना जहीम में जिस दम सज़ा मिली

करबला में पहुँच कर इब्ने सअ़द ने उरज़ा बिन क़ैस अहमसी को हुक्म दिया कि हुसैन के पास जा कर उन से पूछो वह यहाँ क्यों आए हैं और क्या चाहते हैं? लेकिन उरज़ा उन लोगों में से था जिन्होंने आपको खुतूत लिख कर बुलाया था इसलिए उसको आपके पास जाते हुए ग़ैरत व शर्म महसूस हुई उसने इंकार कर दिया। इब्ने सअ़द लशकर के दूसरे रईस लोगों में से जिस जिस को उस काम के लिए कहता वह यह कह कर इंकार कर देता कि मैं भी बुलाने वालों में से हूँ। किस मुँह से उनके सामने जाऊं? चुनांचे कोई जाने के लिए तैयार न होता था। यह देखकर कसीर बिन अ़ब्दुल्लाह शअ़बी जो बड़ा दिलेर और बेबाक आदमी था कहने लगा मैं हुसैन के पास जाता हूँ और आप कहें तो खुदा की क़सम! एक वार में उनका काम भी तमाम कर सकता हूँ। इब्ने सअद ने कहा मैं यह नहीं

कहता कि तुम अचानक उन पर हमला करके उनको क़त्ल कर दो! मैं यह कहता हूँ। कि उनके पास जाकर उन से पूछो कि वह क्यों आए हैं। और क्या चाहते हैं? कसीर चला। अबू समामा साइदी ने उसे आते देख कर इमाम पाक से कहा ऐ अबू अब्दुल्लाह (हुसैन) अल्लाह आपका भला करे आपके पास दुनिया भर का शरीर तरीन और ख़ूंरेज़ शख़्स आ रहा है। यह कह कर अबू समामा खड़े हो गए और आगे बढ़ कर कसीर से कहा तल्वार एक तरफ रख कर इमाम से मुलाक़ात कर सकते हो? उसने कहा ख़ुदा की क़सम यह हरगिज़ नहीं हो सकता मैं बहैसियत क़ासिद एक पैग़ाम लाया हूँ अगर सुन लोगे तो ठीक वरना वापस चला जाऊंगा! अबू समामा ने कहा अच्छा अगर तुम तल्वार नहीं रखते तो मैं तुम्हारी तल्वार के क़ब्ज़ा पर हाथ रखे रहूँगा तुम उन से पैग़ाम कह लेना? उसने कहा वल्लाह यह भी नहीं होगा तुम मेरी तल्वार के क़ब्ज़ा को हाथ भी नहीं लगा सकते! अबू समामा ने कहा अच्छा जो पैग़ाम है वह मुझ से कह दो मैं उन तक पहुँचा दूँगा मगर मै। तुम्हें इस तरह उनके क़रीब नहीं जाने दूँगा क्योंकि तुम एक शरीर इंसान हो। दोनों के दरम्यान बदकलामी हुई और वह पैग़ाम पहुँचाए बग़ैर वापस चला गया और इब्ने सअद से हाल ब्यान कर दिया। (तबरी स० 233/6)

उसके बाद इब्ने सअद ने क़ुर्रा बिन क़ैस हंज़ली को बुला कर कहा कि तुम यह काम करो? वह चला उसको आते देख कर इमाम पाक ने अपने अंसार से पूछा उस शख़्स को पहचानते हो? हबीब बिन मज़ाहिर ने कहा हां मैं उसे जानता हूँ। यह बनी हंज़ला से है और तमीमी है और हमारी बहन का बेटा है। मैं तो इसको ख़ुश अ़क़ीदा समझता था तअ़ज्जुब है कि यह भी दुश्मनों के साथ यहाँ आया हुआ है।

इतने में क़ुर्रा आया उसने आकर आपको सलाम किया और इब्ने सअ़द का पैग़ाम पहुँचाया। आपने जवाब दिया कि तुम्हारे शहर कूफ़ा के लोगों ने मुझे खुतूत लिख कर बुलाया है। अब अगर मेरा आना उन्हें नापसन्द है तो मैं वापस चला जाता हूँ। हबीब बिन मज़ाहिर ने क़ुर्रा से कहाः क्या तू वापस जाकर उन ज़ालिमों का साथ देगा? उनकी मदद कर जिनके बुज़ुर्गों की बदौलत अल्लाह ने हमें और तुझे इज़्ज़ते ईमान अ़ता फ़रमाई है। क़ुर्रा ने कहा : मैं जिसके साथ हूँ उसे उसके पैग़ाम का जवाब ज़रूर पहुँचाऊँगा। उसके बाद देखूँगा कि मुझे क्या करना है। क़ुर्रा ने इब्ने सअ़द को इमाम पाक का जवाब सुना दिया। जवाब सुनकर इब्ने सअद ने कहा : उम्मीद

तो है कि अल्लाह मुझे हुसैन के साथ जंग करने से बचा लेगा। चुनांचे उसने इब्ने ज़्याद को अपना सवाल और इमाम का जवाब लिख कर भेजा।

(तबरी स० **236/6**)

इब्ने सअ़द का ख़्याल था कि इस मुसालेहाना तहरीर से शायद कोई सुलह वग़ैरह की सूरत पैदा हो जाए और मैं इस ज़ुल्म से बच जाऊँ। मगर बदनसीबी उसका मुक़द्दर बन चुकी थी, चुनांचे इब्ने ज़्याद ने उस तहरीर को पढ़ कर यह शेअ़र कहा।

अब जब कि हमारे पंजों ने उसे जकड़ लिया है तो निकलना चाहता है हालाँकि अब कोई जाए फ़रार नहीं।

उसने इब्ने सअ़द को जवाबन लिखा कि तुम्हारा ख़त मुझे मिला जो कुछ तुमने लिखा मैंने समझा। तुम हुसैन और उनके साथियों से कहो कि वह यज़ीद की बैअ़त करें। अगर वह बैअ़त कर लेंगे तो फिर हम जो मुनासिब समझेंगे वह करेंगे।

इब्ने सअ़द को यह ख़त मिला तो उसने कहा : मैं समझ गया हूँ इब्ने ज़्याद को अमन व आफ़ियत मंज़ूर नहीं। उसके बाद ही इब्ने ज़्याद का दूसरा ख़त इब्ने सअ़द को मिला जिसमें यह हुक्म था।

पानी बन्द करने का हुक्म :

कि हुसैन और उनके रुफ़क़ा और नहरे फ़ुरात के दरम्यान हाइल हो जाओ और उन पर पानी बन्द कर दो कि वह एक क़तरा तक उससे न पी सकें जिस तरह तक़ी, ज़की और मज़्लूम अमीरुल-मुमिनीन (हज़रत) उसमान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि अल्लाहु अ़न्हु) के साथ किया गया।

उस पर इब्ने सअ़द ने अमर बिन हुज्जाज को पाँच सौ सवारों के एक लश्कर पर अफ़्सर मुक़र्रर करके नहरे फ़ुरात पर मुतऐयन कर दिया। यह लोग फ़ुरात और इमाम पाक के दरम्यान हाइल हो गए कि वह पानी की एक बूंद न ले सकें।

हाकिम का हुक्म यह था कि पानी बशर पिएं
घोड़े पिएं ऊँट पिएं, अह्ले हुनर पिएं
सब चरिन्द व परिन्द पिएं मना तुम न कीजियो
पर फ़ातिमा के लाल को पानी न दीजियो

अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हिसीन अरज़मी ने पुकार कर कहा : ऐ हुसैन! देखते हो पानी फ़िज़ाए आसमानी की तरह मौजें मार रहा है लेकिन ख़ुदा की क़सम! तुम्हें इस से एक क़तरा भी नसीब न होगा और तुम इसी तरह प्यासे ही मरोगे (मआज़ल्लाह) यह सुनकर आपने फ़रमाया :

ऐ अल्लाह! उसको प्यास की हालत में मार और उसको हरगिज़ कभी न बख़्शना।

बाद अज़ीं यह गुस्ताख़ बेअदब बीमार हुआ। हमीद बिन मुस्लिम कहते हैं कि मैं उसकी अ़यादत को गया तो ख़ुदा-ए-वहदहू ला शरीक लहू की क़सम! उसकी यह हालत थी कि पानी पीता और क़य कर देता फिर पीता और ग़र-ग़र करके क़य कर देता इसी तरह हर वक़्त पानी पानी करता मगर सैराब न होता यहाँ तक कि उसी हालत में मर गया।

(तबरी स० **234/6**, इब्ने असीर स० **22/4**)

इमाम पाक ने अपने भाई हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ली के साथ तीस सवार और बीस पैदल पानी लेने के लिए भेजे। अ़मर बिन हुज्जाज अपने साथियों के साथ मुज़ाहिम हुआ मगर हज़रत अ़ब्बास ने भी अपने साथियों के साथ मुक़ाबला किया। दोनों के दरम्यान लड़ाई हुई लेकिन हज़रत अ़ब्बास पानी लाने में कामयाब हो गए। (तबरी स० **234/6**, इब्ने असीर स० **22/4**)

इमाम आ़ली मक़ाम ने उमर बिन क़रज़ा बिन कअ़ब अंसारी के ज़रिआ इब्ने सअ़द को पैग़ाम भेजा कि मैं आज रात को अपने और तुम्हारे लशकर के दरम्यान तुम से मिलना चाहता हूँ। इब्ने सअ़द ने यह बात मान ली और वह रात के वक़्त बीस सवार अपने साथ लेकर आया। आप भी बीस सवारों के साथ तशरीफ़ लाए। आपने अपने रुफ़क़ा को एक तरफ कर दिया। इब्ने सअ़द ने भी अपने साथियों को इलाहिदा कर दिया। दोनों के दरम्यान काफ़ी देर तक तन्हाई में गुफ़्तगू हुई जिसको किसी ने नहीं सुना। फिर दोनों अपने-अपने लश्कर में वापस हो गए। इस गुफ़्तगू के मुतअ़ल्लिक़ दो रिवायतें हैं। एक यह कि आपने इब्ने सअ़द से कहा कि हम दोनों अपने अपने लश्करों को यहीं छोड़ कर यज़ीद के पास चलें। इब्ने सअ़द ने कहा मुझे ख़ौफ़ है कि ऐसा करने से मेरा मकान गिरा दिया जाएगा और मेरी सारी जाइदाद और ज़मीन ज़ब्त कर ली जाएगी। आपने फ़रमाया : मैं तुम्हें इससे बेहतर मकान बनवा दूँगा और इससे अच्छी जायदाद दूँगा। इब्ने सअ़द किसी क़ीमत पर भी उसके लिए तैयार न हुआ। दूसरी यह कि आपने उसके सामने तीन बातें पेश कीं कि उनमें से किसी एक को मान लो **(1)** मुझे वहीं वापस चले जाने दो जहाँ से मैं आया हूँ। **(2)** मुझे सीधा यज़ीद के पास ले चलो मैं उसके

हाथ पर हाथ रख दूँगा, फिर मेरे और उसके दरम्यान जो फ़ैसला हो। (3) मुझे मम्लकते इस्लाम के किसी भी सरहदी मक़ाम पर ले चलो मैं उन सरहदी लोगों में रह कर वक़्त गुज़ार लूँगा।

पहली रिवायत तो किसी हद तक सहीह समझी जा सकती है लेकिन जहाँ तक दूसरी रिवायत का तअ़ल्लुक़ है वह रिवायत और दिरायत दोनों हैसियतों से नाक़ाबिले ऐतबार है। रिवायती हैसियत से इस तरह कि उसका एक रावी अल-मुजालिद बिन सईद हमदानी मुहद्देसीन के नज़्दीक पाय-ए-ऐतबार से साक़ित है। अ़ल्लामा हाफ़िज़ ज़हबी और इमाम इब्ने हजर अ़स्क़लानी दोनों ने उस पर जिरह की है और उसको नाक़ाबिले ऐतबार क़रार दिया है। (देखो मीज़ानुल-ऐतदाल स० 8/3, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 39/10)

दिरायती हैसियत से इस तरह कि इब्ने ज़्याद का यही तो हुक्म था कि अगर हुसैन बैअ़त कर लें तो फिर उन से कोई तअ़र्रुज़ न किया जाए। तो अगर हज़रत हुसैन इस बात पर आमादा हो गए थे कि मैं यज़ीद के हाथ पर हाथ रखने को तैयार हूँ तो फिर इब्ने सअ़द और इब्ने ज़्याद का उसको क़ुबूल करना और आपके साथ लड़ाई करके आपको और आपके रुफ़क़ा को शहीद कर देना क्योंकर वक़ूअ़ पज़ीर हुआ ?

इसके बरअक्स उक़्बा बिन समआन का ब्यान है कि मैं मदीना से मक्का तक और मक्का से इराक़ तक बराबर हज़रत हुसैन के साथ रहा और शहादत के दिन तक किसी भी वक़्त मैं उन से जुदा न हुआ और मैंने उनकी तमाम तक़रीरें और गुफ़्तगू सुनी है मगर खुदा की क़सम! उन्होंने किसी भी मक़ाम पर यह हरगिज़ नहीं कहा कि मैं अपना हाथ यज़ीद के हाथ में दे दूँगा बल्कि उन्होंने हमेशा यही कहा कि मुझे छोड़ दो मैं अल्लाह की बहुत वसीअ़ ज़मीन में कहीं चला जाऊँ यहाँ तक कि हम देख लें लोग क्या फ़ैसला करते हैं।

(तबरी स० 235/6, इब्ने असीर स० 22/4)

इब्ने सअ़द अगरचे दुनियावी जाह व हश्म की हिर्स में हज़रत इमाम से जंग करने आ गया था मगर क़लबी तौर पर वह नहीं चाहता थ कि इस जुर्मे अ़ज़ीम का मुर्तकिब हो इसलिए उसकी कोशिशें यही थी कि कोई सूरत ऐसी निकल आए कि जंग न हो चुनांचे उसके और इमाम के दरम्यान तीन चार मुलाक़ातें और भी हुईं।

यह भी हो सकता है कि उसने जंग की आग को बुझाने के लिए अपनी

तरफ़ से यह बात बढ़ा दी हो क्योंकि फ़रीक़ैन के दरम्यान जब सख़्त इख़्तिलाफ़ हो जाए और तल्वार चलने का अन्देशा हो तो उनमें सुलह कराने के सिलसिले में झूठ बोलना जाइज़ है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है।

कि झूठ बोलना हलाल नहीं सिवाए तीन मौक़ों के (1) मर्द अपनी औरत को राज़ी करने के लिए कोई बात करे। (2) जंग में। (3) लोगों के दरम्यान सुलह कराने में। (तिर्मिज़ी अबवाबुल-बिर्र वस्सिलते)

चुनांचे इब्ने सअ़द ने इब्ने ज़्याद को लिखा कि :

खुदा ने शोअ़ल-ए-आग को बुझा दिया है और इत्तिफ़ाक़ की सूरत पैदा कर दी है और उम्मत के मुआमला को सुलझा दिया है यूं कि हुसैन ने मुझ से यह तीन बातें कही हैं। (1) जहाँ से आए हैं वहीं चले जाएं। (2) किसी सरहदी मक़ाम पर जहाँ हम चाहें भेज दें। (3) वह यज़ीद के पास जा कर उसके हाथ में अपना हाथ दे देंगे फिर दोनों के दरम्यान जो फ़ैसला हो, उसमें तुम्हारी भी खुशनूदी है और उम्मत की भी बेहतरी है।

(तबरी स० 235/6, इब्ने असीर स० 22/4)

इब्ने सअ़द का यह ख़त इब्ने ज़्याद के पास पहुँचा तो उसका इरादा भी हुआ कि इन तीन बातों में से कोई एक बात मान ली जाए। उस वक़्त इब्ने ज़्याद के पास शिम्र बिन ज़िल-जौशन भी बैठा था। वह बदबख़्त खड़ा हो गया और कहने लगा : क्या तुम हुसैन की इन शर्तों को क़ुबूल करते हो हालांकि इस वक़्त वह तुम्हारी गिरिफ़्त में है। वल्लाह! अगर वह तुम्हारी इताअत किए बग़ैर यहाँ से चला गया तो यह उसके ग़ालिब व क़वी और तुम्हारे मग़्लूब व कमज़ोर होने का बाइस होगा। ऐसा मौक़ा उसको हरगिज़ न दो, इसमें सरासर तुम्हारी ज़िल्लत है। बल्कि होना यह चाहिए कि हुसैन और उसके सब रुफ़क़ा तुम्हारे हुक्म पर गर्दने इताअत ख़म करें। फिर अगर तुम उनको सज़ा दो तो तुम्हें उसका हक़ है और अगर मुआफ़ कर दो तो उसका भी इख़्तियार है। खुदा की क़सम! मुझे तो यह मालूम हुआ है कि हुसैन और इब्ने सअ़द अपने लशकरों के माबैन रात रात भर बैठे बातें करते रहते हैं।

इब्ने ज़्याद ने कहा : तुमने बहुत अच्छी राय दी है। तुम मेरा ख़त लेकर अभी इब्ने सअ़द के पास जाओ। चुनांचे इब्ने ज़्याद ने इब्ने सअ़द को लिखा।

मैंने तुम्हें इसलिए नहीं भेजा कि तुम हुसैन को मोहलत देते रहो और उसके सिफ़ारिशी बन कर उसकी बक़ा और सलामती चाहो। देखो! अगर हुसैन और उसके रुफ़क़ा मेरे हुक्म पर गर्दनें झुका दें तो उन सबको इताअ़त गुज़ारों की तरह मेरे पास भेज दो। अगर वह ऐसा न करें तो फ़ौरन उन पर हमला करो और उनको क़त्ल करके उनके सर जुदा कर दो और उनकी लाशों पर घोड़े दौड़ा कर रौंद डालो क्योंकि वह इसी सुलूक के मुस्तहिक़ हैं। अगर तुमने मेरे हुक्म के मुताबिक़ अ़मल किया तो तुमको वह जज़ा मिलेगी जो एक मुतीअ़ व फरमाँ बरदार को मिलनी चाहिए और अगर यह काम तुम नहीं करना चाहते तो हमारे लश्कर को शिम्र के हवाले करके तुम उससे अलग हो जाओ। हमने शिम्र को अपने अहकाम दे दिए हैं वह हमारे अहकाम को पूरा करेगा।

(तबरी स० **236/6**, इब्ने असीर स० **23/4**)

इब्ने ज़्याद ने जब यह ख़त शिम्र को दिया उस वक़्त अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल-मुहल बिन ख़ुराम भी इब्ने ज़्याद के पास मौजूद था। उसकी फूफी उम्मुन्नबीयीन बिन्ते ख़ुराम पहले हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू की ज़ौजा थीं और उनके बतन से हज़रत अ़ब्बास, अ़ब्दुल्लाह, जाफ़र और उसमान पैदा हुए थे, उसने दरख़्वास्त की कि ख़ुदा अमीर का भला करे हमारे भांजे हुसैन के साथ हैं अगर मुनासिब समझा जाए तो उनको अमान का हुक्म लिख दिया जाए। इब्ने ज़्याद ने लिख दिया। अ़ब्दुल्लाह ने यह अमान नामा अपने गुलाम कज़्मान के हाथ अपने भांजों को भेज दिया। गुलाम ने जाकर उनको बुलाया और कहा कि तुम्हारे मामूँ ने तुम्हारे लिए अमान नामा भेजा है। इन गुयूर और बहादुर जवानों ने कहा कि हमारे मामूँ को सलाम कहना और यह कि हमें तुम लोगों की अमान की ज़रूरत नहीं ख़ुदा तआ़ला की अमान (दरकार है जो) इब्ने ज़्याद की अमान से बेहतर है।

(तबरी स० **236/6**, इब्ने असीर स० **23/4**)

शिम्र ने इब्ने ज़्याद का ख़त लाकर इब्ने सअ़द को दिया वह पढ़ कर बहुत बेरहम हुआ और शिम्र से कहने लगा ख़ुदा तुझे ग़ारत करे तू मेरे पास यह क्या लाया है? ख़ुदा की क़सम! मेरा यह गुमान है कि तूने ही इब्ने ज़्याद को मेरी लिखी हुई बातों को क़ुबूल करने से रोका है। अफ़सोस! तूने इस मुआ़मला को बिगाड़ दिया जिसकी इस्लाह की मुझे उम्मीद थी। ख़ुदा की क़सम! हुसैन हरगिज़ इब्ने ज़्याद के सामने कभी न झुकेंगे उनके पहलू

में एक ख़ुददार दिल है। शिम्र ने यह सब कुछ सुनकर कहा : अच्छा बताओ अब तुम्हारा इरादा क्या है ? अमीर के हुक्म की तामील करके उनके दुश्मनों को क़त्ल करोगे या नहीं तो लश्कर को मेरे हवाले कर दो !

इब्ने सअ़द को एक बार फिर मौक़ा मिला था कि वह लश्कर शिम्र के हवाले करके इस ज़ुल्म के इर्तिकाब से बच जाता मगर उसको तो "रय" की हुकूमत चाहिए थी वह बदबख़्त चमने ज़हरा के फूलों को ख़ाक व ख़ून में तड़पाने के लिए तैयार हो गया और कहने लगा मैं अमीर के हुक्म की तामील करूँगा।

आँखें अगर हैं बन्द तो फिर दिन भी रात है
इसमें क़ुसूर क्या है भला आफ़ताब का

शिम्र इमाम के लश्कर के सामने आया और कहा हमारी बहन के बेटे कहाँ हैं? यह सुनकर हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ली और उनके भाई उसके पास आए और कहा क्या बात है? कहने लगा हमारी बहन के फ़रज़न्दो तुम्हारे लिए अमान है। ग़ैरतमन्द जवानों ने पहले से भी ज़्यादा सख़्त जवाब दिया कि तुझ पर और तेरी अमान पर अल्लाह की लानत हो! तू हमें अमान देता है और फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए अमान नहीं। (तबरी, इब्ने असीर)

हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन हसन रज़ि अल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं कि :

हम हज़रत इमाम हुसैन के साथ थे करबला की दो नहरों पर, पस इमाम ने शिम्र ज़िल-जौशन को देखा तो फ़रमाया : अल्लाह और उसका रसूल सच्चे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मैं एक अबलक़ कुत्ते को देखता हूँ कि वह मेरे अह्ले बैत के ख़ून में मुँह डालता है और शिम्र मबरूस यानी सफ़ेद दाग़ों वाला था।

(इब्ने असाकिर, सिर्रुश्शहादतैन स० **29**)

एक रात की मोहलत :

जुमेरात **9** मुहर्रम **61** हिजरी इमाम आ़ली मक़ाम तल्वार बांधे हुए अपने ख़ेमा के पास सर को घुटनों में रख कर बैठे ऊंघ रहे थे। उधर इब्ने सअ़द ने अपने लश्कर में निदा की ऐ अल्लाह के सिपाहियो! दुश्मन पर हमला करने के लिए तैयार हो जाओ और घोड़ों पर सवार हो जाओ इस निदा से लश्करे यज़ीद में शोर हुआ। इस शोर को सुन कर हज़रत इमाम हुसैन की

बहन सैयदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने आपके क़रीब आ कर आपको जगाया। आपने अपने घुटनों से सर उठा कर फ़रमाया।

मैंने अभी ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा है। आपने मुझ से फ़रमाया है, कि तुम हमारे पास आने वाले हो।

बहन ने यह सुन कर रोते हुए कहा **या वैलताह** (हाय मुसीबत) इमाम ने फ़रमाया : नहीं बहन तुम्हारे लिए मुसीबत नहीं, अल्लाह तुम पर रहम करे सब्र करो और ख़ामोश रहो।

हज़रत अब्बास ने कहा : भाई वह लोग तुम्हारी तरफ़ आ रहे हैं। इमाम भी उनकी तरफ़ जाने के लिए खड़े हुए तो हज़रत अब्बास ने कहाः नहीं आप न जाएं मैं जाता हूँ फ़रमाया : जाओ मैं तुम पर फ़िदा हो जाऊँ और उन लोगों से पूछो तुम क्या चाहते हो? तुम्हारे इस तरह इधर आने का मक़्सद क्या है? हज़रत अ़ब्बास बीस सवारों को साथ लेकर जिनमें ज़ुहैर बिन क़ैन और हबीब बिन मज़ाहिर भी थे, उन लोगों के पास आए और आने का मक़्सद पूछा। उन्होंने इब्ने ज़्याद के हुक्म से आगाह किया कि या तो उनके हुक्म पर गर्दनें इताअ़त ख़म कर दो वरना लड़ने और क़त्ल होने के लिए तैयार हो जाओ। हज़रत अ़ब्बास ने कहा : ज़रा ठहरो और जल्दी न करो मैं इब्ने रसूलुल्लाह को तुम्हारे मक़्सद से आगाह कर दूँ। उन्होंने इमाम को आगाह किया। आपने फ़रमाया : उन लोगों से कहो हमें एक रात की मोहलत दें ताकि इस आख़िरी रात में हम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ लें। दुआएँ माँग लें और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लें। अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मुझको नमाज़, तिलावत और दुआ व इस्तिग़फ़ार से कितना क़लबी तअ़ल्लुक़ है। नीज़ अपने अह्ले बैत को कुछ वसीयत कर लें। हज़रत अ़ब्बास ने जाकर इब्ने सअ़द के दस्ता से कहा कि एक रात की हमें मोहलत दो। रात को हम कुछ इबादत कर लें और इस मुआमला में मज़ीद ग़ौर कर लें फिर जो कुछ फ़ैसला होगा सुबह तुम लोगों को बता देंगे। उन्होंने यह बात मान ली।

रुफ़क़ा से इमाम का ख़िताब :

उसके बाद इमाम पाक ने अपने हम राहियों को जमा किया। आपके फ़रज़न्द हज़रत सैयदना अली औसत ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं आपके क़रीब जा बैठा कि सुनूँ अब्बा जान क्या फ़रमाते हैं हालांकि मैं बीमार था। आपने अपने अंसार के सामने यह ख़ुतबा दिया।

अल्लाह की तारीफ़ करता हूँ, ख़ुशी व मुसर्रत और तंगी व तक्लीफ़ में अल्लाह तबारक तआ़ला की बेहतरीन हम्द व सना करता हूँ। ऐ अल्लाह! मैं तेरी हम्द करता हूँ तेरा शुक्र बजा लाता हूँ कि तूने हमें नुबुव्वत के साथ मुकर्रम किया और सुनने वाले कान और देखने वाली आँखें और दिल दिया और हमें क़ुरआन सिखाया और दीन की समझ अ़ता फ़रमाई और हमें अपने शुक्र गुज़ार बन्दों में से किया। अम्मा बाद! मैं किसी के साथियों को अपने साथियों से ज़्यादा वफ़ादार और बेहतर नहीं समझता और न किसी अह्ले बैत को अपने अह्ले बैत से ज़्यादा नेकोकार और सिला रहमी करने वाला देखता हूँ।

अल्लाह तआ़ला तुम सबको मेरी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए! सुन लो! मैं यक़ीन रखता हूँ कि हमारा दिन उन दुश्मनों से (मुक़ाबले का) कल का दिन है और मैं तुम सबको बख़ुशी इजाज़त देता हूँ कि रात की इस तारीकी में चले जाओ। मेरी तरफ़ से कोई मलामत न होगी। एक एक ऊँट ले लो और तुम्हारा एक एक आदमी मेरे अह्ले बैत में से एक एक आदमी का हाथ पकड़ के अपने साथ ले ले अल्लाह तुम सबको जज़ाए ख़ैर दे! फिर तुम अपने अपने शहरों और दिहातों में मुतफ़र्रिक़ हो जाना यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला यह मुसीबत आसान कर दे। बिला शुबह यह लोग मेरे ही क़त्ल के तालिब हैं और जब मुझे क़त्ल कर लेंगे तो फिर किसी और की तलब न होगी।

रुफ़क़ा का जवाब :

इस ख़ुतबा को सुनकर आपके भाईयों, बेटों, भतीजों और भान्जों ने बयक ज़ुबान कहा : क्या हम सिर्फ़ इसलिए चले जायें कि आपके बाद ज़िन्दा रहें ख़ुदा हमें वह दिन न दिखाए !

आपने फ़रज़न्दाने अ़क़ील से फ़रमाया कि मुस्लिम की शहादत तुम्हारे लिए काफ़ी है। लिहाज़ा तुम्हें इजाज़त देता हूँ तुम चले जाओ लेकिन बा हमीयत और ग़ैरतमन्द भाईयों ने कहा हम लोगों को क्या जवाब देंगे कि हम अपने सरदार, अपने आक़ा और अपने बेहतरीन इब्ने अ़म्म को दुश्मनों के नरग़े में छोड़ आए हैं। न हमने उनके साथ मिलकर कोई तीर चलाया न नेज़ा मारा न तल्वार का कोई वार किया और फिर हमें नहीं मालूम उनका हश्र क्या हुआ? ख़ुदा की क़सम! हम हरगिज़ ऐसा नहीं करेंगे बल्कि हम अपनी जानें अपना माल और अपने अह्ल व अ़याल सब आप पर क़ुरबान करेंगे। आपके साथ मिल कर आपके दुश्मनों से लड़ेंगे जो अंजाम आपका होगा वही हमारा भी होगा। ख़ुदा वह ज़िन्दगी न दे जो आपके बाद हो !

हज़रत मुस्लिम बिन औसजा अल-असदी ने खड़े हो कर कहा : हम आपको छोड़ कर चले जाएं तो आपके अदाए हक़ के सिलसिले में अल्लाह तआला को क्या जवाब देंगे। खुदा की क़सम! मैं उस वक़्त तक आपका साथ न छोडूँगा जब तक दुश्मनों के सीनों में अपने नेज़ा को न तोड़ डालूँ और शमशीर ज़नी न कर लूँ। ख़ुदा की क़सम! अगर मेरे पास असलेहा न भी हो तो भी मैं दुश्मनों से पत्थर मार मार कर लड़ता और इस तरह आप पर निसार हो जाता। (इब्ने असीर स० **24/4**)

हज़रत सअ़द बिन अ़ब्दुल्लाह हन्फ़ी ने उठ कर कहा : खुदा की क़सम! हम उस वक़्त तक आपका साथ नहीं छोड़ेंगे जब तक अल्लाह तआ़ला यह देख न ले कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आद आपकी औलाद की कैसी हिफ़ाज़त की। ख़ुदा की क़सम! अगर मुझको यह भी मालूम हो जाए कि मैं सत्तर मरतबा इस तरह क़त्ल किया जाऊँगा कि हर मरतबा ज़िन्दा जला दिया जाऊँगा और मेरी ख़ाकिस्तर उड़ा दी जाएगी तो भी मैं आपका साथ न छोड़ता और अब तो एक ही मरतबा क़त्ल होना है और इसी क़त्ल होने में अबदी शर्फ़ व करामत है फिर उसे क्यों न हासिल करूँ। (तबरी स० **239/6**)

हज़रत ज़ुहैर बिन क़ैन ने उठ कर कहा ख़ुदा की क़सम! मैं तो यह चाहता हूँ कि मैं क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ। फिर क़त्ल किया जाऊँ इसी तरह हज़ार मरतबा ज़िन्दा किया जाऊँ और क़त्ल किया जाऊँ और मेरे हज़ार मरतबा के क़त्ल से ख़ुदा आपकी ज़ात और आपके अह्ले बैत के उन नौजवानों को बचा लेता।

ग़रज़ यह कि इसी तरह आपके हर रफ़ीक़ और जाँनिसार ने अपनी अपनी जाँनिसारी का इज़हार किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशाद की तामील करके सआदते दारैन हासिल की। चुनांचे हज़रत अनस बिन हारिस रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि :

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना आपने फ़रमायाः मेरा यह बेटा उस ज़मींन में क़त्ल कर दिया जाएगा जिसको करबला कहा जाता है। तो तुम में से जो भी वहाँ मौजूद हो उसको चाहिए कि उसकी मदद करे। पस अनस बिन हारिस भी करबला में गए थे और वह भी आपके साथ शहीद हुए। (सिर्रुश्शहादतैन स० **29**, अल-बिदाया वन्निहाया स० **199/2**, ख़साइसे कुबरा : **125/2**)।

हक़्क़ा कि अ़जब फ़ौज थी फ़ौजे शहे अबरार
जिन लोगों का अ़ब्बास दिलावर सा अ़लम दार
हम शक्ल पयम्बर सा जवाँ फ़ौज का सालार
मुख़्तार वह मुख़्तार था जो ख़ल्क़ का मुख़्तार
ऐसा किसी सरदार ने लश्कर नहीं पाया
लश्कर ने भी इस तरह का अफ़्सर नहीं पाया
ज़ाहिर में गरचे थे रुफ़क़ा शाह के क़लील
पेशे ख़ुदा मगर वह हक़ीक़त में थे जलील
जुरअत में बेनज़ीर शुजाअ़त में बे अ़दील
सर गर्म जान देने पे सब सूरते ख़लील
फ़ाक़ों में सब्र व शुक्र से दिल उनके सेर थे
जाँबाज़ थे जरी थे मुजाहिद थे शेर थे
आख़िर उन लोगों ने शब्बीर पे की जानें फ़िदा
शह की उल्फ़त में कितनों से हुए सर उनके जुदा
ख़ून से अपनी जवाँ मर्दी के नक़्शों को लिखा
अपने मज़्हब की हिमायत में यह ईसार किया
उनमें हर इक ने शुजाअ़त व जवाँमर्दी वह की
आज तक उसकी मिसाल एक भी देखी न सुनी

इमाम पाक के मंझले फ़रज़न्द हज़रत अ़ली ज़ैनुल-आ़बेदीन फ़रमाते हैं कि जुमेरात की शाम को मैं बैठा हुआ था और मेरी फूफी सैय्यदा ज़ैनब मेरी तीमारदारी में मसरूफ़ थीं। उस वक़्त मेरे वालिद माजिद के पास अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी के आज़ाद करदा गुलाम हुवी बैठे हुए तल्वार दुरुस्त कर रहे थे और आप यह अश्आ़र पढ़ रहे थे।

ऐ ज़माना नापाएदार! तुझ पर अफ़्सोस है कि तूने किसी दोस्त से कभी वफ़ा न की। सुबह व शाम तूने ।

कैसे कैसे साहिबान ऊलुल-अ़ज़्म को क़त्ल किया और यह ज़मान-ए-नाहंजार एवज़ पर क़नाअ़त नहीं करता ।

और सब ही की बाज़गश्त ख़ुदा-ए-जलील ही की तरफ़ है और हर ज़िन्दा को यही राह दरपेश है।

मेरा वाद-ए-रिहलत किस क़द्र क़रीब आ पहुँचा है। लिहाज़ा मैं अपने

परवरदिगार की तरबीह करता हूँ जिसका कोई तमसील नहीं।

आपने बार बार इन अश्आर को पढ़ा। मैं आपके अ़ज़्म और इरादे को समझ गया और जान गया कि मुसीबत टूट पड़ी। बेइख़्तियार मेर आँसू आ गए ताहम मैंने सब्र व ज़ब्त से काम लिया। मगर मेरी फूफ़ी हज़रत ज़ैनब ने भी यह अश्आर सुन लिए थे और उनको हालात से भी अंदाज़ा हो गया था कि तल्वारें साफ़ की जा रही हैं, वह ज़ब्त न कर सकीं और बेइख़्तियार हो गईं और आपके पास पहुँच कर चीख़ चीख़ कर रोने लगीं और कहती थीं काश! आज मुझे मौत आ गई होती हाए मेरी माँ फ़ातिमा, मेरे बाप अ़ली और मेरे भाई हसन चल बसे। भैया तुम उन गुज़रे हुओं के जानशीन और हमारे मुहाफ़िज़ और सहारा थे। बहन को इस तरह बेइख़्तियार और बेचैन देख कर आपने फ़रमाया : देखो बहन! शैतान कहीं तुम्हारे हिल्म व वक़ार और अक़्ल को ज़ाइल न कर दे। बहन ने कहा : भाई मेरे माँ बाप तुम पर कुरबान, मैं आपके बदला में अपनी जान देना चाहती हूँ। बहन के इस दर्दनाक और मुहब्बत भरे अंदाज़ ने आपको भी बेचैन कर दिया। आपका दिल भर आया और आँसू जारी हो गए फ़रमाया :

लौ तरकल-क़ता लैलन लनाम

यह सुनकर हज़रत ज़ैनब का तो बुरा हाल हुआ दहाड़ें मार-मार कर रोईं और कहती थीं क्या ज़बरदस्ती आपको हम से छीन लिया जाएगा इससे तो मेरा कलेजा पाश पाश हुआ जाता है। यह कहा और चीख़ मार कर बेहोश हो गईं। आपने उनके मुँह पर पानी के छींटे दिए। जब होश आया तो फ़रमाया मेरी बहन अल्लाह से डरो और उससे सब्र व सुकून तलब करो और जान लो कि तमाम अह्ले ज़मीन मर जाएंगे और अह्ले आसमान भी बाक़ी न रहेंगे। हर शय फ़ानी है सिवाए ज़ाते इलाही जल्ल शानुहू के। मेरे बाप, मेरी माँ, मेरे भाई मुझ से बेहतर थे मेरे और उनके लिए हर मुसलमान के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ात नमूना है। तुम इसी नमूना से सब्र हासिल करो। इसी तरह की चन्द और बातों से उनको तसल्ली दी। फिर फ़रमाया : प्यारी बहन मैं तुम्हें क़सम देता हूँ। मेरी इस क़सम को पूरा करना। सुनो मेरी वफ़ात पर गरीबाँ न फाड़ना। मुँह न नोचना। आह व ज़ारी और बीन न करना। बहन को सब्र व शुक्र और ज़ब्त व तहम्मुल की तल्क़ीन फ़रमा कर ख़ेमा से बाहर तशरीफ़ लाए और अपने अंसार को हिफ़ाज़त के ज़रूरी इंतिज़ामात की हिदायत फ़रमाई।

ख़ेमे एक दूसरे के क़रीब कर दिए गए और उनकी तनाबें एक दूसरे में दाख़िल कर दी गईं। ख़ेमों की पुश्त पर एक ख़न्दक़ खोदी गई और उसमें लकड़ियाँ और शाख़ें जमा करके भर दी गईं ताकि बवक़्ते जंग उनको आग लगा दी जाए और दुश्मन पीछे ने हमला न कर सके। फिर सबने आपके साथ सारी रात नमाज़ दुआ, इस्तिग़फ़ार और ज़ारी व तज़र्रु में गुज़ारी।

सज्दों से, नमाज़ों से, यह रफ़अत की शहर है
रोने की, तज़ल्लुल की, इबादत की सहर है
हाए यह सहर रंज व मुसीबत की सहर है
आशूरे मुहर्रम है, शहादत की सहर है
लुटने का, तबाही का, परेशानी का दिन है
औलादे पयम्बर की यह कुरबानी का दिन है

दस मुहर्रम 61 हिजरी और क़्यामते सुग़रा

शबे आ़शूर ख़त्म हुई और सुबहे आ़शूर क़्यामते सुग़रा और मसाइब व आलाम की ख़बर लेकर आ गई। इमाम आ़ली मक़ाम के ख़ेमों में अज़ान की आवाज़ बुलन्द हुई। नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने तमाम रुफ़क़ा और अह्ले बैत के साथ नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई। यह शुहदाए करबला की आख़िरी नमाज़ थी। अल्लाह जानता है कि उनकी इस नमाज़ का आ़लम क्या था। सब्र व रज़ा के पैकर अपने मालिक व ख़ालिक़ के हुज़ूर मुशाहिद-ए-हक़ की कैफ़ियात के साथ दस्त बस्ता खड़े थे। वह सर जिन्होंने थोड़ी देर के बाद राहे ख़ुदा में कट जाना था ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के साथ सज्दा रेज़ थे। नमाज़ के बाद इमाम पाक ने सबके लिए सब्र व इस्तिक़ामत की दुआ़ मांगी। दसवीं मुहर्रम का ख़ूनी आफ़ताब अपनी पूरी ख़ून आशामियों के साथ तुलूअ़ हुआ जिसकी अलमनाकी पर जिन्न व इन्स से लेकर मलाइका तक नौहा कुनाँ हुए। हुसैनी फ़ौज के बहत्तर जाँनिसार, बाईस हज़ार यज़ीदियों के साथ लड़ने के लिए तैयार हो गए. इस मुख़्तसर सी जमाअ़त के आक़ा ने अपने जाँबाज़ों को इस तरह तरतीब दिया कि मैमना पर हज़रत ज़ुहैर बिन क़ैन और मैसरा पर हज़रत हबीब बिन मुज़ाहिर को मुक़र्रर किया और झण्डा अपने भाई हज़रत अब्बास को दिया जो इसी सबब से अ़लम दार कहलाए। ख़न्दक़ में भरी हुई लकड़ियों को आग लगा दी गई।

दूसरी तरफ अमर बिन सअ़द ने अपने लश्कर के मैमना पर अ़मर बिनुल-हज्जाज अज़्ज़बैदी और मैसरा पर शिम्र बिन ज़िल-जौशन और सवारों पर अ़ज़रह बिन क़ैस अल-अहमसी और प्यादों पर शब्स बिन रिब्ई यरबूई को मुक़र्रर किया और झण्डा अपने ग़ुलाम ज़ुवेदा को दिया।

इमाम आ़ली मक़ाम ऊँट पर सवार हुए और क़ुरआन मंगवा कर अपने सामने रखा और दोनों हाथ उठा कर बारगाहे ईज़दी में यूँ दुआ़ की।

ऐ अल्लाह! हर मुसीबत में तू ही मेरा ऐतमाद और हर तक्लीफ़ में तू ही मेरा आसरा है। तमाम हवादिसात में तू ही मेरा सहारा और ढारस है। बहुत से ग़म व अंदोह ऐसे होते हैं जिनमें दिल बैठ जाता है और इन ग़मों

से रिहाई की तदबीरें कम हो जाती हैं। दोस्त उसमें साथ छोड़ देते हैं और दुश्मन उस से ख़ुश होते हैं लेकिन मैंने इस क़िस्म के तमाम औक़ात में तेरी ही तरफ़ रुजूअ़ किया, तुझी से अपना दर्दे दिल कहा, तेरे सिवा किसी और से कहने को दिल न चाहा। ऐ अल्लाह! तूने हर बार उन मसाइब को मुझ से दूर कर दिया और मुझे उन से बचा लिया। तू ही हर नेअ़मत का वली हर भलाई का मालिक और हर ख़्वाहिश व रग़बत का मुन्तहा है।

वह सब्र दे इलाही जिसमें ख़लल न आए
तीरों पे तीर खाऊँ अबरू पे बल न आए

शिम्र की गुस्ताख़ी :

उधर यज़ीदियों ने जब ख़न्दक़ में लगी हुई आग को देखा जो ख़ेमों की पुश्त पर हिफ़ाज़त के लिए जलाई गई थी तो शिम्र लईन घोड़ा दौड़ाता हुआ इधर आया और पुकार कर कहने लगा ऐ हुसैन! तुमने अपने लिए क़्यामत से पहले दुनिया ही में आग लगा ली? (मआ़ज़ल्लाह) आपने फ़रमाया : तू इसमें जलने का ज़्यादा मुस्तहिक़ है! मुस्लिम बिन औसजा ने अ़र्ज़ की या इब्ने रसूलुल्लाह! मैं आप पर क़ुरबान हो जाऊँ अगर इरशाद हो तो एक तीर मार कर उसका ख़ातमा कर दूँ इस वक़्त ज़द में है और मेरा तीर ख़ता न करेगा। फ़रमाया नहीं हमारी तरफ़ से इब्तिदा नहीं होनी चाहिए। फिर इमाम पाक यज़ीदी लश्कर के क़रीब गए और बआवाज़ बुलन्द फ़रमाया :

इतमामे हुज्जत :

लोगो! जल्दी न करो और मेरी बातें सुन लो और मुझ पर जो वअ़ज़ व नसीहत का हक़ है उसे अदा कर लेने दो फिर उसके बाद तुम्हें इख़्तियार है अगर मेरा उज़्र क़ुबूल कर लोगे और मेरी बात को सच्चा समझोगे और मेरे साथ इंसाफ़ करोगे तो निहायत नेक बख़्त होगे और तुम्हारे लिए मेरी मुख़ालिफ़त की कोई सबील बाक़ी न रहेगी और अगर तुमने मेरा उज़्र क़ुबूल न किया और इंसाफ़ से काम न लिया तो –

पस तुम और तुम्हारे शरीक सब मिल कर अपनी एक बात ठहरा लो ताकि तुम्हारी वह बात तुम में से किसी के ऊपर मख़्फ़ी न रहे। तुम मेरे साथ जो करना चाहते हो कर डालो और मुझे मोहलत न दो मेरा मददगार अल्लाह है जिसने किताब नाज़िल की है और वही सालेहीन का मददगार होता है।

इधर ख़ेमों में औरतों ने जब आपका कलाम सुना तो उनमें हश्र बरपा हो गया। उनके रोने की आवाज़ें बुलन्द हुई तो आपने अपने भाई हज़रत अब्बास और अपने फ़रजन्द हज़रत अली अकबर को भेजा कि जा कर उन्हें ख़ामोश कराओ। मुझे अपनी जान की क़सम! अभी तो उन्हें बहुत रोना है। उन्होंने जा कर उनको ख़ामोश करवाया। जब उनके रोने की आवाज़ मौक़ूफ़ हुई तो इमाम पाक ने अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और अंबिया किराम और मलाइका पर दुरूद व सलाम भेजा और हम्द व नअ़त में ऐसा फ़सीह व बलीग़ कलाम फ़रमाया जिसका ब्यान नहीं हो सकता। रावी कहता है:

ख़ुदा की क़सम! मैंने ऐसी फ़सीह व बलीग़ तक़रीर न इस से पहले किसी से सुनी थी और न बाद में किसी से सुनी। उसके बाद आख़िरी इत्मामे हुज्जत करते हुए फ़रमाया :

लोगो! मेरे हसब व नसब को देखो मैं कौन हूँ फिर अपने नफ़्सों में ग़ौर करो और उनको सरज़निश करो और देखो क्या तुम्हारे लिए मेरा क़त्ल और मेरी आबरूरेज़ी दुरुस्त और हलाल है? क्या मैं तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नवासा और उनके वसी और इब्ने अ़म, अल्लाह और उसके रसूल पर बेहतर ईमान लाने वाले का फ़रज़न्द नहीं हूँ? क्या सैय्यदुश्शोहदा हज़रत हम्ज़ा मेरे बाप के चचा और शहीद जाफ़र तैयार जुल-जनाहीन मेरे चचा नहीं हैं? क्या यह मशहूर हदीस तुम्हें नहीं पहुँची कि रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरे और मेरे भाई के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया था कि तुम दोनों जन्नत के नौजवानों के सरदार हो और अह्ले सुन्नत की आँख की ठंडक हो? पस अगर तुम मेरी तस्दीक़ करो तो बिलाशुबह मैं तुमसे जो कुछ कह रहा हूँ हक़ और सच कह रहा हूँ क्योंकि जब से मुझे यह मालूम हुआ है कि झूठे पर ख़ुदा तआ़ला का ग़ज़ब नाज़िल होता है। ख़ुदा की क़सम! उस वक़्त से मैंने अमदन कभी झूठ नहीं बोला। तो अगर मेरी तस्दीक़ नहीं करते हो बल्कि मुझे झूठा समझते हो तो तुम में इस वक़्त भी ऐसे लोग मौजूद हैं कि अगर तुम उन से पूछो तो वह तुम्हें बताएंगे (या फिर असहाबे रसूलुल्लाह) जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी, अबू सईद ख़ुदरी, सहल बिन सअ़द, ज़ैद बिन अरक़म से पूछ लो वह इसकी तस्दीक़ करेंगे क्योंकि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से इस हदीस को सुना है तो अब मुझे बताओ कि क्या इन बातों में से कोई बात भी ऐसी नहीं है जो तुम्हें मेरी ख़ूँरेज़ी और आबरूरेज़ी से रोक दे?

इस दौरान शिम्र लईन ने आप पर एक नामुनासिब चोट की। हबीब बिन मुज़ाहिर ने उसका दन्दाँ शिकन जवाब देकर कहा ख़ुदा ने तेरे दिल पर मुहर लगा दी है इसलिए तू नहीं समझ सकता कि इमाम क्या फ़रमा रहे हैं शिम्र और हबीब की गुफ़्तगू के बाद इमाम पाक ने फिर फ़रमाया :

लोगो! अगर तुम लोगों को मेरी इस बात में कुछ शक है (कि मैं जन्नत के नौजवानों का सरदार हूँ) तो क्या इसमें कोई शक व शुबहा है कि मैं तुम्हारे नबी का नवासा हूँ ? ख़ुदा की क़सम! इस वक़्त मश्रिक़ से लेकर मग़्रिब तक रूए ज़मीन पर मेरे सिवा और कोई नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नवासा नहीं है। मुझे बताओ तुम लोग मेरे ख़ून के क्यों प्यासे हो? क्या मैंने किसी को क़त्ल किया है या किसी का माल बरबाद किया है? या किसी को ज़ख़्मी किया है जिसका तुम मुझसे बदला लेना चाहते हो? इन बातों का उनके पास कोई जवाब नहीं था और वह सब ख़ामोश! थे फिर आपने कुछ लोगों का नाम लेकर पुकारा ऐ शबस बिन रिब्ई! ऐ हिजाज़ बिन अल-जब्र, ऐ क़ैस बिन अशअ़स, ऐ ज़ैद बिन हारिस क्या तुमने मुझे खुतूत लिख कर अपने पास नहीं बुलाया था? उन्होंने कहा : हमने कोई खुतूत नहीं लिखे थे। आपने फ़रमाया : हाँ, बिलाशुबह तुमने ज़रूर लिखे थे। फिर फ़रमाया लोगो! जब तुम मुझे नापसन्द करते हो तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी गोशा-ए-अमन की तरफ़ चला जाऊँ।

(इब्ने असीर स० **25/4**, तबरी स० **243/6**)

इस पर क़ैस बिन अशअ़स ने कहा : आप इब्ने अ़म्म यानी इब्ने ज़्याद के हुक्म पर सर झुका दें। फिर आपके साथ कोई नापसन्दीदा सुलूक नहीं होगा। आपने फ़रमाया तुम भी तो आख़िर मुहम्मद बिन अशअ़स के भाई हो? क्या तुम यह चाहते हो कि बनू हाशिम तुमसे मुस्लिम बिन अ़क़ील के ख़ून के अ़लावा और दूसरे ख़ून के बदला का भी मुतालबा करें। ख़ुदा की क़सम! मैं किसी ज़लील इंसान की तरह इब्ने ज़्याद के हाथ में अपना हाथ न दूँगा और न मैं किसी गुलाम की तरह इक़रार इताअ़त करूँगा।

अल्लाह के बन्दो! मैं अपने और तुम्हारे रब से पनाह माँगता हूँ कि तुम मुझे संगसार करो ! मैं अपने और तुम्हारे परवरदिगार से हर मग़रूर और मुतकब्बिर से जो यौमे हिसाब पर ईमान नहीं रखता पनाह माँगता हूँ।

जब सरे महशर वह पूछेंगे हमारे सामने
क्या जवाबे जुर्म दोगे तुम ख़ुदा के सामने

यह फ़रमा कर आपने अपनी सवारी को बिठाया और उस से उतर पड़े और कूफ़ी आपकी तरफ़ बढ़े। उनका रैला देख कर जुहैर बिन क़ैन घोड़े पर सवार हथियार लगाए हुए आगे बढ़े और दुश्मनों के सामने पुर जोश अंदाज़ में फ़रमाया।

ऐ अह्ले कूफ़ा! अल्लाह के अज़ाब से डरो। एक मुसलमान पर यह वाजिब है कि दूसरे मुसलमान भाई को नसीहत करे अभी तक हम आपस में भाई-भाई और एक दीन व मिल्लत पर हैं। और जब तक हमारे तुम्हारे दरम्यान तल्वार नहीं चलती उस वक़्त तक हम को तुम्हें नसीहत करने का हक़ है और जब तल्वारें चलेंगी तो हमारा तुम्हारा यह रिश्ता टूट जाएगा। फिर हम एक अलग जमाअत होंगे और तुम एक अलग जमाअत। सुनो बेशक अल्लाह तआला ने हमें और तुम्हें अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद के बारे में इम्तिहान व आज़माइश में मुब्तला किया है ताकि वह देखे कि हम और तुम उनके साथ क्या सुलूक करते हैं हम तुम्हें औलादे रसूल की नुसरत व इम्दाद करने और सरकश बिन सरकश बिन ज़्याद और यज़ीद का साथ छोड़ने की दावत देते हैं इसलिए कि तुम्हें इन दोनों से बुराई के सिवा और कुछ हासिल न होगा। यह तुम्हारी आँखों में गर्म सलाइयाँ फेरेंगे। तुम्हारे हाथ पाँव काटेंगे। तुम्हारा मिसला करेंगे। तुम्हारी लाशों को खुजूर की शाखों पर लटकाएंगे। हज्र बिन अ़दी और उनके असहाब और हानी बिन उरवा जैसे तुम्हारे मुम्ताज़ लोगों को क़त्ल करेंगे।

यह सुनकर कूफ़ियों ने जुहैर बिन क़ैन को गालियाँ दीं और इब्ने ज़्याद की तारीफ़ और उसके लिए दुआ करके कहने लगे।

ख़ुदा की क़सम! हम यहाँ से एक क़दम पीछे नहीं हटाएंगे जब तक तेरे साहब (हुसैन) और उनके हमराहियों को क़त्ल न कर दें या उनको बहैसियत क़ैदियों के इब्ने ज़्याद के सिपुर्द न कर दें।

जुहैर ने कहा : ख़ुदा के बन्दो!

हज़रत फ़ातिमा रिज़वानुल्लाहु अ़लैहा की औलाद इब्न सुमैया के मुक़ाबला में ज़्यादा मुहब्बत व नुसरत की मुस्तहिक़ है। अगर तुम इनकी इम्दाद व एआनत नहीं करते हो तो ख़ुदारा इनको क़त्ल न करो।

उनका मुआ़मला उनके और उनके इब्ने अ़म यज़ीद के दरम्यान छोड़ दो। मुझे अपनी जान की क़सम! यज़ीद तुम्हारी इताअ़त गुज़ारी से हुसैन के क़त्ल किए बग़ैर भी तुमसे खुश हो सकता है।

यह सुनकर शिम्र ने जुहैर को एक तीर मारा और कहा : बस ख़ामोश रह। ख़ुदा तेरा मुँह बन्द करे तूने अपनी बक बक से हमारा दिमाग़ चाट लिया है। जुहैर ने जवाब दिया : ओ इब्नुल-बव्वाल ! मैं तुझ ही से मुख़ातिब नहीं हूँ। तू तो जानवर है। वल्लाह! मैं समझता हूँ कि तू तो कुरआन की दो आयतों को भी समझने की लियाक़त नहीं रखता। पस अब क़्यामत के दिन की ज़िल्लत व रुसवाई और अज़ाबे अलीम तुझे मुबारक हो !

शिम्र ने कहा : अब ख़ुदा तुझे और तेरे साहब को इसी वक़्त क़त्ल करने वाला है। जुहैर ने कहा : क्या तू मुझे मौत से डराता है? ख़ुदा की क़सम! हुसैन के साथ जान देना मुझको तुम्हारे साथ दाइमी ज़िन्दगी से ज़्यादा पसन्द है। फिर बआवाज़े बुलन्द लश्करे यज़ीद से ख़िताब किया लोगो! इन संगदिल ज़ालिमों के फ़रेब में आकर अपना दीन न बरबाद करो। ख़ुदा की क़सम! जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद और आपके अह्ले बैत का ख़ून बहाएंगे और उनके मददगारों और उनके हरम की तरफ़ से लड़ने वालों को क़त्ल करेंगे वह आपकी शफ़ाअ़त से महरूम रहेंगे।

हुसैन इब्ने अ़ली की ज़िन्दगी कुरआन की सूरत
रसूलुल्लाह की दुनिया में इक रौशन निशानी है

इमाम आ़ली मक़ाम ने जुहैर को वापस बुला लिया।

दर्से इबरत :

जब बदबख़्ती किसी क़ौम का मुक़द्दर बन जाती है तो आँखों पर पर्दे पड़ जाते हैं और दिलों पर मुहरें लग जाती हैं फिर हक़ को देखने और हक़ समझने की सलाहियत ख़त्म हो जाती है। चुनांचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

और इस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जिसको उसके रब की आयात से समझाया गया तो उसने रूगरदानी की और उसने फ़रामोश कर दिया उन (आमाल को) जो उसके हाथों ने पहले किए थे (तो) हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए कि वह उसको न समझ सकें और उनके कानों में बहरा पन पैदा कर दिया और अगर तुम उनको हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो हरगिज़ कभी हिदायत की तरफ़ न आएंगे और तुम्हारा परवरदिगार बहुत

बख़्शने वाला और बड़ी रहमत वाला है अगर वह उन को पकड़ लेता उनके किए पर तो उन पर बहुत जल्द अज़ाब भेजता (मगर वह ऐसा नहीं करता) बल्कि उनको सज़ा देने का एक वक़्त मुक़र्रर है। फिर उस वक़्त कोई पनाह की जगह न पाएंगे।

कूफ़ियों यज़ीदियों का हाल भी बिल्कुल ऐसा ही हो गया था जिसकी वजह से कोई नसीहत उन पर असर अंदाज़ न हुई और करतूत तो उनके बिलाशुबह ऐसे ही थे कि उन ज़ालिमों को फ़ौरन अज़ाब की चक्की में पीस कर रख दिया जाता और ज़रा ढील न दी जाती, लेकिन अल्लाह तआला ने अपने हिल्म व करम और हिक्मत की वजह से उनको मोहलत दी क्योंकि उसके हाँ हर चीज़ के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है।

हुर्र को जन्नत भी मिली औजे शहादत भी मिला
इक नज़र में शाह ने क़तरे को दरिया कर दिया

हुर्र का आना :

ज़ुहैर बिन क़ैन की वापसी के बाद अमर बिन सअ़द जंग का आग़ाज़ करने के लिए आगे बढ़ा तो हुर बिन यज़ीद ने इब्ने सअ़द से कहा : ख़ुदा तेरा भला करे क्या तू उन से लड़ेगा? इब्ने सअ़द ने कहा हाँ और क़सम ख़ुदा की! लड़ना भी ऐसा कि जिसमें कम-अज़-कम यह होगा कि सर और हाथ कट-कट के गिरेंगे। हुर्र ने कहा : क्या उनकी तीन बातों में से कोई बात भी तुम लोगों को मंज़ूर नहीं? इब्ने सअ़द ने कहा वल्लाह! अगर यह अम्र मेरे इख़्तियार में होता तो मैं ज़रूर ऐसा ही करता लेकिन क्या करूं तुम्हारा अमीर नहीं मानता।

हुर्र पर एक लरज़ा सा तारी हो गया। आँखों से तारीकी के पर्दे उठ गए और हक़ के जलवे नज़र आने लगे। हुर्र की यह हालत देख कर उन्हीं की बिरादरी के एक शख़्स मुहाजिरीन औस ने हुर्र से कहा : वल्लाह! आज तुम्हारी अजीब हालत है। मैंने किसी जंग में तुम्हारी ऐसी हालत नहीं देखी हालाँकि मेरे नज़्दीक तुम अह्ले कूफ़ा के बहादुरों में से एक बहादुर तरीन इंसान हो फिर यह हालत क्यों है? हुर्र ने कहा ख़ुदा की क़सम! मेरे एक तरफ़ जन्नत और एक तरफ़ दोज़ख़ है और मैं दरम्यान में कशमकश में मुब्तला हूँ कि किधर जाऊँ।

हुर्र ने फ़रमाया बरादर तुझे यह भी है ख़बर
इस लड़ाई में मुक़ाबिल है पयम्बर का पिसर

आक़िबत से जिसे लड़ना हो बिला ख़ौफ़ व ख़तर
इस लड़ाई में दिखाए वह दिलेरी के हुनर
दरम्यान दोज़ख़ व जन्नत के खड़ा हूँ मैं यहाँ
ख़ौफ़े दोज़ख़ से हूँ इस वक़्त बेताब व तवाँ

फिर कहा ख़ुदा की क़सम! अब तो जन्नत की तरफ़ ही जाऊँगा ख़्वाह मुझे टुक्ड़े-टुक्ड़े कर दिया जाए या ज़िन्दा जला दिया जाए। यह कह कर अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और गरोहे अश्क़िया से निकल कर इमाम आली मक़ाम के पास पहुँच गए।

निकल कर लश्करे आदा से मारा हुर्र ने यह नारा
कि देखो यूँ निकलते हैं जहन्नम से ख़ुदा वाले

इमाम पाक की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की या इब्ने रसूलुल्लाह! मेरी जान आप पर फ़िदा हो मैं वही शख़्स हूँ जिसने आपको वापस न जाने दिया और रास्ता भर आपके साथ-साथ रहा और इसी मक़ाम पर ठहर जाने के लिए मज्बूर कर दिया था, मगर ख़ुदाए वहदहू ला शरीक की क़सम! मुझे यह गुमान तक न था कि उन लोगों की बदबख़्ती इस हद तक पहुँच जाएगी और यह आपकी तमाम शराइत को रद कर देंगे। मैं तो ख़्याल करता था कि आपकी पेशकरदा शराइत में से किसी शर्त को मान लेंगे। और सुलह हो जायेगी वल्लाह अगर मुझे यह मालूम होता कि यह लोग आपके साथ ऐसा सुलूक करेंगे तो मैं हरगिज़ उनका साथ न देता और जो गुस्ताख़ियाँ मुझ से हुईं उनका मुरतकिब न होता। अब मैं अपने किए पर नादिम हूँ और अल्लाह के हुज़ूर तौबा करता हूँ और अपनी जान आप पर कुरबान करता हूँ। फ़रमाइए क्या मेरी यह तौबा क़ुबूल होगी? आपने फ़रमाया : हाँ अल्लाह तुम्हारी तौबा क़ुबूल करेगा और तुम्हें बख़्श देगा। तुम्हारा नाम क्या है? कहा हुर्र बिन यज़ीद। फ़रमाया तुम दुनिया व आख़िरत में इंशाअल्लाह हुर्र (आज़ाद) हो घोड़े से उतरो। अर्ज़ किया अब तो उसी वक़्त उतरूँगा जब उन ज़ालिमों से लड़ते हुए अपनी जान आप पर फ़िदा कर दूँगा! फ़रमाया : अच्छा जिस तरह चाहो करो अल्लाह तुम पर रहम करे !

अर्ज़ की इब्ने रसूल इक ख़ताकार हूँ मैं
आपके पहले तक़ाबुल का गुनहगार हूँ मैं
इस ब्याबान में सरकार को मैंने रोका

यह जसारत हुई सरकार में इस हुर्र से शहा
यह तमन्ना है मेरे जुर्म को अब अफ़्व करो
जाँ फ़िदा करने की अब मुझको इजाज़त दे दो
आपने हाथ सरे हुर्र पे बशफ़्क़त रखा
और फरमाया तेरा उज़्र भी मक़्बूल हुआ
तौबा कर रब से वह बख़्शेगा तेरे जुर्म व ख़ता
तेरी तक़्सीर को हुर्र मैंने भी अब अफ़्व किया
जाँ फिदा करने की अब तुझको इजाज़त दे दी
अब शहादत की सआदत तुझे मिल जाएगी

हुर्र का ख़िताब :

इमाम आली मक़ाम के जाँनिसारों में शामिल होने के बाद हुर्र ने कूफ़ियों यज़ीदियों से कहा लोगो! हुसैन ने तुम्हारे सामने जो तीन सूरतें पेश की हैं उनमें से कोई एक सूरत क्यों नही मान लेते ताकि खुदा तुम्हें उनके साथ जंग व जिदाल में मुब्तला होने से बचा ले : कूफ़ियों ने कहाः हमारे अमीर इब्ने सअ़द से बात करो। इब्ने सअ़द ने कहा : मैं तो चाहता था लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। हुर्र ने कहा ऐ कूफियो! खुदा तुम्हें तबाह व बरबाद करे तुमने ख़ुद हुसैन को बुलाया। जब वह आ गए तो तुमने उनका साथ छोड़ दिया और दुश्मन के हवाले कर दिया। तुमने तो यह कहा था कि हम अपनी जानें उन पर फ़िदा करेंगे और अब तुम उन्हीं पर हमला करने और उन्हें क़त्ल करने के दरपे हो। तुमने उन्हें चारों तरफ़ से घेर लिया है। उनको और उनके अह्ले बैत को अल्लाह तआ़ला की वसीअ़ व अ़रीज़ ज़मीन में किसी तरफ़ जा कर अमन व अमान से रहने से रोक दिया है। इस वक़्त वह बिल्कुल क़ैदियों की हालत में हैं और तुमने उन पर नहरे फुरात का पानी बन्द कर रखा है जिसे यहूदी, नसरानी और मजूसी सब पीते हैं और इस मैदान के सुवर और कुत्ते तक उसमें लोटते हैं, उसी पानी के लिए हुसैन और उनके अह्ल व अ़याल तड़प रहे हैं। तुमने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद उनकी औलाद के साथ कैसा बुरा सुलूक किया है। अगर तुमने इसी वक़्त तौबा न की और अपने इरादों को न बदला तो क़यामत के दिन ख़ुदा तआ़ला तुम्हें भी प्यासा तड़पाएगा।

कूफ़ियों ने हुर्र पर तीर बरसाने शुरू कर दिए और हुर्र वहाँ से लौट कर इमाम पाक के सामने आ खड़े हो गए।

आग़ाज़े जंग :

हुर्र के वापस आने के बाद इब्ने सअ़द अपना अ़लम लेकर आगे बढ़ा और एक तीर इमाम की तरफ़ चला कर कहने लगा : गवाह रहना सबसे पहला तीर मैंने ही मारा है। उसके साथ ही तबले जंग पर चोट पड़ी और दूसरों ने भी तीर चलाने शुरू कर दिए। जंग शुरू हो गई और दोनों तरफ़ से सिपाही निकल निकल कर आये और अपनी शुजाअ़त का मुज़ाहरा करने लगे।

ज़्याद बिन अबी सुफ़ियान का आज़ाद गुलाम यसार और इब्ने ज़्याद का आज़ाद गुलाम सालिम दोनों सबसे पहले कूफ़ियों से निकले और मैदान में आकर दावते मुक़ाबला दी। उनके मुक़ाबला के लिए हबीब बिन मुज़ाहिर और बरीर बिन हज़ीर आगे बढ़ने लगे मगर इमाम ने उन्हें रोक लिया। यह देख कर अ़ब्दुल्लाह बिन उमैर अल-क़ल्बी ने मुक़ाबला की इजाज़त तलब की। इमाम ने इजाज़त दी। यह तन्हा उन दोनों के बिल-मुक़ाबिल हुए। उन्होंने पूछा तुम कौन हो? अ़ब्दुल्लाह ने अपना नाम व नसब ब्यान किया। उन्होंने कहा हम तुम्हें नहीं जानते जुहैर बिन क़ैन या हबीब बिन मज़ाहिर हमारे सामने आएं। उस वक़्त यसार आगे और सालिम पीछे था। अ़ब्दुल्लाह ने कहा ओ फ़ाहिशा के बेटे! तुझे मुझ से मुक़ाबला करने में आर है यह कहते हुए एक ही वार में उसे ढेर कर दिया। सालिम ने एक दम झपट कर हमला कर दिया। अ़ब्दुल्लाह ने उसकी तल्वार को बाएं हाथ पर रोका उनकी उंगलियां उड़ गईं मगर दाएं हाथ से उस पर एक ऐसा वार किया कि सालिम को भी मार गिराया और यह शेअ़र पढ़े।

इन तंकुरूनी फअनब्नु कल्बी
नस्बी व बैती फ़ी उलैमिन हसबी

अगर तुम लोग मुझे नहीं जानते हो तो मैं खानदाने कल्ब का एक फ़रज़न्द हूँ यह मेरा नसब है। और मेरे लिए यह काफ़ी है कि मेरा घर क़बील-ए-ओलैम में है।

इन्नी इम्रुउन ज़ू मिर्रतिन व ग़ज़बी
व लस्तु बिल-ख़्वारे इन्दन्नकब

मैं बड़ी कुव्वत वाला और साहिबे शम्शीर बरी हूँ और सख़्ती व मुसीबत के वक़्त बद दिल और आजिज़ नहीं होता।

इन्नी ज़ईमुल लक उम्म वहबी
बित्तअ्ने फ़ीहिम मुक़द्दिमन वज़्ज़रब
ज़रब गुलामिन मुमिनिम बिर्रब्बी :

ऐ वहब की माँ मैं! तेरी इस बात का ज़ामिन हूँ कि दुश्मनों पर बड़ी जुरअत और दिलेरी के साथ नेज़ा व शम्शीर की ज़र्ब लगाऊँगा। वह ज़र्ब जो रब तआला पर ईमान रखने वाले बन्दे की ज़र्ब होती है।

अ़ब्दुल्लाह की बीवी उम्मे वहब ने यह सुनकर एक ख़ेमा की चोब हाथ में ली और आगे बढ़ कर कहा। मेरे माँ बाप तुम पर फ़िदा औलादे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से लड़े जाओ। अ़ब्दुल्लाह ने उन्हें औरतों के ख़ेमों में लौटाना चाहा लेकिन उन्होंने इंकार किया और कहा: मैं तुम्हारा साथ न छोडूँगी। तुम्हारे साथ जान दूँगी। इमाम आ़ली मक़ाम ने आवाज़ दी अल्लाह तआ़ला तुम दोनों को अह्ले बैत की तरफ़ से जज़ाए ख़ैर दे। बीबी तुम वापस आ जाओ। औरतों पर क़िताल वाजिब नहीं है। आपके इरशाद पर वह वापस आ गई।

अ़ब्दुल्लाह बिन उमैर कल्बी :

यह बनी ओलैम में से हैं। हाल ही में कूफ़ा आए थे और क़बील-ए-हम्दान में जअ़द के कुएं के पास एक मकान में ठहरे हुए थे। उनकी बीवी उम्मे वहब जो खानदाने नमीर बिन फ़ासित से थीं उनके साथ थीं। अ़ब्दुल्लाह ने मक़ामे नख़ीला में एक लश्कर मआ़ साज़ व सामान के देख कर लोगों से पूछा : यह लश्कर कहाँ जा रहा है? किसी ने उन से कह दिया कि फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह के फ़रज़न्द हुसैन के साथ जंग करने के लिए! अ़ब्दुल्लाह फ़रमाते हैं खुदा की क़समे! मैं यह आरज़ू रखता था कि कभी मुझे मुश्रेकीन से जिहाद का मौक़ा मिले। जब मैंने हालात सुने और लश्करे कूफ़ा को देखा तो मैंने यक़ीन कर लिया कि जो लोंग अपने नबी के नवासे पर लश्कर कुशी कर रहे हैं उन से जिहाद करना भी इन्दल्लाह मुश्रेकीन के साथ जिहाद करने से अज्र व सवाब में कम नहीं।

फिर अपनी बीवी के पास आए और तन्हाई में बुला कर उसको सब हालात से और अपने इरादे से आगाह किया। बीवी ने कहा तुम्हारा इरादा बहुत अच्छा है। अल्लाह तुम्हारी बेहतरीन तमन्ना और आरज़ू को पूरा करे! चलो मुझे भी अपने साथ ले चलो। अ़ब्दुल्लाह बीवी को साथ लेकर रात ही रात में चल कर लश्करे इमाम में पहुँच गए थे। उन्हीं को यह शर्फ़ हासिल

हुआ कि इमाम के पहले जाँनिसार सिपाही की हैसियत में निकल कर सालिम और यसार को मौत के घाट उतारा।

सालिम और यसार के क़त्ल के बाद अ़मर बिन हुज्जाज जो यज़ीदी लश्कर के मैमना पर रईस था। अपने दस्ता को लेकर इमाम की तरफ़ बढ़ा। जाँनिसाराने इमाम पाँव टेक कर सीना से पर हो गए और तीरों के वार से कूफ़ियों के घोड़ों के मुँह फेर दिए।

करामत :

कूफ़ियो में से एक गुस्ताख़ इब्ने जौज़ा ने दो मरतबा बआवाज़ बुलन्द कहा : हुसैन हैं? किसी ने उसका जवाब न दिया। तीसरी मरतबा कहने पर अंसारे इमाम ने कहा तेरा क्या मक़्सद है? इस ज़ालिम ने कहा ऐ हुसैन! तुझे दोज़ख़ की बशारत हो (मआ़ज़ल्लाह) इमाम आ़ली मक़ाम ने जवाबन फ़रमाया : तू झूठा है मैं दोज़ख़ में नहीं बल्कि अपने रब्बे रहीम और रसूले शफ़ीअ़ व मुताअ के हुज़ूर जाऊँगा। फिर पूछा यह कौन है? अंसार ने अर्ज किया यह इब्ने जौज़ा है। आपने हाथ उठा कर कहा खुदावन्दा! उसको आग में डाल दे। उसी वक़्त उसका घोड़ा बिदक कर दौड़ा और इमाम के ख़ेमों के पीछे जो ख़न्दक़ में आग जल रही थी उस तरफ गया जौज़ा ने चाहा कि उस ख़ंदक़ को फांद जाए मगर घोड़े के उछलने के वक़्त यह उस पर से गिर पड़ा और पाँव रेकाब में अटक गया। अब उसका एक पाँव तो रेकाब में अटका हुआ था और बाक़ी वजूद लटका हुआ था और घोड़ा परेशानी के आ़लम में बराबर भाग रहा था। चुनांचे उसका सर, रान, पिंडली और एक पाँव तो घोड़े के नीचे आ आ कर और बराबर की ठोकरों से चूर चूर हो गयो आख़िर घोड़े ने ख़न्दक़ की आग में डाल दिया और वह ज़ालिम फ़ना फ़िन्नार हो गया। मस्रूक़ बिन वाइल हज़रमी उन्हीं सवारों में से एक था जो दस्ता के आगे आगे था वह कहता है कि मैं आगे आगे इसलिए था कि मैं यह चाहता था कि किसी तरह हुसैन का सर काटने में कामयाब हो जाऊं ताकि इस वजह से इब्ने ज़्याद के यहाँ क़द्र व मंज़िलत पाऊँ लेकिन मैंने हुसैन की बद्दुआ़ से इब्ने जौज़ा का हश्र देखा तो मेरा इरादा बदल गया और लश्करे यज़ीद से बिल्कुल इलाहिदा हो गया। उसके भाई अ़ब्दुल-जब्बार ने लश्कर से इलाहिदगी का सबब पूछा। कहने लगा मैंने उस खानदान के लोगों से एक ऐसी बात देखी है कि मैं कभी भी उन से न लड़ूँगा। यह भी सिलसिल-ए-इत्मामे हुज्जत की एक कड़ी थी। इमाम

आली मक़ाम को यह दिखाना था कि अगर मेरी मक़्बूलियत में कुछ शुबह है तो आँख रखते हो तो देख लो इधर जुबान से निकलता है उधर हो जाता है अब सोच लो कि ऐसे मक़्बूल और मुस्तजाबुद्दावात के साथ लड़ने और उसको सताने का अंजाम कितना सख़्त होगा। अब भी मौक़ा है बाज़ आ जाओ। मगर वह बदबख़्त जिनको मुरदार दुनिया की हिर्स व तमअ़ ने अंधा व बहरा बना दिया था उन पर कोई असर न हुआ।

उसके बाद कूफ़ी लश्कर से यज़ीद बिन मअक़्ल निकला और लश्करे इमाम से बरीर बिन हज़ीर निकले। यज़ीद ने कहाः बरीर तुमने देख लिया कि खुदा ने तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया। बरीर ने कहाः खुदा की क़सम! खुदा ने मेरे साथ भलाई की और तेरे साथ बुराई की। यज़ीद बोला तुमने झूठ कहा हालाँकि आज से पेशतर तुमने कभी झूठ नहीं बोला था। और मैं तुम्हें बता देता हूँ कि आज तुम गुम्राहों में से हो। बरीर ने कहाः आओ पहले मुबाहिला करें और खुदा तआ़ला से दुआ़ मांगें कि वह झूठे पर लानत करे और गुम्राह को क़त्ल करे, उसके बाद हम दोनों लड़ें, अभी पता चल जाएगा कि कौन गुम्राह है। चुनांचे दोनों ने दुआ़ की कि अल्लाह झूठे पर लानत करे और जो हक़ पर हो वह गुम्राह को क़त्ल करे फिर दोनों ने तल्वारें निकालीं और लड़ने लगे। यज़ीद ने बरीर पर वार किया वह खाली गया मगर बरीर ने जवाब में ऐसी कारी ज़र्ब लगाई कि तल्वार यज़ीद की ख़ौद को काटती हुई दिमाग़ तक पहुँच गई वह गिर पड़ा और तल्वार उसके सर में अटक गई। बरीर तल्वार को खींच रहे थे कि रज़ी बिन मुंक़िज़ अल-अ़ब्दी बरीर से लिपट गया। कुछ देर तक दोनों में कुश्ती होती रही। आख़िर बरीर ने रज़ी को नीचे गिरा दिया और उसके सीना पर सवार हो गए। रज़ी चिल्लाया मुक़ाबला करने वाले और बचाने वाले कहाँ हैं? मुझे आ कर बचाते क्यों नहीं? रज़ी के चिल्लाने पर कअ़ब बिन जाबराज़ी ने बरीर पर नेज़े का वार किया। नेज़ा उनकी पुश्त में पैवस्त हो गया अभी नेज़ा उनकी पुश्त में पैवस्त ही था और वह रज़ी के सीना से उठ रहे थे कि कअ़ब ने दूसरा वार करके उनको शहीद कर दिया।

यह कअ़ब जब वापस घर गया तो उसकी बहन नवार बिन्ते जाबिर ने कहा तूने फ़रज़न्दे फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह के दुश्मनों की मदद की और क़ारियों के सरदार को क़त्ल किया इसलिए खुदा की क़सम! मैं तुझसे कभी बात न करूँगी।

हज़रत बरीर के बाद हज़रत उमर बिन क़रज़ा अंसारी यह शेअ़र पढ़ते हुए आगे बढ़े।

तरजमा : "बेशक अंसार के शहसवार जानते हैं कि मैं उस बुज़ुर्ग की हिमायत में लड़ रहा हूँ जिसकी हिमायत व हिफ़ाज़त ज़रूरी है"।

यह ख़ूब लड़े और दादे शुजाअ़त देते हुए शहीद हो गए। उनका भाई अ़ली बिन क़रज़ा इब्ने सअ़द के साथ था। उस ज़ालिम ने अपने भाई को ख़ाक व ख़ून में ग़लतान देख कर पुकारा : ऐ हुसैन ऐ कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब! तुमने मेरे भाई को गुम्राह किया और धोखा देकर क़त्ल करा दिया (मआज़ल्लाह) आपने जवाब दिया खुदा ने तेरे भाई को गुम्राह नहीं किया बल्कि उसे हिदायत दी और तुझ को गुम्राह किया। यह जवाब सुनकर कहने लगा अगर मैं तुमको क़त्ल न करूँ तो अल्लाह मुझे क़त्ल करे यह कह कर आप पर टूट पड़ा। हज़रत नाफ़ेअ़ बिन बिलाल मुरादी ने एक दम आगे बढ़ कर उसको रोका और उस पर नेज़े से ऐसा वार किया कि वह चारों शाने चित गिरा। मगर उसके साथियों ने आगे बढ़ कर उसको बचा लिया और उठा कर ले गए।

उसके बाद इमाम पाक की तरफ़ से हुर्र बिन यज़ीद निकले। उनके मुक़ाबला में यज़ीद बिन सुफ़ियान आया। हुर्र ने एक ही वार में उसको मौत की नींद सुला दिया। हुर्र के बाद नाफ़ेअ बिन हेलाल आगे बढ़े। उनके मुक़ाबले में मज़ाहिम बिन हरीस आया। नाफ़ेअ़ ने उसे भी तड़पा के रख दिया। अभी तक लड़ाई इस अंदाज़ से हो रही थी कि फ़रीक़ैन की तरफ़ से एक एक जवान मैदान में आ रहा था। लेनिक कूफ़ी लश्कर से जो भी आया वह बच कर न गया। यह कैफ़ियत देख कर अ़मर बिन हज्जाज चिल्लाया : बेवकूफ़ कूफ़ियो! तुम्हें नहीं मालूम तुम किन लोगों से लड़ रहे हो यह सब मौत को जान से ज़्यादा अ़ज़ीज़ रखते हैं। लिहाज़ा एक एक करके उनके मुक़ाबले में हरगिज़ न जाओ। यह मुट्ठी भर लोग हैं तुम तो इनको सिर्फ़ पत्थर मार मार के भी ख़त्म कर सकते हो। ऐ कूफ़ियो! इताअ़त और जमाअ़त को लाज़िम पकड़े रहो और उस शख़्स (हुसैन) के क़त्ल में कोई शक व शुबह और तरद्दुद न करो जिसने इमाम (यज़ीद) की मुख़ालिफ़त की है और दीन को छोड़ दिया है। यह सुनकर इमाम पाक ने फ़रमाया : ऐ अ़मर बिन हुज्जाज! जो कुछ तुम लोग कर रहे हो मरने के बाद तुम्हें मालूम होगा कि किसने दीन को छोड़ा था और कौन दोज़ख़ का

ईंधन बनता है।

अ़मर बिन सअ़द ने भी अ़मर बिन हुज्जाज की राय को पसन्द किया और एक एक के मुक़ाबला की सख़्त मुमानेअ़त कर दी। उसके बाद अ़मर बिन हुज्जाज ने जो लश्करे यज़ीद के मैमना पर मुक़र्रर था इमाम पाक के मैमना पर आ़म हमला कर दिया। कुछ देर तक लड़ाई होती रही। उसमें इमाम के अंसार में से हज़रत मुस्लिम बिन औसजा अ़सदी शहीद हुए। उनको मुस्लिम बिन अ़ब्दुल्लाह ज़बाबी और अब्दुर्रहमान बिजली ने शहीद किया। इमाम पाक उनके लाशे के क़रीब तशरीफ़ ले गए। अभी उनमें कुछ रमक़ बाक़ी थी। फ़रमाया : मुस्लिम खुदा तआ़ला तुम पर रहम करे! फिर फ़रमाया :

पस कोई तो उन में से अपना ज़िम्मा पूरा कर चुका और कोई उनमें इंतिज़ार कर रहा है मगर वह बिल्कुल नहीं बोले।

फिर हबीब बिन मुज़ाहिर ने क़रीब आ कर कहा मुस्लिम तुम्हें जन्नत मुबारक हो। मुस्लिम ने बहुत आहिस्ता से कहा ख़ुदा तुम्हें ख़ैर व भलाई मुबारक करे हबीब ने कहा मैं जानता हूँ कि मैं भी तुम्हारे पास अभी पहुँचने ही वाला हूँ वरना मैं ज़रूर तुमसे कहता कि कोई वसीयत करो और उसे मैं ज़रूर पूरा करता। मुस्लिम ने इमाम पाक की तरफ़ इशारा करके कहा कि सिर्फ़ यह वसीयत करता हूँ कि उन पर जान फ़िदा करना। हबीब ने कहा वल्लाह मैं ऐसा ही करूंगा और मुस्लिम की रूह अपने आक़ा के सामने परवाज़ कर गई। रज़ि अल्लाहु अन्हु।

उसके बाद शिम्र ज़िल-जौशन जो लश्करे यज़ीद के मैसरा पर मुक़र्रर था इमाम पाक के मैसरा पर हमला आवर हुआ और उसके हमला के साथ ही यज़ीदी चारों तरफ़ से अंसारे इमाम पर टूट पड़े। बड़ा ज़बरदस्त मुक़ाबला हुआ। इमाम के साथ कुल 32 सवार थे मगर उन्होंने बेमिसाल शुजाअ़त व बहादुरी का मुज़ाहरा किया। जिधर रुख़ करते थे कूफ़ियों की सफ़ों को उलट देते थे यज़ीदी लश्कर में भगदड़ मच गई। सवारों की सफ़ों को दरहम बरहम कर दिया। अ़ज़रा बिन क़ैस ने जो कूफ़ी सवारों का सरख़ैल था अपने सवारों को हर तरफ़ पस्पा होते देख कर अब्दुर्रहमान बिन हिसीन को इब्ने सअ़द के पास भेजा कि तुम देख रहे हो उन चन्द सवारों ने मेरे सवार दस्ता का मुँह फेर दिया है और अब हाल यह है कि मेरे सवार इधर उधर भाग रहे और जान बचाने की फ़िक्र कर रहे हैं इसलिए फ़ौरन कुछ पैदल और कुछ तीर अंदाज़ भेजिए। इब्ने सअद ने अ़ज़रा की

दरख़्वास्त पर शबस बिन रिब्ई को जाने का हुक्म दिया मगर उसने गुरेज़ किया। फिर उसने हिसीन बिन नमीर तमीमी को बुलाया और उसके साथ तमाम ज़रहपोश सवारों और पाँच सौ तीर अंदाज़ों को भेजा। उन्होंने अंसारे इमाम के पास पहुँच कर तीरों की बारिश कर दी और थोड़ी देर में अंसारे इमाम के तमाम घोड़ों को ज़ख़्मी व बेकार कर दिया। इमाम के उन जाँनिसारों के पाए इस्तिक़लाल में कोई कमी न आई। वह घोड़ों से उतर पड़े और बड़ी देर तक पा प्यादा ही इस बहादरी व बेजिगरी के साथ लड़ते रहे कि कूफ़ियों के दाँत खट्टे कर दिए।

अय्यूब बिन मशरह अल-ख़ैवानी कहा करता था कि ख़ुदा की क़सम! हुर्र बिन यज़ीद के घोड़े को मेरा तीर लगा जो उसके हलक़ में उतर गया बस वह डगमगाया और गिर गया और हुर्र उसकी पुश्त से शेर की तरह कूद कर मैदान में आ गए और तल्वार खींच कर यह शेअ़र पढ़ा।

इन तअ़क़ेरू अबी फअना इब्नुल-हुर्री
अश्जअ़ो मिन ज़ी बअ़्द हिज़ब्री

तरजमा : अगर तुमने मेरे घोड़े को ज़ख़्मी व बेकार कर दिया तो क्या हुआ मैं इब्ने हुर्र और शेरे बबर से ज़्यादा बहादुर और शरीफ़ हूँ।

और उसी का यह भी कहना है कि मैंने हुर्र की तरह किसी को तेग़ज़नी करते हुए नहीं देखा। देखने वालों का कहना है कि ऐसी शदीद जंग कहीं नहीं हुई होगी, जैसी करबला के मैदान में हुसैनियों और यज़ीदियों के दरम्यान हुई।

इमाम पाक ने अपने ख़ेमों को इस तरतीब से लगाया और आपस में बाँध दिया था कि कूफ़ी एक रुख़ के सिवा किसी और तरफ़ से हमला नहीं कर सकते थे। यह देख कर इब्ने सअ़द ने हुक्म दिया कि खेमे उखाड़ दिए जाएं ताकि हर तरफ़ से हमला हो सके चुनांचे कूफ़ी जब ख़ेमे उखाड़ने के लिए आगे बढ़े तो इमाम पाक के चन्द जाँनिसार ख़ेमों के अन्दर आ गए और ख़ेमों की तरफ़ आने वालों और उखेड़ने और लूट मार करने वालों को आड़ से तल्वारों और तीरों से हलाक करने लगे। इब्ने सअ़द ने इस सूरत में भी अपने सिपाहियों का नुक़्सान और नाकामी देखी तो हुक्म दे दिया कि ख़ेमों को जला दो। चुनांचे खेमों को आग लगा दी गई और वह जलने लगे। इमाम पाक ने देखा तो फ़रमाया : उनको जलाने दो। इस सूरत में भी यह चारों तरफ़ से हमला नहीं कर सकेंगे क्योंकि पहले तो ख़ेमे हाइल

थे अब आग हायल है। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि वह आग के हायल होने की वजह से पुश्त की तरफ़ से हमला न कर सके। शिम्र लईन ने ख़ास आपके ख़ेमा में जो उन ख़ेमों से अलग था और जिसमें औरतें और बच्चे थे नेज़ा मार कर साथियों से कहा आग लाओ मैं उस ख़ेमा को और जो उसके अन्दर हैं उनको भी जला दूँ। बीबियों ने सुना तो वह चिल्लाती हुई खेमा से बाहर निकल आईं।

इमाम पाक ने देखा तो पुकार कर कहा : ओ पिसर ज़िल-जौशन तू मेरे अह्ले बैत को आग में जलाना चाहता है। ख़ुदा तुझे जहन्नम की आग में जलाए। शिम्र के साथियों में से हमीद बिन मुस्लिम और शबस बिन रिब्ई ने रोका और ग़ैरत दिलाई कि तेरे जैसे बहादुर का औरतों के साथ ऐसा सुलूक करना निहायत शर्मनाक है! ख़ुदा की क़सम! तुम्हारा सिर्फ़ मर्दों को क़त्ल कर देना भी तुम्हारे अमीर को ख़ुश करने के लिए काफ़ी है। शिम्र अपने इरादा से बाज़ आ कर लौटा। उसके लौटते ही ज़ुहैर बिन क़ैन ने दस आदमियों के साथ उस पर और उसके साथियों पर हमला किया और अबू उज्ज़ा अज़्ज़बाबी को मार गिराया और उनको ख़ेमा से दूर हटा दिया।

इसी असना में अ़ब्दुल्लाह बिन उमैर अल-कल्बी यज़ीदियों के साथ सख़्त लड़ाई करते हुए शहीद हो गए। उनकी बीवी उनके लाशे पर आईं और सर की तरफ़ बैठ कर उनके चेहरे से गर्द व ग़ुबार साफ़ करते हुए कह रही थीं : तुम्हें बहिश्त में जाना, मुबारक हो। शिम्र लईन यह जुमला सुन कर खौल गया! उसने अपने ग़ुलाम रुस्तम से कहा : उसके सर पर ज़ोर से लोहे का डंडा मार जूँ ही उसने मारा उस बीबी का सर पाश पाश हो गया और वह उसी वक़्त ही अपने शौहर के पास बहिश्ते बरीं में पहुँच गईं।

बहारों पर हैं आज आराइशें गुल्ज़ारे जन्नत की
सवारी आने वाली है शहीदाने मुहब्बत की

जंग का तूल खींचना कूफ़ियों के लिए काफी परेशान कुन था। वह चाहते थे कि जिस क़दर जल्द हो सके इसे ख़त्म करें और इन चन्द अफ़राद को हलाक कर दें। इमाम पाक के साथ चन्द जाँनिसार थे। इनमें से जब कोई शहीद हो जाता तो नुमायाँ कमी महसूस होती थी। उसके मुक़ाबला में कूफ़ियों का लश्करे कसीर था। उनके चन्द अफ़राद के क़त्ल होने से कोई फ़र्क़ नज़र न आता था। यह सूरते हाल देख कर अबू समामा अमर बिन अ़ब्दुल्लाह अस्साइदी ने बारगाहे इमाम पाक में अर्ज़ किया : मेरी

जान आप पर फ़िदा हो! यह लोग आपके बहुत क़रीब आते जाते हैं और मैं नहीं देख सकता कि मेरे सामने आपको कोई गुज़िन्द पहुँचे इसलिए मैं चाहता हूँ कि आपके सामने पहले मैं जान दूँ और मैंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी और चाहता हूँ कि नमाज़ पढ़ कर अपने रब से मुलाक़ात करूँ।

इमाम पाक ने सर उठा कर फ़रमाया : तुमने इस वक़्त नमाज़ को याद किया है अल्लाह तआला तुम्हें नमाज़ियों और अपने याद करने वालों में दाख़िल फ़रमाए। हाँ अब नमाज़ का वक़्त है उन लोगों से कहो कि हमें नमाज़ पढ़ने की मोहलत दें। उस पर हिसीन बिन नमीर ने बुलन्द आवाज़ से कहा : तुम्हारी नमाज़ क़ुबूल न होगी। हबीब बिन मुज़ाहिर ने जवाब दिया : ओ गधे! तू समझता है कि आले रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नमाज़ क़ुबूल न होगी और तेरी क़ुबूल होगी? यह सुनकर हिसीन को सख़्त तैश आया उसने हबीब पर हमला कर दिया। हबीब ने फ़ौरन आगे बढ़ कर उसके घोड़े के मुँह पर तल्वार का ऐसा वार किया कि वह आगे के दोनों पाँव उठा कर खड़ा हो गया और हिसीन उसकी पीठ से नीचे गिरा लेकिन उसके साथियों ने दौड़ कर उसे बचा लिया। हबीब ने यह रज्ज़ पढ़ा :

अना हबीबुन व अबी मुज़ाहिर
फ़ारिसुन हैजाओ व हरबुन तरअ़रु

मैं हबीब बिन मुज़ाहिर हूँ। शहसवार, बहादुर और मैदाने जंग में लड़ाई से आग भड़का देने वाला।

अन्तुम अअ़द्दु इद्दतुन व अक्सरू
व नह्नु औफ़ा मिन्कुम वस्बरू

तुम तादाद में तो हम से बहुत ज़्यादा हो लेकिन हम वफ़ादारी और सब्र व इस्तिक़ामत में तुमसे बढ़ कर हैं।

वनहनु आला हुज्जतुन व अज़्हरू
हक़्क़न व अत्क़ा मिंकुम व आज़रू

और हम दलीले हुज्जत में बहुत बुलन्द और ग़ालिब हैं और हक़ीक़त में तुमसे ज़्यादा मुत्तक़ी हैं और हमारा उज़्र तुम पर ग़ालिब है।

कुछ देर तक सख़्त लड़ाई और शम्शरज़नी की। बनू तमीम के एक शख़्स बुदैल बिन सरीम को क़त्ल किया लेकिन मुक़ाबला अंबोह कसीर से था। तने तन्हा कब तक लड़ सकते थे। एक तमीमी ने आप पर नेज़े का सख़्त वार किया जिससे आप गिर गए। अभी उठ ही रहे थे कि हिसीन बिन

नमीर ने आपके सर पर तल्वार मारी आप फिर गिर गए और तमीमी ने आगे बढ़ कर आपका सर काट लिया।

हबीब की शहादत से इमाम पाक का एक क़वी बाज़ू टूट गया। उस बहादुर जाँनिसार साथी के जुदा हो जाने से आप बहुत शिकस्ता ख़ातिर हुए। आपने फ़रमाया : मैं खुदा तआला के पास अपना और अपने हामियों का एहतिसाब करूँगा।

हुर्र बिन यज़ीद ने जब अपने आक़ा को पुरमलाल देखा तो यह रज्ज़ पढ़ते हुए आगे बढ़े।

अलैत ला अक़्तुलु हत्ता उक़्तला
वलन असाबल-यौमु इल्ला मुक़्बिलन
अज़्रेबुहुम बिस्सैफ़े ज़र्बन मुफ़स्सिलन
ला नाकिलन अन्हुम वला मुहल्लेलन

मशहूर जाँनिसार ज़हीर बिन क़ैन भी उनके साथ हो गए। वह यह पढ़ रहे थे।

अना ज़हीरू व अना इब्नुल-क़ैनी
अज़वदुहुम बिस्सैफ़े अन हुसैनी

मैं ज़हीर हूँ और मैं क़ैन का बेटा हूँ मैं उन दुश्मनों को अपनी तल्वार के साथ (हज़रत) हुसैन से दफ़अ़ करूँगा।

उन दोनों ने बड़ी बहादुरी और शुजाअ़त के जौहर दिखाए लेकिन यह भी कब तक लड़ते आख़िर कूफ़ी प्यादों के जम्मे ग़फ़ीर ने हुर्र पर सख़्त हमला करके उनको भी शहीद कर दिया।

अबू समामा अस्साइदी आगे बढ़े और उन्होंने अपने चचाज़ाद भाई को जो कूफ़ियों के साथ था, क़त्ल किया। इमाम पाक ने सलाते ख़ौफ़ अदा फ़रमाई। उसके बाद फिर ऐसी शिद्दत के साथ लड़ाई हुई कि करबला की ज़मीन थर्रा गई। दुश्मनों का हुजूम बढ़ते बढ़ते इमाम पाक के क़रीब पहुँच गया और उन्होंने आप पर तीरों की बारिश कर दी। आपके एक जाँनिसार हन्फ़ी आपके आगे आकर खड़े हो गए और आने वाले तमाम तीरों को अपने सीने पर रोका और एक तीर भी आप तक नहीं जाने दिया लेकिन एक इंसान कब तक मुसलसल आने वाले तीरों का हदफ़ बन सकता था। आख़िर सीना छलनी कराके यह भी इमाम पाक के क़दमों पर गिर कर फ़िदा हो गए।

उनके बाद नाफ़ेअ़ बिन हलाल अल-बिजली की बारी आई। उस बहादुर ने बारह कूफ़ियों को क़त्ल किया और बहुत से ज़ख़्मी भी किए। आख़िर दुश्मनों ने मिल कर उन पर ऐसा सख़्त वार किया कि उनके दोनों बाज़ू काट दिए और ज़िन्दा पकड़ कर खींचते हुए इब्ने सअ़द के पास ले गए। उनके चेहरे पर से ख़ून बह रहा था और कह रहे थे मैंने ज़ख़्मियों के अलावा तुम्हारे बारह आदमियों को क़त्ल किया है। अगर मेरे बाज़ू न कटते तो तुम मुझे असीर नहीं कर सकते थे। इब्ने सअ़द ने कहा नाफ़ेअ़! तुमने अपनी जान पर जुल्म किया। नाफ़ेअ़ ने कहा : खुदा ख़ूब जानता है जो कुछ मैंने किया है। शिम्र ने इब्ने सअद से कहा : खुदा आपको सलामत रखे उसे क़त्ल कीजिए। इब्ने सअ़द ने कहा : तू ही उसको लेकर आया है तू की क़त्ल कर। शिम्र ने उनके क़त्ल के लिए तल्वार उठाई तो नाफ़ेअ़ ने कहाः वल्लाह! अगर तुम मुसलमान होते तो हमारा ख़ून अपनी गर्दन पर लेकर तुम्हें अल्लाह सामने जाना ज़रूर शाक होता अल्लाह का शुक्र है जिसने हमारी मौत बदतरीन ख़लाइक़ के हाथों मुक़द्दर फ़रमाई। शिम्र ने उनको शहीद कर दिया।

फिर शिम्र लईन एक बड़ी तादाद के साथ रज्ज़ पढ़ता हुआ और फ़ख़्र व गुरूर के कलिमात कहता हुआ इमाम पाक की तरफ़ बढ़ा। इमाम पाक के साथ जो सिर्फ़ चन्द जाँनिसार बाक़ी थे उन्होंने देखा कि उस कसीर लश्कर के मुक़ाबला में ज़्यादा देर तक नहीं ठहर सकते तो उन्होंने तय कर लिया कि इमाम पाक पर किसी नाज़ुक वक़्त के आने से पहले सब के सब आप पर अपनी जानें क़ुरबान कर दें। चुनांचे सब परवाने एक-एक करके शमअ़-ए-इमामत पर निसार होने लगे। सब से पहले अ़ब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान बिन उज़्रा अल-ग़फ़्फ़ारी आपके सामने खड़े हो कर दुश्मन से लड़ने लगे। उनके बाद दो नौजवान सैफ़ बिन हारिस और मालिक बिन अब्द जो आपस में चचाज़ाद भाई मगर एक ही माँ के फ़रज़न्द थे इस तरह मैदान की तरफ़ बढ़े कि आँखों से आंसू जारी थे। इमाम पाक ने उन्हें रोता देख कर पूछा ऐ मेरे भाई के फ़रज़न्दो! रोते क्यों हो? खुदा की क़सम! अभी थोड़ी देर के बाद तुम खुश और मेरी आँखों की ठंडक होगे। उन्होंने अर्ज़ किया हम आप पर फ़िदा हों हम अपनी जान के लिए नहीं रोते बल्कि आपके लिए रोते हैं क्योंकि हम देख रहे हैं कि दुश्मनों ने आपको हर तरफ़ से घेर

लिया है और हम उनको दफ़ा करने की ताक़त नहीं रखते। आपने फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्दो! अल्लाह तआला तुम्हें मुत्तक़ियों की सी अहसन जज़ा दे। मेरी हालत पर ग़मगीन होने और मेरे साथ हमदर्दी करने पर। आमीन!

इसी असना में हंज़ला बिन असअद अश्शयामी इमाम पाक के सामने आकर खड़े हो गए और पुकार-पुकार कर कहने लगे ऐ लोगो! मुझे अंदेशा है कि तुम पर यौमुल-अहज़ाब और क़ौमे नूह व आद व समूद और उनके बाद की अक़्वाम की तरह अज़ाब नाज़िल हो। अल्लाह तआला बन्दों के लिए ज़ुल्म नहीं चाहता। ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तुम्हारे लिए रोज़े क़यामत का डर है जिस रोज़ तुम पीठ देकर भागते फिरोगे और कोई तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा और जिसको अल्लाह गुम्राह कर दे उसको हिदायत देने वाला कोई नहीं ऐ मेरी क़ौम के लोगो! हज़रत हुसैन को क़त्ल न करो कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तुम पर अज़ाब नाज़िल करके तुम्हें तबाह कर दे और इफ़्तरा परदाज़ हमेशा नाकाम ही रहता है। इमाम पाक ने फ़रमाया अल्लाह तआला तुम पर रहम करे उन लोगों ने अपने ऊपर अज़ाब तो उसी वक़्त ही वाजिब कर लिया था जब उन्होंने मेरी दावते हक़ को रद्द कर दिया था और अब यह हम सबको क़त्ल करने के लिए मैदान में आ गए हैं और उन्होंने तुम्हारे सालेहीन भाईयों को क़त्ल भी कर दिया है। अब वह कैसे बाज़ आ सकते हैं लिहाज़ा अब उनको समझाना बेकार है। हंज़ला ने कहा, मैं आप पर फ़िदा हो जाऊँ आपने सच फ़रमाया। अब मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं भी अपने भाईयों से जा मिलूँ। फ़रमाया जाओ उस दारुल-बक़ा की तरफ़ जो दुनिया व माफ़ीहा से बेहतर है। हंज़ला ने कहा अस्सलामु अलैका या अबा अब्दुल्लाह, अल्लाह का आप और आपके अह्ले बैत पर दुरूद व सलाम हो और अल्लाह हम सबको बहिश्त में मिलाए। इमाम पाक ने उस पर दो मरतबा आमीन कहा। हंज़ला आगे बढ़े और लड़ते लड़ते शहीद हो गए। उनके बाद सैफ़ और मालिक दोनों अस्सलामु अलैका या इब्न रसूलुल्लाह कहते हुए आगे बढ़े। आपने फ़रमाया वअलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाह! दोनों ने लड़ते हुए जानें क़ुरबान कर दीं। उनके बाद आबिस बिन अबी शबीब शाकिरी ने अपने आज़ाद करदा गुलाम शोज़ब से पूछा क्या इरादा है? उसने कहा इरादा यही है कि फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रज़न्द की तरफ़ से उनके दुश्मनों से लड़ता हुआ जान दे दूँ। आबिस ने कहा मुझे तुझ से यही उम्मीद

थी। आओ अबू अब्दुल्लाह हुसैन को सलाम करें और इजाज़त लें। आज का दिन वह दिन है कि जितना हम से हो सके सवाब लूट लें। बस आज के बाद ऐसे नेक अमल का मौक़ा नहीं मिलेगा। शोज़ब ने इमाम पाक को सलाम किया और आगे बढ़ कर लड़ने लगा यहाँ तक कि शहीद हो गया। आबिस ने सलाम के बाद अर्ज़ किया या अबा अब्दल्लाह। खुदा की क़सम! रूए ज़मीन पर मुझे आपसे ज़्यादा कोई अज़ीज़ नहीं लेकिन ऐ काश! मैं अपनी जान देकर आपको उन दुश्मनों से बचा सकता। यह कह कर तल्वार खींची और दुश्मनों की तरफ़ बढ़े। यह शुजाअत व बहादुरी में बहुत मशहूर थे। रबीअ बिन तमीम ने उनको पहचान कर अपने साथियों से कहा कि यह शेरे मैदाने दग़ा है। ख़बरदार! तुम में से कोई शख़्स तन्हा हरगिज़ उसके मुक़ाबले में न जाए। आबिस ने पुकारा है कोई जो मेरे मुक़ाबला में आए? किसी की हिम्मत न पड़ती थी। इब्ने सअद ने कहा सब मिल कर उस पर संगबारी करो। चुनांचे चारों तरफ़ से पत्थर आने लगे। आबिस ने उनकी बुज़्दिली देखी तो अपनी ज़र्रा और खुद उतार कर फेंक दी और उन पर टूट पड़े वह सब भागे और यह उनको मारते हुए उनकी सफ़ों में घुसते चले गए और एक हलचल बरपा कर दी। आबिस अगरचे बहुत बहादुर और शुजाअ थे लेकिन तने तन्हा हज़ारों का मुक़ाबला कब तक कर सकते थे। आख़िर दुश्मनों ने उनको घेरे में लिया और चारों तरफ़ से उन पर हमला करके उनको शहीद कर दिया।

अबू शअसा यज़ीद बिन ज़्याद अल-किन्दी पहले इब्ने सअद के लश्कर में थे। मगर जब उन्होंने देखा कि यज़ीदियों ने इमाम पाक की पेशकरदा सब शर्तें रद्द कर दीं तो यह लश्करे यज़ीद से निकल कर इमाम पाक के अंसार में शामिल हो गए थे। बड़े तीर अंदाज़ थे। इमाम पाक के आगे आए और दोनों ज़ानों टेक कर खड़े हो गए और यह शेअर पढ़े।

तरजमा : मैं यज़ीद हूँ और मेरा बाप मुहासिर है। मैं शेर बेशए शुजाअत हूँ। खुदावन्दा मैं हुसैन का मददगार हूँ और इब्ने सअद को छोड़ने वाला और उससे दूरी इख़्तियार करने वाला हूँ।

फिर पै-दर-पै दुश्मनों की तरफ़ सौ तीर चलाए जिनमें से सिर्फ़ पाँच तीर ख़ता हुए अलावा अज़ीं पाँच आदमियों को पहले क़त्ल कर चुके थे आख़िर यह भी मैदान में लड़ते हुए शहीद हो गए।

इसी तरह अमर बिन ख़ालिद, जब्बार बिन हारिस, सअद, मज्मा बिन

उबैदुल्लाह भी एक एक करके फ़िदा हो गए। सिर्फ़ एक सुवेद बिन अबी अल-मताअ़् अल-ख़सअ़मी बाक़ी रह गए।[1] जाँनिसाराने इमाम ने जिस सब्र व इस्तिक़्लाल, शुजाअ़त व बहादुरी और जाँनिसारी का मुज़ाहरा किया उसकी मिसाल नहीं मिलती। इस छोटे से लश्कर पर मसाइब के पहाड़ टूटे। ज़ुल्म व सितम के तूफ़ान बरपा हुए मगर किसी ने भी हिम्मत न हारी। हिमायते हक़ से मुँह न मोड़ा और किसी ने भी अपनी जान को अज़ीज़ न रखा बल्कि सबने अपनी जानों को परवाना वार शमअ़े इमामत पर कुरबान किया और फ़िरदौसे बरीं को सिधारे रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम।

(इब्ने असीर स० 30/4, तबरी : स० 251/6)

उसके हर क़तरे से पैदा हो गई दुनियाए नौ
कौन कहता है शहीदों का लहू नाकारा है
अबरे रहमत उनके मरक़द पर गोहर बारी करे
हश्र में शाने करीमी नाज़ बरदारी करे

आऐ हैं अब मैदान में अ़ली मुर्तज़ा के फूल
ज़हरा बतूल और चमने मुस्तफ़ा के फूल
उनकी वफ़ा, सब्र व रज़ा हक़ पर सबात से
हर दम हैं ताज़ा गुलशने दीं में वफ़ा के फूल
हूरें जनाँ से आईं मलक आए अ़र्श से
लेकर ख़ुदा की तरफ़ से सल्ले अ़ला के फूल
हुशियार अह्ले बैत की लाशों से ऐ ज़मीन
कुम्ला न जाएं यह हैं रसूले ख़ुदा के फूल

अब असदुल्लाह अल-ग़ालिब की कछार के शेरों, चमनिस्ताने ज़हरा के शगुफ़्ता फूलों और सैय्यदुल-अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिगर के टुक्ड़ों की बारी आई। उन हाशमी जवानों का मैदान में आना था कि बहादुरों के दिल सीनों में लरज़ने लगे। उन पैकराने शुजाअ़त की ख़ून आशाम तल्वारों के हम्लों से शेरे दिल बहादुर भी चीख़ उठे। उन्होंने हर्ब व ज़र्ब के वह जौहर दिखाए कि करबला की प्यासी ज़मीन को दुश्मनों के ख़ून से सैराब कर दिया। मगर यह सिर्फ़ चन्द थे और दुश्मन का लश्कर हज़ारों पर मुश्तमिल था। कब तक मुक़ाबला कर सकते थे। जब कि पानी भी बन्द था और मुक़ाबला भी एक का एक से नहीं होता

था लिहाज़ा ज़ख़्मों से चूर चूर हो कर जामे शहादत नोश कर रहे थे। इब्ने सअ़द ने ऐतराफ़ किया कि अगर इन जाँबाज़ों पर पानी बन्द न किया जाता और एक के मुक़ाबला में एक ही जाता तो अह्ले बैत का एक जवान पूरे लश्कर को बरबाद कर डालता।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम :

इमाम पाक के अक़्रबा में से हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील ने हाज़िरे ख़िदमत होकर अ़र्ज़ किया चचा जान! मुझे इजाज़त दीजिए मैं राहे हक़ में सर कटाने और अपने अब्बा जान और भाईयों के पास जाने के लिए बेक़रार हूँ। इमाम पाक की आँखों में आँसू आ गए। फ़रमाया : बेटा तुम्हारे बाप और भाईयों की मुफ़ारक़त का दाग़ मेरे दिल से मह्व नहीं हुआ मैं किस तरह तुम्हें इजाज़त दूँ? तुम ऐसा करो कि अपनी वालिदा को साथ लेकर जहाँ भी तुम से हो सके चले जाओ यह लोग तुम्हारा रास्ता नहीं रोकेंगे क्योंकि यह मेरे ख़ून के प्यासे हैं। अ़ब्दुल्लाह ने अ़र्ज़ किया चचा जान! यह आप क्या फ़रमा रहे हैं? मैं आपको छोड़ कर कहीं चला जाऊँ? ख़ुदा की क़सम! ऐसा नहीं हो सकता! मैं आपको छोड़ कर हरगिज़ न जाऊँगा बल्कि आपके सामने जामे शहादत नोश करूँगा। आपने उनका जज़्ब-ए-जिहाद और शौक़े शहादत देख कर अश्कबार आँखों से उनको सीने से लगा लिया और फ़रमाया जाओ राहे हक़ में कुरबान हो जाओ। यह हाशमी जवान मैदान में आया और मुक़ाबले के लिए पुकारा। इब्ने सअ़द ने कहा : कौन इस जवान का मुक़ाबला करेगा! फिर उसने क़ुदामा बिन असद फ़ज़ारी की तरफ़ देख कर कहा ऐ क़ुदामा तू ही उसका मुक़ाबला कर सकता है। क़ुदामा फन्ने हरब में बहुत माहिर और बड़ा बहादुर समझा जाता था। वह आपके मुक़ाबले में आया। थोड़ी देर तक दोनों में मुक़ाबला होता रहा। आख़िर अ़ब्दुल्लाह ने तल्वार का एक ऐसा कारी वार किया कि उसको चीर कर रख दिया और कमर बन्द पकड़ कर घोड़े से नीचे गिरा दिया और ख़ुद उसके घोड़े पर सवार हो गए क्योंकि आपका घोड़ा भूखा प्यासा होने की वजह से कमज़ोर पड़ गया था। फिर नेज़ा उठा कर मुबारज़त तलब किया और चन्द अश्आर पढ़े।

क़ुदामा के बेटे सलामा बिन क़ुदामा ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह की शुजाअ़त व बहादुरी देख कर इब्ने सअ़द से कहा मैंने ऐसा दिलेर और बहादुर जवान कोई नहीं देखा। अब किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि तन्हा आपके

सामने आए। आप भूखे शेर की तरह उन पर हमला आवर हुए और लश्करे अश्क़िया को ज़ेर व ज़बर करते हुए उनमें घुसते चले गए और बहुत सों को मारा और ज़ख़्मी किया। आख़िर उन्होंने आपको घेरे में लिया और जुदाअ़ दमिश्क़ी ने पीछे से तल्वार मारी और आपके घोड़े के पाँव काट दिए। आप प्यादा पा भी मुक़ाबला कर रहे थे कि नवाफ़िल बिन मुज़ाहिम हुमैरी ने आपको नेज़ा मारा और बक़ौल बाज़ अ़मर बिन सबीह सैदावी ने तीरों का निशाना बनाया और यह खुलास-ए-खानदाने अ़क़ील बहिश्त बरीं में जा पहुँचा। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

पिसराने हज़रत अ़क़ील :

हज़रत जाफर बिन अक़ील ने जब अपने भतीजे को खाक व ख़ून में ग़ल्ताँ देखा तो अश्कबार आँखों से आगे बढ़े और इमाम पाक को सलाम करके इजाज़त तलब की। इमाम पाक ने उन को भी सीने से लगाया और इजाज़त दी। हज़रत जाफर रज्ज़ पढ़ते हुए मैदाने कारेज़ार में आए। अबुल-मनाख़िर ने उस रज्ज़ का तरजमा यूँ किया है।

तरजमा : और लड़ना शुरू किया। वह शुजाअ़त दिखाई कि बहुत से यज़ीदियों को वासिल बजहन्नम किया और आख़िर दुश्मनों ने घेरे में लेकर तीरों की बारिश कर दी और फ़रज़न्दे अ़क़ील अपने ख़ून में रंगीन हो कर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ज़्रा ख़शअ़मी के तीर से जामे शहादत नोश फ़रमा गए। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़क़ील ने जब अपने भाई को नीम बिस्मिल देखा तो बेताब हो गए और शेर की तरह मैदान में कूद पड़े और शुजाअ़त के वह जौहर दिखाए कि ख़ूने अश्क़िया से मैदाने कारज़ार लाला ज़ार बना दिया। आखिर उसमान बिन ख़ालिद जहन्नी और बशर बिन सूत हम्दानी के हाथों से जामे शहादत नोश किया। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

दोनों भाईयों की शहादत के बाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़क़ील आगे बढ़े और इमाम से इजाज़त तलब की, इमाम पाक ने फ़रमाया अगर तुम्हारा यही मक़्सद है और तुम सबने यह ठान ली है कि मैदाने जंग में एक एक अज़ीज़ के मज्रूह व मक़्तूल होने को मैं अपनी आँखो से देखूँ और फ़िराक़ के सदमे भी सहूँ तो मैं उसके लिए भी हाज़िर हूँ। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने कहा हमने यह अ़हद किया है कि जब तक हम में से एक नासिर भी बाक़ी रहे उस वक़्त तक अमानते रसूलुस्सक़लैन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत हुसैन के नाखुने पा तक भी दुश्मनों को न आने दें। मुसाफ़िरे करबला ने

अपने अ़म्म ज़ाद भाई को अपने सीने से लगा लिया। आँखों से आँसू जारी हो गए और फिर अ़ब्दुल्लाह को रुख़्सत कर दिया। मैदाने क़ेताल में आ कर अ़ब्दुल्लाह ने तल्वार बुलन्द की और हाशमी शुजाअ़त के जौहर दिखाए। शम्शीर आबेदार से बिजलियाँ गिराईं। दुश्मनों का ख़ून बहाया और उसमान बिन असीम अल-जेहनी और बशर बिन सूत के हमलों से जामे शहादत नोश किया। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

फ़रज़न्दाने हज़रत अ़ली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहू :

औलादे अ़क़ील की शहादत के बाद अब फ़रज़न्दाने हैदरे कर्रार की बारी आई। यह वह शेर थे जिनकी रगों में शेरे ख़ुदा अली मुर्तज़ा का ख़ून गर्दिश कर रहा था। अब जबकि अ़क़ील के फ़रज़न्दाने ख़ूने शहादत में नहा चुके तो औलादे अमीरुल-मुमिनीन सैयदना अ़ली में अव्वलीयते शहादत और ख़िल्अ़ते पुर ख़ून हासिल करने के लिए ख़लीफ़-ए-बरहक़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के हम नाम हज़रत अबू बकर अली रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा ने आगे बढ़ कर इमाम की ख़िदमत में अर्ज़ की भाई जान मुझे भी इजाज़त मरहमत हो। आपने फ़रमाया तुम एक एक करके मुझ से जुदा हुए जा रहे हो। आह! उन्होंने कहा प्यारे भाई जान! आज मेरे पास इस जान के सिवा और कुछ नहीं वह आप पर निसार है। इसको क़ुबूल फ़रमा लें और मुझे इजाज़त दें। आपने मज्बूरन इजाज़त दी मैदान में तशरीफ़ लाए और चन्द अश्आ़र पढ़े।

इमाम ने यह सुनकर उनको दुआ़एं दीं। उन्होंने लड़ना शुरू किया और यह साबित कर दिया कि मैं हैदरे कर्रार का फ़रज़न्द हूँ, हज़रत जिधर बढ़ते कुश्तों के पुश्ते लगा देते। आख़िर ज़ख़्मों से निढाल हो कर क़ुदाम-ए-मूसली के नेज़े और बक़ौल बाज़ अ़ब्दुल्लाह बिन उक़्बा अंक़री के तीर से जामे शहादत नोश करके बहिश्त बरीं में पहुँचे रज़ि अल्लाहु अन्हु। उनके बाद उनके दूसरे भाई हज़रत उमर बिन अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा जो ख़लीफ़-ए-सानी और ख़लीफ़-ए-बरहक़ हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के हम नाम हैं बइजाज़ते इमाम पाक मैदान में आए और ख़ुदादाद क़ुव्वत व ताक़त से बहुत से यज़ीदियों को मारते और काटते हुए जन्नतुल-फ़िरदौस में सिधारे रज़ि अल्लाहु अ़न्हु। उनके बाद उनके तीसरे भाई हज़रत उसमान बिन अली रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा ने जो ख़लीफ़ा सालिस और ख़लीफ़-ए-बरहक़ हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के

हम नाम हैं अपने दो भाईयों का ख़ून ज़मीन पर बहता हुआ देखा तो आँखों में दुनिया अंधेर हो गई। उधर अपने भाई यानी इमाम पाक की ख़िदमत का जज़्बा रगों में ख़ून बन कर दौड़ने लगा तो आगे बढ़ कर अर्ज़ की जहाँ आपके दोजाँबाज़ ख़िल्अ़ते फ़ाख़िर-ए-शहादत ज़ेबतन कर गए वहाँ एक हुल्ला मुझे भी अ़ता हो कि मैं भी आपका भाई हूँ। इमाम पाक ने फ़रमाया : तुम मेरी अ़ज़्मत का ताज हो जाओ और कौसर पर तिश्नगी बुझाओ। मैं भी तुम्हारे पास आने वाला हूँ। हज़रत उस्मान इमाम पाक से इजाज़त लेकर मैदान में आए।

फिर ख़ूब लड़े और ऐसे गिराँबार हमले किए कि सवारों को घोड़ों पर निशस्त दूभर हो गई और पैदल पिस पिस कर रह गए। आख़िर ज़ख़्मों से चूर हो कर ख़ौली बिन यज़ीद अस्बही के हाथ से जामे शहादत नोश किया और बहिश्ते बरीं में पहुँच गए। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

फिर इमाम पाक के चौथे भाई हज़रत जाफ़र बिन अली रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अर्ज़ की कि अब जाँनिसारी का मुस्तहिक़ मैं हूँ। इमाम पाक ने एक नज़र उनकी तरफ़ देखा और फ़रमाया : भैया बहादुरी के जौहर तुम्हारी पेशानी से चमक रहे हैं लेकिन अंबोह कसीर से तने तन्हा लड़ कर कोई वापस नहीं आया। इसलिए बेहतर होगा कि मुबारिज़ तलब करके एक से लड़ो। हज़रत जाफ़र ने कहा : भाई! जिस सर में जाँबाज़ी और जाँनिसारी का सौदा हो उसमें क़िल्लत व कसरत की फ़िक्र कहाँ समा सकती है। अब तो वापस आने की नहीं बल्कि आप पर जान क़ुरबान करके जन्नतुल-फ़िरदौस में अब्बा जान के पास जाने की आरज़ू है।

इमाम पाक ने उनको सीने से लगाया और देर तक रोते रहे। हज़रत अब्बास के अ़लावा यह आख़िरी भाई रह गया था जो जुदा हो रहा था। ग़रज़ कि इमाम पाक की इजाज़त से मैदान में आए और दादे शुजाअ़त देकर बहिश्त बरीं सिधारे। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

फ़रज़न्दाने हज़रत इमाम हसन मुज्तबा :

चारों भाईयों की शहादत के बाद हज़रत इमाम के हक़ीक़ी भतीजे अ़ब्दुल्लाह बिन हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा आगे बढ़े और अ़र्ज़ किया ऐ अ़म्मे मुकर्रम! मुझे भी इजाज़त दीजिए कि उन दुश्मनाने दीन से लड़ूँ और अपनी जान राहे हक़ में क़ुरबान करूँ, इमाम पाक ने उनको

सीने से लगाया और बहुत समझाया मगर सिवाए इजाज़त देने के कुछ बन न आया। वह शेर बेश-ए-शुजाअ़त मैदाने कार ज़ार में आए और दुश्मनों के सामने खड़े हो गये।

और तल्वार बुलन्द की वह जौहर दिखाए कि लश्करे आदा में खलबली मच गई। साबित कर दिया कि मैं हैदरे कर्रार का पोता हूँ। अमर बिन सअ़्द ने कहा : उस जवान को घेरे में लो और क़त्ल कर दो। बख़्तरी बिन अ़मर शामी पाँच सौ सवारों के साथ आगे बढ़ा और आपको घेरे में ले लिया। आपने डट कर मुक़ाबला किया आख़िर ज़ख़्मों से चूर चूर हो कर जामे शहादत नोश किया। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

सैयदना क़ासिम बिन हसन :

हज़रत अ़ब्दुल्लाह की शहादत के बाद इमाम पाक की बारगाहे अक़्दस में गुलशने रिसालत का दूसरा महकता हुआ फूल यानी हज़रत क़ासिम बिन हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा हाज़िर है। उन्नीस बरस की उम्र है और यह वह नौजवान है जिसके साथ इमाम पाक की लख़्ते जिगर हज़रत सकीना का मुस्तक़्बिल वाबस्ता है। यह टूटे हुए दिलों का सहारा, आले रसूल की आँख का तारा सरापा इल्तिजा बन कर अर्ज़ गुज़ार है। चचा हुज़ूर! मैं भी राहे हक़ में सर कटाने और अब्बा जान के पास जाने के लिए बेक़रार हूँ। मुझे भी इजाज़त मरहमत हो। इमाम पाक ने इस नूरे नज़र की तरफ़ देखा और फ़रमाया बेटा! तुम्हें किस बात की इजाज़त दूँ? क्या तीरों से छलनी होने की इजाज़त दूं, तल्वारों से कटने की इजाज़त दूँ? आह तुम तो मेरे भाई हसन मुज्तबा की यादगार हो। हज़रत क़ासिम ने कहा चचा जान! ख़ुदा के लिए मुझे उन दुश्मनों से लड़ने की इजाज़त दीजिए और मुझे अपने ऊपर निसार होने की सआदत से महरूम न कीजिए। इमाम पाक ने अश्कबार आँखों से उनके माथे को चूमा और सीने से लगा लिया और रुख़्सत कर दिया। अल्लाह! अल्लाह इमाम पाक ने न अपने जवान भतीजे के शबाब को देखा और न अपनी बेटी के मुस्तक़्बिल को देखा। देखा तो सिर्फ़ यह देखा कि गुलशने इस्लाम ख़िज़ाँ का शिकार न होने पाए उसकी सरसब्ज़ी व शादाबी के लिए अपने ख़ानदान के जवानों का ख़ून भी देना पड़े तो दे दिया जाए।

यह शहादत इक सबक़ है हक़ परस्ती के लिए
इक सुतूने रौशनी है बहरे हस्ती के लिए

हज़रत क़ासिम मैदान में आए और यज़ीदियों को मुख़ातब करके फ़रमाया : ओ दीन के दुश्मनो और अपने नबी का घर उजाड़ने वालो! मैं क़ासिम बिन हसन बिन अ़ली हूँ मैं ख़ानदाने रिसालत का चश्म व चिराग़ हूँ। मैं गुलशने ज़हरा का महकता हुआ फूल हूँ। आओ मुझे भी तीरों से छलनी करो। तल्वारों से घायल करो और मेरे लिए जन्नत का रास्ता खोल दो। तुम में कौन है जो तन्हा मेरा मुक़ाबला करे? इब्ने सअ़द ने एक सालारे लश्कर अरज़क़ नामी से कहा कि इस नौजवान को क़त्ल करो। अरज़क़ ने कहा : वाह जनाब! आपने ख़ूब मेरी क़द्र की। मैं वह बहादुर हूँ जो तन्हा सैकड़ों का मुक़ाबला कर सकता हूँ, उस बच्चे के मुक़ाबला में जाना मेरी तौहीन है। इब्ने सअ़द ने बरहम हो कर कहा : तू नहीं जानता यह कौन है, यह अली का पोता है। तीन दिन का प्यासा है। फिर भी उसकी हिम्मत व शुजाअ़त को देखना है तो ज़रा सामने हो जा। उसने कहा : मैं तो नहीं जाता अल्बत्ता लश्कर में मेरे चार बेटे हैं। उनमें से एक को भेजता हूँ। उसके लिए तो वह एक ही काफ़ी है। चुनांचे उसने अपने लड़के को भेजा। वह आपके मुक़ाबले में आया। आपने उसका मुक़ाबला किया और चन्द मिनटों में उसको तड़पा के रख दिया। और उसकी तल्वार जो बहुत अच्छी थी वह छीन ली। अरज़क़ के दूसरे बेटे ने अपने भाई को ख़ाक व ख़ून में तड़पते देखा तो ग़ुस्सा में दीवाना हो कर आगे बढ़ा कि अपने भाई का इंतिक़ाम ले। आपने उसको भी क़त्ल कर दिया। अरज़क़ का तीसरा बेटा भी ग़ैज़ व ग़ज़ब का पुतला बन कर आगे बढ़ा और आपके सामने आकर आपको गालियाँ देने लगा। आपने फ़रमाया : ओ अल्लाह! के दुश्मन तेरी गालियों का जवाब मैं गालियों से न दूँगा कि यह हमारी शान नहीं। अल्बत्ता तुझे तेरे भाईयों के पास जहन्नम में पहुँचा देता हूँ, यह कह कर उस पर हमला किया और उसको चीर कर रख दिया। अरज़क़ ने जब अपने तीन बेटों का अंजामे बद देखा तो गुस्से से लाल पीला हो कर दहाड़ने लगा और खुद मुक़ाबले के लिए आगे बढ़ने ही लगा था कि उसका चौथा बेटा बेहूदा कलिमात कहता हुआ आगे बढ़ा और कहने लगा ऐ बाप! ज़रा ठहर जा, मुझे इस नौजवान से दो दो हाथ हो लेने दे। वह भूखे शेर की तरह आप पर हमला आवर हुआ। आपने उसके वार को अपनी तल्वार पर रोका और फिर उस पर इस तरह वार किया कि उसके सीधे हाथ को काट दिया उसके हाथ से तल्वार गिर गई। फिर दूसरा वार उसके सर पर ऐसा किया कि

उसको भी जहन्नम रसीद कर दिया। अब तो अरज़क़ का हाले बद देखने के क़ाबिल था। उसका सारा ग़ुरूर ख़ाक में मिल चुका था और उसकी ज़िन्दगी की पूरी कमाई लुट चुकी थी। इस मक़्तूउन्नस्ल बाप की आँखों में दुनिया अंधेर हो गई। उसकी सुबहे तमन्ना शामे हसरत बन चुकी थी। वह ग़ैरत जो अब तक क़ासिम को बच्चा समझ कर मुक़ाबला पर जाने से रोक रही थी। अब ख़त्म हो चुकी थी वह ज़ालिम ग़ैज़ व ग़ज़ब की आग में जलता हुआ आगे बढ़ा कि अपने बेटों का इंतिक़ाम ले और एक वार में उस नौजवान को ख़त्म कर दे लेकिन उसको यह मालूम नहीं था कि उसके मुक़ाबले में वह जवान है जिसके बाजुवों में क़ुव्वते रब्बानी काम कर रही है, वह मुक़ाबले में आकर हाथी की तरह चिंघाड़ने और शेर की तरह दहाड़ने लगा, उसकी तल्वार फ़िज़ा में रअ़द व बर्क़ बन कर चमक रही थी। जूँ ही उसकी नज़र हज़रत क़ासिम की तल्वार पर पड़ी जो आपने उसके लड़के से छीनी थी, कहने लगा : ख़ुदा की क़सम! यह तल्वार मैंने एक हज़ार दीनार में ख़रीदी है और एक हज़ार दीनार देकर इसे ज़हर का बुझाव दिया है। यह तुम्हारे हाथ में नहीं रहने दूँगा बल्कि इसी के साथ तुम्हें क़त्ल करूँगा। आपने फ़रमाया : तेरे तीन बेटे तो इसका मज़ा चख चुके हैं और तू भी ख़ातिर जमा रख अभी तुझे भी इसका ज़ाइक़ा चखाऊँगा। फिर आपने **अल-हरबु ख़दअतुन** के पेशे नज़र फ़रमाया : अरज़क़! हम तो तुझे एक नबर्द आज़मा बहादुर मर्द समझते थे मगर तू तो निहायत ना तजरबा कार है। तुझे तो घोड़े की ज़ीन कसने का भी सलीक़ा नहीं। वह झुक कर कसी हुई ज़ीन को देखने लगा। आपने उसी वक़्त एक ऐसा कारी वार किया कि उसको काट कर दो टुकड़े कर दिया और एक जस्त लगा कर अपने घोड़े से उसके घोड़े पर जा बैठे और फ़ौरन दोनों घोड़ों के साथ ख़ेमों की तरफ़ आ गए। इमाम पाक की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया। **व आमाहु अल-अ़तश अल-अ़तश।** आह! चचा जान! प्यास प्यास। चचा जान! अगर पानी का एक प्याला मिल जाए तो अभी उन सबको नीस्त व नाबूद कर दूँ। इमाम पाक ने फ़रमाया : बेटा तुम अंक़रीब साक़ी-ए-कौसर के हाथ से कौसर का जाम पियोगे देखो पीने के बाद फिर तुम्हें प्यास कभी न सताएगी। देखो तुम्हारे वालिद तुम्हारी राह देख रहे हैं। जाओ उनके पास पहुँचने का वक़्त आ गया है और उनको मेरा सलाम कहना। हज़रत क़ासिम फिर मैदान में आए। इब्ने सअ़द ने कहा : यह नौजवान हमारे

बेहतरीन जवानों को क़त्ल कर चुका है। अब इसको मोहलत न दो। उसको चारों तरफ से घेर लो और उसको ख़त्म कर दो। चुनांचे उसके हुक्म पर दुश्मनों ने आपको घेरे में ले लिया और आप पर हमला कर दिया। अब घमसान की जंग शुरू हुई। आप इस हालत में डट कर मुक़ाबला कर रहे थे। ख़ाके करबला का एक अबर हसन के चाँद पर छा गया। आख़िर ज़ख़्मों से चूर चूर हो गए। एक शक़ी शीस बिन सअ़द और बक़ौल बाज़ सअद बिन अमरोह बिन नफ़ील अज़दी ने आपके सर पर तल्वार मारी। आपने फ़रमाया **: या अ़माहु अदरकनी।** चचा जान! मुझे पकड़ो संभालो और ज़मीन पर गिर गए। इमाम पाक ने आपकी आवाज़ सुनी दौड़ कर आपके पास पहुँचे देखा कि जिस्म नाज़नीन ज़ख़्मों से चूर चूर है। सर को अपनी आग़ोश में लेकर फ़रमाया : क़ासिम! उनके लिए हलाकत है जिन्होंने तुझे क़त्ल किया है। वह क़यामत के दिन तेरे जद्दे अम्जद को क्या जवाब देंगे जब वह तेरे ख़ून के मुतअ़ल्लिक़ बाज़ पुर्स करेंगे। इमाम पाक की आग़ोश में आपकी रूह परवाज़ कर गई। रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

इमाम पाक ने लाशे मुबारक को इस तरह उठाया कि क़ासिम का सीना आपके सीने से मिला हुआ था और पाँव ज़मीन के साथ घिसटते जा रहे थे। आपने लाश को शोहदा की लाशों के पास रख दिया।

हाए जन्नत को तुम भी सिधारे
मेरे भाई के फ़रज़न्द क़ासिम
दाग़े फ़ुरक़त है दिल पर हमारे
मेरे भाई के फ़रज़न्द क़ासिम
काश तुम साथ मेरे न आते
हो के रुख़्सत न मैदान को जाते
भूखे प्यासे न गर्दन कटाते
मेरे भाई के फ़रज़न्द क़ासिम
याद किस किस की दिल से भुलाऊँ
हाए किस किस की लाशें उठाऊँ
किसको अपनी कहानी सुनाऊँ
मेरे भाई के फ़रज़न्द क़ासिम

हज़रत क़ासिम की शहादत के बाद उनके भाई हज़रत उमर और हज़रत अबू बकर बिन हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम ने भी मैदाने करबला में जफ़ाकार यज़ीदियों के हाथों से जामे शहादत नोश किया। रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम।

हज़रत मुहम्मद व औ़न :

चारों भतीजों की शहादत के बाद फ़रज़न्दाने अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तैयार हज़रत मुहम्मद व औन इमाम आली मक़ाम के हक़ीक़ी भाँजों हज़रत सैय्यदा ज़ैनब के जिगर के टुक्ड़ों की बारी आई। चमने ज़हरा के जन्नती फूलों ने आगे बढ़ कर अर्ज़ की : मामूँ जान! हमें भी निसार होने की इजाज़त मरहमत हो। इमाम पाक ने फ़रमाया नहीं तुम्हें इजाज़त नहीं मैं तुम्हें इसलिए अपने साथ नहीं लाया था कि अपनी आँखों के सामने तुम्हें तीरों का निशाना बनते और नेज़ों पर उछलते देखूँगा। तुम अपनी अम्माँ के पास रहो। मुहम्मद व औ़न न कहा : मामू हुज़ूर! अम्माँ जान का भी यही हुक्म है। देखो वह भी सामने खड़ी हैं। इमाम पाक ने अपनी बहन सैय्यदा ज़ैनब की तरफ देख कर कहा। मेरी बहन कुछ ख़्याल करो मुझ पर सदमों के पहाड़ न तोड़ो, मैं किन आँखों से इन फूल जैसे बच्चों के सीनों से तीर और नेज़े पार होते देखूँगा। सैय्यदा ज़ैनब कह रही थीं: भैया मेरे प्यारे भैया! क्या अपनी बहन का यह हक़ीर हदिया क़ुबूल नहीं करोगे? अगर तुमने मेरा यह हदिया क़ुबूल न किया तो मैं अपनी माँ फ़ातिमा ज़हरा को क्या जवाब दूँगी जब वह पूछेंगी बेटी तुमने उस वक़्त क्या नज़र पेश की थी? जब शहज़ाद-ए-सरवरे कौनैन के हुज़ूर जानों के हदिए पेश हो रहे थे? मेरे यह दो ही फ़रज़न्द हैं दोनों तुझ पर क़ुरबान हैं। इसके साथ ही सैय्यदा की हिचकियाँ बंध गईं। इमाम पाक ने अश्कबार आँखों से अपनी बहन को देखा। दिल पारा-पारा हो गया और दोनों भाँजों को सीने से लगाया और रुख़्सत कर दिया। माँ देख रही थी कि मेरी आँखों के तारे हमेशा हमेशा के लिए यज़ीदी बादलों में रूपोश होने जा रहे हैं। उनके जाते ही दुश्मन उन पर भेड़ियों की तरह टूट पड़ेंगे और उनको चीर फाड़ कर रख देंगे। मगर इस सब्र वाली माँ ने अपने दिल पर हाथ रखा और आसमान की तरफ़ मुँह करके कहा : मौला! जो तेरी रज़ा वह हमारी रज़ा।

चमने ज़हरा के जन्नती फूल, हज़रत जाफर तैयार के पोते, मौला अ़ली के नवासे मैदाने कार ज़ारे में दुश्मनों के सामने गए और कहा : सुनो और हमें पहचानो।

दादा है शहनशाहे दो आलम का मददगार
सरदारे जहाँ फख़्रे अरब जाफ़र तैयार
वह शुक्क़ों तराज़ अलमे अहमदे मुख़्तार
आलूदा रही ख़ून में जिस शेर की तल्वार
हाथों के एवज़ हक़ से सरे दस्त लिए हैं
अल्लाह ने पर उनको ज़ुमुर्रद के दिए हैं
नाना असदुल्लाह मददगार दो आलम
दींदार नमूदार जहाँदारे दो आलम
सुल्ताने विलायत व असरारे दो आलम
सरताजे फ़लक जुब्बा दस्तारे दो आलम
तुम यह न समझना कि यदुल्लाह नहीं हैं
हम शेर तो हैं गर असदुल्लाह नहीं हैं

फिर उन दोनों भाईयों ने वह शुजाअत के जौहर दिखाए कि सुफ़ूफ़े आदा में हलचल बरपा हो गई। आख़िरश बहुत से यज़ीदियों को मारते और काटते हुए ख़ुद भी नेज़ों और तल्वारों का निशाना बन कर बहिश्ते बरीं में जा पहुँचे। हज़रत औन को अब्दुल्लाह बिन कुतबा अत्ताई ने और हज़रत मुहम्मद को आमिर बिन नहशल ने शहीद किया। इमाम पाक के रुफ़क़ा उनकी लाशें उठा कर ले गए और खे़मों के पास ला कर रख दीं।

लाशों के क़रीब आके शहे उम्मत ने पुकारा
ऐ भाँजो! मौजूद है मामूँ यह तुम्हारा
ऐ शेर जवानो! मुझे उल्फ़त थी तुम्हीं से
ऐ तिश्ना दहानो! मुझे हिम्मत थी तुम्हीं से
हाथों को उठा के ज़रा बात तो कर लो
सीने से लगो उठो मुलाक़ात तो कर लो

इतने में सैय्यदा ज़ैनब भी आ गईं। इमाम पाक ने फ़रमाया : लो बहन! तुम्हारी कुरबानी भी मंज़ूर हो गई। आओ अपने शहीदों की ज़्यारत कर लो। माँ ने जब अपने फ़रज़न्दों की कटी फटी लाशों को देखा तो लाशों के ऊपर गिर गईं और बलाएं लेते हुए कहा ऐ काश! तुम्हारी जगह तुम्हारी माँ होती! रज़ि अल्लाहु अन्हुमा।

हज़रत अब्बास अलमदार :

एक एक अज़ीज़ का बिछड़ना इमाम पाक के लिए इस क़दर रूह

फ़रसा था कि आप ज़ानुए-ग़म पर सर रख कर खाके करबला पर बैठ जाते और कभी आसमान की तरफ़ निगाह करके अपने वक़्ते शहादत की बाक़ी मांदा घड़ियाँ गिनते। कभी दर्द रसीदा मग़मूम व मज़्लूम औरतों की तरफ़ निगाहे हसरत फ़रमाते। बस एक शहज़ादा अली अकबर जल्व में है और एक कुव्वते बाज़ू अब्बास अलमदार सामने है। अब इमाम मज़्लूम की कमर टूटने का वक़्त क़रीब आ रहा है। ज़ुल्म व सितम के पहाड़ टूटने वाले हैं इसलिए इंतिहाई सब्र व ज़ब्त की तलब में जबीने नियाज़ झुकाए हुए अपने ख़ालिक़ व मालिक से अर्ज़ व मारूज़ में महव हैं। जब जबीने अनवर सज्द-ए-ख़ालिक़ से राज़ व नियाज़ की मंज़िलें तय करके बुलन्द हुई तो हज़रत अब्बास अलमदार रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ कीः अब तो ग़ुलामों में मुझ कफ़श बरदार के सिवा और कोई बाक़ी नहीं रहा। बच्चों के दिल जवानों का जिहाद, बूढ़ों के कमज़ोर हाथों से चलती हुई तल्वारें देखीं और जिस से अब तक सिवाए अलम बुलन्द रखने के और कोई कारगुज़ारी नहीं हुई वह आपका यह ग़ुलाम अब्बास है।

नूर दीद-ए-बतूल! अब तो ख़ून रगें तोड़ कर राहे ख़ुदा में बह जाने की हसरत में सरगरम है। अज़राहे करम मुझे भी इजाज़त देकर मेरी क़िस्मत का सितारा भी चमका दीजिए। सब्र व रज़ा के पैकर इमाम पाक ने अपने भाई का सर सीने से लगाया आँखों से कुछ मुहब्बत और कुछ दर्द व ग़म के आँसू मोतियों की शक्ल में रुख़्सारों पर चमकते हुए बहने लगे। देर तक सीने से लगाने के बाद फ़रमाया : क्या करूँ मशीयते इलाही में चारा नहीं, राज़ी बरज़ा हूँ लेकिन साक़ी-ए-कौसर के लअ़ल! बच्चों की प्यास उनकी माँओं के सब्र को मुतज़लज़ल कर रही है। वह तिश्नगी के आलम में सख़्त बेक़रार हैं और उनकी बेक़रारी उनकी माँओं के लिए नाक़ाबिले बर्दाश्त हो गई है। यह सुनते ही अब्बास नामदार ख़ेमे की तरफ़ चले। दाख़िल होते ही हज़रत सकीना और अली असग़र की तिशनगी का वह आलम देखा कि तड़प गए। अली के शेर ने ग़ुस्सा में होंठ चबाते हुए कहा : अफ़सोस! फ़ुरात सामने है और यह बच्चे पानी की एक एक बूँद को तरसें। मैं अभी फ़ुरात पर जाऊँगा और पानी लाकर उन मासूमों की प्यास बुझाऊँगा यह सुनते ही सैय्यदा ज़ैनब के चेहरे का रंग उड़ गया। वह पुकारें भैया! क्या नहर के किनारे फ़ौलाद में डूबी हुई फ़ौज की दीवार के मुक़ाबिल अकेले जाओगे? अब्बास अलमदार ने कहा मेरी बहन! तुम्हें तश्वीश क्या है अगर वहाँ ग़र्क़े आहन फ़ौज है तो क्या तुम्हारे भाई के हाथ में तेग़े ख़ारा शिगाफ़

नहीं है! शेरे हैदर की हिम्मत अफ़्ज़ा बात से प्यासों को कुछ ढारस हुई और टूटे हुए दिल सीनों में बंध गए। मश्कीज़ा शाने पर लटकाया और नहर की तरफ़ चले। दुश्मन हाइल हुए तो आपने फरमाया :

इत्मामे हुज्जत :

ऐ कूफ़ियो! शामियो, अल्लाह तआ़ला से डरो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शरमाओ। हैफ़ सद हैफ़! तुमने फ़रज़न्दे रसूल को बुलाया और फिर उन से बेवफ़ाई की और दुश्मनों से मिल कर उन पर पानी बन्द किया। उनके रुफ़का, अइज़्ज़ा व अक़्रिबा के सर काटे। रसूल ज़ादियों और छोटे छोटे बच्चों को एक एक बूंद पानी के लिए तरसा रहे हो। देखो अभी तौबा का दरवाज़ा तुम में से बाज़ के लिए खुला है। अब भी वक़्त है ज़ुल्म व सितम और फ़रज़न्दे रसूल के क़त्ल से बाज़ आओ। लश्करे अश्क़िया में से शिम्र ज़िल-जौशन, शबस बिन रिब्ई, हजर इब्नुल-अहजार तीनों ने सामने आ कर कहा : अगर तमाम रूए ज़मीन पानी हो जाए तो फिर भी हम लोग तुम्हें पानी का एक क़तरा तक न लेने देंगे। यह सुनते ही हैदर के शेर को जलाल आ गया उन्होंने एक नारा शेराना किया और फ़रमाया कि यह सर कट सकते हैं लेकिन फ़ासिक़ व फ़ाजिर के सामने झुक नहीं सकते। यह फ़रमा कर तल्वार आबदार के साथ उन पर टूट पड़े। शायर कहता है।

आता है ख़बरदार अब अ़ब्बास अलमदार
नागाह ज़मीन उनकी हुई मतल-ए-अनवार
हर चार तरफ़ से यह उठा ग़लग़ला इक बार
होशियार ख़बरदार ख़बरदार ख़बरदार
ऐ सल्ले अ़ला क्या पिसरे शेरे खुदा है
यह शेरे खुदा गर नहीं, शम्शीरे खुदा है

हज़रत अ़ब्बास ने फ़रमाया :

हाँ मुझको रखो याद मैं हैदर का पिसर हूँ
और बाग़े नुबुव्वत के शजर का मैं समर हूँ
मैं दीद-ए-हिम्मत के लिए नूरे नज़र हूँ
प्यासा हूँ मगर साक़ी-ए-कौसर का पिसर हूँ
वल्लाह मेरी ज़र्ब तमाँचा है बला का
दिल बन्द हूँ मैं शेरे खुदा शेरे खुदा का

आपका हमला क्या था क़हरे खुदा था जो यज़ीदियों पर नाज़िल हो गया था। घोड़े भड़कने लगे सवारों के हाथ से तल्वारें छूटने लगीं। बुज़दिल फ़ेरारी हिरनों की तरह भागे और आप उनको मारते और काटते हुए नहर के क़रीब पहुँच गए। नहर पर सैंकड़ों मुसल्लह सिपाही बतौर पहरेदार मुक़र्रर थे। वह आपके सामने आहिनी दीवार बन गए आपने उन से फ़रमाया : तुम लोग मुसलमान हो या काफ़िर? उन्होंने कहा मुसलमान! आपने फ़रमाया : क्या तुम्हारी मुसलमानी यही है कि फ़ुरात से चरिन्द परिन्द सैराब हों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बेटे, बेटियाँ और शीर ख़्वार बच्चे एक एक बूँद पानी को तरसें? मैंने अपनी इन आँखों से उनको प्यास से निढाल और ग़श में देखा है, आप उन से यह गुफ़्तगू कर रहे थे कि इधर से यज़ीदी फ़ौज के सिपाही, अमीरे लश्कर अ़मर बिन सअ़द का हुक्म लेकर पहुँच गए और नहर पर मुतऐयन सिपाहियों से कहा अमीरे लश्कर का हुक्म है कि पानी की बूँद भी ख़ेम-ए-हुसैन तक न पहुँचने पाए। यह हुक्म सुन कर लश्करे यज़ीद ने नेज़े तान लिए। शेरे ख़ुदा के शेर ने एक जस्त लगाई और सफ़े आदा को चीरते हुए घोड़ा आगे बढ़ाया और फ़ुरात में दाख़िल कर दिया। प्यासे बहिश्ती ने एक चुल्लू पानी का लिया मगर तिशनगीए अह्ले बैत पीने से मानेअ़ हुई। यह कह कर पानी फेंक दिया कि ऐ अ़ब्बास! तुम नहर पर अपनी प्यास बुझाने नहीं आए हो। जब तक मासूम अ़ली असग़र और सकीना की प्यास न बुझा लो तुम्हें पानी पीना रवा नहीं। हज़रत अ़ब्बास ने मुश्क भरी और बाएं शाने पर डाल कर बाहर निकले, चारों तरफ से गुल हुआ कि अगर यह मुश्क ख़ेम-ए-हुसैन तक पहुँच गई तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। उसका रास्ता रोको। उस से मुश्क छीन लो। पानी बहा दो। उधर सक़ाए अह्ले बैत की पूरी कोशिश यह थी कि किसी तरह यह मुश्क प्यासों के ख़ेमा तक पहुँच जाए। आप चाहते थे कि घोड़ा उड़ा कर ख़ेमा तक पहुँच जाएं मगर सामने से कई सौ तीर मुश्क का रुख़ किए नज़र आए। आप मुश्क की हिफ़ाज़त में एक तरफ हट गए यहाँ तक कि फ़ौज की दूसरी सिम्त से इस क़द्र क़रीब हो गए कि अब दोनों तरफ़ से घिर गए। जब अपने आपको दुश्मन के घेरे में देखा तो बफरे शेर की तरह हमला किया और सुफ़ूफ़े आदा में खलबली मचा दी। लाश पर लाश गिरने लगी और ख़ून की रौ बहनी शुरू हो गई। शेरे ख़ुदा के लख़्ते जिगर ने मैदाने करबला में

साबित कर दिया कि मेरे बाजुओं में कुव्वते हैदरी और रगों में ख़ूने अ़ली है। लाशों के अंबार लगा दिए कि एक ख़बीस ज़रारह नामी ने धोखे से आपके बाएं शाने पर एक ऐसा वार किया कि बाज़ूए अ़लमदार को शाने से जुदा कर दिया। आपने मुश्क फ़ौरन दाहिने शाने पर लटका ली और इसी हाथ से तल्वार भी चलाते रहे लेकिन अब न वह ताक़त थी न एक हाथ से दो काम अंजाम पा सकते थे। दफ़ाई कोशिश करते करते एक तरफ़ से फ़ौज के पहरे पर आपने घोड़ा उठा दिया कि शायद रास्ता मिल जाए। इस ग़ाज़ी की ख़िदमात ख़त्म होने का वक़्त बड़ी तेज़ी से क़रीब आ रहा था यहाँ तक कि नौफल इब्नुल-अरजुक़ ने दाएं बाज़ू पर भी एक वार किया और वह हाथ भी कट गया। अल्लाह अल्लाह! शेरे खुदा के फ़रज़न्द की हिम्मत देखिए कि मुश्क का तस्मा मुँह में दबा लिया लेकिन मुश्क के बचाने की कोई तदबीर कामयाब न हुई कि एक मरदूद ने ताक कर एक तीर ऐसा मारा कि मुश्क के पार हो गया और सारा पानी यक्लख़्त बह गया। अ़रब की शुजाअ़त को बट्टा लगाने वाले नामर्दों ने देखा कि अब मुजाहिद बेदस्त व बाज़ू है इसलिए चारों तरफ़ से आप पर टूट पड़े और ज़ख़्मों से चूर चूर कर दिया। एक ज़ालिम ने सर पर एक गुर्ज़ ऐसा मारा कि आप यह कहते हुए **या अख़ाहु अदरक्नी** भाई जान! मुझे पकड़ना, घोड़े से गिर पड़े।

नागाह सदा आई कि आओ मेरे आक़ा
आख़िर हुआ अ़ब्बास उठाओ मेरे आक़ा
सर काटती है फ़ौज बचाओ मेरे आक़ा
आओ मुझे सीने से लगाओ मेरे आक़ा
सुन कर यह सदा शाह पुकारे कई बारी
हम शक्ल नबी दौड़ो कमर टूटी हमारी

जूँ ही इमाम पाक ने अपने भाई की आवाज़ सुनी दौड़ कर तशरीफ़ लाए। इस वक़्त जुबाने मुबारक पर यह अल्फ़ाज़ थे **इंकसरी ज़हरी अल-आन** अब मेरी कमर टूट गई। बेदस्त व बाज़ू ज़ख़्मों से चूर चूर भाई के पास पहुँचे तो देख कर कलेजा थाम कर रह गए शाइर कहता है।

चिल्लाए गिर के लाश पर शब्बीर नामदार
भाई तुम्हारी नरगिसी आँखों पे मैं निसार
इस नरग़ा में भी था तुम्हें भाई का इंतिज़ार
आँखें फिरा के ढूँढ़ते हो मझको बार बार

शायद जुबान बन्द है जो लब खोलते नहीं
रोते हुए हम आए हैं तो बोलते नहीं
बेताब है हुसैन बरादर जवाब दो
ऐ मेरे नौजवाँ मेरे सफ़्दर जवाब दो
अब जाँ बलब है सिब्ते पयम्बर जवाब दो
ऐ नूरे चश्म साक़ी-ए-कौसर जवाब दो
हिचकी के साथ मौत का खंजर भी चल गया
सर गोद में धरा रहा और दम निकल गया
अक्बर पुकारे हाय चचा भी गुज़र गए
रो कर हुसैन बोले भाई किधर गए
मुँह तो उठाओ ख़ाक से रुख़्सार भर गए
वा हसरता हुसैन को बेआस कर गए
अब कौन देगा दुख में नबी के पिसर का साथ
दम भर में तुमने छोड़ दिया उम्र भर का साथ
ऐ शेरे सफ़ शिकन ऐ मेरे नौजवान
पाऊँगा तुम सा चाहने वाला मैं अब कहाँ
शेरे ख़ुदा का आज जहाँ से मिटा निशान
तुमको हुसैन जानता था अपने तन की जान
तेग़ों में अब सिपर नहीं भाई के होते हो
बाज़ू कटाए शेर से दरिया पे सोते हो

हज़रत सैय्यदुना अ़ली अक्बर :

अब वह मरहला दरपेश है कि पत्थर दिल भी टुक्ड़े-टुक्ड़े हो जाए। बेबसी व बेकसी की इंतिहा हो गई। सत्तर आवान व अंसार और अइज़्ज़ा व अक़्रिबा की शहादत के बाद आँखों के सामने एक लरज़ा देने और तड़पा देने वाला मंज़र था कि सुरूरे रियाज़े हुसैनी गुले बाग़े मुस्तफ़ा नूरे दीद-ए-मुर्तज़ा जाने चमने मुज्तबा बाप की ज़ईफ़ी का सहारा। तमाम घर भर की आँख का तारा। अह्ले बैते नुबुव्वत का जग मगाता चिराग़ हम शक्ले पयम्बर, हज़रत अ़ली अक्बर रज़ि अल्लाहु अ़न्हु जिनको देख कर तस्वीरे रसूल सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम आँखों में फिर जाती थी। अट्ठारह बरस की उम्र ऐने शबाब का आ़लम है। कमर शिकस्ता बाप के सामने सरापा इल्तिजा बन कर अ़र्ज़ गुज़ार है, बाबा हुज़ूर! मुझे भी इजाज़त

मरहमत हो, मैं भी राहे हक़ में सर कटाने और आप पर निसार होने की सआदत हासिल करना चाहता हूँ।

अक्बर की है यह अर्ज़ कि मैदाँ की रज़ा दो
रस्ता मुझे फ़िरदौस के जाने का बता दो
बाबा मेरी उल्फ़त को बस अब दिल से उठा दो
अम्माँ से भी रुख़्सत मुझे जाने की दिला दो
कटवाएगा सर रन में गुलाम आप से पहले
ज़िन्दा है वह बेटा जो मरे बाप से पहले

दिल शिकस्ता बाप ने एक नज़र अपने फ़रज़न्द अरजमन्द पर डाली और फ़रमाया : बेटा! तुझे किस बात की इजाज़त दूँ? क्या तीरों से छलनी होने और तल्वारों से कटने की इजाज़त दूँ? बेटा! तुम तो नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तस्वीर हो। मैं किन आँखों से इस तस्वीर को ख़ाक व ख़ून में तड़पते और मिटते देखूँगा। मेरी आँखों के नूर! तुम न जाओ। मुझे जाने दो। यह मेरे ख़ून के प्यासे हैं। इनकी प्यास सिर्फ़ मेरे ख़ून से बुझेगी। शबीहे रसूल ने दस्त बस्ता अ़र्ज़ की बाबा! मैं आपके बाद ज़िन्दा नहीं रहना चाहता। मुझे इन ज़लील लोगों का क़ैदी बना कर न छोड़ा जाए बल्कि बहिश्त बरीं में जद्दे अम्जद हुज़ूर सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और बाबा अ़ली मुर्तज़ा रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के पास पहुँचा दीजिए। अल्लाह अल्लाह! कितना बड़ा इम्तिहान था जिससे फ़ातिमा का लाल सब्र व इस्तिक़ामत के साथ गुज़र गया। फ़रमाया : बेटा! अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ वादा कर चुका हूँ वरना तुम जैसे गौहर बेबहा को कौन ख़ाक में मिलाता है। अच्छा बेटा जाओ। हुसैन ने भी आज छाती मज़्बूत कर ली है, देखता हूँ की आज़माइश की सिल कितनी वज़नी है।

हसीनों के हसीन हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के महबूब व मत्लूब नबी आख़िरुज़्ज़माँ के नवासे का वह हसीन फ़रज़न्द हमसूरत महबूबे ख़ुदा उन अश्क़िया में जा रहा है जहाँ से अब तक कोई वापस नहीं पलटता था। उस वक़्त इमाम पाक ने यह नहीं कहा था कि बेटा मेरी आँखों पर पट्टी बाँध दो। अब दिल चाहता है कि हज़रत इब्राहीम व याक़ूब अ़लैहिमुस्सलाम को सलाम कह कर उन्हें आवाज़ दी जाए कि ख़ातमुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नवासे का सब्र देखिए।

मज़्लूमे करबला ने अपने हाथों से अट्ठारह बरस के जमील जवान को सलाह जंग पहनाए और घोड़े पर सवार कराया और फ़रमाया : बेटा! जन्नत में पहुँच कर नाना जान को मेरा सलाम कहना। मेरे बाबा अ़ली मुर्तज़ा और मेरी अम्माँ जान को भी मेरा सलाम कहना। हज़रत अ़ली अक्बर ने अपने अब्बा जान और ख़ेमा में खड़ी हुई सितम रसीदा बीबियों को सलाम कहा और मैदाने कार ज़ार की तरफ़ चले। उस वक़्त इमाम पाक और अह्ले बैत की पाक बीवियों और बच्चों पर जो गुज़री यक़ीनन उस पर अ़र्शे इलाही हिल गया होगा।

दाग़े औलाद नहीं आह, उठाया जाता
ऐसा बेटा नहीं हाथों से गंवाया जाता
दर्द वह है कि जुबान पर नहीं लाया जाता
ज़ख़्म वह है कि जिगर पर नहीं खाया जाता
दाग़े फ़रज़न्दे हुसैन इब्ने अ़ली से पूछो
नौजवाँ बेटे का ग़म बाप के जी से पूछो

दुख दर्द की मारी माँ बेटे की रुख़्सती के वक़्त कह रही थी।

अ़ली अक्बर मेरी मेहनत की तरफ़ ध्यान करो
अम्माँ वारी मेरी बरती को न वीरान करो
छोड़ कर माँ को न तुम कूच का सामान करो
फिर फ़िदा हो, ज्यों, पहले मुझे कुरबान करो
मेरे जीते जी न क़दम घर से निकालो बेटा
अपनी मादर का जनाज़ा तो उठा लो बेटा
छोड़ कर रोता उन्हें ख़ेमा से अक्बर निकले
पीछे फ़रज़न्द के रोते हुए सरवर निकले
पर अ़जब हाल से हम शक्ले पयम्बर निकले
मुड़ के तक्ते थे कि ख़ेमा से न मादर निकले
माँ के रोने की जो कानों में सदा आती थी
टुक्ड़े होता था जिगर छाती फटी जाती थी

अल-ग़रज़ फ़ौजे आदा के रू-ब-रू तशरीफ़ लाए। हुसने ख़ुदा दाद की जोत से मैदान जगमगाने लगा। नूरे जबीन से जमाले पैग़म्बर चमका। चेहरे की तजल्ली ने मैदाने कार ज़ार को आ़लमे अनवार बना दिया। सदरुल-अफ़ाज़िल हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी

रहमतुल्लाह अ़लैह ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

लख़्ते दिले इमाम हुसैन इब्ने बू तुराब
शेरे ख़ुदा का शेर वह शेरों में इंतिख़ाब
सूरत थी इंतिख़ाब तो क़ामत था ला जवाब
गैसू थे मुश्के नाब तो चेहरा था आफ़ताब
शहज़ाद-ए-जलील, अ़ली अक्बर जमील
बुस्ताने हुस्न में गुले ख़ुश मंज़र शबाब
चेहरा में आफ़ताबे नुबुव्वत का नूर था
आँखों में शाने सौलते सरकारे बुतुराब
सहराए कूफ़ा आलमे अनवार बन गया
चमका जो उन में फ़ातिमा ज़हरा का माहताब
सौलत ने मरहबा कहा शौकत थी रज्ज़ ख़्वाँ
जुरअत ने बाग थामी शुजाअ़त ने ली रेकाब
चमका के तेग़ मर्दों को नामर्द कर दिया
उस से नज़र मिलाता यह थी किस के दिल में ताब
मरदाने कार लरज़ा बर अंदाम हो गए
शेराफगनों की हालतें होने लगीं ख़राब
कहते थे आज तक नहीं देखा कोई जवां
ऐसा शुजाअ, होता जो उस शेर का जवाब
कोह पैकरों को तेग़ से दोपारा कर दिया
की ज़र्बे ख़ौद पर तो उड़ा डाला ता रेकाब
तल्वार थी कि साइक़ा बर्क़ बार था
या अज़ बराए ज़ख़्मे श्यातीन था शहाब
मैदाँ में उसके हुस्न व हुनर देख कर नईम
हैरत से बदहवास थे जितने थे शैख़ व शाब

मैदाने करबला में अ़ली के पोते ने म्यान से शम्शीर आबदार निकाली। उसकी चमक से आँखें ख़ेरा हो गईं। जुबाँ मुबारक से यह रज्ज़ पढ़ा।

मैं अ़ली अक्बर हूँ हज़रत हुसैन बिन अ़ली का फ़रज़न्द। हम अह्ले बैते रसूल हैं और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बहुत ज़्यादा क़राबतदार। याद रखो! मैं तुम्हें नेज़े से ठीक ठीक निशाना बनाऊँगा और अपने बाप की हिमायत में वह तेग़ज़नी करूँगा जैसी हाशमी अ़रबी जवानों की तेग़ज़नी होती है। यह फ़रमा कर एक नारा मारा और फ़रमायाः ज़ालिमो! अगर औलादे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ख़ून की प्यास है तो तुम में

से जो बहादुर हो उसे मैदान में भेजो। ज़ोरे बाज़ुए हैदर देखना हो तो मेरे मुक़ाबिल आओ। मगर किसको हिम्मत थी कि आगे बढ़ता। किसके दिल में ताब व तवाँ थी कि तन्हा उस शेरे ज़्याँ के सामने आता। जब आपने देखा कि कोई एक आगे नहीं बढ़ता और उनको बराबर की लड़ाई की हिम्मत नहीं कि एक को एक के मुक़ाबिल करें तो आपने घोड़े की बाग उठाई और मिस्ल साइक़ा उन पर हमला किया जिस तरफ़ आपका रुख़ होता दुश्मन भेड़ बकरियों की तरह भागते नज़र आते। एक एक वार में कई कई सर गिरा दिए। उधर मैमना पर चमके तो उसको मुंतशिर किया। उधर मैसरा की तरफ़ पलटे तो सफ़ें दरहम बरहम कर डालीं। कभी क़ल्बे लश्कर में ग़ोता लगाया तो कुश्तों के पुश्ते लगा दिए। हर तरफ़ शोर बरपा हो गया। दुलारों के दिल छूट गए। बहादुरों की हिम्मतें टूट गईं। शहज़ाद-ए-अह्ले बैत का हमला न था अ़ज़ाबे इलाही था जो यज़ीदियों पर नाज़िल हो गया था। धूप में जंग करते करते चमनिस्ताने रिसालत के गुलेशादाब को प्यास का ग़लबा हुआ। बाग मोड़ कर वालिद माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अ़र्ज़ कियाः **या अबताहु अल-अ़तश** अब्बा जान प्यास के ग़लबा से सख़्त बेताब हूँ। अगर पानी का एक प्याला मिल जाए तो इन सबको मौत के घाट उतार दूँ। इमाम पाक ने अपने नूरे नज़र की प्यास देखी मगर पानी कहाँ था जो इस तिशन-ए-शहादत को देते दस्ते शफ़क़त से चेहर-ए-गुलगों का गर्द व गुबार साफ़ किया और फ़रमाया बेटा! अब तुम्हारी सैराबी का वक़्त क़रीब आ गया है। अब साक़ी-ए-कौसर के हाथ से कौसर का जाम पीना। जिसकी लज़्ज़त न तसव्वुर में आ सकती है न ज़ुबान ब्यान कर सकती है और उसके बाद तुम्हें प्यास कभी न सताएगी। बेटा! जब कभी मैं प्यासा हो जाता था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे मुँह में अपनी ज़ुबाने मुबारक दे दिया करते थे। आज तुम इस प्यास की हालत में मेरी ज़ुबान चूस लो तुम्हें कुछ तस्कीन हो जाएगी। तिशना फ़रज़न्द ने इमाम पाक की ज़ुबाने मुबारक को चूसा। उन्हें फ़िल-हक़ीक़त कुछ तस्कीन हुई। दोबारा रुख़्सत करते वक़्त इमाम पाक ने अपनी अंगूठी फ़रज़न्द अरजमन्द के मुँह में रख दी। शहज़ादा-ए-अनवर ने फिर मैदान का रुख़ किया और लश्करे आदा के मुक़ाबिल हो कर सदादी **हल मन मुबारिज़** है कोई जो मेरे सामने आए? अ़मर बिन सअ़द ने तारिक़ बिन शीस से कहाः बड़े शर्म

की बात है कि यह नौजवान अकेला है और तुम हज़ारों की तादाद में हो तुम में से किसी को हिम्मत नहीं हुई कि उसके बिल-मुक़ाबिल हो। आख़िर उसने आगे बढ़ कर हमला किया और तुम्हारी सफ़ों को दरहम बरहम कर दिया और तुम्हारे बहादुरों को तहे तेग़ कर दिया। भूखा प्यासा है और ध ूप में लड़ते लड़ते थक गया। इसके बावजूद तुम्हें लल्कार रहा है और तुम में से कोई उसके मुक़ाबले की ताब नहीं रखता। तुफ़ है तुम्हारे दावा! शुजाअ़त पर! अगर कुछ ग़ैरत है तो उस नौजवान का मुक़ाबला करके उसका काम तमाम कर दे। अगर तूने यह काम अंजाम दिया तो मैं वादा करता हूँ कि तुझको मूसल की हुकूमत दिला दूँ। तारिक़ ने कहा कहीं ऐसा न हो कि फ़रज़न्दे रसूल व औलादे बतूल को क़त्ल करके अपनी आक़िबत भी बरबाद कर लूँ और तू भी वादा पूरा न करे। इब्ने सअ़द ने क़सम खाई और पुख़्ता क़ौल व क़रार किया। अब तारिक़ बदबख़्त मूसल की हुकूमत के लालच में गुले बुस्ताने रिसालत के मुक़ाबला के लिए निकला। सामने पहुँचते ही उसने हमशक्ले नबी पर नेज़े का वार किया। शहज़ाद-ए-वाला तबार ने बकमाले हुनरमन्दी उसका वार रद्द फरमा कर उसके सीना पुर कीना पर एक वार नेज़े का ऐसा किया कि नेज़ा सीने से पार हो गया और वह घोड़े से गिर गया। शहज़ादे ने उसकी लाश को रौंद डाला। यह देख कर उसके बेटे उमर बिन तारिक़ ने वफ़ूरे गुस्सा से पागल हो कर शहज़ाद-ए-जमील पर हमला कर दिया। शहज़ादे ने उसके हमले से खुद को बचा कर एक ही ज़र्बे हैदरी से उसको भी जहन्नम रसीद कर दिया। उसके बाद उसका दूसरा बेटा तलहा बिन तारिक़ अपने बाप और भाई का बदला लेने के लिए शोअ़ल-ए-आतिशीं बन कर शहज़ाद-ए-इमाम पर टूट पड़ा। लख़्ते दिले हुसैन ने उसका मुक़ाबला किया और उसको भी ख़ाक व ख़ून में मिला दिया। लश्करे आदा पर हैदर के शेर की ऐसी हैबत छाई कि सब दम बखुद हो कर रह गए। इब्ने सअ़द ने एक मशहूर बहादुर मिसराअ़ बिन ग़ालिब को फ़रज़न्दे हुसैन के मुक़ाबला के लिए भेजा। मिसराअ़ ने शहज़ादे पर नेज़े से हमला किया। शहज़ाद-ए-हुसैन ने तल्वार से नेज़ा क़लम करके मिसराअ़ के सर पर तल्वार से एक ज़र्बे हैदरी लगाई कि मिसराअ़ दो टुक्ड़े हो कर गिर गया। अब किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि तन्हा उस शेर के मुक़ाबिल आता। आख़िर इब्ने सअ़द ने मुहकम बिन

तुफ़ैल बिन नौफ़ल को हुक्म दिया कि एक हज़ार सवारों के साथ जिगर पार-ए-बतूल अ़ली अकबर पर हमला करे। चुनांचे वह अशरार आपको चारों तरफ़ से घेर कर हमला आवर हुए। शहज़ाद-ए-इमाम भी शुजाअ़त व बहादुरी के जौहर दिखाते हुए दुश्मनों को हलाक करके ख़ाक व ख़ून में मिलाते रहे। लेकिन चारों तरफ़ से चलाए जाने वाले नेज़ों और तीरों के मुसलसल हमलों से आप सख़्त ज़ख़्मी हो चुके थे और ज़ख़्मों से ख़ून के बह जाने की वजह से दस्त व बाज़ू में कमज़ोरी महसूस होने लगी। आपके हाथ का सुस्त पड़ना था कि चारों तरफ़ से तल्वारें पड़ने लगीं और चमने फ़ातिमा ज़हरा का यह गुले रंगीन अपने ख़ून में नहा गया।

नेज़े से किस के लाल का ज़ख़्मी हुआ जिगर
करते हैं किस की लाश को पामाल अह्ले शर
कहता है कौन रन में तड़प कर पिदर पिदर
ख़ेमे से निकले कहते हुए आह मेरा पिसर
पाया था मुद्दतों में जिसे ख़ाक छान के
वह लअ़ल हमने खो दिया जंगल में आन के

शहज़ाद-ए-अनवर पुश्ते ज़ीन से ज़मीन पर आ रहे। रहवार से गिरते हुए पुकारे **या इब्ताहु अदरक्नी** अब्बा जान। मुझे संभालिए, मुझको लीजिए।

जिस दम सुनी हुसैन ने यह जान गुज़ा सदा
साबिर अगरचे थे पर कलेजा उलट गया
हाथों से दिल को थाम के दौड़े बरहना पा
नअ़रा किया कि ऐ अ़ली अक्बर करूँ मैं क्या
मिल कर ग़रीब व बेकस व तन्हा से जाइयो
आए ज़ईफ़ बाप तो दुनिया से जाइयो
जाकर सफ़रें के पास पुकारे बअश्क व आह
है किस तरफ मेरे अ़ली अक्बर की क़त्लगाह
ऐ ज़ालिमो! यह शब है कि दिन हो गया सियाह
किस अब्र में छुपा है मेरा चौदहवीं का माह
बतलाओ जान है कि नहीं जिस्मे ज़ार में
ज़ख़्मी पड़ा है शेर मेरा किस कछार में
जल्लादों से कहते थे यह रो रो के बताओ

अक्बर हैं कहाँ लाश मुझे उनकी दिखाओ
या उनके बराबर मेरा लाशा भी गिराओ
या क़त्ल करो या अली अक्बर से मिलाओ
सैयद हूँ, मुसाफ़िर हूँ कई दिन से हूँ प्यासा
यारो मैं पयम्बर का तुम्हारे हूँ नवासा
आए यह बात कह के जो सुल्ताने बह्र व बर
बेटे की लाश बाप ने देखी लहू में तर
उठा वह दिल में दर्द कि ख़म हो गई कमर
देखा जो ज़ख़्म मुँह के क़रीब आ गया जिगर
अक्बर तेरे अलम से जिगर चाक चाक है
जब तू न हो तो बाप के जीने पे ख़ाक है
दुश्मन को भी न बेटे का लाशा ख़ुदा दिखाए
हज़रत ज़मीन पे गिर के पुकारे कि हाए हाए
ज़िन्दा रहे यह पीर, जवाँ यूं जहाँ से जाए
ऐ लाल! तीन रोज़ के फ़ाक़े में ज़ख़्म खाए
शायद जिगर के ज़ख़्म से तुम बेक़रार हो
ज़ख़्मी तुम्हारी छाती पे बाबा निसार हो

मज़्लूमे करबला ने अपने शहज़ाद-ए-अक्दस का सर अपनी गोद में रखा। अ़ली अक्बर ने आँख खोली।

अक्बर ने आँखें खोल के देखा रुख़े पिदर
सूखी ज़ुबाँ दिखाई कि प्यासा हूँ ऐ पिदर
ज़र्दी अजल की छा गई चेहरे पे सर बसर
दोबार ली कराह के करवट इधर उधर
दुनिया से इंतिक़ाल हुआ नूरे ऐन का
हंगामे ज़ुहर था कि लुटा घर हुसैन का

जब जाँबाज़ बेटा आग़ोशे पिदर में अपनी जान अल्लाह के हुज़ूर पेश करके फ़िरदौस बरीं पहुँचा तो मज़्लूमे करबला ने लाशे मुबारक ज़मीने करबला पर रख दी और फ़रमाया :

क़तलल्लाहु क़ौमन क़तलूक या बुनैय्य।

ऐ मेरे फ़रज़न्द! अल्लाह तआ़ला उन लोगों को हलाक करे जिन्होंने तुझे क़त्ल किया है।

यह लोग अल्लाह तआ़ला पर और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की आबरू रेज़ी पर किस क़द्र दिलेर हैं मेरे बच्चे तेरे बाद दुनिया पर ख़ाक है।

लश्करे आदा में से हमीद बिन मुस्लिम का ब्यान है कि मैंने देखा कि एक ख़ातून ख़ेमा से दौड़ कर निकली वह इस क़द्र हसीन व जमील थी कि गोया आफताब निकल आया और वह यह पुकारती हुई आ रही थी **या अख़ाह व या इब्न अख़ाह।** ऐ मेरे भैया और ऐ मेरे भैया के फ़रज़न्द! और वह बेताबाना आ कर अ़ली अक्बर की लाश पर गिर गई। मैंने लोगों से पूछा यह कौन है? मुझे बताया गया कि यह हम्शीर-ए-हुसैन ज़ैनब बिन्ते फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम है।

ऐ मेरे लम्बे गैसुवों वाले किधर है तू
हाए हाए मेरी ग़रीबी के पाले किधर है तू
वारी कहाँ लगे तुझे भाले किधर है तू
क्योंकर फूफी जिगर को संभाले किधर है तू
अट्ठारवाँ बरस था कि मौत आ गई तुझे
ऐ नूरे ऐन किस की नज़र खा गई तुझे

इसी दिल फ़िगार ग़म गुसार फूफी ने शहज़ाद-ए-इमाम अ़ली अक्बर को बड़े नाज़ व नेअ़मत से पाला था रोज़ने (रोशनदान) ख़ेमा से उसी शहज़ादे की शहादत का क़्यामत ख़ेज़ मंज़र देख रही थीं। जब प्यारे भतीजे को ख़ाक व ख़ून में तड़पता देखा बेताब हो गईं या राय ज़ब्त बाक़ी न रहा। ख़ेमा से बाहर निकल आईं और भतीजे की लाश के टुक्ड़ों पर गिर पड़ीं। मज़्लूमे करबला ने दुखियारी बहन का यह हाल देखा तो हाथ पकड़ कर ख़ेमा में लाए और फ़रमायाः ऐ अह्ले बैते रसूल! अल्लाह तआ़ला आज तुम्हारे सब्र की इंतिहा देखना चाहता है सब्र व ज़ब्त से काम लो और आज सब कुछ क़ुरबान करके उसकी रज़ा हासिल कर लो।

इमाम ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ लाए और शहज़ाद-ए-शहीद की लाश मुबारक और अपने क़ल्ब व जिगर के टुक्ड़ों को उठा कर ख़ेमा के क़रीब ला कर रख दिया और आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त में अ़र्ज़ किया : मेरे माबूद! आज तेरे एक वफ़ादार बन्दे ने तेरी राह में सबसे बड़ी नज़्र पेश करके सुन्नते इब्राहीमी पूरी की है। मेरे मौला, मेरा यह हदिया क़ुबूल फ़रमा! रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

जूँ ही सितम रसीदा ग़म नसीब माँ ने अपने नूरे नज़र की लाश को पाश पाश देखा चिल्ला उठी और कहा :

ऐ जाने फ़ातिमा मेरा प्यारा कहाँ गया
अम्माँ की ज़िन्दगी का सहारा कहाँ गया
वह तीन दिन की प्यास का मारा कहाँ गया
आले नबी की आँख का तारा कहाँ गया
मरती हूँ अपने सरो सही क़द को देख लूँ
इक बार फिर शबीहे मुहम्मद को देख लूँ

मासूमे करबला हज़रत अ़ली असग़र :

इधर मुजाहिदीन फ़ी सबिलिल्लाह एक एक करके नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत इमाम पाक पर निसार हो गए और उधर लश्करे आदा में अब भी हज़ारों की तादाद में तरकश लगाए कमानें चढ़ाए, हाथों में शम्शीर व सिनाँ लिए फ़रज़न्दे रसूल के ख़ून के प्यासे मौजूद हैं। ज़रा रेहान व राकिबे दोशे रसूल, जिगर पार-ए-बतूल सैयदना इमाम हुसैन के जान गुसल ग़म व अन्दोह का तसव्वुर कीजिए। ग़रीबुल-वतनी में और मुसाफ़िरी के आ़लम में उन पर क्या बीत रही है? हज़ारों दाग़हाए जिगर, साथ ही सैंकड़ों इंतिहाई दिल शिकन मनाज़िर हैं। भूख और प्यास का सख़्त ग़लबा है। अंसार और अ़ज़ीज़ों के फ़िराक़ का सदमा है। जाँनिसारों, क़राबतदारों, भाईयों, भतीजों, भाँजों और बेटों की बेकफ़न दफ़न मुक़द्दस लाशें धूप में मुरझा रही हैं। खे़म-ए-इस्मत व तहारत की बेपनाही व लावारिसी और अपनी तन्हाई का जान गुदाज़ एहसास है कि करबला का जंगल उन दुश्मनों से भरा हुआ है जिन से अपने बाद भी पस्मांदगान के लिए किसी रहम व करम की उम्मीद नहीं। ऐसे ही रूह फ़रसा सदहा ख़्याल हैं। यह वह अंदोह गीन मसाइब व आलाम हैं कि किसी एक ज़ात पर यूँ जमा नहीं हुए थे न इस से पहले चश्मे फ़लक ने कभी देखे थे। बिला शुबह नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और जिगर गोश-ए-बतूल रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने जिस कमाले सब्र व रज़ा का मुज़ाहरा फ़रमाया उसकी मिसाल नहीं मिलती। यह उन्हीं का मरतबा व मक़ाम और हिस्सा व हक़ था और रब्बे काइनात की उन पर कमाल मेहरबानी थी कि हक़ के लिए उनके अ़ज़्म व इस्तिक़्लाल और सबात में मामूली सी लग़्ज़िश कुजा, ज़ुबान पर हरफ़े शिकायत भी नहीं है।

सुबह से इस वक़्त तक जितने मुजाहिद भी मैदाने कार ज़ार में गए उन्होंने क़त्ल किया भी और ख़ुद भी क़त्ल हुए लेकिन अब वह नन्हा शीर ख़्वार शश माह मुजाहिद मैदाने कार ज़ार में दुश्मनों के सामने आ रहा है जिसने गुस्से से किसी को उंगली भी नहीं लगाई थी और तेवरी चढ़ा कर किसी को देखा भी न था। वह क्यों आया सिर्फ़ इसलिए कि तारीख़ के सफ़हात पर अपने मुक़द्दस ख़ून से अपनी मासूमियत व मज़्लूमियत और इन अश्क़िया की शक़ावत व क़सावत की दास्तान नक़्श कर दे और आने वाली नसलों को बता दे कि उन संग दिल यज़ीदियों ने मुझ जैसे बेजुर्म व ख़ता शीर ख़्वार पर भी कोई तर्स नहीं खाया और तीन दिन के प्यासे हलक़ में पानी डालने की बजाए तीर पैवस्त किया।

मासूम शीर ख़्वार अ़ली असग़र की वालिदा माजिदा हज़रत सैयदा रबाब ने इमाम पाक की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया। मेरे सर के ताज! फ़र्ते ग़म और फ़ाक़े से मेरा तो दूध ख़ुश्क हो गया है और पानी का एक क़तरा नहीं। ज़रा अपने इस लख़्ते जिगर को देखो कि शिद्दते प्यास से इसकी क्या हालत हो रही है। मुझ से तो इसका रोना तड़पना देखा नहीं जाता। मेरा तो कलेजा पाश पाश हो रहा है। ख़ुदारा इसको ले जाइए और उन पत्थर दिल ज़ालिमों को दिखाइए। इसकी हालते ज़ार देख कर ज़रूर किसी को रहम आ जाएगा। बच्चों पर तो हर किसी को रहम आ जाता है। हज़रत सैयदा रुबाब की दरख़्वास्त पर इमाम पाक अपने इस फूल अ़ली असग़र को जो अभी खिलने भी न पाया था गोद में उठा कर सीने से लगाए सियाह दिल दुश्मनों के सामने पहुँचे।

जब रन में हुसैन असग़र बेशीर को लाए
लख़्ते जिगर बानव-ए-दिलगीर को लाए
जल्लादों में इस साहिबे तौक़ीर को लाए
हाथों पे धरे चाँद सी तस्वीर को लाए
गुल पड़ गया देखो शहे वाला के पिसर को
ख़ुर्शीद ने हाथों पे उठाया है क़मर को
गर मैं बक़ौल शिम्र व अ़मर हूँ गुनहगार
यह तो नहीं किसी के भी आगे क़ुसूरवार
शश माह व बेज़ुबान, नबीज़ादा शीर ख़्वार

हफ़्तुम से सबके साथ यह प्यासा है बेक़रार
सिन है जो कम तो प्यास का सदमा ज़्यादा है
मज़्लूम खुद है और यह मज़्लूमज़ादा है
इन फूल से रुख़्सारों के कुम्लाने को देखो
गहवारे से मैदाँ में चले आने को देखो
इन सूखे हुए होंठों के मुरझाने को देखो
ग़श आने को और सांस उलट जाने को देखो
नाहक़ है अदावत तुम्हें नाज़ों के पले से
फिर दोगे तो पानी भी न उतरेगा गले से

फ़रमायाः ऐ क़ौमे जफ़ाकार! मैं तुम्हारे नबी का नवासा हूँ और यह तिफ़्ले सग़ीर मेरा लख़्ते जिगर है। अगर तुम्हारे ज़अ्मे बातिल में मैं मुज्रिम हूँ तो इस बच्चे का तो कोई जुर्म नहीं इसको तो पानी पिला दो। देखो शिद्दते प्यास से इसकी क्या हालत हो रही है। दुश्मनो! मेरे हाथ में पानी का प्याला न दो शायद तुम्हें यह अन्देशा हो कि इसमें से मैं भी पी लूँगा। पानी के दो क़तरों से इसका खुश्क गला तर हो सकता है और चन्द क़तरों से बहते हुए दरियाए फ़ुरात में कोई कमी नहीं आ जाएगी। बच्चों पर तो काफ़िरों को भी तरस आ जाता है और तुम तो मुसलमान कहलाते हो। क्या तुम्हें मालूम है कि यह बच्चा कौन है ?

यह कौन बेज़ुबाँ है तुम्हें कुछ ख़्याल है
दुर्रे नजफ़ है बानव-ए-बे किस का लाल है
लो मान लो तुम्हें क़सम जुल-जलाल है
बतहा के शहज़ादे का तुम से सवाल है
तुमको क़सम है रूहे रिसालत मआब की
टपका दो इसके हलक़ में दो बूंद आब की

अफसोस सद अफ़सोस! संग दिल जफ़ाकार तीरा बख़्तों पर कुछ असर न हुआ और उनको ज़रा रहम न आया। बजाए पानी के एक बदबख़्त शक़ी अज़्ली हुरमला बिन काहिल असदी ने निशाना लेकर इस ज़ोर से एक तीर मारा जो अ़ली असग़र का हलक़ छेदता हुआ इमाम पाक के बाज़ू में बैठ गया।

इमाम पाक ने वह तीर खींचा ख़ून का फ़व्वारा हम्राह पैकान बरामद

हुआ। इमाम पाक ने बच्चे का गर्म गर्म लहू अपने चुल्लू में लिया और जानिबे फ़लक फेंका और फ़रमाया :

ऐ अल्लाह! जो कुछ यह लोग कर रहे हैं इस पर मैं तुझे गवाह बनाता हूँ। परवरदिगारे आ़लम! जिस राह में इस वक़्त मैं गामज़न हूँ उसकी सख़्त कठिन मंज़िलें तेरी रहमत ही से आसान हो रही हैं।

वह देख दरत्ते इमामत पे शीर ख़्वार की लाश
वह देख फिर भी कहीं डगमगा सके न क़दम

बच्चे ने इक झुर-झुरी सी ली और मज़्लूम बाप के हाथों में तड़प कर जान दे दी। मज़्लूम बाप ने नन्हें शहीद को चूमा और हाथ में लगे हुए ख़ून से रेश मुबारक को ख़िज़ाब करके फ़रमाया। मेरे चाँद! तुम चलो मैं भी इस हैयत में तुम्हाशा ख़ून मुँह पर मले तुम्हारे पीछे नाना जान के पास आता हूँ और उनको दिखाता हूँ कि इन जफ़ाकार उम्मतियों ने तुम्हारा और मेरा क्या हाल किया है। उधर ख़ेमों में बीबियों को गुमान था कि बेरहम संगदिल बच्चे की हालते ज़ार पर ज़रूर तरस खाएंगे और पानी पिला देंगे। जब उन्होंने उस शगूफ़-ए-आरज़ू को भी इमाम के हाथों में ख़ून से रंगीन पाया तो उनके जिगर फट गए।

क्या यही इंसाफ़ है इक बूंद पानी के एवज़
हलक़े असग़र में अ़दू का तीर होना चाहिए

इमाम ने नन्हें शहीद को अ़ली अक्बर के पास लिटा दिया। जूँ ही माँ ने अपनी गोद में तड़पने वाले को ख़ाके करबला पर सुकून से लेटा देखा तो कहा :

ऐ ज़मीने करबला! यह तो बता क्या हो गया
बेज़ुबाँ असग़र तेरी गोदी में कैसे सो गया

हो सकता है मासूम अ़ली असग़र शिद्दते प्यास से नहीं शौक़े शहादत में बेताब हों और दूसरी तरफ वह बदबख़्त मासूम अ़ली असग़र के क़त्ल को शायद अपना कारनामा समझ रहे हों मगर छः माह के उस जन्नती फूल ने अपनी जान देकर यह बता दिया कि लश्करे यज़ीद में शामिल बदबख़्त इन्सानियत से भी आरी हो गए थे और उन्होंने ज़ुल्म व सितम की इंतिहा कर दी थी।

तीर असग़र मासूम पे आदा ने लगाया फ़रियाद खुदाया
बेदर्दी व बेरहमी से है ख़ून बहाया फ़रियाद ख़ुदाया

किस तरह जिगर उसके मुहिब्बों का न शक़ हो क्योंकर न क़लक़ हो
तड़पा किया बेचैन रहा पानी न पाया फ़रियाद ख़ुदाया
बच्चों पे तरह्हुम की नज़र रस्मे जहाँ है मश्हूर अयाँ है
अफ़सोस लईनों ने ज़रा तरस न खाया फ़रियाद ख़ुदाया
पानी के लिए प्यासे तड़पते रहे सादात और माँगा तो हैहात
बेदीनों ने आबे दमे शम्शीर पिलाया फ़रियाद ख़ुदाया
सच है ग़मे फ़रज़न्द उठाए नहीं उठता यह सब पे है बाला
टूटी है कमर हाए यह सदमा जो उठाया फ़रियाद ख़ुदाया
फटता है जिगर क्या करें तदबीर भला हम दारू है न मरहम
यह ज़ख़्म तो कारी दिले मज्रूह पे खाया फरियाद ख़ुदाया
कहते हैं शक़ी आप जो बैअ़त न करेंगे पानी न देंगे
है आले मुहम्मद को लईनों ने सताया फ़रियाद ख़ुदाया

हश्र तक छोड़ गए इक दरख़शन्दा मिसाल
हक़ परस्तों को न भूलेगा यह एहसाने हुसैन

सुल्तानुल औलिया महबूबे इलाही अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसूद गंज शकर अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया–

जिस रोज़ अमीरुल-मुमिनीन हज़रत हुसैन ने शहादत पाई उसी रात एक बुज़ुर्ग ने हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि अल्लाहु अन्हा को ख़्वाब में देखा कि अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम की औरतों के साथ आईं और दामन मुबारक कमर से बांधे हुए दश्ते करबला जहाँ कि अमीरुल-मुमिनीन हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने शहादत पाई थी झाड़ू दे रही थीं और अपनी आस्तीन मुबारक से पाक व साफ़ कर रही हैं। पूछा गया कि ऐ ख़ातूने क़्यामत और ऐ शफ़ीअ़् रोज़े महशर यह कौन मक़ाम है जिसको आपने अपनी आस्तीन मुबारक से साफ़ किया है फ़रमाया यह वह मक़ाम है जहाँ हमारा मुसाफिर हुसैन सर देगा और शहादत पाएगा :

ताजदारे करबला सैय्यदना इमाम हुसैन :

अब राकिब दोशे रसूल, नूर दीद-ए-बतूल, लख़्ते दिले अ़ली मुर्तज़ा, राहत जाने हसन मुज्तबा, जन्नत के नौजवानों के सरदार, आशिक़ों के क़ाफ़िला सालार, आले रसूल की आँखों के तारे, टूटे हुए दिलों के सहारे,

पैकरे सब्र व रज़ा, शहीदे दश्ते करबला, मोमिनों के दिल के चैन, हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु की शहादत का वक़्त आ गया है।

अब क़्यामते ग़म व अलम बरपा होने वाली है। अब काइनाते अर्ज़ी व समावी में सफ़े मातम बिछने वाली है। अब ज़मीन व आसमान ख़ून के आँसू रोएंगे। अब वह कर्ब अंगेज़ लम्हात आने वाले हैं जिनके तसव्वुर से दुनियाए इस्लाम लरज़ा बर अंदाम हो जाएगी और ऐसा क्यों न हो कि वह शहज़ाद-ए-कौनैन जिसको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने सीने मुबारक पर सुलाते। कंधों पर बिठाते और अपनी ज़ुबाने मुबारक चुसाते थे। वह जाने जिगर नवासा जिसका अपनी मेहरबान माँ सैय्यदा फ़ातिमा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा की गोद में रो पड़ना नबियों के सरदार को बेक़रार कर दिया करता था। वह नाज़ का पाला जिसके पुश्ते अक़्दस पर चढ़ जाने की सूरत में सरवरे कौनैन सज्दों को तवील फ़रमा दिया करते थे। जिसका पुश्त मुबारक से गिरना रसूलों के ताजदार को गवारा नहीं था वह फ़रज़न्दे रसूल जिसकी अ़क़ीदत व मुहब्बत हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, जिसकी ताज़ीम व तौक़ीर और अदब व एहतेराम हर मुसलमान पर लाज़िम व ज़रूरी है। जिसके साथ मुहब्बत रखना अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत रखना है और जिसको सताना और अज़ीयत पहुँचाना अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अज़ीयत पहुँचाना है। उसको उसके अह्ल व अयाल के सामने तीरों, तल्वारों और नेज़ों से घायल करके घोड़े से नीचे गिराया जाएगा और उसकी मुक़द्दस लाश को घोड़ों की टापों से रौंदा जाएगा। ख़ेमे जलाए जाएंगे और रसूल ज़ादियों का सब साज़ व सामान लूट लेने के बाद उनको क़ैदी बना लिया जाएगा। हाए अफ़सोस !

जिनके सदक़े में हुए आज़ाद सदियों के असीर
क्या उन्हीं को बस्त-ए-ज़ंजीर होना चाहिए

चुनांचे ताजदारे करबला अपना तमाम कुंबा क़बीला अ़ज़ीज़ व अक़ारिब और आवान व अंसार राहे हक़ में निसार करने के बाद अब अपनी जान की नज़्र अपने माबूदे बरहक़ की बारगाहे अक़्दस में पेश करने का अ़ज़्म फ़रमाते हैं और ख़ेम-ए-अह्ले बैत में तशरीफ़ ले जाते हैं। क्या देखते हैं कि वह बीमार बेटा जिसने सख़्त बुख़ार की हालत में कई दिन बिस्तर पर गुज़ारे

थे जिसको सफ़र की कोफ़्त, भूख व प्यास की शिद्दत और आँखों के सामने होने वाले जानकाह वाक़ेआत ने इस क़द्र कमज़ोर व नातवाँ बना दिया था कि खड़े होने से बदन मुबारक लरज़ता था। बावजूद उसके नेज़े संभाले हुए आज़िमे मैदाने जंग है। ताजदारे करबला ने अपने नूरे नज़र ज़ैनुल-आबेदीन को अपनी आग़ोशे मुहब्बत में लिया। प्यार किया और फ़रमाया : बेटा! अभी तुम्हारा वक़्त नहीं आया अभी तो तुमने अपनी इन माओं, बहनों की निगाह दाश्त करनी है और इन बेकसाँ अह्ले बैत को वतन तक पहुँचाना है। मेरे फ़रज़न्द अल्लाह तआला तुम ही से मेरी नस्ल और हुसैनी सादात का सिलसिला जारी फ़रमाएगा। देखो सब्र व सबात से रहना और राहे हक़ में आने वाली हर तक्लीफ़ व मुसीबत को ख़न्दा पेशानी से बर्दाश्त करना। हर हालत में नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत व सुन्नत की पाबन्दी करना। बेटा मसाइब व आलाम सहते हुए जब कभी मदीना मुनव्वरा पहुँचो तो सबसे पहले नाना जान के रौज़-ए-अनवर पर जाना और नाना जान को मेरा सलाम कहना। सारा आँखों देखा हाल सुनाना। फिर मेरी अम्माँ जान की क़ब्र पर जाना उन्हें भी मेरा सलाम कहना। मेरे भाई हसन मुज्तबा को मेरा सलाम कहना। मेरे लख़्ते जिगर मेरे बाद तुम ही मेरे जानशीन हो। इमाम पाक ने अपनी दस्तारे मुबारक उतार कर ज़ैनुल- आबेदीन के सर पर रख दी और इस सब्र व रज़ा के पैकर को फ़र्शे अलालत पर लिटा दिया।

शफ़क़त व उल्फ़त मेरी जितनी है अह्ले बैत पर
बाद मेरे तुम भी रखियो बल्कि उस से बेश तर
यह अमानत सौंपता हूँ तुमको ऐ जाने हुसैन
इत्तिबाए मुस्तफ़ा मल्हूज़ रखियो नूरे ऐन
बेपिदर होने का ग़म दिल पर सकीना के न हो
रंजे तन्हाई न आए ज़ैनब व कुल्सूम को
पंज-ए-आदा से आख़िर सब्र में है मुख़्लिसी
रफ़्ता-रफ़्ता ता वतन तुम लोग पहुँचोगे कभी
वाक़ेआते करबला की जो हुज़ूर हद्दे ब्याँ
आई जब नौबत हमारी उस क़द्र कहियो वहाँ

अब इमाम पाक अपने ख़ेमे में तशरीफ़ लाए। सामाँ खोला। क़बाए मिसरी ज़ेबे तन फ़रमाई। अपने नाना जान हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामा मुबारक सर पर बाँधा। सैय्यदुश्शोहदा

हज़रत अमीर हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की सुपर पुश्त पर रखी अपने बरादरे अक्बर हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु का पटका अपनी कमर पर बांधा। अपने बाप हैदरे कर्रार रज़ि अल्लाहु अन्हु की तल्वार ज़ुल-फ़िक़ार हमाइल की। शहीदों के आक़ा जन्नत के नौजवानों के सरदार सब कुछ राहे हक़ में क़ुरबान करके अब अपने सर का नज़राना पेश करने के लिए तैयार हो गए।

बीबियों के ख़ेमा में तशरीफ़ लाए। बीबियों ने जब इस मंज़र को देखा तो उन पर बेकसी की इंतिहा हो गई। चेहरों के रंग उड़ गए। हसरत व यास की ख़ामोश तस्वीर बनी इन मुक़द्दस ख़्वातीन की आँखों से मोती टपकने लगे। उधर इमाम पाक फ़रमा रहे थे लो तुम पर मेरा सलाम हो। दर्द में डूबी हुई जिगर सोज़ आवाज़ में बहनों ने कहाः प्यारे भैया! अज़वाज की सदा आई सर के ताज! सकीना ने कहा बाबा! कहाँ जा रहे हो? हमें इस जंगल में किसके सिपुर्द करके जा रहे हो जिन दरिन्दों ने अ़ली असग़र जैसे मासूम पर भी तरस नहीं खाया वह हमारे साथ क्या सुलूक करेंगे? फ़रमायाः अल्लाह तुम्हारा हाफ़िज़ व निगहबान है। आपने सब्र की तल्क़ीन फ़रमाई और रज़ाए इलाही पर साबिर व शाकिर रहने की वसीयत की और फ़रमाया :

अल्लाह को सौंपा तुम्हें ऐ ज़ैनब व कुल्सूम
लग जाओ गले तुम से बिछड़ता है यह मज़्लूम
अब जाते ही खंजर से कटेगा मेर हल्कूम
है सब्र का अमां के तरीक़ा तुम्हें मालूम
मज्बूर हैं नाचार हैं मर्ज़ी-ए-ख़ुदा से
भाई नहीं जी उठने का फ़रियाद व बुका से
जिस वक़्त मुझे ज़ब्ह करे लश्करे नारी
रोना न सुनो आए न आवाज़ तुम्हारी
बेसबरों का शेवा है बहुत गिरिया व ज़ारी
जो करते हैं सब्र उनकी ख़ुदा करता है यारी
हों लाख सितम रखियो नज़र अपनी ख़ुदा पर
इस ज़ुल्म का इंसाफ़ है अब रोज़े जज़ा पर

आपकी बहुत प्यारी! बेटी हज़रत सकीना आकर आपसे लिपट गई और चिल्लाते हुए कहा बाबा अगर तुम चले गए तो मैं बाबा कह के किसको पुकारूँगी? मेरे सर पर मुहब्बत व शफ़क़त से कौन हाथ फेरा करेगा? इमाम

पाक ने सकीना को गोद में उठा लिया, प्यार किया और अपनी बहन हज़रत ज़ैनब की गोद में देते हुए फ़रमायाः ज़ैनब! यह मेरी नाज़ों की पाली बहुत प्यारी बच्ची है इसको रोने न दिया करना। इसको यतीमी का एहसास न होने देना। इसको मेरी लाश के पास न आने देना। ज़ैनब ने कहाः मेरी माँ जाए आज सकीना ही यतीम नहीं हो रही आज हम सब बेसहारा और यतीम हो रहे हैं। काश! हमें मौत आ गई होती और हमारी आँखें इस रूह फ़रसा मंज़र को न देखतीं! भैय्या! आपके बग़ैर और आपके बाद आख़िर हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है? हमें भी अपने साथ ले चलो। हम भी आपके दोश बदोश लड़ कर अपनी जानें फ़िदा करेंगे। फ़रमायाः मेरी बहन! तुम साबिरों की औलाद हो, क़ज़ा व क़द्रे इलाहिया पर साबिर व शाकिर रहो और ज़ुबान पर कोई हर्फ़े शिकायत न आने दो। यह दुनिया एक सराए फ़ानी है और दारे आख़िरत ही बाक़ी और हमेशा रहने की जगह है। दुनिया यौमे चन्द आख़िर कार बाख़ुदावन्द, सुनो मेरी बहन!

हमारे शफ़ीक़ नाना अल्लाह के रसूल तशरीफ़ ले गए। फिर अम्माँ जान सैय्यदा आ़लम दाग़े जुदाई दे गईं। बाबा के सर का ज़ख़्म तीन दिन आँखों से देखा वह भी लहद में जा छुपे। भाई हसन के जिगर के टुक्ड़े तुमने और हमने तश्त में देखे और सब्र किया। अब मेरे मुआ़मले में भी सब्र करो। तुमने तो अभी आने वाले शदीद तरीन मसाइब पर भी सब्र की मुहर लगानी है। फिर आपने एक एक बीबी का नाम लेकर सलाम किया और सब्र व ज़ब्त की वसीयत फ़रमाई। दुखे हुए मज्रूह दिल जुदाई के तसव्वुर से पाश पाश हो रहे थे। हसरत भरी निगाहें पुरनूर चेहरे का दीदार कर रही थीं। आह सद आह! चन्द लम्हात के बाद यह जलवे हमेशा के लिए ओझल होने वाले हैं। इमाम ने ख़ुदा हाफ़िज़ कहा और ख़ेमा से निकले।

कह कर यह सुख़न शाह चले ख़ेमा के बाहर
उस वक़्त बपा हो गया हंगाम-ए-महशर
चिल्ला के कोई कहती थी है है मेरे सरवर
कहती थी कोई अब नहीं आएंगे बरादर
बाबा को क़सम दे के बुलाती थी सकीना
रोती हुई पीछे चली आती थी सकीना
चिल्लाती थी कुरबान हो बेटी चले आओ
मर जाऊँगी बाबा मुझे तुम छोड़ न जाओ

सदक़े गई नन्हा सा मेरा दिल न दुखाओ
बेताब हूँ मुड़ कर मुझे सूरत तो दिखाओ
शह कहते थे माँ पास रहो निकलो न तुम घर से
अब हश्र में होवेगी मुलाक़ात पिदर से

मज़्लूमे करबला ने दाएं बाएं निगाह की तो तमाम मैदान उन जाँनिसारों से खाली पाया जो हर वक़्त रिकाबे नुसरत में हाज़िर रहते थे और सवारी के वक़्त रिकाब गरदानी करते थे। हज़रत ज़ैनब ने देखा कि भाई को कोई सवार कराने वाला नहीं है तो पुकारी ऐ राकिबे दोशे रसूल! रेकाबादारी की ख़िदमत को कोई नहीं तो मायूस न होना। रसूलुल्लाह की नवासी इस ख़िदमत के लिए हाज़िर है।

ज़ैनब ने पुकारा मेरे माँ जाए बरादर
नाशाद बहन लेने रेकाब आए बरादर
अब कोई मददगार नहीं हाए बरादर
सदक़े हो बहन गर तुम्हें फिर पाए बरादर
किस आ़लमे तन्हाई में सैयद का सफ़र था
भाई न भतीजा न मुलाज़िम न पिसर था

ताजदारे करबला सवार हुए और मैदान की तरफ़ रुख़ किया।

ख़ेमा की तरफ़ मुड़ के यह करते थे इशारा
ज़ैनब बहन अल्लाह निगहबान तुम्हारा
गर रौज़-ए-अनवर पे गुज़र होवे क़ज़ारा
नाना से मेरा सब्र ब्याँ कीजियो सारा
वह कहती थी अल्लाह न ले जाए वतन में
हमशीर को पहलू हो नसीब आपका रन में
हमशीर ने लाशों को उठाना तेरा देखा
मुरदा लिए मासूम का आना तेरा देखा
होंठों पे ज़ुबां ख़ुश्क फिराना तेरा देखा
अक्बर के लिए अश्क बहाना तेरा देखा
हर चन्द बहादुर मेरे बाबा भी बड़े थे
प्यासे कभी चौबीस पहर के न लड़े थे
सैय्यदा ज़ैनब कह रही थीं।
ऐ अह्ले जहाँ आज के दिन कर लो ज़्यारत

दुनिया से मुहम्मद के नवासे की है रिहलत
यह शक्ल न आएगी नज़र फिर किसी सूरत
यमझो पिसरे फ़ातिमा ज़हरा को ग़नीमत
ढूढ़ोगे तो शब्बीर सा आक़ा न मिलेगा
फिर तुमको मुहम्मद का नवासा न मिलेगा

इमाम पाक मैदाने करबला में बातिल की तारीकियों में हक़ व सदाक़त का आफ़ताब बन कर चमके और अपने ज़ाती व नसबी फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल एक रज्ज़ पढ़ा।

इत्मामे हुज्जत :

फिर फरमाया ऐ लोगो! तुम जिस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का कलिमा पढ़ते हो यह उसी रसूल का इरशाद है कि हसन व हुसैन मेरे दोनों नवासे जवानाने अह्ले बहिश्त के सरदार हैं। तुम में कौन है जो इस हदीस का इंकार करता है? बेग़ैरतो! ज़रा शर्म करो और अगर ख़ुदा व रसूल पर ईमान रखते हो तो सोचो कि उस समीअ़ व बसीर, शाहिद व शहीद ख़ुदा को क्या जवाब दोगे। और मुहसिने आज़म नूरे मुजस्सम, रहमते आ़लम हुज़ूर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलेही व असहाबेही व बारिक व सल्लिम को क्या मुँह दिखाओगे? अपने रसूल का घर उजाड़ने वालो! अगर क़्यामत पर ईमान रखते हो तो अपने अंजाम पर नज़र करो। बेवफ़ाओ! तुमने मुझे ख़ुतूत लिखे, मेरे पास क़ासिद भेजे और कहा कि हमारी राहनुमाई कीजिए वरना हम ख़ुदा के हुज़ूर आपका दामन पकड़ कर शिकायत करेंगे। मैंने तुम पर ऐतमाद किया और चला आया। बेशरमो! तुम्हें तो चाहिए था कि मेरी राह में आँखों का फ़र्श बिछाते। मेरे पाँव की ख़ाक को आँखों का सुरमा बनाते और हस्बे वादा सब कुछ मुझ पर निसार करते। मगर तुमने इसके बिल्कुल बरअ़क्स मेरे साथ ऐसा बुरा सुलूक किया कि मज़ालिम की इंतिहा कर दी। ज़ालिमो! तुमने मेरी आँखों के सामने चमने ज़हरा के लहलहाते हुए फूलों को काटा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिगर के टुक्ड़ों को ख़ाक व ख़ून में तड़पाया। मेरे आवान व अंसार को क़त्ल किया। अब तुम मुझे भी ज़ब्ह करना चाहते हो। अब भी वक़्त है, ग़ैरत व शर्म से काम लो और मेरे ख़ून से अपने हाथों को रंगीन न करो। मेरे क़त्ल का वबाल अपनी गर्दन पर न लो। बोलो क्या कहते हो? उन्होंने कहाः आप यज़ीद की इताअ़त कुबूल कर लें वरना

बजुज़ जंग के कोई चारा नहीं। आपको मालूम था कि मेरी बातों का उन पर कोई असर न होगा क्योंकि उनके कुलूब पर मुहरें लग चुकी हैं। शक़ावत इंतिहा को पहुँच चुकी है लेकिन आपने यह बातें हुज्जत क़ाइम करने के लिए फ़रमाई थीं ताकि उनके पास कोई भी उज़्र बाक़ी न रहे।

अब आफ़ताबे नुबुव्वत का नूरे नज़र, शहंशाहे विलायत का लख़्ते जिगर, मख़्दूम-ए-काइनात ख़ातूने जन्नत के दिल का चैन, पैकरे सब्र व रज़ा सैयदना हुसैन भूख व प्यास की हालत में दोस्तों और अ़ज़ीज़ों की जुदाई के ज़ख़्म दिल पर लिए हुए करबला की तप्ती हुई रेत पर बीस हज़ार के लश्करे जर्रार के सामने खड़ा यह फ़रमा रहा था कि अगर तुम किसी तरह ख़ूने नाहक़ से बाज़ आने वाले नहीं हो तो आओ अपनी मुराद पूरी करो और मेरे ख़ून से अपनी प्यास बुझाओ और अपने बेहतरीन बहादुरों और जंगजुओं को एक एक करके मेरे मुक़ाबला में भेजते जाओ और क़ुव्वते रब्बानी और शुजाअ़ते हुसैनी और ज़रबाते हैदरी के मुज़ाहरे देखते जाओ।

चुनांचे मशहूर जंगजू और बहादुर अफ़राद जिनको सख़्त वक़्त के लिए महफ़ूज़ रखा गया था उनमें से तमीम बिन क़हतबा पूरी तैयारी के साथ अपनी बहादुरी की डींगें मारता हुआ और ग़ुरूर व तकब्बुर के कलिमे कहता हुआ आपके मुक़ाबला पर आया और ख़ून मुँह को लगे हुए चीते की मानिन्द आप पर झपटा। आपने बर्क़ ख़ातिफ़ की तरह तेग़े बराँ चमका कर उसका सर मिस्ल ख़्याम ख़ाम जिस्म से उड़ा दिया और उसके ग़ुरूरे शुजाअ़त को ख़ाक में मिला दिया। यह देख कर जाबिर इब्ने क़ाहिर क़िम्मी बड़े कर्रोफ़र और लाफ़ गज़ाफ़ के साथ आगे बढ़ा और एक नारा मार कर कहने लगा कि बहादुराने शाम व इराक़ में मेरी शुजाअत और बहादुरी के चर्चे हैं, किसी में मेरे मुक़ाबले की ताब नहीं। जब सिपाहे शाम का यह सरकश गुस्ताख़ हज़रत के सामने आया तो आप पर तल्वार का वार किया। आपने उसका वार बचा कर सैफ़े बराँ का एक ऐसा वार उस पर किया कि उसका बाज़ू कट कर ज़मीन पर जा पड़ा। पुश्त फेर कर भागने लगा। मलिकुल-मौत ने उसका रास्ता रोक लिया और इमाम पाक ने दूसरी ज़र्ब लगा कर उसके सर को तन से जुदा कर दिया।

बद्र बिन सुहैल यमनी गुस्से से लाल पीला होता हुआ अ़मर बिन सअ़द से कहने लगाः किन बुज़्दिलों और शुजाअ़त का नाम बदनाम करने वालों को हुसैन के मुक़ाबले में भेज रहे हो जो दो हाथ भी जम कर मुक़ाबला नहीं कर सके। मेरे चारों बेटों में से जिसे चाहो अब मैदान में भेज दो। और फिर

देखो कि मुझ से सीखे हुए मेरे यह फ़रज़न्द आज किस तरह फ़न्ने हर्ब का मुज़ाहरा करते हैं। अ़मर बिन सअ़द ने बद्र के बड़े फ़रज़न्द को इशारा किया। वह घोड़ा उड़ाता हुआ हज़रत के मुक़ाबिल आया। हज़रत ने फ़रमायाः बेहतर होता कि तेरा बाप मैदान में आता कि वह तेरी बदबख़्ती का तमाशा न देखता। यह फ़रमा कर तेग़ ख़ून आशाम से एक ही वार उस पर ऐसा किया कि उसका काम तमाम कर दिया। बद्र ने जब अपने बेटे को ज़मीन पर तड़पते हुए देखा उसकी आँखों में दुनिया अंधेर हो गई। ग़ैज़ व ग़ज़ब का पुतला बन कर नेज़ा हिलाते हुए मैदान में निकला और आप पर वार किया आपने अपनी ढाल पर इस ख़ूबसूरती से उसके वार को रोका कि यक्लख़्त उसके नेज़े की अन्नी टूट कर ज़मीन पर गिर पड़ी। बदनसीब ने खाली डंडे को गुस्से से ज़मीन पर दे मारा और तल्वार संभाल ली। हज़रत इमाम ने फ़रमायाः लाफ़ ज़नी और चीज़ है और शुजाअ़त और चीज़। होशियार अब तेरा काम भी तमाम होने वाला है। यह कह कर साहिबे शक्कुल-क़मर के लख़्ते जिगर ने तक्बीर कही और तल्वार आबदार का एक ऐसा वार किया कि जंगजू बद्र के दो टुक्ड़े कर दिए।

इसी तरह नए नए शम्शीर ज़न, नेज़े बाज़, बहादुराने शाम व इराक़ की तरह गरजते और हाथी की तरह चिंघाड़ते हुए हज़रत इमाम के मुक़ाबिल आते रहे मगर जो भी सामने आया ज़िन्दा वापस नहीं गया। शेरे खुदा के लाल ने शुजाअ़त के वह जौहर दिखाए कि ज़मीने करबला में बहादुराने कूफ़ा व शाम का खेत बो दिया। नामवराने सफ़ शिकन के ताज़ा ताज़ा ख़ून से ज़मीन मक़्तले को लाला ज़ार बना दिया। कुश्तों के पुश्ते लगा दिए।

आई निदाए ग़ैब कि शब्बीर मरहबा
इस हाथ के लिए थी यह शम्शीर मरहबा
यह आबरू, यह जंग, यह तौक़ीर मरहबा
दिखला दी माँ के दूध की तासीर मरहबा
ग़ालिब किया खुदा ने तुझे काइनात पर
बस ख़ातमा जिहाद का है तेरी ज़ात पर

लश्करे आदा में शोर बरपा हो गया कि अगर जंग का अंदाज़ यही रहा तो हैदर का यह शेर किसी को ज़िन्दा न छोड़ेगा बस मसलेहते वक़्त यही है कि चारों तरफ़ से घेर कर यक्बारगी हमला करो।

नागाह इब्ने सअ़द ने लश्कर को दी निदा
कैसे जरी हो कुछ भी है यारो तुम्हें हया
नरग़े में लो हुसैन को अब देखते हो क्या
इक बार हर तरफ़ से पड़ें हरब-ए-क़ज़ा
दम लेने दो न फ़ातिमा के नूरे ऐन को
सीने पे नेज़े रख के गिरा दो हुसैन को
यह सुन के मुस्तइद हुए वह सारे नाबकार
पहलू में आए तान के नेज़ों को नेज़ेदार
सीना के आगे तीर ज़नों ने किया क़रार
पत्थर लिए यमीन व यसार आए दो हज़ार
पैदल सवार, गर्द सब उस आन हो गए
बेकस के क़त्ल होने के सामान हो गए

चुनांचे ज़हरा के चाँद पर जोर व जफ़ा की तारीक घटा छा गई। हज़ारों जवान दौड़ पड़े और हज़रत इमाम को घेरे में ले लिया आपने फ़रमाया ज़ालिमो! अगर तुमने इब्ने ज़्याद और यज़ीद की ख़ुश्नूदी की ख़ातिर औलादे रसूल का ख़ून बहाना ज़रूरी समझ लिया है तो औलादे रसूल ने भी अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की खुशनूदी और दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिए सब कुछ कुरबान करने की ठान ली है।

यह कहते थे हज़रत कि बढ़े बरछियों वाले
और आए पसे पुश्त सवारों के रिसाले
दहने को प्यादे गए तल्वारें निकाले
ज़हरा के जिगरबन्द पे चलने लगे भाले
गुल था कि करो टुक्ड़े मुहम्मद के जिगर को
घोड़े पे संभलने न दो ज़हरा के पिसर को

हज़रत इमाम उन ख़ून ख़्वारों के अंबोह में अपनी तेग़ ख़ारा शिगाफ़ के जौहर दिखा रहे थे। जिस तरफ़ घोड़ा बढ़ाते परे के परे काट डालते। दुश्मन हैबतज़दा हो गए और हैरत में आ गए।

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्मार एक लश्करी का ब्यान है।

ख़ुदा की क़सम! मैंने किसी ऐसे बेकस और बेबस जिसकी औलाद और अह्ले बैत और असहाब सब क़त्ल हो चुके हों इस जुरअत, दिलेरी और

बहादुरी से न कभी पहले न उनके बाद लड़ते हुए हरगिज़ नहीं देखा जिस तरह हुसैन को देखा। उनके हमला से उनके दाएं बाएं के लोग इस तरह भागते जिस तरह भेड़िये के हमला से भेड़ बकरियाँ भागती हैं।

हज़रत इमाम लड़ते जाते थे और फ़रमाते जाते थे : मेरे क़त्ल के लिए जमा होने वालो! खुदा की क़सम! मेरे बाद किसी ऐसे शख़्स को क़त्ल न करोगे जिसका क़त्ल मेरे क़त्ल से ज़्यादा खुदा के ग़ज़ब का बाइस होगा। खुदा मुझको ऐज़ाज़ बख़्शेगा और तुम्हें ज़लील करेगा और जब तक तुम पे सख़्त अज़ाब नाज़िल न करेगा राज़ी न होगा। (तबरी स० 260/6)

बावजूद इसके कि तीन दिन के प्यासे और सदमों से चूर चूर थे अपनी शहादत के बाद महज़रात इस्मत व तहारत की असीरी व बेकसी का ख़्याल भी दामनगीर था मगर कुरबान जाएं आपके सब्र व इस्तिक़्लाल के और सरशारी-ए-शौक़े शहादत के कि बातिल के सामने किसी कमज़ोरी का मुज़ाहरा नहीं फ़रमाया और साबित कर दिया कि मेरी रगों में ख़ूने रसूल है और मेरे बाज़ुओं में कुव्वते हैदर है। मेरे जैसा कोई शहसवार नहीं है क्योंकि मैंने दोशे रसूल पर सवारी की हुई है। मेरे जैसा कोई बहादुर नहीं है इसलिए कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी शुजाअ़त बख़्शी हुई है। मैं मज़्हरे शुजाअ़ते रसूल हूँ।

अल-ग़रज़ इब्ने सअ़द और उसके मुशीरों ने यह देख कर कि अकेले इमाम ने नामवराने कूफ़ा और बहादुराने शाम की इज़्ज़त व शुजाअ़त को ख़ाक में मिला दिया है यह तज्वीज़ की कि दस्त बदस्त जंग की बजाए इमाम पर चारों तरफ़ से तीरों का मेंह बरसाया जाए और जब ख़ूब ज़ख़्मी हो जाएं तो नेज़ों के हमलों से तने नाज़नीन को हदफ़ बनाया जाए। चुनांचे इन अश्क़िया के हुक्म से तीर अंदाज़ों ने हर चहार तरफ़ से तीर बरसाने शुरू कर दिए। घोड़ा इस क़दर ज़ख़्मी हो गया कि उसमें कुव्वत व हिम्मत न रही। नाचार हज़रत इमाम को एक जगह ठहरना पड़ा। अब हर तरफ़ से तीर आ रहे थे और इमाम मज़्लूम का तने अक़्दस हदफ़ बना हुआ था। ज़ालिमों ने आपके नूरानी जिस्म को ज़ख़्मों से पारा पारा और लहू लुहान कर दिया। एक मरदूद अबुल-हनूक़ का तीर पेशानी मुबारक पर लगा वह पेशानी जो बारगाहे बेनियाज़ में झुकने वाली और हबीबे खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बोसा गाह थी, शिगाफ़्ता हो गई। उसके ख़ून से चेहर-ए-अनवर सुर्ख़ हो गया आपने मुँह पर हाथ फेरा और फरमाया बदबख़्तो!

तुमने तो रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की अज़ीयत का भी ख़्याल न किया। गोया अब जन्नत के दूल्हा और मसनदे शहादत के शहनशीन ने ख़ूने रवाँ का सेहरा बांध लिया था और ज़ख़्मों के हार गले में डाल लिए थे और उधर हूराने बहिश्ती फ़िरदौसे बरीं के झरोखों से इस जवानाने जन्नत के सरदार को झाँक रही थीं। हौज़े कौसर ने अपने ठंडे और शीरीं जाम इस तीन रोज़ के प्यासे के लिए तैयार कर रखे थे। अंबिया औलिया और शोहदा की अरवाहे मुक़द्दसा सैय्यदुल-मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे सैय्यदुश्शोहदा के इस्तिक़्बाल के लिए हमा तन तैयार थीं। जन्नतुल-फ़िरदौस की तज़्ईन व आराइश हो रही थी।

बहारों पर हैं आज आराइशें गुल्ज़ारे जन्नत की
सवारी आने वाली है शहीदाने मुहब्बत की

इतने में ख़ौली बिन यज़ीद असबही ने सीन-ए-बेकीना पर एक तीर ऐसा मारा कि क़ल्बे अक़्दस में पैवस्त हो गया। अब राकिबे दोशे पयम्बर को घोड़े पर क़रार दुश्वार हो गया। हाथों से लिजामे फ़र्स छूट गई और इमाम अर्श नशीन सदरज़ीन से फ़र्शे ज़मीन पर गिर गए। शिम्र लईन ने आ़रिज़े मुबारक पर तल्वार मारी उसके बाद बदबख़्त सिनान बिन अनस नख़्ई ने आगे बढ़ कर एक नेज़ा मारा कि तने अक़्दस के पार हो गया।

शम्शीर बकफ़ क़ातिल हो खड़ा और कोई रहे सज्दे में पड़ा
कहती है ज़मीने कर्ब व बला इस शान का सज्दा खेल नहीं

जाँनिसार बहन सैय्यदा ज़ैनब यह क़्यामत खेज़ मंज़र देख कर ख़ेमा से निकल आईं और चिल्लाती हुई दौड़ीं आह! मेरे भाई मेरे सैयद! काश आसमान ज़मीन पर फट पड़ता। उस वक़्त इब्ने सअ़द हज़रत इमाम के पास खड़ा हुआ था। उस से कहने लगीं ऐ अ़मर बिन सअ़द अबू अ़ब्दुल्लाह क़त्ल किए जा रहे हैं और तू देख रहा है? गो इब्ने सअ़द की आँखों पर जाह व हश्मत की हिर्स व तमअ़ ने पर्दे डाल दिए थे फिर भी क़राबत थी सैयदा ज़ैनब की फ़रियाद सुन कर और हालत देख कर बेइख़्तियार रो दिया कि रुख़्सारों पर आँसुओं की लड़ी रवाँ हो गई और फ़र्ते ख़जालत से सैय्यदा ज़ैनब की तरफ़ से मुँह फेर लिया। (तबरी स० 259/6)

शक़ी-ए-अज़ली ख़ौली बिन यज़ीद हज़रत इमाम के सरे अनवर को जसदे अतहर से जुदा करने के लिए बढ़ा। लेकिन हाथ काँप गए थर्रा कर पीछे हट गया। उसके भाई हशल बिन यज़ीद प्लीद ने घोड़े से उतर कर

सरे मुकर्रम को जसदे मुअज़्ज़म से जुदा करके अपने भाई ख़ौली के हवाले किया। बाज़ कहते हैं कि शिम्र लईन कोढ़ी था। उसने सरे मुबारक को काटा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि एक अब्लक़ कुत्ता मेरे अह्ले बैत के ख़ून में मुँह डालता है। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि इस ख़्वाब की ताबीर पचास बरस के बाद ज़ाहिर हुई जब कि शिम्र ज़िल-जौशन अबरस ने हज़रत इमाम का ख़ून बहाया। हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम हज़रत हुसैन के साथ करबला में थे। आपने शिम्र को देख कर फ़रमाया अ़ल्लाह और उसका रसूल सच्चा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मैं एक अब्लक़ कुत्ते को देखता हूँ जो मेरे अह्ले बैत के ख़ून में मुँह डालता है।

सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अ़न्हा दौड़ती हुई अपने प्यारे भाई की तरफ़ बढ़ीं।

अल-क़िस्सा गिरती पड़ती गईं फौज के क़रीं
आया नज़र न फ़ातिमा ज़हरा का महजबीं
घेरे हुए थी चार तरफ़ से सिपाह कीं
चिल्लाईं राह दो मुझे ऐ दुश्मनाने दीं
यह इब्ने फ़ातिमा है मैं ज़हरा की जाई हूँ
दीदार आख़िरी की तमन्ना में आई हूँ
क़ातिल तो उस तरफ़ को सरे पाक ले चला
तड़पा ज़मीन पे याँ बदन शाहे करबला
तबले ज़फ़र बजाने लगे दुश्मने ख़ुदा
गुल पड़ गया शहीद हुआ इब्ने मुर्तज़ा
खेती अ़ली की कट गई बस्ती उजड़ गई
प्रदेस में हुसैन से ज़ैनब बिछड़ गई
नागाह बहन को आया नज़र लाश-ए-इमाम
बग़लों में हाथ डाल के लिपटी वह तिशना काम
रख कर कटे गले पे गला यह किया कलाम
अपनी कही न मेरी सुनी हो गए तमाम
हाए हाए यह मेरे आते ही बेदाद हो गई
तुम हो गए शहीद मैं बर्बाद हो गई

तज़्किरा सिब्त इब्नुल-जौज़ी में है कि आपके जसदे अतहर पर तैंतीस ज़ख़्म नेज़ों के और चालीस ज़ख़्म तल्वार के थे और आपके पैराहन शरीफ़ में एक सौ इक्कीस सूराख़ तीरों के थे।

आसमान था ज़लज़ले में और तलातुम में ज़मीन
इस से आगे क्या हुआ मुझ से कहा जाता नहीं

बेहया बदबख़्तों ने जिस्मे मुबारक के तमाम कपड़े उतार लिए और आपको बरहना कर दिया। चुनांचे आपका जुब्बा ख़िज़्मे अ़सरी का था वह क़ैस बिन मुहम्मद बिन अशअ़स ने तने बेसर से उतार लिया और बहर बिन कअ़ब ने पाइजामा लिया। असवद बिन ख़ालिद ने नअ़्लैन उतार लीं। अ़मर बिन यज़ीद ने अ़मामा मुबारक ले लिया। यज़ीद बिन शिब्ल ने चादर ले ली। सिनान बिन अनस नख़्ई ने ज़रा और अंगूठी उतार ली। बनी नहशल के एक शख़्स ने तल्वार ले ली जो बाद में हबीब बिन बुदैल के खानदान में आ गई। इस क़दर ज़ुल्म व सितम करने के बाद भी संगदिल और ख़ूनी शामियों और कूफ़ियों का जज़्बा-ए-बुग़्ज़ व इनाद ख़त्म न हुआ। बद-बख़्तों ने हज़रत इमाम के जसदे अतहर को घोड़ों की टापों से पामाल करके रेज़ा रेज़ा कर डाला। इस बहीमाना शक़ावत के बाद लुटेरों ने पर्दा नशीनाने अ़फ़्फ़ाफ़ के ख़ेमों में दाख़िल हो कर अह्ले बैत का सारा सामान लूट लिया। (तबरी)

इस शक़ावत व संगदिली पर ज़मीन काँप उठी। अ़र्शे इलाही थर्रा गया। ज़मीन व आसमान ख़ून के आँसू रोए शजर व हजर से नाला व शुयून की सदाएं बुलन्द हुईं। जिन्न व इन्स और मलाइका-ए-आसमानी में सफ़े मातम बिछ गई।

अह्ले बैत पाक से गुस्ताख़ियाँ बे बाकियां
लअ़्नतुल्लाहे अ़लैकुम दुश्मनाने अह्ले बैत

करबला के ब्याबान में ज़ुल्म व जफ़ा की आँधी चली। मुस्तफ़ाई चमन के गुंचा व गुल बादे सुमूम की नज़्र हो गए। अ़ली का घर ताराज हो गया, ज़हरा का लहलहाता बाग़ उजड़ गया। रियाज़े नबवी का गुले सरसब्ज़ मसला गया। इस ग़रीबुल-वतनी में बच्चे यतीम और बीबियाँ बेवा हो गईं और उनको असीर बना लिया गया। यह वाक़िया **10** मुहर्रम **61** हिजरी जुमा के रोज़ हुआ।

हज़रत इमाम पाक की उम्र शरीफ़ इस वक़्त 56 साल 5 माह और 5 दिन की थी। इस सादिक़ जाँबाज़ ने अपने नाना जान के साथ किया हुआ अह्द पूरा किया। दीने हक़ पर क़ायम रह कर अपना कुंबा और अपनी जान राहे ख़ुदा में ऐसी साबित क़दमी के साथ नज़्र की जिसकी मिसाल नहीं मिलती।

हश्र तक छोड़ गए इक दरख़शन्दा मिसाल
हक़ परस्तों को न भूलेगा यह एहसाने हुसैन

शहादत के बाद के वाक़ेआत

करबला में ऑले रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलेही व सल्लम पर वह ज़ुल्मे अज़ीम हुआ था जिस पर ज़मीन व आसमान ख़ून के आँसू रोए और काइनात पर तारीकी छा गई। अ़ल्लामा इमाम इब्ने हजर अ़स्क़लानी, इमाम बैहक़ी, हाफिज़ अबू नईम, अ़ल्लामा इब्ने कसीर, अ़ल्लामा इब्ने हजर मक्की, इमाम सुयूती और शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी जैसे जलीलुल-क़द्र मुहद्देसीन रहमहुमुल्लाह तआ़ला ने अपनी अपनी मोतबर तसानीफ़ में रिवायात नक़्ल फ़रमाई हैं। चुनांचे हज़रत बुसरा अज़्विया रज़ि अल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं :

कि जब हज़रत हुसैन क़त्ल किए गए तो आसमान से ख़ून बरसा सुबह को हमारे मटके घड़े और सारे बर्तन ख़ून से भरे हुए थे।

हज़रत ज़हरी फ़रमाते हैं कि मुझे ख़बर पहुँची।

कि जिस दिन हज़रत हुसैन शहीद किए गए उस दिन बैतुल-मुक़द्दस में जो पत्थर उठाया जाता था उसके नीचे से ताज़ा ख़ून पाया जाता था।

हज़रत उम्मे हिब्बान फ़रमाती हैं :

जिस दिन हज़रत हुसैन शहीद किए गए उस दिन से हम पर तीन रोज़ तक अंधेरा रहा और जिस शख़्स ने मुँह पर ज़ाफ़रान (ग़ाज़ा) मला उसका मुँह जल गया और बैतुल-मुक़द्दस के पत्थरों के नीचे ताज़ा ख़ून पाया गया।

ख़लफ़ बिन ख़लीफ़ा अपने वालिद से रिवायत करते हैं।

कि जब हज़रत इमाम हुसैन शहीद किए गए तो (सूरज को गहन हो गया और) आसमान सियाह हो गया।

और दिन में सितारे नज़र आने लगे और हज़रत हुसैन के क़त्ल पर आसमान सुर्ख़ हो गया और सूरज को गहन हो गया यहाँ तक कि दिन के

वक़्त तारे नज़र आने लगे और लोगों ने गुमान कर लिया कि क़्यामत क़ायम हो गई है और शाम में कोई पत्थर नहीं उठाया जाता था मगर उसके नीचे ताज़ा ख़ून देखा जाता था।

इमाम इब्ने सीरीन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि :

बेशक दुनिया पर तीन रोज़ तक तारीकी छाई रही फिर आसमान पर सुर्ख़ी ज़ाहिर हुई।

बेशक आसमान ने ख़ून बरसाया और उस ख़ून की बारिश की सुर्ख़ी कपड़ों से पुरज़े पुरज़े होने तक न गई।

हज़रत अ़ली बिन मसहर अपनी दादी से रिवायत करते हैं वह फ़रमाती हैं :

कि मैं हज़रत हुसैन की शहादत के अय्याम में जवान लड़की थी पस कई रोज़ तक आसमान उन पर रोया था। (बैहक़ी सिर्रुश्शहादतैन स० 33)

बाज़ मुअर्रेख़ीन ने लिखा है कि सात रोज़ तक आसमान ख़ून के आँसू रोया। उसके असर से दीवारें और इमारतें रंगीन हो गईं और जो कपड़ा उस से रंगीन हुआ उसकी सुर्ख़ी पुरज़े पुरज़े होने तक न गई।

इमाम सुयूती फ़रमाते हैं :

जब हज़रत इमाम हुसैन शहीद किए गए तो सात दिन तक दुनिया तारीक रही। दीवारों पर धूप का रंग ज़ाफ़रानी रहा और सितारे एक दूसरे पर टूट कर गिरते रहे और आपकी शहादत यौमे आशूरा में हुई। उस दिन सूरज को गहन लग गया। छः माह तक बराबर आसमान के किनारे सुर्ख़ रहे फिर वह सुर्ख़ी तो जाती रही मगर उफ़ुक़ की सुर्ख़ी अब तक बराबर मौजूद है जो इस वाक़िया से पहले नहीं देखी जाती थी।

(तारीखुल-ख़ुलफ़ा स० 80, सवाइक़े मुहरेक़ा स० 192)

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी फ़तह मक्किया में फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का आसमान को सुर्ख़ करना और ख़ून की बारिश बरसाना उसके बहुत ज़्यादा नाराज़ और ग़ज़बनाक होने की अ़लामत है क्योंकि जब कोई गुस्सा व ग़ज़ब में आता है तो उसका ख़ून जोश करता है और चेहरा सुर्ख़ हो जाता है अल्लाह तआ़ला बिला शुबह जुमला अ़वारिज़ जिस्मानी से पाक और मुनज़्ज़ह है लेकिन उसने अपनी नाराज़ी और ग़ज़ब का इज़्हार इस तरह किया कि आसमान को सुर्ख़ कर दिया और उस से ख़ून बरसाया और इस अ़लामत को क़्यामत तक के लिए बाक़ी रखा। चुनांचे इमाम इब्ने

सीरीन रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

कि बेशक आसमान पर शफ़क़ के साथ जो सुर्ख़ी होती है वह हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के क़त्ल से पहले नहीं होती थी।

हज़रत इब्ने उययना अपनी दादी से रिवायत करते हैं वह फ़रमाती हैं:

कि हज़रत हुसैन की शहादत के वक़्त वरस (कुसम) राख हो गई और गोश्त ऐसा हो गया कि गोया उसमें आग भरी है।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **354/2**, अबू नईम, सिर्रुश्शहादतैन स० **33**)

जमील बिन मुर्रा से रिवायत है कि :

यज़ीद के लश्करियों ने लश्करे इमाम हुसैन के ऊँट आपकी शहादत के रोज़ पकड़ लिए फिर उनको ज़बह किया और पकाया तो वह अन्दराइन के फल की तरह कड़वे हो गए और उनको कोई न खा सका।

(बैहक़ी, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **354**, सिर्रुश्शहादतैन स० **33**)

ज़मीन में और फलक में रंज व ग़म था शोरे मातम था
ज़मीन रोई फ़लक रोया कि उन दोनों से ख़ूँ बरसा
उठे जब सुबह को तो ख़ून से बर्तन भरे देखे
सभी पुर हो गए उस ख़ून से मटके घड़े उनके
किसी पत्थर को जब बैतुल-मुक़द्दस में उठाते थे
तो उसके नीचे से ताज़ा और बहता ख़ून पाते थे
छुपा सूरज, अंधेरा हो गया यौमे शहादत में
रहा फिर यह अंधेरा तीन दिन शक्ले मुसीबत में
बवक़्ते दोपहर दिन में नज़र आने लगे तारे
बराबर सात दिन तक ख़ून रोए आसमाँ सारे
मला ग़ाज़ा को जिसने मुँह पर उसका मुँह जला सारा
हुआ वरस तो राख और हुआ था गोश्त अंगारा
मकानों के दर व दीवार ख़ूँ से हो गए रंगीन
रंगे कपड़े और उनकी रंगतें धुल कर नहीं बदलीं
यज़ीदी फ़ौज ने जब सैयदों के ऊँट को काटा
तो उस गोश्त मिस्ल अन्दराइन हो गया कड़वा
तमाम आलम में अजमल इस शहादत पर हुआ मातम
सुनी जिन्नात से भी नौहा ख़्वानी दास्ताने ग़म

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं :

मैंने एक रोज़ दोपहर के वक़्त ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम को देखा कि आपके बाल मुबारक बिखरे हुए गर्द आलूद हैं दस्ते मुबारक में ख़ून भरा शीशा है। मैंने अर्ज़ की मेरे माँ बाप आप पर क़ुरबान हों! यह क्या है? फ़रमाया: यह हुसैन और उसके रफ़ीक़ों का ख़ून है मैं उसे आज सुबह से उठाता रहा हूँ। इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि मैंने उस तारीख़ और वक़्त को याद रखा जब ख़बर आई तो मालूम हुआ कि हज़रत हुसैन उसी वक़्त शहीद किए गए थे।

(बैहक़ी, अहमद, हाकिम, मिश्कात स० **572**, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **355/2**)

हुज्जतुल-इस्लाम हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रहमतुललाह अलैह अपनी किताब अहया-उल-उलूम के आख़िर में बाबे मुनाजात में फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु एक रोज़ नींद से बेदार हुए तो कहा : इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। ख़ुदा की क़सम! हुसैन क़त्ल कर दिए गए। लोगों ने तअज्जुब करते हुए कहा कैसे? इब्ने अब्बास ने फ़रमाया कि मैंने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है आपके हाथ में ख़ून से भरा हुआ एक शीशा है और फ़रमा रहे हैं : ऐ इब्ने अब्बास! तुम्हें नहीं मालूम कि मेरी उम्मत ने मेरे बाद क्या काम किया है? मेरे बेटे हुसैन को क़त्ल कर दिया है यह उसका और उसके दोस्तों का ख़ून है जिसको अल्लाह तआला के पास ले के जा रहा हूँ। इस ख़्वाब के चौबीस रोज़ के बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत की ख़बर आई। (अल-बिदायह वन्निहायह स० **30/8**, अहया-उल-उलूम)

हज़रत सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं उम्मुल-मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास आई।

तो वह रो रही थीं मैंने कहा आप क्यों रो रही हैं? फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में रोते हुए देखा है और आपके सरे मुबारक और रेशे अक़्दस पर गर्द व ग़ुबार है। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह क्या हाल है? फ़रमाया: मैं अभी हुसैन की शहादतगाह पर गया था। (अल-मुस्तदरक स० **19/4**, मिश्कात, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **356/2**, अल-बिदायह वन्निहायह स० **200/8**)

जब ग़ज़्व-ए-बदर के कुफ़्फ़ार असीरों के हाथ बाँध कर उनको एक जगह बन्द कर दिया गया था तो उन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रत अब्बास भी थे जो अभी मुसलमान न हुए थे वह बवज्हे असीरी और अह्ल व अयाल की जुदाई के रोते थे। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने उनके रोने की आवाज़ सुनी तो बसबबे क़राबत के इस क़द्र बेचैन हो गए कि आपको रात भर नींद न आई। सुबह होते ही फ़िदिया लेकर छोड़ दिया। उसके बाद वह मुसलमान हो गए। मक़ामे ग़ौर है कि जब हज़रत अ़ब्बास के सिर्फ़ रोने ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सख़्त बेचैन कर दिया और आँखों से ख़्वाबे राहत छीन लिया था तो अपने जिगर पार-ए-हुसैन के मसाइब से क्या हालत हुई होगी।

नीज़ जब वहशी क़ातिले सैय्यदुश्शोहदा हज़रत हम्ज़ा रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ईमान लाया तो आपने इस से फ़रमाया कि तू मेरे सामने न आया कर और न मुझे अपना मुँह दिखाया कर कि यह मुझे नागवार है हालाँकि वह मुसलमान हो गया था और हदीस शरीफ़ में है कि इस्लाम मा क़ब्ल के जुमला गुनाहों और कुफ़्र को मिटा देता है तो ग़ौर करना चाहिए कि जिसके सग़ीरा कबीरा तमाम गुनाह मिट गए थे और कुफ़्र दूर हो गया था उसको देखना ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नागवार है तो जिन्होंने औलादे अक़्दस पर मज़ालिम की इंतिहा कर दी, भूखा, प्यासा ज़ब्ह किया, लाशे मुबारक पर घोड़े दौड़ाए, बेगौर व कफ़न पड़ा रहने दिया और फिर अह्ले बैत को लूटा और मुक़द्दस ख़्वातीन को बेपर्दा ऊँटों पर बिठा के गलियों, बाज़ारों में फिराया उस से रहमते आ़लम के क़ल्बे मुबारक को किस क़द्र रंज व ग़म हुआ होगा और आप किस क़द्र ग़ज़बनाक हुए होंगे।

हक़ीक़त यह है कि इस तरह का अलमनाक सानेहा और जाँकाह हादसा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर किसी नबी की औलाद के साथ पेश नहीं आया। फिर अगर ज़मीन व आसमान ख़ून के आँसू रोएं और जिन्न व इन्स तड़प उठें और जहाँ तीरह व तार हो जाए तो कौन सी तअ़ज्जुब की बात है।

चुनांचे उम्मुल-मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि :

मैंने जिन्नों को हज़रत हुसैन पर रोते और नौहा करते हुए सुना है वह कहते थे :

ऐ हुसैन के नादान क़ातिलो! तुम्हारे लिए सख़्त इबरतनाक अ़ज़ाब की बशारत है।

तमाम अह्ले आसमान (मलाइका) तुम पर बद-दुआएं करते हैं और सब नबी व मुरसल वग़ैरह भी।

बेशक लानत किए गए हो तुम (हज़रत) दाऊद व मूसा और साहिबे इंजील यानी ईसा (अलैहिस्सलाम) की ज़ुबानों पर। (सवाइक़े मुहरिक़ा स० **191**, अल-बिदायह वन्निहायह स० **201/8**)

नीज़ इन्हीं से रिवायत है कि या तो मैंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात पर जिन्नों को नौहा करते हुए सुना था या हज़रत हुसैन की शहादत के मौक़ा पर सुना।

ऐतराज़ : अश्अ़तुल्लम्आ़त में है कि हज़रत उम्मे सलमा ने **59** हिजरी में वफ़ात पाई और यही सही तर है। और वाक़िया करबला **10** मुहर्रम **61** हिजरी में हुआ। साबित हुआ कि हज़रत उम्मे सलमा के मुतअ़ल्लिक़ रिवायात कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा और जिन्नों के नौहे वग़ैरह सुने, ग़लत है क्योंकि उस वक़्त ज़िंदा ही न थीं।

जवाब : अश्अ़तुल्लम्आ़त में यह भी तो है कि बाज़ कहते हैं कि उनकी वफ़ात **62** हिजरी में हुई है और साहिबे अश्अ़तुल्लम्आ़त हज़रत शैख़ अ़ब्दुल-हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अ़लैह ने अपनी दूसरी मशहूर तस्नीफ़ मदारिजुन्नुबुव्वत में इसी दूसरे क़ौल की ताईद फ़रमाई है चुनांचे फ़रमाते हैं :

और लेकिन दूसरे क़ौल की ताईद तिर्मिज़ी शरीफ़ की इस हदीस से होती है हज़रत सलमा अंसारिया फ़रमाती हैं कि मैं हज़रत उम्मे सलमा की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो मैंने उनको रोते हुए देख कर पूछा कि आपको किस चीज़ ने रुलाया? फरमाया मैंने अभी रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा है कि आपके सरे मुबारक व दाढ़ी शरीफ़ पर ख़ाक पड़ी हुई है और आप रो रहे हैं यह देख कर मैंने अ़र्ज़ किया : या रसूलुल्लाह! आपको क्या हुआ? फ़रमाया : मैं हुसैन के (मक़ाम) क़त्ल पर गया था जो वाक़े हो चुका है। इस हदीस से ज़ाहिर होता है कि हज़रत उम्मे सलमा इमाम हुसैन के क़त्ल के वक़्त ज़िन्दा थीं और यह भी कहते हैं कि जब उनको हज़रत हुसैन के क़त्ल की ख़बर मिली तो उन्होंने इन इराक़ियों पर लानत फ़रमाई जिन्होंने हज़रत हुसैन को क़त्ल किया था।

अल्हम्दुलिल्लाह! ख़ुद हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ रहमतुल्लाह अ़लैह से यह साबित हो गया कि उनके नज़्दीक भी सहीह यही है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु की शहादत के वक़्त ज़िन्दा थीं।

59 हिजरी में वफ़ात हुई यह वाक़ेदी का क़ौल है जो सही नहीं। सही यह है कि हज़रत उम्मुल-मुमिनीन की वफ़ात 63 हिजरी में हुई है जैसा कि सही रिवायात से साबित है चुनांचे अ़ल्लामा इब्ने कसीर फ़रमाते हैं।

वाक़ेदी ने कहा है कि हज़रत उम्मे सलमा ने 59 हिजरी में वफ़ात पाई और अबू हुरैरह ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इब्ने अबी ख़सीमा कहते हैं कि यज़ीद बिन मुआविया की हुकूमत के अय्याम में उनकी वफ़ात हुई। मैं कहता हूँ कि वह अहादीस जो ज़िक्रे शहादते हुसैन में ब्यान हुई हैं वह सब इस बात पर दलालत करती हैं कि वह हज़रत हुसैन की शहादत के बाद तक ज़िन्दा हैं वल्लाहु आलम व रज़ि अल्लाहु अ़न्हा।

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं :

यज़ीद के अय्यामे हुकूमत में जिन नामवरों ने वफ़ात पाई अलावा उनके जो हज़रत हुसैन के साथ शहीद हुए और हज़रत उम्मुल-मुमिनीन उम्मे सलमा ने वफ़ात पाई वाक़िया हुर्रा में (आगे उन नामवरों के नाम लिखे हैं) और वाक़िया हुर्रा 63 हिजरी में हुआ है।

अ़ल्लामा शिब्ली नौमानी फ़रमाते हैं :

इस इख़्तिलाफ़े रिवायत की हालत में सन्ने वफ़ात का तअैयुन मुश्किल है ताहम यह यक़ीनी है कि वाक़िया हुर्रा तक ज़िंदा थीं। मुस्लिम में है कि हारिस बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ और अब्दुल्लाह बिन सफ़वान उम्मे सलमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उस लश्कर का हाल पूछा जो ज़मीन में धंस जाएगा यह सवाल उस वक़्त किया गया था जब यज़ीद ने मुस्लिम बिन उक़्बा को लश्करे शाम के साथ मदीना की तरफ़ भेजा था और वाक़िया हुर्रा पेश आया था। वाक़िया हुर्रा 63 हिजरी में पेश आया है। इसलिए इस से पहले उनकी वफ़ात की तमाम रिवायतें सही नहीं। (सीरतुन्नबी स० 412/2)

चुनांचे सही मुस्लिम शरीफ़ की वह रिवायत यह है कि हज़रत उबैदुल्लाह बिन क़ब्तीया फ़रमाते हैं :

कि हारिस बिन अबी रबीआ़ और अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़वान और मैं भी उनके साथ था उम्मुल-मुमिनीन उम्मे सलमा की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो (हारिस और सफ़वान) दोनों ने उम्मुल-मुमिनीन से उस लश्कर के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जो ज़मीन में धंस जाएगा और यह सवाल अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के अय्यामे (ख़िलाफ़त) में उस वक़्त किया गया (जबकि लोग यज़ीद से

मुंहरिफ़ हो कर इब्ने ज़ुबैर के हाथ पर बैअ़त कर चुके थे और यज़ीद ने एक लश्कर उनकी तबाही के लिए मदीना मुनव्वरा भेजा था)

(बक़्दरुज़्ज़रूरह मुस्लिम शरीफ़ स० 388/2)

हज़रत हबीब इब्ने साबित फ़रमाते हैं : मैने हज़रत हुसैन पर जिन्नों को रोते और कहते हुए सुना।

इस जबीन को नबी ने चूमा था
थी चमक क्या ही उसके चेहरे पर
उसके माँ बाप बरतरीने क़ुरैश
उसका नाना जहान से बेहतर

(अबू नईम, सिरुश्शहादतैन स० 34, अल-बिदायह वन्निहायह स० 200/8)

यानी पहले तो यह लोग इस (इमाम) की तरफ़ वफ़ूद लेकर गए तो वह कितने बदतरीन वफ़ूद थे। फिर उन्होंने अपने नबी के नवासे को क़त्ल किया और उसके सबब उनका ठिकाना जहन्नम हुआ।

(अल-बिदायह स० 200/8)

हज़रत अहमद बिन मुहम्मद अल-मस्क़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु अपने बाप से रिवायत फ़रमाते हैं कि जब हज़रत इमाम हुसैन बिन अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु शहीद हुए तो उन्होंने रात के वक़्त एक निदा करने वाले की निदा को सुना जिसकी सूरत को उन्होंने नहीं देखो उस मुनादी ने कहा।

क़ौमे समूद ने (हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की) ऊंटनी की कूंचें काटीं पस उनकी जड़ें कट गईं और सआ़दतों से महरूम हो गए।

और अल्लाह तआ़ला ने हुर्मते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हुर्मते नाक़ा सालेह अ़लैहिस्सलाम से आज़म व बुज़ुर्ग तर बनाया है।

फिर तअ़ज्जुब है कि वह ऐसे ज़ुल्म के मुर्तकिब हुए और मस्ख़ न हुए क़ातेलीन नाक़तुल्लाह की तरह। हाँ अल्लाह मोहलत देता है बाग़ियों मुंकिरों को।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 306/6)

जब हज़रत इमाम ने शहादत पाई तो एक कव्वा आया उसने अपनी चोंच आपके ख़ून मुबारक में डुबोई और उड़ा यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरह पहुँच कर हज़रत इमाम की बेटी सैयदा फ़ातिमा सुग़रा के घर की दीवार पर जा बैठा और कहने लगा **इन्नल-हुसैन यक़्तुलु बेकरबला।** सैयदा ने सर उठा कर उसको देखा और रोते हुए कहा :

आवाज़ दी कव्वे ने तो मैंने कहा ऐ कव्वे तुझ पर अफसोस तू क्या ख़बर दे रहा है।

उसने कहा हज़रत इमाम की। मैंने कहा कौन इमाम? उसने कहा वह जो तौफ़ीक़ दिए गए हक़ व सदाक़त की।

मैंने कहा हज़रत हुसैन? तो उसने मग़्मूम आवाज़ में कहा हाँ।

बेशक हज़रत हुसैन करबला में रेत और टीलों के दरम्यान पड़े हैं।

मैं हुसैन पर रोता हूँ ऐसे ग़म के साथ जो अल्लाह को राज़ी रखे मआ हुसूले सवाब के।

फिर उसके बाज़ू ऐसे जम गए कि उसको जवाब देने की ताक़त न रही।

फिर रोई मैं उन मुसीबतों की वजह से जो पसन्दीदा और मक़्बूल हज़रत के बाद मुझ पर नाज़िल हुईं। (दुर्रुल-अस्दाफ़, नूरुल-अब्सार स० २०६)

अल्लाह अल्लाह! इंक़िलाबे ज़माना का कैसा अ़जीब और कितना इबरतनाक मंज़र है! एक वक़्त वह था जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़ारों जाँनिसारों के साथ फ़ातिहाना शान से मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए थे। उस वक़्त दुश्मनाने दीन की सारी कुव्वतें पाश पाश हो चुकी थीं। रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दामन अ़फ़्व व करम के अ़लावा उनके लिए कोई जाए पनाह बाक़ी न रही थी। इस्लाम और मुसलमानों के सबसे बड़े दुश्मन अबू सुफ़ियान को जिनकी सारी ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और मुसलमानों की सख़्त दुश्मनी और अ़दावत में गुज़री थी। जब इंतिहाई बेबस व लाचार हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दरबार में हाज़िर किया गया तो रहमतुल-लिल-आ़लमीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस मुज्रिम से जिसके जराइम की फ़ेहरिस्त बहुत तवील थी जो रहमत व करम और शफ़क़त व इनायत का सुलूक किया वह तारीख़ के सफ़हात पर ज़र्रीं नक़्श है। कोई सज़ा तज्वीज़ नहीं फ़रमाई बल्कि फ़रमाया **मन दख़ला दारा अबी सुफ़ियान फ़हुवा आमना।** जो शख़्स अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाए उसकी जान व माल महफ़ूज़ है। सुब्हानल्लाह! न सिर्फ़ अबू सुफ़ियान की जान बख़्शी फ़रमाई बल्कि उसके घर को जिसमें हमेशा मुसलमानों के ख़िलाफ़ मंसूबे बनते रहे थे दारुल-अमन बना कर अपनी शान व रहमत का मुज़ाहरा फ़रमाया था अब उसी सुफ़ियान की

जुर्रियत ने इसी रहमतुल-लिल-आ़लमीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की औलाद के साथ वह ज़ालिमाना सुलूक किया था जिस पर ज़मीन व आसमान और जिन्न व इन्स ख़ून के आँसू रोए। चुनांचे हज़रत शैख़ नसरुल्लाह बिन यहया जो सेक़ाते मोतबेरीन में से हैं फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया ऐ अमीरुल-मुमिनीन आपने तो फ़त्हे मक्का के रोज़ फ़रमाया था कि जो शख़्स अबू सुफ़ियान के घर में दाख़िल हो जाएगा वह अमन में है अब सुफ़ियानियों ने आपके बेटे हुसैन के साथ करबला में ऐसा बुरा सुलूक किया है कि जो किसी ने नहीं किया होगा। आपने फ़रमाया क्या तू इब्ने सैफ़ी के वह अश्आ़र जानता है जो उसने इस मुआ़मले में कहे हैं? मैंने अ़र्ज़ किया नहीं! फ़रमायाः उसके पास जा कर उस से वह अश्आ़र सुन मैं बड़ी हैरानी के साथ बेदार हुआ और फिर उसके दरवाज़ा पर पहुँच कर आवाज़ दी। वह बाहर निकला और मैंने उसको अपना ख़्वाब सुनाया तो वह सुनकर इतना रोया कि उसकी हिचकी बंध गई और कहने लगा ख़ुदा की क़सम! यह अश्आ़र मैंने आज रात ही कहे हैं और अभी तक उनको मुझ से किसी ने नहीं सुना वह अशआ़र यह हैं :

तरजमा : जब हम मालिक और बाइख़्तियार थे तो मुआ़फ़ कर देना ही हमारा तरीक़ा व शेवा रहा और जब तुम मालिक व बाइख़्तियार हुए तो तुमने ख़ून की नदियाँ बहा दीं।

तुमने क़ैदियों का क़त्ल हलाल जाना और अक्सर हम जो गुज़रे क़ैदियों पर तो हम मुआ़फ़ करते और दर गुज़र करते रहे।

हमारे और तुम्हारे दरम्यान यह तफ़ावुत काफ़ी है और बेशक हर बर्तन से वही टपकता है जो उसमें होता है। (नूरुल-अबसार स० 146)

हज़रत आमिर बिन सअ़द बिजली फ़रमाते हैं कि मैंने इमाम की शहादत के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा। आपने फ़रमाया : ऐ आमिर! हज़रत बरा बिन आ़ज़िब (सहाबी) के पास जा और उनको मेरा सलाम कह और ख़बर दे कि जिन लोगों ने हज़रत हुसैन को क़त्ल किया है वह दोज़ख़ी हैं। पस मैंने बरा बिन आ़ज़िब की ख़िदमत में हाज़िर हो कर यह ख़्वाब सुनाया तो उन्होंने फ़रमाया : बेशक अल्लाह और उसके रसूल ने सच फ़रमाया।

अ़ल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

हुसैन का क़ातिल आग के ताबूत में है उस पर आधे जहन्नमियों के बराबर अ़ज़ाब है। (नूरुल-अबसार स० 152, अस्आ़फ़ुर्राग़ेबीन स० 210)

अ़ल्लामा इमाम हाफ़िज़ इब्ने हजरत अस्क़लानी हज़रत सालेह शेहाम से रिवायत फ़रमाते हैं कि मैंने हल्ब में ख़्वाब देखा कि एक काला कुत्ता प्यास के मारे ज़ुबान निकालता है मैंने इरादा किया कि इसको पानी पिलाऊँ तो हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी ख़बरदार उसको पानी न पिला। यह हुसैन का क़ातिल है। इसकी यही सज़ा है कि यह क़्यामत तक यूँ ही प्यासा रहे। (तस्वीदुल-क़ौस फ़ी तल्ख़ीस मसनदुल-फ़िरदौस)

शामे करबला :

इब्ने सअ़द ने अपने मुर्दों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और उनको दफ़न किया लेकिन हज़रत इमाम और आपके रुफ़क़ा जिनकी तादाद बहत्तर थी और उनमें बीस खानदाने बनी हाशिम के चश्म व चराग़ थे उन सब शहीदों को बेगौर व कफ़न पड़ा रहने दिया और उनके सरों को इब्ने ज़्याद के पास भेज दिया। तेरह सर बनू कुंदा के पास थे और उनका सरदार क़ैस इब्ने अशअ़स था। बीस सर बनू हवाज़िन के पास थे और उनके साथ शिम्र ज़िल-जौशन था। सत्तरह सर बनू तमीम और सोलह सर बनू असद और सात बनू मुज़हज के पास थे। (इब्ने असीर)

करबला के मैदान में शाम हो गई थी। ज़ुल्म व जफ़ा का लश्कर मुंतशिर टोलियों की सूरत में इधर उधर अपने तआ़म वग़ैरह में मश्ग़ूल था। वह बदबख़्त एक दूसरे को दादे शुजाअ़त दे रहे थे अपने ज़ुल्म पर खुश हो रहे थे और इध र अह्ले बैते नुबूव्वत के बक़िया अफ़राद जो चन्द औरतों शीर ख़्वार बच्चों और एक बीमार हज़रत अ़ली औसत ज़ैनुल-आ़बेदीन पर मुश्तमिल थे। रज़ाए इलाही पर साबिर व शाकिर गिरिया व ज़ारी कर रहे थे।

राहे तस्लीम व रज़ा में अह्ले बैते मुस्तफ़ा
सब्र का करते थे बाहम इम्तिहान बैठे हुए

ज़रा फ़ितरत के तक़ाज़ों के पेशे नज़र अंदाज़ा कीजिए कि उन सोगवारों की क्या हालत होगी जिनकी आँखों के सामने भरे हुए ख़ेमे ख़ाली हो गए। उनके अ़ज़ीज़ क़त्ल किए गए। ख़ेमे जलाए गए। साज़ व सामान

लूट लिया गया। मुक़द्दस लाशें बेगौर व कफ़न पड़ी थीं और खुद दुश्मन की क़ैद में थे। यह कैसे इज़्ज़ व शान और फ़ज़्ल और मरतबे वाले लोग हैं। उनके घराने की अ़ज़्मत का यह हाल है कि जिब्रीले अमीन भी उनके घर में दाख़िल होने से पहले इजाज़त का तालिब होता है। यह वह लोग हैं जिनकी मुहब्बत व ख़ुशी ख़ुदा व रसूल की मुहब्बत व ख़ुशी और उनकी अज़ीयत व नाराज़ी ख़ुदा व रसूल की अज़ीयत व नाराज़ी का मूजिब है। यही वह घराना है जिस से उम्मत को दीन, ईमान और क़ुरआन मिला है। जिन पर सलाम कहना हर नमाज़ में ज़रूरी है। हर ख़तीब जुमा के ख़ुतबे में उनके नाम लेता है। यह वह लोग हैं जिनका वास्ता व वसीला इजाबते दुआ़ के लिए ज़मानत है। यह चमने रिसालत लहलहाते हुए फूल और कलियाँ हैं उनकी पाकीज़गी और अ़ज़्मत का ज़िक्र क़ुरआन में खुद खुदा तआ़ला ने फ़रमाया। आज करबला के मैदान में उन पर ग़म की शाम का बसेरा है। यह शाम कैसी अंदोहनाक शाम है ऑले रसूल के ख़ून से रंगीन। यह ऐसे दिन की शाम है जो शायद फिर कभी इस तरह तुलूअ़ न होगा। यह शाम इस्लाम ही की नहीं इंसानियत की तारीख़ में भी रहती दुनिया तक वह शाम कहलाएगी जो ज़ुल्म व जफ़ा और सब्र व रज़ा की दोनों मिसालों की याद दिलाती रहेगी। यज़ीदीयत की तारीकी में हुसैनियत का उजाला करने वाली यह शाम सफ़्ह-ए-दहर पर कभी न मिटने वाला वह नक़्श और ऐसी साअत है जो सदियों तक देखती आंखों और सुनते कानों के लिए हक़ व बातिल और अंधेरे और उजाले में फ़र्क़ करती रहेगी। यह शाम एक तरफ़ इंसान नुमा दरिन्दों की ख़बासत व ज़िल्लत और शैतनीयत की पहचान करवाती है, जौर व जफ़ा और ज़ुल्म व सितम की बदतरीन सियाहियों से अशरफ़ुल-मख़्लूक़ात इंसान को शर्मिन्दा करती है और दूसरी तरफ़ यह शाम ख़ानवाद-ए-रसूल की मज़्लूमियत के साथ उनकी अ़ज़्मत व मर्तिबत, उनके अ़फ़्व व अ़ता, जूद व सख़ा, ईसार व वफ़ा, सब्र व रज़ा और अ़ज़्म व इस्तिक़्लाल और इस्तिक़ामत जैसे मुअ़त्तर, मुतह्हर और मुनव्वर महासिन से इंसानियत को हमेशा सर बुलन्द करती रहेगी क्योंकि नामे हुसैन अ़ज़्मतों, रिफ़अ़तों, रहमतों और बरकतों का अमीन है और करबला की धुंध लाती शाम में यही नामे हुसैन जगमगा रहा है और क़्यामत तक जगमगाता रहेगा। शामे करबला ऑले रसूल की हक़्क़ानियत, ईमान, इस्लाम, हक़ व सदाक़त, जुरअ़त व शुजाअ़त, इज़्ज़त व मर्तिबत अ़ज़ीमत व इस्तिक़ामत,

अमन व हुर्रियत और सियादत व सआदत का बाक़ी रहने वाला उनवान है। रात हो गई यह रात उन ग़मज़दा मज़्लूम परस मुन्दगान इमाम के लिए क़यामत की रात थी। रात का दूसरा पहर शुरू हुआ, यज़ीद के लश्करी ऊँघने लगे। असीराने करबला की क़ाफ़िला सालार सैयदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा अपने अज़ीज़ों की मुक़द्दस लाशों के पास आईं और इंतिहाई दर्दमन्दाना अंदाज़ में अपने जज़्बात और अपनी बेबसी का इज़्हार किया। जब अपने माँ जाए प्यारे भाई हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की कटी फटी और कुचली हुई मुक़द्दस लाश के पास आईं तो ख़ुद पर काबू न रख सकीं। अपने भाई के सीने पर मुँह रख कर इस दर्द से रोईं कि सबकी हिचकियाँ बंध गईं, सैयदा फ़रमा रही थीं।

सर मेरे कोई दोस न देसवें बहन तेरी मज्बूर ऐ
कथूं लिया वाँ कफ़न में तेरा ऐथों शहर मदीना दूर ऐ
तुम सा कोई ग़रीब नहीं ख़स्ता तन नहीं
शहादत के बाद गौर नहीं और कफ़न नहीं
हाए हाए पराई बस्ती है अपना वतन नहीं
वाक़िफ़ यहाँ किसी से यह बेकस बहन नहीं
लाकर कफ़न पहनाती मैं मज़्लूम भाई को
होता अगर वतन तो मैं दफ़्नाती भाई को

इन दरिन्दों ने ख़ानवाद-ए-नुबुव्वत के आख़िरी चश्म व चराग़ हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन अ़ली औसत रज़ि अल्लाहु अन्हु को भी जो बीमार थे क़त्ल करना चाहा लेकिन एक शख़्स हमीद बिन मुस्लिम के दिल में अल्लाह तआ़ला ने रहम डाल दिया उसने उन दरिन्दों को यह कह कर रोक दिया कि यह कमसिन बच्चा है और बीमार है। इसको क़त्ल न करो। अभी हमीद सिपाहियों को यह कह ही रहा था कि इब्ने सअ़द भी आ गया। उसने कहा ख़बरदार कोई शख़्स उन लोगों के ख़ेमों में न जाए और न ही कोई इस बीमार लड़के से मज़ाहिम हो और जिस किसी ने उनके माल व असबाब वग़ैरह में से जो कुछ लूटा है वापस कर दे। उसके कहने पर सिपाहियों ने बीमार आ़बिद से तो हाथ रोक लिया लेकिन लूटा हुआ माल किसी ने वापस न किया। (तबरी स० **260/6**, इब्ने असीर स० **32/4**)

यज़ीदी तो सो गए कुछ पहरेदार जागते रहे मगर अह्ले बैते नुबुव्वत के

बक़िया अफ़राद की आँखों में नींद नहीं, सदमे और ग़म के आँसू थे। यह कैसे सब्र वाले लोग थे उनकी ज़ुबानों पर हरफ़े शिकायत नहीं उनकी जबीनें शिकन आलूद नहीं। उन्होंने वावेला नहीं किया। गरीबान नहीं फाड़े। क़ज़ाए इलाही पर सब्र किया क्योंकि यही उनके नाना जान की तालीम थी और यही इमाम पाक की वसीयत थी। यज़ीदी समझ रहे थे कि क़त्ले हुसैन से वह कामयाब हो गए हैं लेकिन इमाम पाक ने मैदाने करबला में फ़त्ह व शिकस्त के उनवान ही बदल दिए थे और तारीख़ के सफ़हात पर यह नक़्श कर दिया था कि हक़ पर साबित क़दम रहते हुए सब कुछ कुरबान कर देना और अपनी जान दे देना शिकस्त नहीं बल्कि अज़ीमुश्शान फत्ह व कामयाबी है। उन्होंने ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर इज़्ज़त की मौत को तरजीह दी और अ़ज़ीमत व इस्तिक़ामत की वह मिसाल क़ाइम की जो रहती दुनिया तक एक बामक़्सद और ज़िन्दा यादगार और आने वाली नसलों के लिए क़ाबिले तक़्लीद है। उन्होंने अपने मुक़द्दस ख़ून से गुलशने इस्लाम की आबयारी की। इस्लाम की हक़ व सदाक़त की गवाही दी और दीन को उसकी असल पर बाक़ी रखा हर इम्तिहान में पूरे उतरे। खुद तो न रहे मगर अपनी वह यादें छोड़ गए जो ताबिन्दा व पाइंदा रहेंगी।

कूफ़ा रवानगी :

सुबह के वक़्त अह्ले बैते नुबुव्वत के यह सितम रसीदा अफ़राद बहालते असीरी जब लश्करे यज़ीद के साथ कूफ़ा की जानिब चले तो इमाम पाक की बीवियों, बेटियों और बहनों के सामने बेगौर व कफ़न उनके प्यारों की मुक़द्दस लाशें थीं। वह सब एक एक लाश के क़रीब जा कर अल-विदाअ़ कह रही थीं। उनके रोने में इतना दर्द था कि कलेजे फटे जाते थे, हश्र बरपा हो गया था। सैयदा ज़ैनब ने इंतिहाई दर्द व कर्ब के साथ रोते हुए कहा :

या मुहम्मदाह! या मुहम्मदाह! आप पर अल्लाह और मलाइका आसमानी का दुरूद व सलाम हो। देखिए यह हुसैन चटियल मैदान में आज़ा बरीदा ख़ाक व ख़ून में आलूदा पड़े हैं या मुहम्मदाह! आपकी लड़कियाँ क़ैद में हैं आपकी औलाद मक़्तूल पड़ी हुई हैं। हवा उन पर ख़ाक उड़ा रही है। यह दिलदोज़ फरियाद सुन कर दोस्त दुश्मन सब रो दिए।

शोहदा की तदफ़ीन :

जब लश्करे यज़ीद करबला से कुछ दूर चला गया तो शहादत के दूसरे और बक़ौल बाज़ तीसरे रोज़ क़बील-ए-बनू असद जो क़रिय-ए-ग़ाज़रिया कि

किनार-ए-फुरात पर वाक़े था के लोग आए और उन्होंने इमाम आली मक़ाम के तने बेसर को एक जगह और बाक़ी शोहदा को जिनकी तादाद बहत्तर थी एक जगह दफ़न किया। (इब्ने असीर स० 33/4, तबरी 261/2)

सरे अनवर पुर-नूर और सफ़ेद परिन्दे :

अह्ले बैते नुबुव्वत के लुटे हुए क़ाफ़िला के बक़िया अफ़राद 11 मुहर्रम को कूफ़ा पहुँचे जबकि शोहदा के सर उन से पहले पहुँच चुके थे। इमाम आली मक़ाम का सरे अनवर ख़ौली बिन यज़ीद के पास था। यह रात के वक़्त कूफ़ा पहुँचा। क़सरे अमारत का दरवाज़ा बन्द हो चुका था। यह सर को लेकर अपने घर आ गया। ज़ालिम ने सरे अनवर को फ़र्श पर एक बड़े बर्तन के नीचे ढाँक कर रख दिया और अपनी बीवी "नवार" के पास जा कर कहा : मैं तुम्हारे लिए ज़माने भर की दौलत लाया हूँ। वह देख हुसैन बिन अ़ली का सर तेरे घर में पड़ा है। उसने कहा तुझ पर ख़ुदा की मार! लोग तो सोना चाँदी लाएं और तू फ़रज़न्दे रसूल का सर लाया है। ख़ुदा की क़सम! अब मैं तेरे साथ कभी न रहूँगी। नवार यह कह कर अपने बिछौने से उठी और जहाँ सरे अनवर रखा था वहाँ आ कर बैठ गई।

वह कहती है: ख़ुदा की क़सम! मैंने देखा कि एक नूर बराबर आसमान से उस बर्तन तक मिस्ल सुतून चमक रहा था और मैंने देखा कि सफ़ेद सफ़ेद परिन्दे उसके इर्द गिर्द मंडला रहे थे। जब सुबह हुई तो वह सर को इब्ने ज़्याद के पास ले गया। (असीर स० 33/4)

सरे अनवर और इब्ने ज़्याद :

अल-ग़रज़ इब्ने ज़्याद बद निहाद का दरबार लगा और लोगों के लिए इज़्ने आ़म हुआ। भरे दरबार में उसके सामने इमाम आ़ली मक़ाम का सरे अनवर एक तश्त में रख कर पेश किया गया। उस ज़ालिम के हाथ में एक छड़ी थी जिसे वह आहिस्ता आहिस्ता आपके लबों और दाँतों पर मारता था और कहता था कि मैंने ऐसा हसीन व जमील नहीं देखा। उस मरदूद की गुस्ताख़ी और बेअदबी पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बूढ़े सहाबी ज़ैद बिन अरक़म जो उस वक़्त वहाँ मौजूद थे तड़प उठे और दर्द व कर्ब के साथ रोते हुए फ़रमाया ओ इब्ने मरजाना! यह लकड़ी इमाम पाक के लबहाए मुबारक और दन्दान शरीफ़ से हटा। उस ख़ुदा की क़सम! जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बेशक मैंने अपनी आँखों से देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इन्हीं लबों और दाँतों को चूमा करते थे। यह कह

कर वह ज़ार व क़तार रोने लगे। इब्ने ज़्याद ने कहा: ख़ुदा तुझे बहुत रुलाए अगर तू बूढ़ा न होता और तेरी अ़क़्ल ज़ाइल न हो गई होती तो मैं ज़रूर तेरी गर्दन से तेरा सर जुदा कर देता। हज़रत ज़ैद ने फरमाया : मैं इस से भी ज़्यादा तुझे गुस्सा दिलाने वाली बात सुनाता हूँ, सुन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा कि आपके दाएं ज़ानो पर हसन और बाएं ज़ानो पर हुसैन थे आप उन दोनों के सरों पर हाथ फेरते थे और फ़रमाते थे ऐ अल्लाह! मैं इन दोनों को तेरे मुमिनीन सालेहीन के पास बतौर अमानत सिपुर्द करता हूँ। तो ऐ बदनिहाद तूने अमानते रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ यह कैसा सुलूक किया है। फिर आपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया: ऐ कूफ़ियो! ख़ुदा तुम से कभी ख़ुश न हो! तुमने फ़रज़न्दे रसूलुल्लाह को क़त्ल किया और इब्ने मरजाना को अपने ऊपर मुसल्लत किया। अब यह तुम्हारे अच्छों को मारेगा और तुम्हारे बुरों को छोड़ेगा। यह कह कर हज़रत ज़ैद रोते हुए बाहर निकल गए। (तबरी स० 362/6, इब्ने असीर स० 33/4, अल-बिदाया स० 190/8, इब्ने अबी अद्दुनिया। सवाइक़े मुहरिक़ा : 196)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत हुसैन का सरे अनवर एक तश्त में रख कर इब्ने ज़्याद के सामने लाया गया तो उस वक़्त मैं उसके पास था तो उसने आपके हुस्न व जमाल में कुछ कलाम किया। उसके हाथ में एक छड़ी थी जिसको वह आपकी नाक पर मारता था।

तो हज़रत अनस ने फ़रमाया कि हुसैन बहुत ज़्यादा मुशाबेह थे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ और आपने वसमा का ख़िज़ाब किया हुआ था। (तिर्मिज़ी बाब मनाक़िबुल-हसनैन, बुख़ारी शरीफ़ स० 530/1)

रिवायत है कि जिस वक़्त इमाम आ़ली मक़ाम का सरे अनवर इब्ने ज़्याद बद-निहाद के सामने रखा गया तो क़ातिल ने बड़े फ़ख़्र के साथ कहा :

मेरे ऊँटों को सोने और चाँदी से भर दो क्योंकि मैंने एक नाम वर बुलन्द मरतबा सरदार को क़त्ल किया है। मैंने उसको क़त्ल किया है जो बलिहाज़ मादर पिदर और हसब व नसब सब लोगों से बेहतर था।

इब्ने ज़्याद यह सुन कर ग़ज़बनाक हुआ और कहने लगा : अगर तेरे नज़्दीक वह ऐसे ही फ़ज़ाइल वाले थे तो फिर तूने उनको क़त्ल क्यों किया? ख़ुदा की क़सम! तेरे लिए उसका बेतहर सिला मेरी तरफ़ से यही है

कि तुझे भी इन्हीं के पास पहुँचा दूँ। फिर उसकी गर्दन मार दी।

(अस्सवाइकुल-मुहरिक़ा स० **195**, सआदतुल-कौनैन, स० **117**, नूरुल-अब्सार स० **144**)

इब्ने ज़्याद और असीराने करबला :

फिर अह्ले बैत के बक़िया अफ़राद इब्ने ज़्याद के सामने पेश किए गए। हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अ़न्हा ने कनीज़ों का सा पुराना और मैला सा लिबास पहन कर अपनी हैयत बदल दी थी। आपके इर्द गिर्द चन्द औरतें थीं। इब्ने ज़्याद बद निहाद ने पूछाः यह कौन है? आपने कोई जवाब न दिया। उसने दूसरी तीसरी बार पूछा फिर भी आपने कोई जवाब न दिया तो एक औरत ने कहा कि यह ज़ैनब बिन्ते फ़ातिमा हैं। यह सुन कर मरदूद ने कहा :

खुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें रुसवा किया और तुम्हारी जिद्दतों को झुठलाया (मआज़ल्लाह)

शेरे खुदा की बेटी ने फ़रमाया :

खुदा का शुक्र है कि जिसने हमें बवज्हे (औलाद) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम होने के) मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म बनाया और हमें पाक किया जैसा कि हक़ है। पाक करने का न कि जैसा तू कहता है बिलाशुबह फ़ासिक़ व फ़ाजिर ही रुसवा होंगे। और झुठलाए जाएंगे।

ज़ालिम कहने लगा तुमने देखा खुदा ने तुम्हारे अह्ले बैत के साथ कैसा सुलूक किया है? सैयदा ने फ़रमायाः उनके लिए शहादत मुक़द्दर हो चुकी थी इसलिए वह मक़्तल में आए और अ़क़रीब वह और तुम अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर जमा होंगे उस वक़्त वह उसके सामने इसका इंसाफ़ तलब करेंगे। यह दन्दान शिकन जवाब सुन कर इब्ने ज़्याद ग़ज़बनाक हो कर कहने लगा : खुदा ने तुम्हारे अह्ले बैत के सरकश और नाफ़रमान आदमी से मेरे गुस्सा को ठंडा कर दिया। ज़ालिम के इन अल्फ़ाज़ ने सैयदा को तड़पा दिया वह इंतिहाई दर्द के साथ रोईं और फ़रमायाः मेरी उम्र की क़सम! तूने मेरे अधेड़ों को क़त्ल किया। मेरे खानदान को तबाह किया। मेरी शाख़ों को काटा और मेरी जड़ को उखाड़ा। अगर उसी से तेरी तस्कीन और तेरा दिल ठंडा होना था तो बेशक हो गया। ज़ालिम कहने लगा यह जुरअत और यह शुजाअ़त! मेरी उम्र की क़सम! तुम्हारे बाप भी तो शाइर और बड़े शुजाअ़ थे। सैयदा ने फ़रमायाः औरत को शुजाअ़त से वास्ता। (तबरी स०

262/6, इब्ने असीर स० **33/4**, अल-बिदाया स० **193/8**)

इसी असना में उस ज़ालिम की नज़र हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन पर पड़ी तो कहने लगा : तुम्हारा नाम क्या है? आपने फ़रमाया अ़ली बिन हुसैन! नाम सुन कर बोला : क्या ख़ुदा ने अ़ली बिन हुसैन को क़त्ल नहीं किया? आप ख़ामोश रहे! कहने लगाः बोलते क्यों नहीं? फ़रमाया : मेरे दूसरे भाई का नाम भी अली था लोगों ने उनको क़त्ल कर दिया। बोलाः नहीं बल्कि उसे खुदा ने क़त्ल किया। आप फिर ख़ामोश रहे। बोला चुप क्यों हो गए? जवाब दो। आपने जवाब में यह आयतें पढ़ीं।

(अल्लाह ही जानों को क़ब्ज़ करता है उनकी मौत के वक़्त और कोई नफ़्स नहीं मरता मगर अल्लाह के हुक्म से)

यह सुन कर इब्ने ज़्याद बोला : तुम भी उन्हीं में से हो। फिर आपके बुलूग़ की तस्दीक़ करवा कर आपके क़त्ल का हुक्म दिया। आपने फ़रमायाः उन औरतों को किसके सिपुर्द करोगे? ज़ालिम के इस इंतिहाई सफ़्फ़ाकाना हुक्म को सुन कर सैयदा ज़ैनब तड़प गईं और ज़ैनुल-आबेदीन को अपनी आग़ोश में लेकर उन से चिमट गईं और निहायत दर्द अंगेज़ अंदाज़ में फ़रमाया क्या अभी तक तुम हमारे ख़ून से सैराब नहीं हुए? तुमने किसको बाक़ी छोड़ा है? क्या यह एक आसरा भी बाक़ी न रखोगे? खुदा के लिए जो मुसीबतें हम पर गुज़र चुकी हैं उन पर बस करो। जाँनिसार फूफी ने आ़बिद हज़ीं के गले में बाँहें डाल कर कहाः इब्ने ज़्याद मैं तुझे खुदा का वास्ता दे कर एक सवाल करती हूँ कि अगर इनको क़त्ल करो तो इनके साथ मुझे भी क़त्ल कर दो। लेकिन ज़ैनुल-आबेदीन पर मुतलक़न कोई ख़ौफ़ व हरास तारी न हुआ। उन्होंने निहायत इत्मीनान और वक़ार के साथ फ़रमाया : अगर तुम लोग मुझे क़त्ल ही करना चाहते हो तो क़राबतदारी का लिहाज़ और पास करते हुए किसी मुत्तक़ी और शरीफ़ आदमी को इन औरतों के साथ कर दो जो उनको इज़्ज़त व शराफ़त के साथ वतन पहुँचा दे। ज़ैनुल-आबेदीन की यह बात सुन कर इब्ने ज़्याद देर तक दोनों फूफी भतीजे का मुँह तक्ता रहा। आख़िर उस शक़ी का दिल पसीज गया। उसने हुक्म दिया कि इस लड़के को इन औरतों के साथ रहने के लिए छोड़ दो।

(इब्ने असीर स० **34/4**, अल-बिदायह स० **193/8**, तबरी स० **263/6**)

मस्जिदे कूफ़ा में ऐलाने फ़त्ह और इब्ने अ़फ़ीफ़ की शहादतः

उसके बाद ऐलान हुआ कि लोग मस्जिद में जमा हो जाएं। जब लोग जमा हो गए तो इब्ने ज़्याद ने मिंबर पर खड़े हो कर कहाः खुदा का शुक्र है जिसने अमीरुल-मुमिनीन यज़ीद बिन मुआविया और उनके साथियों की मदद की और उनको फत्ह व नुसरत से नवाज़ा और कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब हुसैन बिन अ़ली और उनके रुफ़क़ा को शिकस्त दी और क़त्ल किया। (मआ़ज़ल्लाह सुम्मा मआज़ल्लाह) जब ज़ालिम ने हज़रत अ़ली और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा को कज़्ज़ाब कहा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़फ़ीफ़ अज़्दी जो हज़रत अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के दोस्तों में से एक बुज़ुर्ग थे और दोनों आँखों से माज़ूर थे और सारा दिन मस्जिद में ज़िक्र व अज़्कार और नमाज़ पढ़ने में गुज़ारते थे वह बहुत बेताब हो कर उठे और भरे मज्मा में कहाः ओ इब्ने मरजाना तू भी कज़्ज़ाब है, तेरा बाप भी कज़्ज़ाब था। तुम लोग औलादे रसूल को क़त्ल करते हो और बातें ऐसी करते हो जैसे सिद्दीक़ीन होते हैं। इब्ने ज़्याद ने कहा : इसको पकड़ लो। सिपाहियों ने उनको गिरफ़्तार कर लिया। उस वक़्त तो उनकी क़ौम के लोगों ने उनको छुड़ा लिया बाद में इब्ने ज़्याद ने उनको बुलवाया और हुक्म दिया कि उनको क़त्ल करके उनकी लाश को लटका दिया जाए। चुनांचे ऐसा ही किया गया।

(तबरी स० 263/6, इब्ने असीर स० 34/4, अल-बिदायह स० 191/8)

फिर इब्ने ज़्याद बद निहाद ने हुक्म दिया कि असीराने अह्ले बैत को क़ैद खाने में रखा जाए और हुसैन के सर को नेज़े पर बुलन्द करके कूफ़ा के गली कूचों में फिराया जाए। चुनांचे इमाम पाक के सरे अनवर को फिराया गया।

शीआ मज़्हब की मोतबर किताब जिला-उल-उयून और मक़्तल इब्ने निम्मा में मज़्कूर है जब अह्ले बैते नुबुव्वत के बक़िया अफ़्राद कूफ़ा पहुँचे तो उनकी हालते ज़ार और आलमे बेकसी को देख कर अह्ले कूफ़ा ज़ोर ज़ोर से रोने और मातम करने लगे। उनके रोने और मातम करने को देख कर हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु और सैय्यदा ज़ैनब और हज़रत सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा ने उनके सामने खुतबात इरशाद फ़रमाए जिनका खुलासा यह है। इमाम ज़ैनुल- आबेदीन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने हम्द व सलात के बाद फ़रमायाः जो जानता है वह

जानता है जो नहीं जानता वह जान ले कि मैं अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली इब्ने अबी तालिब हूँ। मैं उनका फ़रज़न्द हूँ जो किनार-ए-फ़ुरात पर भूखे प्यासे शहीद किए गए हैं। हालाँकि उनके ज़िम्मे न किसी का ख़ून था न उन्होंने किसी का माल लिया था मैं उनका फ़रज़न्द हूँ जिनकी हतके इज़्ज़त की गई। माल व असबाब भी लूट लिया गया उनके अयाल क़ैदी बनाए गए। मैं तुम्हें ख़ुदा की क़सम देकर पूछता हूँ बताओ! क्या तुमने मेरे वालिद माजिद को खुतूत लिख कर नहीं बुलाया था? और क्या तुमने उन से अह्द व पैमान नहीं किए थे? ज़रूर किए थे फिर तुमने उनको छोड़ दिया सिर्फ़ यही नहीं बल्कि उन से जंग की और दुश्मन को उन पर मुसल्लत किया। पस तुम्हारे लिए हलाकत व बरबादी हो! तुमने जहन्नम की राह इख़्तियार की और अपने लिए बहुत बुरा रास्ता पसन्द किया। बोलो! तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किस तरह आँख मिलाओगे और क्या जवाब दोगे जब वह तुम से फ़रमाएंगे कि तुमने मेरी इज़्ज़त को क़त्ल किया और मेरी हुर्मत की हतक की, पस तुम मेरी उम्मत में नहीं हो।

उस वक़्त हर तरफ़ से रोने की आवाज़ें बुलन्द हुईं और कूफ़ियों ने कहा : अब हम हर तरह आपका साथ देंगे और आपके हर हुक्म की तामील करेंगे। आपने फ़रमाया : ऐ गिरोहे ग़द्दार व मक्कार! तुम यह चाहते हो कि तुम मुझ से भी वैसा ही सुलूक करो जैसा कि तुमने मेरे बाप के साथ किया है? मैं तुम्हारे क़ौल व क़रार और दरोग़ बेफरोग़ पर किसी तरह भी ऐतमाद नहीं करूँगा। हाशा व कल्ला ख़ुदा की क़सम! अभी वह ज़ख़्म नहीं भरे जो कल ही हमारे पिदर बुज़ुर्गवार, उनके अह्ले बैत और उनके रुफ़क़ा के क़त्ल होने से लगे हैं और यह सब कुछ तुम्हारी ग़द्दारी व बेवफ़ाई की वजह से हुआ। वल्लाह मेरा जिगर कबाब है फिर आपने चन्द अश्आ़र पढ़े जिनका तरजमा यह है।

तअज्जुब नहीं है अगर हज़रत हुसैन क़त्ल किए गए इसलिए कि उनके बुज़ुग भी जो उन से अफ़ज़ल थे क़त्ल हुए थे। ऐ कूफ़ा वालो! खुश न हो बबाइस उन ज़ुल्मों के जो हज़रत हुसैन पर किए गए। यह अम्र ख़ुदा तआ़ला के नज़्दीक बहुत अ़ज़ीम है। जो बुज़ुर्गवार नहरे फ़ुरात पर क़त्ल हुए हैं उन पर मेरी रूह क़ुरबान हो! जिन लोगों ने उनको क़त्ल किया है उनकी सज़ा जहन्नम है।

हज़रत सैयदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अन्हा ने हम्द व सलात के बाद फ़रमायाः ऐ बेवफ़ा और दग़ाबाज़ कूफ़ियो! क्या अब तुम रोते और मातम करते हो? खुदा तुम्हें हमेशा रुलाए और तुम्हारा रोना और मातम करना कभी मौक़ूफ़ न हो। तुम बहुत ज़्यादा रोओ और थोड़ा हंसो। तुम्हारी मिसाल उस औरत की सी है जो काते हुए धागे को मज़्बूत हो जाने के बाद झटके देकर तोड़ डाले। तुमने अपने ईमान को धोखे और फ़रेब का ज़रिआ बनाया हुआ है तुम्हारी मिसाल उस राब्ज़े की सी है जो नजासत की ढेरी पर लगा हो। तुम में बजुज़ खुद सताई, शेख़ी, ऐब जोई, तोहमत सराई और लौंडियों की तरह खुशामद और चापलोसी के कुछ नहीं। बिला शुबह तुम बहुत बुरे काम के मुर्तकिब हुए हो तुमने हमेशा हमेशा के लिए ज़िल्लत हासिल की और ऐब कमाया और जहन्नम के सज़ावार हुए। तुम्हारे माथे पर बेवफ़ाई और ग़द्दारी का दाग़ जो लग चुका है वह किसी पानी से ज़ाइल होने वाला नहीं। ऐ कूफ़ियो! क्या तुम जातने हो कि तुमने किस जिगरे रसूल को पारा पारा किया और किसका खून बहाया है। तुमने खुलास-ए-ख़ानदाने नुबुव्वत और सरदार जवानाने अह्ले जन्नत और मीनारे दीन व शरीअत को क़त्ल किया है। तुमने मुहज़राते इस्मत व तहारत दुख़्तराने ख़ातूने जन्नत को बेपर्दा किया है। ऐ अह्ले कूफ़ा तुमने अपने लिए आख़िरत में बहुत बुरा तोशा भेजा है। खुदा तआला तुम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे और तुम्हें हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम में दाख़िल करे!

हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि अल्लाहु अन्हा ने हम्द व सलात के बाद फ़रमायाः ऐ कूफ़ा वालो! तुम्हारा बुरा हाल हो और तुम्हारे मुँह सियाह हो! तुमने मेरे प्यारे भाई को बुलाया फिर उनको छोड़ दिया और उनकी मदद न की। तुम्हारी बेवफ़ाई और ग़द्दारी की वजह से वह क़त्ल हुए। उनका माल व असबाब लूटा गया और उनके अह्ले बैत क़ैदी बने। अब तुम उन पर रोते हो खुदा तुमको हमेशा रुलाए! क्या तुम्हें मालूम है कि तुमने क्या जुल्म किया है और किन गुनाहों का अंबार अपनी पुश्त पर लगाया है? फिर आपने यह अश्आर पढ़े।

क़तलतुम अख़ी सबरन फ़वैलुल लेउम्मेकुम
सतुजज़ौना नारन हुरेहा यतवक़्क़ेदू

तुमने मेरे भाई को आलमे गुर्बत में चारों तरफ़ से घेर कर भूखा प्यासा क़त्ल किया तुम्हारी माएं रोईं। अंक़रीब तुम उसकी सज़ा में आग में जलोगे जो शोलावर होगी।

तुमने वह ख़ून बहाया है जिसका बहाना अल्लाह तआला ने और कुर्आन ने फिर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हराम किया है।

आगाह रहो तुम को बशारत है आतिशे जहन्नम की कल क़्यामत के दिन। यक़ीनन तुम हमेशा हमेशा के लिए दोज़ख़ में रहोगे।

और बेशक मैं तमाम उम्र अपने भाई पर ग़म से रोऊँगी वह भाई जो नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद बेहतर थे उन से जो पैदा होंगे।

और यह आँसू कभी बन्द न होंगे बल्कि बराबर रुख़्सारों पर बहते रहेंगे और कभी खुश्क न होंगे। (मक़्तल इब्ने नुमा स० **83**, जिला-उल-उयून स० **223/2**)

उसके बाद इब्ने ज़्याद बद निहाद ने अश्क़िया की एक जमाअत के साथ जिस में शिम्र ज़िल-जौशन ख़ौली बिन यज़ीद, ज़हर बिन क़ैस वग़ैरह भी थे शोहदा के सरों और असीराने अह्ले बैत को यज़ीद पलीद के पास इस हालत में भेजा कि ज़ैनुल-आबेदीन के हाथ पाँव और गर्दन में ज़ंजीरें डाल दी गई थीं और बीवियों को ऊँटों की नंगी पीठ पर बिठाया गया था। ज़ालिम ने अपने सिपाहियों को ताकीद कर दी थी कि रास्ते में तश्हीर करते हुए और सरों को नेज़ों पर चढ़ा कर लोगों को बताते हुए जाना कि देख लो जिन्होंने हाकिमे वक़्त यज़ीद की मुख़ालिफ़त की उनका यह हश्र हुआ है ताकि लोग डर जाएं और यज़ीद की मुख़ालिफ़त से बाज़ रहें।

रास्ता में एक मंज़िल पर अह्ले किताब का एक दैर (गिरजा) आया यह लोग रात गुज़ारने के लिए वहाँ ठहर गए। शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं यश्र बून अन्नबीज़ कि वह खुमें का शीरा पीने लगे लेकिन अल्लामा इब्ने कसीर ने जो रिवायत नक़्ल की है उसमें है **वहुम यशरबूनल-ख़मरू** कि वह शराब पीने लगे कि इतने में एक लोहे का क़लम नमूदार हुआ। उसने ख़ून से यह शेअर लिखा।

अतरजू उम्मतन क़तलत हुसैनन
शफ़ाअता जद्दही यौमल-हिसाबे

क्या वह गिरोह भी यह उम्मीद रखता है जिसने हज़रत हुसैन (रज़ि अल्लाहु अन्हु) को शहीद किया है कि क़्यामत के दिन उनके जद्दे अम्जद इस गिरोह की शफ़ाअत करेंगे।

बाज़ रिवायात में है कि यह शेअर पहले से दीवारे दैर पर लिखा हुआ था। जब उन बदबख़्तों ने देखा तो दैर के राहिब से पूछा कि यह शेअर किसने लिखा है और कब का लिखा हुआ है ?

राहिब ने कहा यह शेअ़र तुम्हारे नबी के मबऊस होने से पाँच सौ बरस पहले का लिखा हुआ है। (तारीख़ुल-ख़मीस स० **299/2**, सआदतुल-कौनैन स० **123**, हयातुल-हैवान अल-कुबरा स० **6/1**)

अ़ल्लामा इब्ने कसीर, इब्ने अ़साकिर से रिवायत फ़रमाते हैं।

कि लोगों का एक लश्कर बसिलसिला-ए-जंग बिलादे रोम की तरफ़ गया। उन्होंने वहाँ एक कनीसा में भी यह शेअ़र लिखा हुआ पाया तो उन से पूछा कि यह शेअ़र किसने लिखा है? उन्होंने कहा कि यह शेअ़र तुम्हारे नबी की बेअ़सत से तीन सौ साल पहले लिखा हुआ है।

दैर के राहिब ने क़ाफ़िले में जब शोहदा के सरों को नेज़ों पर और चन्द बीवियों और बच्चों को बहालते असीरी व मज़्लूमियत देखा तो उसके दिल पर बहुत असर हुआ। उसने हालात दरयाफ़्त किए जब उसको सब कुछ मालूम हुआ तो वह सख़्त हैरान हो कर बोला : तुम बहुत बुरे लोग हो। क्या कोई अपने नबी की औलाद के साथ भी ऐसा सुलूक कर सकता है जैसा तुम लोगों ने किया है ?

फिर उस राहिब ने उस गिरोहे अश्क़िया से कहा कि अगर एक रात के लिए तुम अपने नबी के नवासे का सर मेरे पास रहने दो और उन बीवियों की ख़िदमत का मौक़ा मुझे दो तो मैं तुमको दस हज़ार दीनार देता हूँ। वह दिरहम व दीनार के बन्दे उस पर राज़ी हो गए। राहिब ने एक साफ़ सुथरा कमरा बीबीयों को रात गुज़ारने के लिए पेश किया और अपनी ख़िदमात पेश करते हुए कहा कि तुम्हें किसी भी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे बताओ। अगरचे मैं मुसलमान नहीं हूँ लेकिन मेरे दिल में तुम्हारे खानदान की बड़ी इज़्ज़त है। उसने सब्र की तल्क़ीन भी की कि अल्लाह वालों को अल्लाह की राह में बड़ी बड़ी तक्लीफ़ें और मुसीबतें आई हैं। उन्होंने सब्र किया तो अल्लाह ने उनको सब्र का बदला बहुत अच्छा दिया है। अब तुम्हारे लिए भी सिवाए सब्र के चारा नहीं! बीवियों ने उसकी इस हमदर्दी का शुक्रिया अदा किया और उसको दुआएं दीं।

राहिब ने रक़म अदा करने के बाद हज़रत इमाम का सरे अनवर लिया और अपने ख़ास कमरे में जा कर सरे अक़्दस, चेहर-ए-मुबारक और मुक़द्दस ज़ुल्फ़ों और दाढ़ी मुबारक के बालों पर जो गुबार और ख़ून वग़ैरह जमा हुआ था उसको धो कर साफ़ किया और इत्र व काफ़ूर लगा कर मुअत्तर किया और बड़े अदब व ताज़ीम के साथ अपने सामने रख कर ज़्यारत करने लगा। उसकी इस ताज़ीम व तक्रीम और हुस्ने सुलूक की वजह से अल्लाह

तआ़ला उस से राज़ी हुआ और उसने उस पर अपनी रहमतों के दरवाज़े खोल दिए। उस पर गिरिया तारी हुआ और उसकी आँखों से पर्दे उठ गए उसने क्या देखा कि सरे अनवर से लेकर आसमान तक नूर ही नूर था। जब उसने सरे अनवर की करामत और अनवार व तजल्लियात का मुशाहदा किया तो बेसाख़्ता उसकी जुबान पर जारी हुआ। **अशहदु अन्न ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह।** चूंकि उसने दुनिया की दौलत क़ुरबान की थी अल्लाह तआ़ला ने उसको ईमान की दौलत अता फ़रमा दी। उसने सरे अनवर का अदब किया था और अदब करने वाले बद नसीब व बेईमान नहीं रह सकते। अल्लाह ने उसको बा नसीब व बाईमान बना दिया। उसने रसूल ज़ादियों की दुआएँ हासिल की थीं वह दुआएँ रंग लाईं और उसकी तक़्दीर बदल गई। चुनांचे उसने दैर को हमेशा हमेशा के लिए छोड़ दिया और सच्चे दिल से अह्ले बैते अतहार का मुतीअ़ व ख़ादिम बन गया।

यहाँ एक और सख़्त इबरतख़ेज़ वाक़िया हुआ वह यह कि उस गरोहे अश्क़िया ने लश्करे इमाम आ़ली मक़ाम और उनके ख़ेमों से जो दिरहम व दीनार लूटे थे और देख भाल के महफ़ूज़ कर लिए थे और जो राहिब से लिए थे उनको तक़्सीम करने के लिए जब थैलियों के मुँह खोले तो क्या देखा कि वह सब दिरहम व दीनार ठकरियाँ बने हुए थे और उनके एक तरफ़ यह आयत **वला तहसबन्नल्लाहा ग़ाफ़िलन अ़म्मा यअ़्मलुज़्ज़ालिमून** कि अल्लाह तआ़ला को ज़ालिमों के किरदार से ग़ाफ़िल मत समझो और दूसरी तरफ़ यह आयत मक्तूब थी। **व सयअ़्लमुल्लज़ीना ज़लमू अय्या मुंक़लबिन यंक़लेबून।** और ज़ुल्म करने वाले अंक़रीब जान लेंगे कि वह किस करवट पर बैठे हैं। (सवाइक़े मुहरिक़ा स० **197**, सआदतुल-कौनैन स० **124**)

फिर आदा ने दिरहम बाँटने के थैलियाँ खोलीं
तो देखा सारे दिरहम थैलियों के ठीकरियाँ हो लीं
हर इक ठीकरी पे एक जानिब लिखा था लोगो
अ़मल से ज़ालिमों के हक़ को तुम ग़ाफ़िल नहीं जानो
यह आयत दूसरी जानिब लिखी जब ग़ौर करते हैं
कि अब ज़ालिम समझ लेंगे कि वह किस करवट पलटते हैं

यह क़ुदरत की तरफ़ से एक सबक़ एक तंबीह थी कि बदबख़्तो! तुमने इस फ़ानी दुनिया के लिए दीन छोड़ा और आॅले रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ज़ुल्म व सितम किया। याद रखो! दीन तो तुमने छोड़ ही दिया और जिस फ़ानी व बेवफ़ा दुनिया के लिए छोड़ा वह भी तुम्हारे हाथ

नहीं आएगी और तुम **ख़सेरदुनिया वल-आख़िरते** का मिस्दाक़ बनोगे।

न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे
दुनिया परस्तो दीन से मुँह मोड़ के तुम्हें
दुनिया मिली न ऐश व तर्ब की हवा मिली

तारीख़ शाहिद है कि मुसलमानों ने जब कभी भी दीन के मुक़ाबले में दुनिया को तरजीह दी और दीन छोड़ कर दुनिया को इख़्तियार किया फिर दुनिया भी उनके पास न रही और वह दारैन में ख़सरान के सज़ावार हुए और जिन्होंने फ़ानी दुनिया को लात मार दी और दीन व ईमान को नहीं छोड़ा बल्कि अपने किरदारे अ़मल से यह साबित कर दिया।

सर कटे, कुंबा मेरे सब कुछ लुटे
दामने अहमद न हाथों से छुटे

तो दुनिया उनके पीछे पीछे हो गई और वह दारैन में सुर ख़ुरू हुए। उन्हीं लोगों को नवेदे ईज़्दी सुनाते हुए अ़ल्लामा इक़्बाल ने कहा :

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लौह व क़लम तेरे हैं

दरबारे यज़ीद :

जब शोहदा के सर और असीराने करबला दमिश्क़ पहुँचे तो यज़ीद ने उनके साथ क्या सुलूक किया इस सिलसिले में मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं। हम उन रिवायतों को नक़्ल करने के बाद नतीजा पेश करेंगे।

पहली रिवायत :

ज़ुहर बिन कैस यज़ीद के पास हाज़िर हुआ तो यज़ीद ने पूछा : क्या ख़बर लाए हो? ज़ुहर ने कहा अमीरुल-मुमिनीन आपको मुबारक हो कि अल्लाह ने आपको फत्ह व नुसरत दी। हुसैन बिन अ़ली हमारे मुक़ाबला में अपने अह्ले बैत के अट्ठारह अफ़राद और अपने गिरोह के साठ आदमियों को लाए थे। हम उनके पास गए और उन से कहा : या तो इताअ़त इख़्तियार करें या जंग के लिए तैयार हो जाएं उन्होंने इताअ़त से इंकार कर दिया तो हमने सुबह होते ही उनको हर तरफ़ से घेर कर उन पर हमला कर दिया। जब हमारी तल्वारें उनके सरों तक पहुँच गई तो वह भागने लगे और उनके लिए कहीं जाए पनाह नहीं थी तो वह हम से अपनी जानें बचाने के लिए इस तरह छुपते फिरते थे जैसे कबूतर शाहीन से छुपते हैं। अमीरुल-मुमिनीन! वल्लाह! बस जितनी देर एक ऊँट के ज़ब्ह करने में

लगती है उतनी देर में हमने उनके सब आदमियों को क़त्ल कर दिया। अब उनकी लाशें बरहना, उनके पैराहन और उनके रुख़्सार ख़ाक व ख़ून में आलूदा पड़े हैं। आफ़ताब की तपिश उनको पिघला रही है। हवा उन पर ख़ाक डाल रही है। एक सुंसान ब्याबान में ओक़ाब और गिधें उन पर उतर रही हैं कि यह सुन कर यज़ीद आबदीदह हो गया और कहा कि तुम्हारी इताअ़त से उस वक़्त खुश होता जब कि तुमने हुसैन को क़त्ल न किया होता। खुदा इब्ने सुमैया (इब्ने ज़्याद) पर लानत करे वल्लाह अगर मैं होता। तो मैं हुसैन को माफ़ कर देता। खुदा हुसैन पर रहम करे! और ज़ुहर को कोई इंआम न दिया।

(इब्ने असीर स० 34/4, तबरी 264/6, अल-बिदायह वन्निहायह स० 191/8)

दूसरी रिवायत :

शिम्र ज़िल जौशन और महज़र बिन सअ़लबा दोनों हज़रत इमाम का सरे अनवर लेकर जब यज़ीद के पास पहुँचे तो महज़र बिन सअ़लबा ने दरवाज़े में खड़े हो कर बआवाज़ बुलन्द कहा कि हम अमीरुल-मुमिनीन की ख़िदमत में सबसे ज़्यादा बेवकूफ़ और बदतरीन शख़्स का सर लेकर आए हैं। (मआ़ज़ल्लाह) यज़ीद ने यह सुन कर कि महज़र की माँ ने उससे ज़्यादा बेवकूफ़ और बदतरीन बेटा नहीं जना लेकिन वह क़ातेअ़ और ज़ालिम है फिर वह अन्दर दाख़िल हुए और सरे अनवर को यज़ीद के आगे रख कर सारा वाक़िया करबला ब्यान किया। यह सारा वाक़िया यज़ीद की बीवी हिन्द बिन्ते अ़ब्दुल्लाह बिन आमिर ने भी सुना। वह चादर ओढ़ कर बाहर आई और कहा अमीरुल-मुमिनीन! क्या यह हुसैन बिन अली इब्ने फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का सर है? यज़ीद ने कहा हाँ! अब तुम उस पर रोओ और इस इब्ने बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ालिसुन्नसब क़ुरैशी पर सोग करो जिसे इब्ने ज़्याद ने जल्दबाज़ी में क़त्ल कर दिया है। खुदा उसे क़त्ल करे! फिर यज़ीद ने दरबार लगाया और अ़वाम व ख़्वास को अन्दर आने की इजाज़त दी। लोग अन्दर दाख़िल हुए। सरे अनवर यज़ीद के सामने रखा हुआ था। उसके हाथ में एक छड़ी थी जिसको वह आपके लब व दन्दाने मुबारक पर मारता था और कहता था कि अब तो उनकी और हमारी मिसाल ऐसी है जैसा कि हिसीन इब्नुल-हम्माम ने कहा है।

यानी हमारी कौम ने तो इंसाफ़ करने से इंकार कर दिया था। पस इन तल्वारों ने इंसाफ़ कर दिया जो हमारे दाएं हाथों में थीं जिन से ख़ून

टपकता है। वह ऐसे लोगों की खोपड़ियाँ तोड़ती हैं जो हम पर ग़ालिब थे और वह निहायत नाफ़रमान और ज़ालिम थे।

हज़रत अबू बरज़ा असलमी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः ऐ यज़ीद! तू अपनी छड़ी हज़रत हुसैन के दाँतों पर उस जगह मार रहा है जिस जगह को मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चूसा करते थे। बेशक ऐ यज़ीद! कल क़्यामत के दिन जब तू आए तो तेरा शफ़ीअ़ इब्ने ज़्याद होगा और यह हुसैन आएंगे तो उनके शफ़ीअ़ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम होंगे। यह कह कर वह वहाँ से चले गए। यज़ीद ने इमाम के सरे अनवर से मुख़ातिब हो कर कहा ऐ हुसैन! ख़ुदा की क़सम! अगर मैं तुम्हारे साथ होता तो तुम्हें क़त्ल न करता। फिर यज़ीद ने हाज़िरीन से कहा क्या तुम जानते हो कि इनका यह अंजाम क्यों हुआ? इसलिए कि यह कहते थे कि इनके बाप अ़ली मेरे बाप मुआ़विया से और उनकी माँ फ़ातिमा मेरी माँ से और उनके जद्दे अम्जद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) मेरे जद से बेहतर थे। लिहाज़ा यह ख़िलाफ़त के मुझ से ज़्यादा मुस्तहिक़ थे। इनके इस क़ौल का जवाब कि इनके बाप से बेहतर थे यह है कि इनके बाप और मेरे बाप ने ख़ुदा से मुहाकमा चाहा और लोग जानते हैं कि ख़ुदा ने किसके हक़ में फ़ैसला दिया। इनका यह कहना कि इनकी माँ मेरी माँ से बेहतर थीं तो मुझे मेरी माँ की क़सम! बिला शुबह वह मेरी माँ से बेहतर थीं और उनका यह क़ौल कि उनके जद्दे अम्जद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) मेरे दादा से बेहतर थे तो मैं अपनी जान की क़सम खा कर कहता हूँ कि कोई मुसलमान जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है वह हम में से किसी को भी रसूलुल्लाह के बराबर और हमसर नहीं ठहराएगा लेकिन इन पर जो यह मुसीबत आई वह इनके न समझने की वजह से आई।

इसके बाद असीराने अह्ले बैत भरे दरबार में उसके सामने पेश किए गए। हज़रत इमाम का सरे अनवर उसके सामने ही रखा हुआ था। जब हज़रत इमाम की बेटियों हज़रत फ़ातिमा और हज़रत सकीना ने सरे अनवर को देखा तो बेसाख़्ता उनकी चीख़ें निकल गईं। (इब्ने असीर स० 35/4)

तीसरी रिवायत :

जब सरे अनवर यज़ीद के पास ला कर उसके आगे रखा गया तो वह ख़ुश हुआ। उसने अह्ले शाम को जमा किया। उसके हाथ में एक छड़ी थी उससे सरे अनवर को उलट पलट करता था और इब्ने अज़्ज़ुबअ़री के

यह अशआ़र पढ़ता था।

ऐ काश! आज मेरे बुज़ुर्ग जो ग़ज़वः-ए-बद्र में मारे गए थे ज़िन्दा मौजूद होते तो देखते कि बेशक मैंने उन से दो गुने उनके अशराफ़ को क़त्ल करके बदला लिया और मुआ़मला बराबर कर दिया। (सवाइक़े मुहरिक़ा स० **218**, अल-बिदायह वन्निहायह स० **192/8**, इब्ने अ़साकिर)

अ़ल्लामा इमाम इब्ने हजर मक्की शाफ़ई और शअ़बी ने फ़रमाया :

यज़ीद ने दो शेअ़र इसमें और बढ़ाए जो यज़ीद के सरीह कुफ़्र पर मुश्तमिल हैं और वह यह हैं।

बनी हाशिम मुल्क से खेलते रहे तो न कोई ख़बर उनके पास आई और न कोई वह्य नाज़िल हुई है उत्बा की औलाद से न होता अगर मैं औलादे अहमद से उसका बदला न लेता जो कुछ उन्होंने किया था। (सवाइक़े मुहरेक़ा स० **218**)

उन्हें फिर लेके वह फौजे मुख़ालिफ़ शाम में पहुँची
यह सर दरबार में रखे किए हाज़िर वह सब क़ैदी
यज़ीद और उसके साथी खुश हुए इस कामयाबी पर
न ग़म था उनको अजमल ऑले अतहर की तबाही पर

चौथी रिवायत :

जब यज़ीद के सामने हज़रत इमाम और उनके अह्ले बैत व अंसार के सर रखे गए तो उसने हिसीन बिन अल-हम्माम के वह शेअ़र पढ़े जो दूसरी रिवायत में ऊपर लिखे जा चुके हैं। तो इस वक़्त मरवान का भाई यहिया बिन हकम यज़ीद के पास मौजूद था।

वह लश्कर जो ज़मीने तिफ़ के पहलू में (क़त्ल किया गया) है वह ज़्यादा क़राबतदार हैं इब्ने ज़्याद जैसे कमीना गुलाम और खोटे नसब वाले से। सुमैया की नसल तो संग रेज़ों की तादाद से भी ज़्यादा हो गई। लेकिन ऑले मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) में से आज कोई बाक़ी नहीं रहा।[1] (1)अब सुमैया की नस्ल का नाम व निशान तक मिट गया है और आले मुस्तफ़ा दुनिया भर में मौजूद है। मुअल्लिफ़)

यज़ीद ने यह सुन कर यहिया के सीना पर हाथ मारा और कहा ख़ामोश। (तबरी **265/6**, अल-बिदायह स० **192/8**, इब्ने असीर स० **37/4**)

फिर यज़ीद के सामने इमाम ज़ैनुल-आ़बेदीन, ख़्वातीन व अतफ़ाल अह्ले बैत को बहालते असीरी व शिकस्ता हाली पेश किया गया। हज़रत फ़ातिमा बिन्ते हुसैन ने जो हज़रत सकीना से बड़ी थीं कहा ऐ यज़ीद क्या रसूल की बेटियाँ क़ैदी है? इमाम जैनुल आबिदीन ने फ़रमाया :

अगर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमें जंजीरों में जकड़ा हुआ देखते तो ज़रूर हमारी हथकड़ियों और बेड़ियों को खोल देते। यज़ीद ने कहा तुम सच कहते हो और हुक्म दिया कि इनकी जंजीरें खोल दो। फिर यज़ीद ने हज़रत जैनुल-आबेदीन को मुख़ातब करके कहा : तुम्हारे बाप ने मुझ से क़तअ़ रहम किया। मेरे हक़ को न जाना और मेरी सलतनत में मुझ से झगड़ा किया। फिर अल्लाह ने जो कुछ उनके साथ किया वह तुमने देख लिया।

हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन ने उसके जवाब में आयत पढ़ी।

तरजमा : जो कोई भी मुसीबत रूए ज़मीन पर और खुद तुम पर नाज़िल होती है और इस नविश्ता में लिखी हुई है जो पैदाइशे आलम से पहले हमने लिख रखा है।

यज़ीद ने अपने बेटे ख़ालिद से कहा उसका जवाब दो। लेकिन उसकी समझ में जवाब न आया तो यज़ीद ने खुद बताया तुम कहो **माअसाबकुम मिन मुसीबतिन फ़ीमा कसबत ऐदीकुम व यअ़फू अन कसीरिन।** जो मुसीबत तुम्हें पहुँचती है वह तुम्हारे ही आमाल का नतीजा होती है और बहुत सी ख़ताएं अल्लाह मुआ़फ़ भी कर देता है।

(इब्ने असीर स० 35/4, तबरी स० 265/6)

इसी अस्ना में एक ज़ालिम शामी ने हज़रत फ़ातिमा बिन्ते हुसैन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा अमीरुल-मुमिनीन यह लड़की मुझे दे दो। यह सुन कर हज़रत फ़ातिमा डर गईं और हज़रत ज़ैनब का कपड़ा पकड़ लिया। हज़रत जैनब ने उस शामी को डाँटा कि तू झूठ बकता है ओ बदबख़्त! यह लड़की (शरअ़न) न तुझको मिल सकती है और न यज़ीद को। चूँकि हज़रत सैयदा ने यज़ीद के मुतअ़ल्लिक़ भी कह दिया था। इसलिए यज़ीद ने ग़ज़बनाक हो कर कहा तुम झूठ कहती हो। खुदा की क़सम! अगर मैं चाहूँ तो इस लड़की को ले सकता हूँ। हज़रत ज़ैनब ने कहा : खुदा की क़सम! तू नहीं ले सकता। अल्लाह ने तुझे यह हक़ नहीं दिया। हाँ अगर तुम हमारी मिल्लत से ख़ारिज हो जाओ और हमारे दीने इस्लाम से ख़ारिज हो जाओ और हमारे दीने इस्लाम को छोड़ कर कोई और दीन इख़्तियार कर लो तो फिर तुम ले सकते हो (यानी जब तक मुसलमान कहलाते हो मुसलमान औरत को माले ग़नीमत के तौर पर नहीं ले सकते हो) उस पर यज़ीद सख़्त बरहम हो कर कहने लगा : तुम मुझ से इस तरह कहती हो दीन से तो तुम्हारा बाप और तुम्हारा भाई ख़ारिज हुए थे। हज़रत ज़ैनब ने फ़रमाया : अल्लाह के और मेरे जद्दे अम्जद और मेरे बाप और मेरे भाई के दीन ही से

तो तूने और तेरे बाप दादा ने हिदायत पाई है। यज़ीद ने कहा ओ खुदा की दुश्मन! तू झूठ बकती है। सैयदा ने फ़रमाया : तू अमीर है और अपनी बादशाही की वजह से नाहक़ सख़्ती और बद जुबानी करता है। यज़ीद उस पर शरमा कर ख़ामोश हो गया। (इब्ने असीर स० **35/4**, तबरी स० **265/6**, अल-बिदायह स० **194/8**, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **353/2**)

पाँचवीं रिवायत :

जब हज़रत इमाम का सरे अनवर यज़ीद के पास पहुँचा तो वह खुश हुआ और उसके नज़्दीक इब्ने ज़्याद की क़द्र व मंज़िलत बहुत बढ़ गई इसलिए उसको इंआम व इकराम से नवाज़ा मगर थोड़े ही अरसा के बाद वह नादिम हुआ क्योंकि उसको मालूम हो गया कि लोगों के दिलों में मेरा बुग्ज़ और अदावत पैदा हो गई है और लोग मुझे लअ़न तअ़न और सब्ब व शितम करने लगे हैं। फिर वह इब्ने ज़्याद को गालियाँ देने लगा कि खुदा की मार हो इब्ने मरजाना पर! उसने हुसैन को क़त्ल करके मुसलमानों के दिलों में मेरे बुग्ज़ व अदावत का बीज बो दिया और हर नेक व बद आदमी क़त्ले हुसैन की वजह से मेरा दुश्मन बन गया। खुदा इब्ने ज़्याद पर लानत करे और उस पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे! (इब्ने असीर स० **36/4**)

जब इब्ने ज़्याद ने हज़रत हुसैन को मआ़ उनके रुफ़क़ा के क़त्ल कर दिया था और उनके सरों को यज़ीद के पास भेजा तो यज़ीद इमाम के क़त्ल से अव्वलन तो खुश हुआ और उसकी वजह से इब्ने ज़्याद की क़द्र व मंज़िलत उसके नज़्दीक ज़्यादा हो गई मगर वह इस खुशी पर ज़्यादा देर तक क़ाइम न रहा हत्ता कि फिर नादिम हुआ।

बेशक यज़ीद ने इब्ने ज़्याद पर उसके फ़ेअ़्ल की वजह से लानत तो की और उसको बुरा भला भी कहा इस वजह से कि आइंदा जब हक़ीक़त ज़ाहिर होगी और बात खुलेगी तो फिर क्या होगा लेकिन न तो उसने इब्ने ज़्याद को इस नापाक हरकत पर माज़ूल किया और न बाद में उसे कुछ कहा और न किसी को भेज कर उसका यह शर्मनाक ऐब उसको जताया यानी कोई मलामत नहीं की।

नतीजा :

इन रिवायात में अदना सा ग़ौर करने से जो नतीजा सामने आता है वह यह है कि बिला शुबह यज़ीद ने इब्ने ज़्याद पर लानत और सब्ब व शितम वग़ैरह किया और क़त्ले इमाम पर इज़हारे अफ़सोस भी किया। लेकिन इस वजह से नहीं कि उसके नज़्दीक क़त्ले इमाम नाजाइज़ और बहुत बड़ा

ज़ुल्म था वरना उस पर लाज़िम था कि वह इब्ने ज़्याद और क़ातिलाने हुसैन से मुआख़ज़ा करता और उनको उस ज़ुल्म की सज़ा देता जबकि उसने इब्ने ज़्याद को इकराम व इंआम से नवाज़ा। उसके इज़हारे अफ़सोस की वजह यह थी कि वह समझता था कि इमाम और अह्ले बैते नुबुव्वत के दीगर अफ़राद के नाहक़ क़त्ल और उन पर ज़ुल्म व सितम का बदतरीन सियाह दाग़ जो मेरी पेशानी पर लग चुका है वह कभी ज़ाइल नहीं होगा और दुनियाए इस्लाम क़ियामत तक मुझे मलामत करती रहेगी।

चुनांचे उसने अपनी रुसवाई के ख़तरात के पेशे नज़र सिर्फ़ ज़ुबानी लानत वग़ैरह भेजी और निदामत व अफ़्सोस का इज़हार भी कर दिया जिसको रस्मी या सियासी लानत व निदामत कहना चाहिए। गुज़िश्ता सफ़हात में इस पर काफ़ी बहस गुज़र चुकी है। नीज़ सफ़ः पर खुद इब्ने ज़्याद का ब्यान मुलाहिज़ा फ़रमाइए जिसमें उसने इक़रार किया है कि मुझे यज़ीद ने क़त्ले हुसैन का हुक्म दिया था और इन मज्कूरा रिवायात में हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन और सैयदा ज़ैनब के साथ उसकी गुफ़्तगू, सख़्ती, बद ज़ुबानी और दूसरी और तीसरी रिवायत में उसके अश्आर उसकी क़लबी अदावत व कैफ़ियत और बुग्ज़ व इनाद पर गवाह हैं। बहरहाल हक़ीक़त यही है और रिवायाते मोतबरा से भी यही साबित है कि यज़ीद पलीद का दामन किसी तरह भी इस ज़ुल्मे अज़ीम से बरी नहीं है। इस वाक़िअ-ए-हाइला का वह मुहर्रिक और उसमें बराबर का शरीक और पूरा ज़िम्मेदार है। नीज़ शहादत के बाद वाक़िआ हुर्रा की लरज़ा खेज़ दास्तान ने उस बदबख़्त की बदनसीबी और सियाह बख़्ती का पर्दा मज़ीद चाक करके उसकी ख़बासत को बेनक़ाब कर दिया।

ऐतराज़ :

बाज़ लोगों ने इब्ने तैमिया के हवाला से यज़ीद का छड़ी से इमाम पाक के दन्दाने मुबारक को ठोंका देना बिल्कुल ग़लत और झूठ बताया है और लिखा है कि यह वाक़िया इब्ने ज़्याद का है ग़लत फ़हम रावियों ने उसको यज़ीद की तरफ़ मंसूब कर दिया है।

जवाब : इसके मुतअ़ल्लिक़ अर्ज़ यह है कि अल्लामा इब्ने कसीर जो खुद मुख़ालेफ़ीन के नज़्दीक निहायत मोतबर, सिक़ा, मुहद्दिस, मुफ़स्सिर और मुअर्रिख़ हैं और इब्ने तैमिया ही के शागिर्द हैं उन्होंने इस बारे में तीन रिवायतें नक़्ल की हैं।

जब हज़रत हुसैन का सर यज़ीद बिन मुआ़विया के आगे रखा गया तो

उसके हाथ में एक छड़ी थी जिस से वह आपके सामने दाँतों में ठोंका देता था फिर उसने कहा बेशक इसकी और हमारी मिसाल ऐसी है जैसा कि हिसीन इब्नुल-हम्माम अल-मुरी ने कहा कि हमारी तल्वारें ऐसे लोगों की खोपड़ियाँ तोड़ती हैं जो हम पर ग़ालिब थे और वह निहायत नाफ़रमान और ज़ालिम थे। हज़रत अबू बुरज़ा असलमी (सहाबी) ने फ़रमायाः खुदा की क़सम! तू अपनी छड़ी ऐसी जगह पर मार रहा है जिस जगह को मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को चूसते हुए देखा है। फिर फ़रमायाः आगाह हो जा क़ियामत के दिन यह हुसैन आएंगे तो इनके शफ़ीअ़ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) होंगे और तू आएगा तो तेरा शफ़ीअ़ इब्ने ज़्याद होगा फिर वह खड़े हुए और वहाँ से चले गए।

(2) इसी रिवायत को उन्होंने दूसरी सनद से हज़रत जाफ़र से रिवायत किया है।

(3) और इसी रिवायत को उन्होंने तीसरी सनद से हज़रत हसन बसरी से रिवायत किया है। यही रिवायत तारीख़ तबरी 267/6 और इब्ने असीर स० 35/4, और सवाइक़े मुहरिक़ा स० 97 में भी है।

फ! याद रहे कि इब्ने ज़्याद ने जब लकड़ी दन्दाने मुबारक पर मारी थी उस वक़्त वहाँ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि अल्लाहु अ़न्हु थे जिन्होंने इब्ने ज़्याद को उस फ़ेअ़्ले शनीअ़ से मना फ़रमाया : लेकिन यज़ीद ने जब यह नापाक हरकत की तो उसको ख़िताब करने वाले हज़रत अबू बुरज़ा अस्लमी रज़ि अल्लाहु अ़न्हु थे।

अल्लामा इमाम इब्ने हजर मक्की शाफ़ई रहमतुल्लाह अ़लैह रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं।

और जब यज़ीद ने हज़रत हुसैन (रज़ि अल्लाहु अ़न्हु) के सरे मुबारक के साथ बेअदबी की जैसा कि गुज़रा तो उस वक़्त यज़ीद के पास क़ैसरे रूम का सफ़ीर भी मौजूद था। उसने बहुत मुतअ़ज्जब हो कर कहा कि हमारे हाँ एक जज़ीरा के दैर (गिर्जा) में हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के गधे के खुर का निशान अभी तक महफ़ूज़ है सो हम हर साल हदिए नज़राने और तोहफ़े लेकर उसकी ज़्यारत को जाते हैं और उसकी उसी तरह ताज़ीम करते हैं जिस तरह तुम लोग अपने काबा की करते हो। बिला शुबह तुम लोग झूठे और बेहूदा हो। उसी तरह उस वक़्त वहाँ एक ज़िम्मी (यहूदी) भी मौजूद था। उसने कहाः मेरे और (पैग़म्बर) दाऊद अ़लैहिस्सलाम के दरम्यान सत्तर पुश्तें गुज़र चुकी हैं (यानी मैं उनकी औलाद में से हूँ) लेकिन

अब तक यहूदी मेरी ताज़ीम और मेरा एहतेराम करते हैं और तुमने अपने नबी के फ़रज़न्द को इस तरह बेदरेग़ क़त्ल कर दिया।

इसके बाद यज़ीद प्लीद ने हुक्म दिया कि सरों को तीन रोज़ तक दमिश्क़ में फिराओ और शहर के दरवाज़ों पर लटकाओ। चुनांचे मिंहाल बिन अमर फ़रमाते हैं :

ख़ुदा की क़सम! जब हज़रत हुसैन के सर को नेज़े के ऊपर चढ़ाए गलियों बाज़ारों में फिराया जा रहा था तो मैं उस वक़्त दमिश्क़ में था। मैंने बचश्मे ख़ुद देखा कि सरे मुबारक के सामने एक शख़्स सूर-ए-कहफ़ पढ़ रहा था। जब वह इस आयत पर पहुँचा **अम हसिब्ता अन्ना असहाबल-कहफ़े** क्या तूने जाना कि बेशक असहाबे कहफ़ और रक़ीम हमारी निशानियों में से एक अजूबा थे तो अल्लाह तआ़ला ने सरे मुबारक को गोयाई दी। उसने बज़ुबाने फ़सीह कहाः असहाबे कहफ़ के वाक़िया से मेरा क़त्ल और मेरे सर को लिए फिरना अ़जीब तर है।

(शरहुस्सुदूर स० 88, सिर्रुश्शहादतैन स० 35, नूरुल-अब्सार स० 149)

बिला शुबह अ़जीब तर है इसलिए कि असहाबे कहफ़ जिनके ख़ौफ़ से घर बार साज़ व सामान वग़ैरह छोड़ कर निकले और ग़ार में छुपे थे वह लोग काफ़िर थे लेकिन हज़रत इमाम और आपके अह्ले बैत और अंसार के साथ ज़ुल्म व सितम और इंतिहाई बेहुर्मती करने वाले ईमान व इस्लाम के दावेदार थे। असहाबे कहफ़ वलीयुल्लाह थे और यह सैयदुल-अंबिया (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के जिगर के टुक्ड़े थे। असहाबे कहफ़ के साथ ऐसा नहीं हुआ जैसा कि उनके साथ हुआ। असहाबे कहफ़ सालहा साल की तवील नींद के बाद उठे और बोले तो आख़िर वह ज़िंदा थे लेकिन हज़रत इमाम के सरे अनवर का जिस्म से जुदा होने के कई रोज़ बाद नेज़े की नोक पर बोलना यक़ीनन इस वाक़िया से अ़जीब तर है।

फ़अ्तबेरू या ऊलिल-अब्सारे इन्ना हाज़ा लशैयुन उजाबुन।

लिए जाते थे ज़ालिम सरे अक़्दस को नेज़ा पर
पढ़ी क़ारी ने सूरः-ए-कहफ़ की यह आयते अतहर
हमारी आयतों में से अजब यह कहफ़ वाले थे
सरे अक़्दस ने फ़रमाया यह सुन कर हक़ की क़ुदरत से
व आजबु मिन्हु क़त्ली सुम्मा हम्ली पर नज़र करना
कि उस से है अजब तर मेरा क़त्ल और सर लिए फिरना
किए जोरो जफ़ा कुफ़्फ़ार ने उन कहफ़ वालों पर

इधर शह पर मज़ालिम ढाए ख़ुद उम्मत ने बुलवा कर
रफ़ीक़ अहबाब बेटे जो थे सबको क़त्ल कर डाला
शहीद आख़िर में शह को करके अपना मुँह किया काला
रहे बेवा यतीम उनके बनाया उनको भी क़ैदी
फिराए उनके सर नेज़ों पे यह की सख़्त बेदर्दी
अजब है बोलना बादे फ़ना जब कहफ़ वालों का
अ़जीब उससे ज़्यादा क्यों न हो उस सर का फ़रमाना

अ़ल्लामा हाफ़िज़ इमाम अबी अल-ख़त्ताब इब्ने वजीह रहमतुल्लाह अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि जब यज़ीद प्लीद ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु का सरे अनवर दमिश्क़ में लटकवाया तो हज़रत ख़ालिद बिन ग़ुफ़रा रज़ि अल्लाहु अ़न्हु कि अफ़ाज़िल ताबईन से थे, उन्होंने अपने आप को छुपा लिया और एक माह तक बाहर न निकले एक माह के बाद जब बाहर निकले तो लोगों ने उन से उज़्लत का सबब पूछा। उन्होंने फ़रमाया देखते नहीं हो यह कैसा दौरे इब्तिला है? फिर यह अश्आर पढ़े।

तरजमा : ऐ हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की पाक बेटी के पाक फ़रज़न्द (आह)! यह लोग तुम्हारे सरे अनवर को ख़ून आलूदा लाए।

ऐ नवास-ए-रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उन्होंने आपको क़त्ल करके गोया ऐलानिया तौर पर रसूलुल्लाह को क़त्ल किया।

इन ज़ालिमों ने आपको सख़्त प्यास की हालत में क़त्ल किया और यह तदब्बुर नहीं किया कि आपके क़त्ल से क़ुरआन और उसके उलूम जाते रहेंगे।

यह बदबख़्त आपको क़त्ल करके फ़ख़्र व ग़ुरूर में मुब्तला हैं हालाँकि उन्होंने आपके साथ तक्बीर व तहलील का ख़ातमा कर दिया। यानी सरमाय-ए-इस्लाम ख़त्म हो गया। (मरजुल-बहरैन फ़ी फ़वाइदुल-मुशरेक़ैन वल मग़रेबैन) (वल-बिदायह वन्निहायह स० 198/8 मुख़्तसरन)

यज़ीद के घर मातम :

इसके बाद यज़ीद के हुक्म से पहले तो उन सितम रसीदा अफ़राद को एक अलग मकान में रखा गया। बाद में यज़ीद ने अह्ले बैत की औरतों को ख़ास अपने घर में बुला लिया और अपने घर की औरतों से कहा कि उन से अफ़सोस और इज़्हारे हमदर्दी करो। चुनांचे जब अह्ले बैत की बीबियाँ निहायत अबतर हालत में यज़ीद के घर आईं तो यज़ीद के घराने

की कोई औरत ऐसी न थी जो उन से मिलने न आई हो और उसने उनकी हालते ज़ार पर मातम न किया हो। चुनांचे तीन दिन तक यज़ीद के घर में नौहा और मातम बपा रहा।

यज़ीद का सुलूक :

कूफ़ी व शामी वहशियों ने अह्ले बैत अत्हार का सब साज़ व सामान लूट लिया था। ओढ़ने की चादरें तक उतार ली थीं और इब्ने सअ़द के हुक्म के बावजूद किसी ने कोई चीज़ भी वापस न की थी। यज़ीद ने उसकी पूरी पूरी तलाफ़ी की और तमाम औरतों का जिस क़द्र माल व मताअ़ लूट लिया गया था उस से दुगना उनको बसद इसरार दिया। यज़ीद के इस सुलूक पर हज़रत सकीना बिन्ते हुसैन कहा करती थीं।

मैंने किसी काफ़िर बिल्लाह को यज़ीद से बेहतर नहीं देखा।

यज़ीद सुबह व शाम खाने के वक़्त हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन को बुला लिया करता था। एक दिन उनके साथ अमर बिन हुसैन भी थे जो बहुत कमसिन थे। यज़ीद ने उन से कहा : क्या तुम इस जवान यानी मेरे बेटे ख़ालिद से लड़ोगे? इब्ने हुसैन ने कहा : यूँ नहीं, हाँ! एक छड़ी मुझे दे दो और एक छड़ी उसको दे दो, फिर मैं उस से लड़ूँगा। यज़ीद ने उनको पकड़ कर अपने साथ चिमटा लिया और कहाः आख़िर तीनत कैसे बदल सकती है साँप का बच्चा संपोलिए के सिवा और क्या हो सकता है। (इब्ने असीर स० 36/4, तबरी स० 265/6)

अह्ले बैत की मदीना मुनव्वरा वापसी :

फिर यज़ीद ने अह्ले बैते रसूल के बक़िया अफ़राद को मदीना मुनव्वरा भेजवाने से पहले हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन को बुलाया और कहाः ख़ुदा इब्ने ज़्याद पर लानत करे वल्लाह! अगर मैं होता तो हुसैन जो कुछ कहते मान लेता ख़्वाह इसमें मेरा नुक़्सान ही होता लेकिन ख़ुदा को यही मंज़ूर था जो तुमने देखा। बहरहाल तुम्हें किसी क़िस्म की ज़रूरत पेश आए तो मुझे लिख देना। फिर यज़ीद ने हज़रत नौमान बिन बशीर को बुला कर कहा कि इनको ज़रूरी सामाने सफ़र और शरीफ़ क़िस्म के हिफ़ाज़ती दस्ता के साथ बहिफ़ाज़ते तमाम मदीना पहुँचा दो। उन्होंने इस ख़िदमत को बतैयब ख़ातिर क़ुबूल किया और बड़े अदब व एहतेराम और इंतिहाई राहत व आराम के साथ मदीना पहुँचाया।

मुख़द्दराते अह्ले बैत के पाकीज़ा क़ुलूब उनके इस शरीफ़ाना सुलूक और हुस्ने ख़िदमत से बहुत मुतअस्सिर हुए और चाहा कि हुस्ने सुलूक का

उनका कुछ सिला दिया जाए, चुनांचे हज़रत ज़ैनब और हज़रत फ़ातिमा ने सोने के वह ज़ेवरात जो उनको यज़ीद ने उनके ज़ेवरात के बदले में दिए थे उनके पास भेजे और ज़ुबानी कहला भेजा कि इस वक़्त हम माज़ूर हैं हमारे पास इनके सिवा और कुछ नहीं, यह तुम्हारे हुस्ने सुलूक का शुक्राना और सिला है। इसको क़ुबूल कर लो। हज़रत नौमान बिन बशीर ने ज़ेवरात उनको वापस कर दिए और कहाः ख़ुदा की क़सम! हमने दुनियावी मंफ़अ़त के लिए यह ख़िदमत नहीं की बल्कि ख़ुदा की ख़ुशनूदी हासिल करने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की क़राबत की वजह से की है। (तबरी स० 266/6, इब्ने असीर स० 36/4)

करबला से गुज़र :

अ़ल्लामा अबू इसहाक़ असफराईनी अपनी किताब "नूरुल-ऐन फ़ी मुशहदिल-हुसैन" में नक़्ल फ़रमाते हैं कि जब क़ाफ़िला दमिश्क़ से मदीना मुनव्वरा के लिए रवाना हुआ तो रास्ता में अह्ले बैते रसूल ने हज़रत नौमान से कहा कि हमारी यह आरज़ू है कि हमें बरास्ता करबला ले चलें ताकि हम देखें कि हमारे अ़ज़ीज़ों की लाशें उसी तरह बेगौर व कफ़न पड़ी हैं या किसी ने दफ़न कर दीं। उन्होंने यह बात मान ली। चुनांचे यह क़ाफ़िला माहे सफ़र की बीस तारीख़ को करबला पहुँचा। उस दिन हज़रत इमाम की शहादत को चालीस रोज़ गुज़र चुके थे। जब उन बीवियों ने फिर उसी मक़ाम को देखा जहाँ उनको पानी की एक एक बूंद के लिए तरसाया गया था। जहाँ चमने ज़हरा को उजाड़ा गया था। जहाँ गुलशने रिसालत के लहलहाते हुए फूलों को तीरों से छलनी किया गया था। जहाँ राकिबे दोशे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ज़ख़्मों से चूर-चूर करके घोड़े से गिरा कर ख़ाक व ख़ून में तड़पाया गया था, फरज़न्दे रसूल को बरहना करके उनके मुक़द्दस जिस्म को घोड़ों की टापों से पामाल किया गया था, अह्ले बैते रसूल के ख़ेमे जलाए गए थे उन पाक बीवियों का साज़ व सामान लूटा गया था, उन्हें क़ैदी बनाया गया था, एक एक करके वह जाँ गुसल और रूह फरसा मनाज़िर आँखों के सामने आ गए और बेइख़्तियार सब की हिचकियाँ बंध गईं। सैयदा ज़ैनब फ़रमा रही थीं यहाँ हमारे ख़ेमे थे, यहाँ हमारे जानवर बांधे गए थे। यहाँ हमारे जानवरों के कजावे रखे गए थे। फिर भर्राई हुई आवाज़ में फ़रमाया यहाँ भाई अ़ब्बास कटे फटे लेटे थे। यहाँ मेरा अ़ली अक्बर ख़ाक व ख़ून में आलूदा सो गया था। यहाँ मेरा मासूम असग़र मेरा जवान क़ासिम मेरे औन व मुहम्मद के बेसर जिस्म पड़े थे और फिर अपने प्यारे भाई सैयदना इमाम हुसैन का नाम लेते ही उनकी चीख़ें निकल

गईं। इमाम की क़बरे अनवर पर अपना मुँह रख कर के सैयदा ने सलाम किया और इस दर्द से रोईं कि रोते रोते बेहाल हो गईं। सब क़ाफ़िले वालों के रोने की सदाएं बुलन्द हुईं। एक क़ियामत क़ायम हो गई थी बीवियों ने अपने अ़ज़ीज़ों और सैयदुश्शोहदा की क़बरों पर जिन अल्फ़ाज़ में अपने क़ल्बी जज़्बात का इज़हार किया होगा वह कौन ब्यान कर सकता है। एक रात उन सबने वहाँ फ़ातिहा ख़्वानी और ज़िक्र व तिलावत में गुज़ारी। बवक़्ते रुख़्सत सैयदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अ़न्हा अपने भाई को एक बार फ़िर अल-विदाअ़ कहने उनकी क़बर पर आईं, रोते हुए जो कुछ फ़रमाया शाइर ने तरजुमानी की –

बोलीं ज़ैनब यह तुर्बत पे आकर
करबला से मैं जाती हूँ भाई
हिज्र में तेरे हूँ सख़्त मुज़्तर
करबला से मैं जाती हूँ भाई
ख़ून आलूदा तेरा बदन था
और मयस्सर न गौर व कफ़न था
हाए कैसा यह रंज व मेहन था
करबला से मैं जाती हूँ भाई
कोई सर पर हमारे नहीं है
है जो आ़बिद वह ज़ार व हर्ज़ी है
सख़्त कुल्सूम अंदोहगीं है
करबला से मैं जाती हूँ भाई
हाय किस किस को तस्कीन दूँगी
जा के सुग़रा से मैं क्या कहूँगी
हिज्र में कैसे ज़िन्दा रहूँगी
करबला से मैं जाती हूँ भाई

जब यह सितम रसीदा क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा के क़रीब पहुँचा और हज़रत उम्मे कुल्सूम ने जूँ ही मदीने के दर व दीवार देखे तो रोते हुए यह अश्आर कहे :

आह ऐ मदीना खुल्द फ़िज़ा वा मुसीबताह!
अब सामने हमारे न आ वा मुसीबताह!
आते हैं मुब्तलाए बला वा मुसीबताह!
क्या क्या उठाए जोर व जफ़ा वा मुसीबताह!

निकले थे जब तो साथ थे सब लोग हाय अब
कोई न साथ बाक़ी रहा वा मुसीबताह!
निकले थे जब सवार थे बा शौक़त व हशम
अब दिल है शक़ जिगर है फटा वा मुसीबताह!
निकले थे जब हरास न क़ल्ब हर्ज़ी को था
हर दम था हाफ़िज़ अपना खुदा वा मुसीबताह!
लौटे हैं इस तरह कि चादर है एक पास
महरूम हैं और बेनवा वा मुसीबताह!
निकले थे जब तो साठ थे ग़म्ख़्वारे मा हुसैन
सर उनका करबला में कटा वा मुसीबताह!
है नेज़ा के ऊपर सर बेतन हुसैन का
है मिस्ले बद्र जलवा नुमा वा मुसीबताह!
अब उम्र भर है ऐश कहाँ बेक़रार दिल
वह ज़ीनते जहाँ ज़मीन में गया वा मुसीबताह!
हम हैं तबाह हाल नहीं कोई अपने साथ
छाई है दिल पर ग़म की घटा वा मुसीबताह!
रोता है दिल हमारा फिराक़े हुसैन में
है दिल के पार तीरे जफा वा मुसीबताह!
बेपरदा सफ़र किया है ऊँटों पे बैठ कर
हर हर जगह पे दुख था नया वा मुसीबताह!
ऐ वाए हम हैं ऑले नबी फ़ख़्रे काइनात
हूँ इस तरह से वक़्फ़े बला वा मुसीबताह!
जन्नत में हैं रसूल, मुसीबतज़दा हैं हम
हो उन पर अपनी जान फ़िदा वा मुसीबताह!
सब्र व शकीब करते हैं कर्ब व बला में हम
घुटती है रूह ग़म है बड़ा वा मुसीबताह!
अफ़सोस कैसे कैसे हसीन खाक में मिले
किस-किस का हाय ख़ून बहा वा मुसीबताह!
हैं ख़स्ता व सितमज़दा बाक़ी नहीं है अब
जुज़ मर्ग कोई हिर्स व हवा वा मुसीबताह!
नाना तुम्हारे बाद तुम्हारे हुसैन को
उम्मत ने हाय क़त्ल किया वा मुसीबताह!

की आपकी हतक न किया आह कुछ ख़्याल
आफ़त यह कैसी की है बपा वा मुसीबताह!
बेपर्दा हमको ऊँटों के ऊपर किया सवार
कुछ भी न आई शर्म व हया वा मुसीबताह!
ज़ैनब को बेहिजाब निकाला है ख़ेमे से
और फ़ातिमा का कोई न रहा वा मुसीबताह!
भूखी प्यासी आह सकीना तड़प-तड़प
चिल्लाती थी कि आह अख़ा वा मुसीबताह!
आबिद को क़ैद करके दिए लाख लाख दुख
उस पर भी अज़्मे क़त्ल किया वा मुसीबताह!
बेयार और बेकस व बेबर्ग व बे-नवा
शहरों में अपना गश्त हुआ वा मुसीबताह!

मदीना मुनव्वरा में वाक़िय-ए-हाइल-ए-करबला की ख़बरें पहुँच चुकी थीं और जब यह सितम रसीदा क़ाफ़िला शहर में दाख़िल हुआ तो उस क़ाफ़िला को देखने के लिए तमाम अह्ले मदीना और उम्मुल-मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा और हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया अपने घरों से निकल पड़े। हज़रत उम्मे लुक़्मान बिन्ते अक़ील बिन अबी तालिब अपने खानदान की औरतों के साथ रोती हुई निकलीं और कहती थीं :

लोगो क्या जवाब दोगे जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम से पूछेंगे तुमने नबी आख़िरुज़्ज़मा की आख़िरी उम्मत हो कर।

मेरी इतरत और मेरे अह्ले बैत के साथ मेरे बाद क्या सुलूक किया उनमें से कुछ क़ैदी बनाए और कुछ ख़ाक व ख़ून में तड़पाए।

क्या मेरे वअ़ज़ व नसीहत की यह जज़ा थी कि मेरी क़राबत के साथ बुराई करो।

(अल-बिदायह स० **198/8**, तबरी **268/6**, नूरुल-अब्सार स० **202**)

उम्मुल-मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा ने फ़रमाया जिन लोगों ने औलादे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ ऐसा सुलूक किया है अल्लाह तआ़ला उन पर लानत करे और उनके घरों और क़ब्रों को आग से भर दे। उम्मुल-मुमिनीन सैयदा ज़ैनब और दूसरी औरतों से मिल कर इस क़दर रोईं कि बेहोश हो गईं। सबने घरों में जाने को कहा, सैयदना ज़ैनुल-आबेदीन ने फ़रमाया : अब्बा जान की वसीयत थी कि जब कभी मदीना पहुँचो सबसे पहले नाना जान के रौज़-ए-अक़्दस पर जाना। चुनांचे यह क़ाफ़िला सीधा

रौज़-ए-रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर हाज़िर हुआ। हज़रत ज़ैनुल-आ़बेदीन जो अभी तक सब्र व ज़ब्त का पैकर बने हुए ख़ामोश थे। जूँही उनकी नज़र क़बरे अनवर पर पड़ी और अभी इतना ही कहा था नाना जान अपने नवासे हुसैन का सलाम क़ुबूल कीजिए कि उनके सब्र का पैमाना छलक उठा और वह इस दर्द के साथ रोए और आँखों देखे हालात ब्यान करने शुरू किए कि कोहराम बरपा हो गया और क़ियामत क़ायम हो गई। उन्होंने कहा नाना जान जिसे कंधों पर बिठाते थे जिसे फूलों की तरह सूँघते थे जिसे चूमा करते थे ज़ालिम यज़ीदियों ने उसे तल्वारों, नेज़ों और तीरों से छलनी किया। उसका सर जिस्म से जुदा किया नाना! आपकी उम्मत ने आपकी औलाद को इंतिहाई बेकसी की हालत में भूखा प्यासा शहीद किया। हमारे ख़ेमों को जलाया। हमारा माल व असबाब सब लूट लिया। आपकी बेटियों को बेपर्दा किया। उनकी चादरें तक उतार लीं और फिर क़ैदी बना के ऊँटों की नंगी पीठ पर बिठाया और शहरों बाज़ारों में दर बदर फिरा के उनकी तज़्लील व तौहीन की। मुझे भी क़त्ल करने की कोशिशें की ताकि आपकी नस्ल मुन्क़तअ़ हो जाए। मेरे हाथों, पैरों और गर्दन में तौक़ डाले। शोहदा के सरों को नेज़ों के ऊपर चढ़ा कर गली कूचों में फिराया। हमें इब्ने मरजाना और यज़ीद के सामने भरे दरबार में खड़ा किया। आपकी आल औलाद की सख़्त हतक और तज़्लील की गई। अब हम बेयार व मददगार शिकस्ता व ग़मज़दा हालत में सब कुछ लुटा के आए हैं।

नाना तुम्हारे पास करें क्या ब्यान हम
आदा के हाथ से हुए हम मर हैं क्या सितम
कैसे ज़लील व ख़्वार किए आले मुस्तफ़ा
रुसवा किया जहाँ में हमें वा मुसीबताह!

वहाँ से यह लोग ख़ातूने जन्नत दुख़्तरे रसूल मादरे इमाम सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा की क़बरे अतहर पर बक़ीअ़ शरीफ़ में गए और वहाँ भी हाले ग़म कहा।

फिर यह लोग अपने घरो में आए तो ज़नाने बनी हाशिम ने वह गिरिया व नौहा किया कि अब्दुल-मलिक बिन अबी अल-हारिस अरसलमी कहता है :

ख़ुदा की क़सम! मैंने हरगिज़ ऐसा रोना चिल्लाना नहीं सुना जैसा उस दिन बनी हाशिम की औरतें अपने घरों में हुसैन पर रोईं। (तबरी स० **268/6**)

सैयदा ज़ैनब के शौहर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र को जब उनके दोनों फ़रज़न्दों की शहादत की ख़बर मिली तो उनके बाज़ ग़ुलाम और

अहबाब ताज़ियत के लिए आए। उनके एक आज़ाद गुलाम अबुल-लिस्सलास ने कहा : यह मुसीबत हम पर हुसैन ने डाली। हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने एक जूता खींच कर उसको मारा और कहा : ओ बदज़ात के बच्चे! तू हुसैन की निसबत ऐसा कलिमा कहता है? खुदा की क़सम! अगर मैं भी वहाँ होता तो मैं भी अपनी जान उन पर फ़िदा करता। अपने दोनों फ़रज़न्दों की मुसीबत को मैं मुसीबत नहीं समझता। उन्होंने मेरे भाई, मेरे इब्ने अ़म्म की रिफ़ाक़त में सब्र व रज़ा के साथ अपनी जानें कुरबान कीं। खुदा का शुक्र है कि उसने शहादते हुसैन और ग़मे हुसैन में हमें भी शरीक किया। अगर उनकी नुसरत व हिमायत मेरे हाथ से न हुई तो मेरे बच्चो से तो हुई।

(तबरी स० **268/6**, इब्ने असीर स० **37/4**)

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु की वाक़िया करबला के बाद यही कैफ़ियत व हालत रही कि आप दिन को रोज़ा रखते और सारी रात इबादत करते, जब इफ़्तार के वक़्त खाना पानी सामने आता तो फ़रमाते कि मेरे बाप और भाई भूखे प्यासे शहीद हुए अफसोस! यह खाना पानी उनको न मिला और रोने लगते यहाँ तक कि बमुश्किल चन्द लुक़्मे खाते और चन्द घूँट पानी पीते, उन में भी आपके आँसू मिल जाते आँखों से करबला का तसव्वुर और दिल से बाप भाईयों की याद कभी मह्व न हुई। उम्र भर आँखें अश्कबार रहीं अगर कोई सब्र करने को कहता तो फ़रमाते :

हक़ीक़त यह है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर किसी नबी के फ़रज़न्द ने हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा का सा सदमा नहीं उठाया होगा। यह उन्हीं का सब्र व इस्तिक़्लाल था जो ख़ास अ़ताए इलाही था। किसी बाहिम्मत का ज़िक्र ही क्या! इस वाक़िय-ए-जाँ काह और सदम-ए-जाँ फ़रसा के पूरी तरह ब्यान की ज़ुबान व क़लम में भी ताब नहीं।

तादाद शोहदा-ए-अह्ले बैते अत्हार और आवान व अंसार

हज़रत सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के अइज़्ज़ा व अक़्रिबा और आवान व अंसार जो आपके साथ करबला में कुश्त-ए-तेग़ ज़ुल्म व जफ़ा हुए उनकी तादाद में इख़्तिलाफ़ है। बाज़ ने सत्तर, बहत्तर, उन्नासी और ब्यासी और बाज़ ने उस से भी ज़्यादा बतलाए हैं। उन में अह्ले बैत अत्हार की तादाद और अस्माए गिरामी मुन्दरजा ज़ैल हैं।

ताजदारे करबला हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु।

अबुल-फ़ज़ल हज़रत अ़ब्बास अलमदार, हज़रत अबू बकर, उनको अ़ब्दुल्लाह भी कहते थे, हज़रत उमर, हज़रत उसमान, हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हुम हज़रत इमाम के अख़्याफ़ी भाई। बाज़ ने हज़रत मुहम्मद बिन अली का नाम भी लिखा है।

हज़रत क़ासिम, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर बिन हसन बिन अली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अन्हुम। हज़रत इमाम के भतीजे और बाज़ ने हज़रत उसमान बिन हसन को भी लिखा है।

हज़रत मुहम्मद, हज़रत औ़न बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र तैयार रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम हज़रत इमाम के भाँजे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान, हज़रत जाफ़र बिन अ़क़ील बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम और हज़रत मुस्लिम जो पहले कूफ़ा में दोनों फ़रज़न्दों मुहम्मद व इब्राहीम के साथ शहीद हुए हज़रत इमाम के चचाज़ाद भाई और उनके फ़रज़न्द। बाज़ ने हज़रत मुस्लिम और औ़न को भी लिखा है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अ़क़ील रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम

(इब्ने चचाज़ाद)

हज़रत अ़ली अक्बर, हज़रत अ़ली असग़र बिन हुसैन बिन अ़ली इब्ने अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम (बेटे) सलाम हो करबला के उन अ़ज़ीम शहीदों पर जिनका मुक़द्दस ख़ून शजरे इस्लाम की ताज़गी और मिल्लते इस्लामिया की किताबे हयात का उनवान बना।

शहीद की जो मौत है वह क़ौम की हयात है

तादादे असीराने करबला :

हज़रत इमाम ज़ैनुल-आबेदीन अ़ली औसत। हज़रत उमर बिन हुसैन बिन अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम हज़रत इमाम के फ़रज़न्द। बाज़ ने हज़रत अ़मर बिन हसन लिखा है जो दुरुस्त नहीं मालूम होता।

हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम। (भतीजे)

हज़रत ज़ैनब व हज़रत उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम। (बहनें)

हज़रत फ़ातिमा व हज़रत सकीना बिन्ते हुसैन बिन अ़ली बिन अबी तालिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम। (बेटियाँ)

हज़रत शहर बानो बिन्ते यज़्द जुर्द बिन शहरयार जो शाहे फ़ारस किसरा की पोती थीं। (बीवी)

हज़रत रुबाब बिन्ते इमर-उल-कैस बिन अदी। (बीवी)

हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु अन्हु की ज़ौजा-ए-मोहतरमा हज़रत रुबाब जो हज़रत सकीना की वालिदा हैं हज़रत इमाम उन से बहुत मुहब्बत रखते थे। चुनांचे हज़रत सकीना फ़रमाया करती थीं कि एक मरतबा मेरे चचा हज़रत इमाम हसन मेरी वालिदा के मुआमले में मेरे वालिद हज़रत हुसैन पर ख़फ़ा हुए तो मेरे वालिद ने उन से कहा :

तुम्हारी जान की क़सम! मैं उस घर को भी महबूब रखता हूँ जिसमें सकीना और रुबाब हों।

मैं उन दोनों को महबूब रखता हूँ और उन पर अपना सारा माल ख़र्च करता हूँ और किसी मलामत व एताब करने वाले का एताब व मलामत मेरे नज़्दीक एताब नहीं है।

हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु अन्हु की यह ज़ौज-ए-मोहतरमा हज़रत रुबाब निहायत नेक और सालेहा थीं। हज़रत इमाम की शहादत के बाद कुछ लोगों ने उनको पैग़ामे निकाह भेजा तो उन्होंने फ़रमाया: मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहू बनने के बाद किसी और की बहू नहीं बनना चाहती। हज़रत इमाम की शहादत का उनको बहुत सदमा हुआ, चुनांचे उन्होंने आपकी शहादत के बाद चन्द अश्आर बतौर मरसिया कहे।

बेशक वह हज़रत इमाम जो सरापा नूर थे और उन से रौशनी हासिल की जाती थी वह करबला में क़त्ल हो कर बेगौर कफ़न पड़े थे।

ऐ फ़रज़न्दे नबी! अल्लाह आपको बहुत अच्छी जज़ा दे हमारी तरफ़ से और मीज़ान के नुक़सान से दूर रखे।

बेशक मेरे लिए आपकी ज़ात एक ऐसे पहाड़ की मानिन्द थी जिसमें मैं पनाह हासिल करती थी और आप बड़ी भलाई और रहमत व मुहब्बत के साथ हमारे साथ सोहबत रखते थे।

अब यतीमों और साइलों के लिए कौन है जिसके पास हर मिस्कीन व ग़रीब को पनाह मिलेगी।

खुदा की क़सम! आपकी क़राबत के बाद अब मैं कोई क़राबत न ढूँढूँगी यानी दूसरा शौहर न करूँगी यहाँ तक कि रेत और मिट्टी में ग़ायब कर दी जाऊँ यानी मर जाऊँ।

वाक़िया-ए-करबला के बाद हज़रत सैयदा रुबाब एक बरस ज़िन्दा रहीं और इस मुद्दत में कभी साया में नहीं बैठीं। (नूरुल-अब्सार स० 192)

और बाज़ कहते हैं कि यह साल भर करबला में रहीं और फिर मदीना

मुनव्वरा तशरीफ़ लाईं और अपने शौहर हज़रत इमाम हुसैन के ग़म और फ़िराक़ में वफ़ात पा गईं रज़ि अल्लाहु अन्हा।

यज़ीदी मक़्तूलीन की तादाद :

अगरचे तबरी और इब्ने असीर में उनकी तादाद अट्ठासी लिखी है मगर यह रिवायत सही नहीं मालूम होती इसलिए कि मुख़्तसर तबरी में निहायत वसूक़ के साथ लिखा है कि मुख़ालेफ़ीन के सैंकड़ों क़त्ल हुए। एह हज़रत हुर्र ही ने पहले हमला में चालीस यज़ीदियों को मारा। इसी तरह दूसरे हाशमी जवानों और फ़ातेह ख़ैबर के शेरे दिल बहादुरों और मज़्हरे हिम्मत व जुरअते रसूल, राकिबे दोशे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत इमाम हुसैन ने सैंकड़ों मल्ऊनों को वासिल बेही जहन्नम किया। वल्लाहु आलम।

मदफ़ने सरे अनवर :

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे अनवर के मदफ़न में इख़्तिलाफ़ है। अल्लामा कुरतबी और शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि यज़ीद ने असीराने करबला और सरे अनवर को मदीना तैयबा रवाना किया और मदीना तैयबा में सरे अनवर की तज्हीज़ व तक्फ़ीन के बाद हज़रत सैयदा फ़ातिमा ज़हरा हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के पहलू में दफ़न कर दिया गया। इमामिया कहते हैं कि असीराने करबला ने चालीस रोज़ के बाद करबला में आ कर जस्दे मुबारक से मिला कर दफ़न किया।

बाज़ कहते हैं कि यज़ीद ने हुक्म दिया था कि हुसैन के सर को शहरों में फिराओ।" फिराने वाले जब अस्क़लान पहुँचे तो वहाँ के अमीर ने उन से लेकर दफ़न कर दिया। जब अस्क़लान पर फ़िरंगियों का ग़लबा हुआ तो तलाए बिन रिज़्ज़ीक, जिसको सालेह कहते हैं नाइबे मिस्र ने तीस हज़ार दीनार देकर फ़िरंगियों से सरे अनवर लेने की इजाज़त हासिल की और नंगे पैर वहाँ से मआ अपने सिपाह व खुद्दाम के मुअर्रख़ा 8 जमादल आख़िर 548 हिजरी बरोज़ इतवार मिस्र में लाया। उस वक़्त भी सरे अनवर का ख़ून ताज़ा था और उस से मुश्क की सी खुश्बू आती थी। फिर उसने सब्ज़े हरीर की थैली में आबनूस की कुर्सी पर रख कर इसके हम वज़न मुश्क व अंबर और खुश्बू उसके नीचे और इर्द गिर्द रखवा कर उस पर मुश्हिदे हुसैनी बनवाया। चुनांचे करीब ख़ान ख़लीली के मुश्हिदे हुसैनी मशहूर है। शैख़ शहाबुद्दीन बिन अतलबी हन्फ़ी फ़रमाते हैं कि मैंने मुश्हिद में सरे मुबारक की ज़ियारत की मगर मैं इसमें मुतरद्दिद और मुतवक्क़िफ़ था कि सरे मुबारक

इस मक़ाम पर है या नहीं? अचानक मुझको नींद आ गई मैंने ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स बसूरत नक़ीब सरे मुबारक के पास से निकला और हुज़ूर पुर-नूर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास हुजर-ए-नब्वीया में गया और जा कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! अहमद बिन हलबी और अ़ब्दुल-वहाब ने आपके बेटे हुसैन के सरे मुबारक के मदफ़न की ज़ियारत की है। आपने फ़रमाया **अल्लाहुम्मा तुक़्बिला मिन्हुमा वग़्फ़िरलहुमा।** ऐ अल्लाह! उन दोनों की ज़ियारत को कुबूल फ़रमा और उन दोनों को बख़्श दे! शैख़ शहाबुद्दीन फ़रमाते हैं कि उस दिन से मेरा यक़ीन हो गया कि हज़रत इमाम का सरे अनवर यहीं है। फिर मैंने मरते दम तक सरे मुकर्रम की ज़ियारत नहीं छोड़ी। (तब्क़ातुल-औलिया लिश्शेअ़रानी)

शैख़ अ़ब्दुलफ़त्ताह बिन अबी बकर बिन अहमद शाफ़ई ख़ल्वती अपने रिसाला नूरुल-ऐन में फ़रमाते हैं कि ख़ातिमतुल-हुफ़्फ़ाज़ वल-मुहद्देसीन शैखुल-इस्लाम वल-मुस्लेमीन नज्मुद्दीन ग़ैती रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने शैखुल-इस्लाम शम्सुद्दीन लुक़्मानी से जो अपने वक़्त के शैखुश्शुयूखे मालिकीया थे नक़्ल फ़रमाया है कि वह हमेशा मुश्हिद मुबारक में सरे अनवर की ज़ियारत को हाज़िर होते और फ़रमाते कि हज़रत इमाम का सरे अनवर इसी मक़ाम पर है।

हज़रत शैख़ ख़लील अबी अल-हसन तिम्मारसी रहमतुल्लाह अ़लैह सरे अनवर की ज़ियारत को तशरीफ़ लाया करते थे जब ज़रीह मुबारक के पास आते तो कहते **अस्सलामु अ़लैकुम या इब्ना रसूलिल्लाह** जवाब सुनते **व अ़लैकस्सलामु या अबल-हसन।** एक दिन सलाम का जवाब न पाया। हैरान हुए और ज़ियारत करके वापस आ गए। दूसरे रोज़ फिर हाज़िर हो कर सलाम किया तो जवाब पाया। अ़र्ज़ किया या सैयदी कल जवाब से मुशर्रफ़ न हुआ क्या वजह थी? फ़रमाया : ऐ अबुल-हसन! कल उस वक़्त मैं अपने जद्दे अम्जद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर था और बातों में मश्गूल था।

इमाम अ़ब्दुल-वहाब शेअ़रानी फ़रमाते हैं कि अकाबिर सूफ़िया अह्ले कश्फ़ सूफ़िया इसी के क़ाइल हैं कि हज़रत इमाम का सरे अनवर इसी मक़ाम पर है। शैख़ करीमुद्दीन ख़ल्वती फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इजाज़त से इस मक़ाम की ज़ियारत की है।

करामत सरे अनवर :

सुल्तान मलिक नासिर को उसके चन्द मातहतों ने एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ इत्तिला दी कि यह शख़्स जानता है कि उस महल में माल व

ज़र कहाँ दफ़न है मगर यह बताता नहीं। सुल्तान ने उसकी तअ़्ज़ीब का हुक्म दिया मुतवल्ली तअ़्ज़ीब ने उसको पकड़ा और उसके सर पर ख़नाफ़िस लगाई और उस पर क़िर मिज़ बांधा। यह सख़्त तरीन अ़क़ूबत और सज़ा है इसको चन्द मिनट भी इंसान बर्दाश्त नहीं कर सकता। दमाग़ फटने लगता है और कुछ देर के बाद आदमी मर जाता है। यह सज़ा उसको कई मरतबा दी गई मगर उसको कुछ असर न हुआ बल्कि हर मरतबा ख़नाफ़िस मर जाते थे। लोगों ने उस से उसका सबब पूछा। उसने बताया कि जब हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु का सरे मुबारक यहाँ मिस्र में आया था मैंने उसको अ़क़ीदत से अपने सर पर उठाया था यह उसी की बरकत और करामत है। (ख़ुत्तत वल-आसार लिल-मुक़रीज़ी)

एक रिवायत यह है कि सरे अनवर यज़ीद के ख़ज़ाना ही में रहा। जब सुलेमान बिन अ़ब्दुल-मलिक का दौरे हुकूमत आया और उसको मालूम हुआ तो उसने सरे अनवर को मंगवा कर देखा। उस वक़्त उसकी हड्डियाँ सफ़ेद चाँदी की तरह चमक रही थीं। उसने ख़ुशबू लगाई और कफ़न देकर मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न कराया। (तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 357/2)

चुनांचे अ़ल्लामा इब्ने हजर हतीमी मक्की रिवायत फ़रमाते हैं कि सुलेमान बिन अ़ब्दुल-मलिक ने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप उसके साथ मुलातिफ़त फ़रमा रहे हैं और उसको बशारत दे रहे हैं। सुबह उसने हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ि अल्लाहु अ़न्हु से उसकी ताबीर पूछी। उन्होंने फ़रमाया : शायद तूने हज़रत की आल के साथ कोई भलाई की है?

उसने कहा हाँ! मैंने हुसैन के सर को ख़ज़ान-ए-यज़ीद में पाया तो मैंने उसको पाँच कपड़ों का कफ़न देकर अपने दोस्तों के साथ उस पर नमाज़ पढ़ कर उसको दफ़न किया। हज़रत हसन ने उस से कहा : यही तेरा काम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रज़ामन्दी का सबब हुआ है। (सवाइक़े मुहरिक़ा स० 197)

नाचीज़ मुअल्लिफ़ अ़र्ज़ करता है कि सरे अनवर के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मुशाहिद बने हुए हैं तो यह भी हो सकता है कि इन रिवायात और मुशाहिद का तअ़ल्लुक़ चन्द सरों से हो क्योंकि यज़ीद के पास सब शोहदाए अह्ले बैत के सर भेजे गए थे तो कोई सर कहीं और कोई कहीं दफ़न हुआ हो और निसबत हुस्ने अ़क़ीदत की बिना पर या किसी और वजह से सिर्फ़ हज़रत इमाम हुसैन

की तरफ़ कर दी गई हो। वल्लाहु आलम बेहक़ीक़तिल-हाले।

वाक़-ए-करबला के बाद यज़ीद का किरदार :

हज़रत इमाम की शहादत के बाद भी यजीद ने कोई अच्छा काम नहीं किया बल्कि उसकी शक़ावत व बदबख़्ती और क़सावते क़ल्बी इस क़द्र ज़्यादा हो गई और उसने वह गुल खिलाए और सियाह कारनामे अंजाम दिए जिस से इंसानियत शर्म से पसीना पसीना हो जाती है। उसके अ़हद में ऐलानिया तौर पर बदकारियाँ होने लगीं। चुनांचे हराम कारी यानी ज़िना व लेवातत, मुहरिमात से निकाह, सूद और शराब ख़ोरी आम हो गई अल-अयाज़ बिल्लाह! इसी वजह से लोग खुसूसन अह्ले हिजाज़ उसके सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और उन्होंने उसकी बदकारियों की वजह से उसकी बैअ़त तोड़ दी। चुनांचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हंज़ला गुसैलुल-मलाइका रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं :

खुदा की क़सम! हम लोगों ने यज़ीद की बैअ़त उस वक़्त तोड़ दी जबकि हमें यह ख़ौफ़ हुआ कि (कहीं उसकी बदकारियों की वजह से) हम पर आसमान से पत्थर न बरसने लगें। बिला शुबह वह माओं, बेटियों और बहनों से निकाह करता, शराब पीता और नमाज़ नहीं पढ़ता था।

(तारीखुल-खुलफ़ा, सवाइक़े मुहरिक़ा)

जब यज़ीद ने देखा कि अह्ले हरमैन मेरे सख़्त ख़िलाफ़ हो गए और मेरी बैअ़त से ख़ारिज हो गए हैं और उनका खुरूज दूसरे इलाक़ों के लोगों के खुरूज का बाइस बनेगा क्योंकि हरमैने इस्लाम का मरकज़ और दिल हैं और इस तरह मेरा इक़्तिदार ख़तरे में पड़ जाएगा तो उसने मुस्लिम बिन उक़्बा को बीस हज़ार का लश्करे गिराँ देकर मदीना तैयबा और मक्का मुकर्रमा पर हमला करने के लिए भेजा। उस बदबख़्त लश्कर ने मदीना मुनव्वरा में वह तूफ़ाने बदतमीज़ी बरपा किया जिसके तसव्वुर से रूह तड़प उठती है। साकिनीन मदीना मुनव्वरा हम्सायागाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर मज़ालिम की इंतिहा कर दी। क़त्ल व ग़ारत, लूट मार और आबरू रेज़ी की वह गर्म बाज़ारी हुई कि तौबा तौबा! अह्ले हरम से यज़ीद की गुलामी पर बजब्र बैअ़त कर ली कि चाहे बेचे चाहे आज़ाद करे। जो कहता कि मैं खुदा व रसूल के हुक्म पर और किताब व सुन्नत की इताअत पर बैअ़त करता हूँ उसको शहीद करते। चुनांचे बहुत से लोग शहर छोड़ कर भाग गए और जो नहीं भागे उनमें से सत्तरह सौ मुहाजेरीन व अंसार सहाब-ए-किबार ताबईन और सात सौ हुफ़्फ़ाज़े कुरआन और छोटे

बड़े और मस्तूरात सब मिला कर दस हज़ार के क़रीब शहीद हुए। उनके घर लूट लिए। ज़ालिमों ने तीन रोज़ के लिए मदीना तैयबा को मुबाह क़रार देकर उसमें तीन रोज़ में जिस बरबरीयत और दरिन्दगी का मुज़ाहरा किया उसका तफ़्सीलन ज़िक्र करना सख़्त नागवार है। मदीना तैयबा की रहने वाली पाक दामन औरतों की इज़्ज़त व आबरू को लूटा। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अ़न्हु जलीलुल-क़द्र सहाबी हैं उनकी दाढ़ी के सब बाल उखाड़ दिए और उनकी सख़्त बेइज़्ज़ती की। इस फ़ौजे अश्क़िया ने मस्जिदे नब्वी शरीफ़ के सुतूनों से घोड़े बाँधे। उन तीन दिनों में कोई मस्जिदे पाक में नमाज़ के लिए नहीं आया। हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हु किबारे ताबईन में से थे वह मज्नूँ बन कर मस्जिदे पाक में ही हाज़िर रहे। ज़ालिमों ने उनको भी पकड़ा और मुस्लिम बिन उक़्बा के पास ले गए मुस्लिम बिन उक़्बा ने कहा इसकी भी गर्दन मारो। हज़रत सईद दीवानों की सी हरकतें करने लगे। एक शख़्स ने कहा यह तो मज्नूँ है। इस वजह से उनको छोड़ दिया।

इन्हीं सईद बिन मुसैय्यिब रज़ि अल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि उन तीन दिनों में मस्जिद शरीफ़ में मेरे सिवा कोई न था। अह्ले शाम मस्जिद में आते और मुझे देख कर कहते : यह बूढ़ा दीवाना यहाँ क्या कर रहा है? हज़रत सईद फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ के वक़्त रौज़-ए-मुक़द्दसा से बराबर अज़ाने इक़ामत और जमाअ़त के होने की आवाज़ सुनता था। चुनांचे मैंने तीन दिन की नमाज़ें उसी जमाअ़त की इक़्तिदा में अदा कीं और कोई मेरे साथ न होता था। एक नौजवान को उस लश्करे शरीर ने पकड़ लिया। उसकी माँ ने मुस्लिम बिन उक़्बा के पास आकर फ़रियाद की और उसकी रिहाई के लिए बहुत मन्नत समाजत की। मुस्लिम ने हुक्म दिया इसके लड़के को लाओ। जब वह आया तो मुस्लिम ने उसकी गर्दन मार कर उसका सर उसकी माँ के हाथ में दे दिया और कहा कि तू अपने ज़िन्दा रहने को ग़नीमत नहीं समझती कि बेटे को लेने आई है।

जब मुस्लिम बिन उक़्बा बद-किरदार ने अह्ले मदीना को यज़ीद प्लीद की बैअ़त की बतरीक़ मज़्कूर दावत दी तो कुछ लोगों ने जान व माल के ख़ौफ़ से बैअ़त कर ली। एक शख़्स क़बील-ए-कुरैश से था उसने बवक़्ते बैअ़त यह कहा कि मैंने बैअ़त की मगर इताअत पर, मुसीबत पर नहीं। मुस्लिम ने उसके क़त्ल का हुक्म दिया। जब उसको क़त्ल कर दिया गया तो उस मक़्तूल की माँ उम्मे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन रबीआ़ ने क़सम

खाई कि अगर मैं क़ुदरत पाऊँगी तो उस ज़ालिम मुस्लिम को ज़रूर ज़िन्दा या मुर्दा जलाऊँगी। चुनांचे जब उस ज़ालिम ने मदीना मुनव्वरा में क़त्ल व ग़ारत के बाद अपना रूए बद मक्का मुअज़्ज़मा की तरफ़ किया ताकि वहाँ जा कर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और वहाँ के उन लोगों का भी काम तमाम करे जो यज़ीद के ख़िलाफ़ हैं तो इत्तिफ़ाक़न रास्ता में उस पर फ़ालिज गिरा और वह मर गया। उसकी जगह यज़ीद प्लीद के हुक्म के मुताबिक़ हिसीन बिन नुमैर तिकोनी क़ाइदे लश्कर बना। मुस्लिम को उन्होंने वहीं दफ़न कर दिया। जब यह लश्करे बद आगे बढ़ गया तो उस औरत को मुस्लिम के मरने का पता चला। वह चन्द आदमियों को साथ लेकर उसकी क़ब्र पर आई ताकि उसको क़ब्र से निकाल कर जलाए। अपनी क़सम पूरी कर ले। जूँ ही क़बर खोदी तो क्या देखा कि एक अज़्दहा उसकी गर्दन से लिपटा हुआ उसकी नाक की हड्डी पकड़े चूस रहा है। यह देखकर सबके सब डरे और उस औरत से कहने लगे कि ख़ुदा तआला ख़ुद ही उसके आमाल की सज़ा उसको दे रहा है और उसने अज़ाब का फ़रिश्ता उस पर मुसल्लत कर दिया है, अब तो उसको रहने दे। उस औरत ने कहा : नहीं ख़ुदा की क़सम! मैं अपने अहद और क़सम को ज़रूर पूरा करूँगी और उसको जला कर अपने दिल को ठंडा करूँगी। मज्बूर हो कर सबने कहा: अच्छा, फिर उसको पैरों की तरफ़ से निकालना चाहिए। जब उधर से मिट्टी हटाई तो क्या देखा कि उसी तरह पैरों की तरफ़ भी एक अज़्दहा लिपटा हुआ है। फिर सबने उस औरत से कहा अब उसको छोड़ दे उसके लिए यही अज़ाब काफ़ी है मगर उस औरत ने न माना और वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला के हुज़ूर हाथ उठा कर दुआ माँगी। इलाही! तू ख़ूब जानता है कि उस ज़ालिम पर मेरा गुस्सा तेरी रज़ा के लिए है मुझे यह क़ुदरत दे कि मैं अपनी क़सम पूरी करूँ और उसको जलाऊँ। यह दुआ करके उसने एक लकड़ी साँप की दुम पर मारी। वह गर्दन से उतर कर चला गया। फिर दूसरे साँप को मारी वह भी चला गया। चुनांचे उन्होंने मुस्लिम की लाश को क़ब्र से निकाला और जला दिया।

उस मरदूद मुस्लिम बिन उक़्बा ने क़त्ल व ग़ारत और हतके हुर्मत मदीना में इस क़द्र ज़्यादती और इसराफ़ किया कि उसके बाद उसका नाम ही मुसरिफ़ हो गया।

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

जिसने किसी मुसलमान को अज़ीयत पहुँचाई तो हक़ीक़त में उसने मुझे अज़ीयत पहुँचाई और जिसने मुझे अज़ीयत पहुँचाई उसने दर हक़ीक़त अल्लाह को अज़ीयत पहुँचाई। (सिराजे मुनीर शरह जामे सग़ीर स 280/8)

अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

जिसने मेरे एक बाल को भी अज़ीयत पहुँचाई उसने हक़ीक़त में मुझे अज़ीयत पहुँचाई और जिसने मुझे अज़ीयत पहुँचाई उसने अल्लाह को अज़ीयत पहुँचाई। अबू नईम की रिवायत में यह भी है कि उस पर अल्लाह की लानत हो। (सिराजे मुनीर शरह जामे सग़ीर स० 279/3)

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

जो शख़्स अह्ले मदीना के साथ बुराई का इरादा करेगा अल्लाह तआला उसको इस तरह पिघलाएगा जिस तरह नमक पानी में घुल जाता है। (मुस्लिम शरीफ़ स० 445/1)

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

जो शख़्स भी अह्ले मदीना के साथ बुराई का इरादा करेगा उसको दोज़ख़ की आग में रांग की तरह पिघला देगा।

हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

जो शख़्स भी अह्ले मदीना को डराएगा अल्लाह उसको क़ियामत के दिन डराएगा और एक रिवायत में है कि उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और लानत है। (सहीह इब्ने हिब्बान सिराजे मुनीर स० 288/3)

हज़रत उबादह बिन सामित रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया।

जो अह्ले मदीना को ज़ुल्म से ख़ौफ़ज़दा कर दे अल्लाह उसको ख़ौफ़ज़दा कर देगा और उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत है क़ियामत के दिन उसकी फ़र्ज़ी इबादत क़ुबूल होगी न नफ़्ली। (वफ़ाउल-वफ़ा स० 32, जज़्बुल-कुलूब स० 33)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

जो अह्ले मदीना को अज़ीयत देगा अल्लाह उसको अज़ीयत देगा और

उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लानत है न उसका फर्ज़ कुबूल होगा और न नफ़्ल। (सिराजे मुनीर स० 280/3)

इन अहादीसे मुबारका से साबित हुआ कि जो किसी मुसलमान को अज़ीयत पहुँचाए उसने दर हक़ीक़त अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अज़ीयत पहुँचाई ख़ुसूसन अह्ले मदीना को डराए अज़ीयत पहुँचाए बल्कि उन से बुराई का इरादा भी कर ले तो अल्लाह तआ़ला उसको नारे दोज़ख़ में पिघला देगा और उस पर अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की लानत है और उसकी कोई इबादत और नेकी कुबूल नहीं। गुज़श्ता सफ़्हात में गुज़र चुका है कि यज़ीद पलीद और उसके आवान व अंसार ने अह्ले बैते नुबुव्वत और अह्ले मदीना मुनव्वरा की वह तौहीन तज़्लील की और उनको ऐसी तक्लीफ़ व अज़ीयत पहुँचाई कि उसके तसव्वुर ही से रूह तड़प उठती है लिहाज़ा बिला शुबह यज़ीद और उसके आवान व अंसार मुस्तहिक़े लानत हैं।

अल्लाह तआ़ला फरमाता है :

बेशक वह लोग जो अल्लाह और उसके रसूल को अज़ीयत पहुँचाते हैं उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की लानत है और उनके लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। (अल-कुरआन अहज़ाब)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फरमाते हैं कि यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ और उसके साथियों के बारे में नाज़िल हुई जबकि उन्होंने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा पर तोहमत लगाई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने खुतबा दिया और फ़रमाया : (दुर्रे मंसूर स० 220/5)

कौन मेरी मदद करता है उस शख़्स के बारे में जिसने (मेरी बीवी पर तोहमत लगा कर) मुझे अज़ीयत पहुँचाई? मक़ामे ग़ौर है कि जिसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ौज-ए-मोहतरमा को सताया उसने अल्लाह व रसूल को अज़ीयत पहुँचाई और मुस्तहिक़े लानत हुआ तो यज़ीद प्लीद और उसके आवान व अंसार ने अह्ले बैते नुबुव्वत और सहाबा और ताबईन और अह्ले मदीना के साथ जो कुछ किया वह तो उसके मुक़ाबले में बहुत ही ज़्यादा है और उसके बाद मक्का मुकर्रमा में जो कुछ हुआ वह मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

मक्का मुकर्रमा पर हमला :

गुज़श्ता सफ़्हात में ज़िक्र हो चुका है कि यज़ीद ने तख़्त नशीन होते

ही गवर्नर मदीना वलीद बिन उत्बा के ज़रिए हज़रत इमाम हुसैन, हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम से बैअ़त तलब की थी। हज़रत इमाम हुसैन तो गवर्नर मदीना के बुलाने पर उसके पास तशरीफ़ ले गए थे मगर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर गवर्नर के पास नहीं गए थे और उसी रात वहाँ से हिजरत फ़रमा कर मक्का मुकर्रमा में आ गए। मक्का मुकर्रमा हिजरत के बाद से अब तक वह हरम की पनाह में ही सुकून व इत्मीनान की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। जब अह्ले हिजाज़ यज़ीद की हरकाते बद की वजह से उसे से सख़्त मुतनफ़्फ़िर हो गए तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने अह्ले मक्का को जमा होने की दावत दी और उनके सामने एक मुअस्सिर तक़रीर फ़रमाई जिसका ख़ुलासा यह है कि –

अह्ले इराक़ ख़ुसूसन अह्ले कूफ़ा ऐसे ग़द्दार व बदकार और बदतरीन हैं कि उन्होंने फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बुलाया कि उनकी नुसरत व इम्दाद करेंगे और उनको अपना फ़रमाँरवा बनाएंगे। मगर उन ग़द्दारों ने ऐसा न किया बल्कि वह हुकूमते यज़ीद के साथ मिल गए और फिर ख़ुद फ़रज़न्दे रसूल से लड़ने के लिए मैदान में आ गए। हज़रत हुसैन ने ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर इज़्ज़त की मौत को तरजीह दी और दुश्मन के अंबोह कसीर के सामने गर्दने इताअत न झुकाई। ख़ुदा तआला उन पर रहम फ़रमाए और उनके क़ातिलों को ज़लील करे। हज़रत हुसैन के साथ जो कुछ उन लोगों ने किया है। उसके बाद क्या हम उन लोगों से किसी तरह मुत्मइन हो सकते हैं? और उनकी इताअ़त कुबूल कर सकते हैं हरगिज़ नहीं? ख़ुदा की क़सम! बिलाशुबह उन्होंने ऐसे शख़्स को क़त्ल किया है जो क़ाइमुल्लैल और साइमुन्नहार था जो उन से इन उमूर (हुकूमत) का ज़्यादा हक़दार था और अपने दीन और फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी में उन से बहुत ज़्यादा बेहतर था। ख़ुदा की क़सम! वह कुरआन के बदले गुम्राही फैलाने वाला न था। अल्लाह तआ़ला के ख़ौफ़ से उसके गिरया व बका की कोई इंतिहा न थी वह रोज़ों को शराब के पीने से नहीं बदला करता था और न उसकी मज्लिस में ज़िक्रे इलाही की बजाए शिकारी कुत्तों का ज़िक्र होता था। (यह बातें इब्ने ज़ुबैर ने यज़ीद के मुतअ़ल्लिक़ कहीं थीं) पस अंक़रीब यह (यज़ीदी) लोग जहन्नम की वादी अ़न्नी में जाएंगे।

(इब्ने असीर स० 40/4, तबरी स० 273/6)

इस तक़रीर के बाद लोग उनकी तरफ़ दौड़े और कहा कि आप अपनी

बैअत का ऐलान करें। चुनांचे उन्होंने ऐलान कर दिया। मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के सब लोगों ने सिवाए हज़रत इब्ने अ़ब्बास और मुहम्मद बिन हन्फीया के उनके हाथ पर बैअ़त कर ली। उन्होंने यज़ीद के तमाम आमिलों को मक्का व मदीना से निकाल दिया और हिजाज़े मुक़द्दस से यज़ीद की हुकूमत का ख़ातमा हो गया। यज़ीद को इन हालात की ख़बर हुई तो उसने एक बहुत बड़ा लश्कर मदीना मुनव्वरा और मक्का मुकर्रमा पर हमला करने के लिए भेजा इस लश्कर ने मदीना मुनव्वरा में जो कुछ किया वह आप पढ़ चुके हैं।

अब इस लश्करे शरीर ने हिसीन बिन नुमैर की क़ियादत में मक्का मुकर्रमा पहुँच कर हमला किया और चौंसठ रोज़ तक बराबर मक्का मुकर्रमा का मुहासरा करके लोगों को क़त्ल करते रहे और मिंजिनीक़ों से इस क़द्र संगबारी की कि सहने कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा को पत्थरों से भर दिया।

उन्होंने कअ़बतुल्लाह पर मिंजिनीक़ें नसब कर दीं और कअ़बा पर संगबारी की यहाँ तक कि आग लग गई और काअ़बतुल्लाह का ग़िलाफ़ और दीवारें जल गईं। संगबारी करते वक़्त वह यह शेअ़र पढ़ रहे थे।

यह मिंजिनीक़ मिस्ल मोटे कफ़दार ऊँट के है जिस से हम इस मस्जिद की दीवारों पर संगबारी कर रहे हैं। चुनांचे इस संगबारी से मस्जिदुल-हराम के सुतून टूट गए और दीवारें शिकस्ता हो गईं।

अ़मर बिन हौततुस्सुदौसी यह शेअ़र पढ़ता था।

ज़रा उम्मे फुरवा यानी मिंजिनीक़ को देखो कि वह कैसे सफ़ा व मरवा के दरम्यान लोगों ने निशाना बना रही है। (अल-बिदायह वन्निहायह स० 225/8, तबरी स० 14/7, इब्ने असीर स० 49/4)

ग़रज़ इन बेदीनों लईनों ने इंतिहाई बरबरीयत और दरिन्दगी का मुज़ाहरा किया। हरम शरीफ़ के बाशिन्दे दो माह तक सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे। कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा कई रोज़ तक बेलिबास रहा। उसकी छत जल गई। दीवारें शिकस्ता हो गईं। यह इंतिहाई शर्मनाक व अलमनाक और दिलसोज़ वाक़िआत रबी-उल-अव्वल ६४ हिजरी के शुरू में हुए और उसी माह के आख़िर में जब कि अभी काबा में जंग जारी थी बदबख़्त व बदनसीब यज़ीद प्लीद के मरने की ख़बर आई। जूँ ही उसकी हलाकत की ख़बर आई हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर ने बआवाज़ पुकारा।

ऐ शामियो! तुम्हारा ताग़ूत हलाक हो गया है। यज़ीद की मौत की ख़बर से अह्ले शाम की हिम्मतें छूट गईं और हौसले पस्त हो गए और हज़रत

अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर के अंसार के हौसले बुलन्द हो गए थे चुनांचे वह शामियों पर टूट पड़े और शामी लश्कर खाइब व ख़ासिर हो कर भागा और अह्ले मक्का को उस लश्करे शरीर के ज़ुल्म व शर से नजात मिली।

बदबख़्त यज़ीद पलीद ने तक़रीबन साढ़े तीन बरस तक हुकूमत की और अड़तीस या उंतालीस बरस की उम्र में क़रिया हुवारीन में उसकी मौत वाक़े हुई। उसकी मौत पर इब्ने अ़रावह ने यह अश्आ़र कहे।

ऐ बनी उमैया! तुम्हारे आख़िरी बादशाह की लाश हुवारीन में पड़ी हुई है।

उसकी मौत ने ऐसे वक़्त आ कर उसको मारा जब कि उसके तकिया के पास कूज़ा और सर बुमहर लबाब मुश्कीज़-ए-शराब भरा रखा हुआ था।

और एक मुग़ैयना सारंगी लिए हुए उस नशा से मस्त होने वाले पर रो रही थी। वह कभी बैठ जाती और कभी खड़ी हो जाती थी।

(तबरी स० 43/7, इब्ने असीर स० 61/4)

क़रिया हुवारीन से यज़ीद की लाश को दमिश्क़ में लाया गया। उसके बेटे ख़ालिद या मुआविया ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढाई और मक़बरा बाबुस्सग़ीर में दफ़्न किया और उसकी क़बर मुज़्बल-ए-शहर है।

जब सरे महशर वह पूछेंगे बुला के सामने
क्या जवाबे जुर्म दोगे तुम खुदा के सामने

मुआविया असग़र :

यज़ीद की हलाकत के बाद लोगों ने यज़ीद के बेटे मुआविया के हाथ पर बैअ़त की। यह नौजवान फ़ितरतन नर्म दिल, नेक सीरत और दीन व मज़्हब का पाबन्द था। चूँकि यह बनी उमैया की बदउनवानियों से बेज़ार और बददिल था इसलिए उसने लोगों के दरम्यान एक ख़ुत्बा दिया कि "मैं हुकूमत संभालने की क़ुव्वत और अहलियत नहीं रखता और मुझे तुम में कोई हज़रत उमर बिन ख़त्ताब सा नज़र नहीं आता जिसको तुम पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूँ और न ही अह्ले शूरा नज़र आते हैं कि यह मुआ़मला उन पर छोड दूँ लिहाज़ा तुम अपने मुआ़मलात को खुद बेहतर समझते हो, जिसे चाहो अपने लिए मुंतख़ब कर लो। यह कह कर वह ख़िलाफ़त से दस्त बरदार हो गया और अपने मकान में चला गया और बीमार हो गया। चालीस रोज़ के बाद उस मकान से उसकी लाश ही निकली। बाज़ कहते हैं कि उसको ज़हर दे दिया गया।

(तबरी स० 34/7, इब्ने असीर स० 51/4)

क़ारेईने किराम :

फ़रज़न्दे रसूल दिल बन्दे बतूल सैयदुश्शोहदा हज़रत सैयदना इमाम

हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु और आपके अज़ीज़ों दोस्तों की अलमनाक लरज़ा खेज़ मज़्लूमाना शहादत और बदबख़्त व नामुराद यज़ीद प्लीद और ख़बीस व शरीर लश्कर के जौर व जफ़ा, ज़ुल्म व सितम और सियाहकारियों के वाक़िआत मोतबर कुतुब के हवालाजात और रिवायात के साथ अब तक के सफ़हात में ज़िक्र किए गए। चश्मे हक़ीक़त बीन ने देख लिया और हर ज़ी अक़्ल व शुऊर ने जान लिया होगा कि तारीख़े इंसानियत में यह वाहिद ऐसा वाक़िया है जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। खुद को मुसलमान कहलाने वालों ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात शरीफ़ के सिर्फ़ पचास बरस गुज़र जाने पर अपने नबी ही की ख़ास औलाद से जिस तरह बहीमाना और सफ़्फ़ाकाना सुलूक किया और ज़ुल्म व जफ़ा की जो इंतिहा की शायद ज़ुल्म की पेशानी भी उस से अर्क़ आलूद होगी। कूफ़ी और शामी यज़ीदियों ने रहती दुनिया तक लानत व मुलामत और मुज़म्मत ही अपने लिए जमा की, यहाँ तक कि लफ़्ज़ यज़ीद दाख़िले दुशनाम हो गया और यज़ीदीयत सरकशी व नाफ़रमानी और ज़ुल्म व इस्तिब्दाद का उनवान हो गई। आज यज़ीद के किसी हामी की भी यह जुरअत नहीं कि वह अपने बेटों का नाम यज़ीद व ज़्याद या शिम्र रखे। उसके बरअक्स क़ुरआन व हदीस और तारीख़ व सैर की रौशनी में प्यारे मुस्तफ़ा के नूरे नज़र, मुर्तज़ा के लख़्ते जिगर, मुज्तबा के दिलबर, सैयदा ज़हरा के पिसर सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के इल्म व अमल अख़्लाक़ व किरदार, सीरत व तालीमात के हर पहलू को देखिए, महासिन ही महासिन नज़र आते हैं और क्यों न हों ख़त्मी मर्तिबत हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था "हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूँ।" यानी हुसैन मेरे अह्ले बैत से है मेरे ख़ून से है मेरे हवाले और निसबत से है और मैं जमाल व कमाल, इल्म व फ़ज़्ल और अख़्लाक़ व किरदार के लेहाज़ से हुसैन से ज़ाहिर हूँ गोया हुसैन मज़्हरे रसूल हैं। इमाम पाक ने मैदाने करबला में अपनी हैसियत व शान और अज़्मत व मर्तिबत ही के शायान किरदार का मुज़ाहरा किया। वह दीन के पासबान थे। नामूसे रिसालत के निगहबान थे। वह किसी कमज़ोरी का मुज़ाहरा करते या मर्दे मैदान न बनते तो दीन के उसूल मिट जाते, अज़्मत व शौकते इस्लाम ख़त्म हो जाती, अज़ीमत व इस्तिक़ामत की मिसाल क़ायम न होती। वही दीन जिसके लिए नबी आख़िरुज़्ज़मा ने शदीद तरीन तकालीफ़ व मसाइब व आलाम बर्दाश्त किए, सहाबा किराम खुलफ़ा-ए-राशिदीन ने अपनी जिंदगियाँ

जिस दीन के लिए वक़्फ़ कीं अब उस दीन को बदला और मिटाया जा रहा था। यह दीन रसूलुल्लाह के घराने से उम्मत को अता हुआ, उस घराने पर उस दीन के तहफ़्फ़ुज़ की ज़िम्मेदारी दूसरों की निस्बत ज़्यादा आइद होती थी चुनांचे हज़रत इमाम ने अपना फ़रीज़ा अदा किया। वह करबला में हक़ व सदाक़त और दीन के लिए सीना सिपर हुए थे अल्लाह तआला और उसके रसूल ने उनकी मदद की, उन्हें साबित क़दमी और इस्तिक़ामत व इस्तिक़्लाल से नवाज़ा। ज़ुल्म व ज़फ़ा की आधियाँ भी आपके पाए सबात में जुंबिश पैदा नहीं कर सकीं सिर्फ़ इसलिए कि इमाम पाक के क़ल्ब व लिसान में हम आहंगी थी। हक़ पर उनका ईमान मुस्तहकम था वह ज़ाहरी बातिनी आलाइशों और रज़ाइल दुनियवी से पाक और मुबर्रा थे। फिर वह कैसे बातिल के सामने झुक सकते थे। क्योंकि मरदाने हक़ के सर कट तो सकते हैं बातिल के सामने झुक नहीं सकते। हज़रत इमाम ने रज़ाए इलाही का बुलन्द मरतबा व मक़ाम हासिल किया। ईसार व वफ़ा और सब्र व रज़ा का वह मुज़ाहरा किया कि हुसैनियत सरबुलन्दियों और सरफ़राज़ियों का उनवान हो गई और नामे हुसैन हर किसी के लिए क़रार जान हो गया और मुहब्बते हुसैन जाने ईमान हो गई। आज लाखों मुहिब्बाने हुसैन हैं। आशिक़ाने इमाम हैं, गुलामाने ऑले रसूल हैं। इमाम ने शहीद हो कर जो फ़त्ह व कामयाबी हासिल की और हक़ का जो बोल बाला किया उसने सिर्फ़ यज़ीद ही के नहीं क़ियामत तक हर फ़ासिक़ व फ़ाजिर और ज़ालिम व जाबिर के फ़िस्क़ व फ़ुजूर, ज़ुल्म व जब्र और सरकशी व नाफ़रमानी की राहें मस्दूद कर दीं और परचमे हक़ को हमेशा के लिए बुलन्द कर दिया और उम्मते मुस्लेमा को बातिल के ख़िलाफ़ डट जाने और सब कुछ कुरबान कर देने का वह बेमिसाल लाज़वाल जज़्बा अता कर दिया जो अह्ले हक़ का इम्तियाज़ और इफ़्तिख़ार है। इसीलिए दुनिया में हर तरफ़ इमाम पाक को ख़राजे मुहब्बत पेश किया जा रहा है, उनकी याद मनाई जाती है और उनकी बारगाह में सलाम व रहमत के फूल हदिया किए जाते हैं।

तू वह इमाम, इमामत की आबरू तुझ से
हुसैन तुझ को इमामत सलाम कहती है
हश्र तक ज़िंदा है तेरा नाम ऐ इब्ने रसूल
कर गया है तू, वह एहसान नौए इंसानी के साथ
सुल्ताने करबला को हमारा सलाम हो
जानाने मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो

वह भूख व प्यास वह फ़र्ज़े जिहादे हक़
सर चश्म-ए-रज़ा को हमारा सलाम हो
उम्मत के वास्ते जो उठाई हंसी ख़ुशी
उस लज़्ज़ते जफ़ा को हमारा सलाम हो
अ़ब्बास नामदार हैं ज़ख़्मों से चूर चूर
उस पैकरे रज़ा को हमारा सलाम हो
अक्बर से नौजवान भी रन में हैं शहीद
हम शक्ले मुस्तफ़ा को हमारा सलाम हो
असग़र की नन्हीं जान पे लाखों दुरूद हों
मासूम व बेख़ता को हमारा सलाम हो
भाई भतीजे भांजे सब हो गए शहीद
हर लअ़ल बेबहा को हमारा सलाम हो
तेग़ों के साए में भी इबादत ख़ुदा की की
बुरहाने औलिया को हमारा सलाम हो
हो कर शहीद क़ौम की कश्ती तरा गए
उम्मत के नाख़ुदा को हमारा सलाम हो
नासिर वलाए शाह में कहते हैं बार बार
उम्मत के पेशवा को हमारा सलाम हो

क़ातेलीन का अंजाम

उलमा-ए-किराम फ़रमाते हैं कि जितने लोग भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के मुक़ाबले में आकर क़ातेलीन के शरीक हुए या इस वाक़िया-ए-शहादत से राज़ी व ख़ुश हुए अ़ज़ाबे आख़िरत के अलावा दुनिया में भी वह अपने आमाले बद की सज़ा को पहुंचे। उनमें से कोई भी ऐसा न था जिसने दुनिया ही में अ़ज़ाबे इलाही न देखा और सज़ा न पाई हो। उन में से बाज़ तो बुरी तरह मारे गए बाज़ अंधे और रू सियाह हो गए। बाज़ मब्रूस और कोढ़ हो गए और बाज़ सख़्त इबरतनाक बलाओं और बीमारियों में मुब्तला होकर हलाक हुए।

हज़रत आमिर बिन सअ़द अल-बिजली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु की शहादत के बाद मैंने ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा आपने फ़रमाया ऐ आ़मिर! मेरे सहाबी बरा बिन आ़ज़िब के पास जा कर मेरा सलाम कह और ख़बर दे कि जिन्होंने मेरे बेटे हुसैन को क़त्ल किया है वह दोज़ख़ी हैं। पस मैंने बरा इब्ने आ़ज़िब की ख़िदमत में हाज़िर हो कर यह ख़्वाब ब्यान किया। उन्होंने सुन कर फ़रमाया अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सच फ़रमाया। (मिफ़्ताहुन्नजा, सआ़दतुल-कौनैन स० 154)

अ़ल्लामा इमाम हाफ़िज़ इबने हजर हज़रत अ़ली रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

हुसैन का क़ातिल एक आग के ताबूत में होगा। उस पर अह्ले दुनिया के निस्फ़ का अ़ज़ाब होगा। (अंसारुल-अब्सार स० 152, अरआफ़ुर्राग़ेबीन स० 210)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं।

अ़ल्लाह तआ़ला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ वह्य भेजी कि मैंने यहिया बिन ज़करिया के एवज़ सत्तर हज़ार अफ़राद मारे और ऐ हबीब! तेरे नवासे के एवज़ सत्तर हज़ार अफ़राद मारे और ऐ हबीब तेरे नवासे के एवज और सत्तर हज़ार मारने वाला हूँ।

(अल-मुस्तदरक स० 178/3, तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 354/2, अल-बिदायह वन्निहाया स० 201/8, सवाइक़े मुहरेक़ा स० 197)

हज़रत अबुश्शेख़ फ़रमाते हैं कि एक मज्लिस में चन्द आदमी बैठे हुए आपस में यह बातें कर रहे थे कि हज़रत हुसैन के क़त्ल में जिस किसी ने भी क़ातिलों की एआनत की वह मरने से पहले ज़रूर किसी न किसी आफ़त व बला में मुब्तला हुआ।

तो एक बूढ़ा बोला : मैंने भी क़ातिलों की एआ़नत की थी मुझे तो कुछ भी नहीं हुआ यह कह कर वह चराग़ की बत्ती दुरुस्त करने के लिए उठा तो उसको आग लग गई वह ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा 'आग आग' मगर किसी ने न सुनी। यहाँ तक कि उसने फ़ुरात में ग़ोता लगाया फिर भी आग न बुझी और वह उसी आग में जल कर मर गया। (सवाइक़े मुहरिक़ा स० 193)

इसी क़िस्म की एक और रिवायत अ़ल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी और सिब्त इब्नुल-जौज़ी ने भी सुदी से नक़्ल फ़रमाई है।

इन्हीं सिब्त इब्नुल-जौज़ी ने इमाम वाक़ेदी से रिवायत फ़रमाई है कि एक बुढ़ा जो लश्करे यज़ीद में था मगर उसने किसी को क़त्ल नहीं किया था वह अंधा हो गया। उस से उसका सबब पूछा गया तो उसने बताया कि मैंने ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा :

कि आप ग़ज़बनाक हालत में आस्तीन चढ़ाए हुए शम्शीर बकफ़ खड़े हैं और आपके आगे फ़र्शे चर्मी बिछा हुआ है

जिस पर इमाम हुसैन के दस क़ातिल ज़ब्ह हुए पड़े थे फिर आपने मुझे

लानत व मलामत की। फिर आपने ख़ूने हुसैन से आलूदा एक सिलाई मेरी आँखों में फेर दी। उसी वक़्त से मैं अंधा हो गया।

(अस्सवाइकुल-मुहरेक़ा स० 193, नूरुल-अब्सार १४७, अरुआफ़ुर्रागेबीन स० 113)

यज़ीदी लश्कर के एक सिपाही ने इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु के सरे अनवर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था चन्द रोज़ के बाद लोगों ने उसको सख़्त सियाह रू देखा तो पूछा कि :

तू तो बहुत ख़ूबसूरत और ख़ुशरंग था तुझे क्या हुआ? उसने कहा जिस दिन मैंने हज़रत हुसैन के सर को अपने घोड़े की गर्दन से बांध कर लटकाया उस दिन से हर रोज़ रात को दो आदमी मेरे पास आते हैं और मेरे दोनों बाज़ू पकड़ कर मुझे ऐसी जगह ले जाते हैं जहाँ बहुत सी आग होती है। उस आग में मुझे मुँह के बल डाल कर फ़िर निकाल लेते हैं, उस वजह से मेरा मुँह सियाह हो गया है जैसा कि तुम देख रहे हो। रावी कहते हैं कि वह निहायत बुरी हालत में मरा। (अस्सवाइकुल-मुहरेक़ा स० 194, नूरुल-अब्सार 147, अरुआफ़ुर्रागेबीन स० 213)

अ़ल्लामा इमाम इब्ने हजर हतीमी मक्की रहमतुल्लाह अ़लैह नक़्ल फ़रमाते हैं:

तहक़ीक़ एक बूढ़े ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आपके आगे एक तश्त रखा है जिसमें ख़ून था और लोग आपके सामने पेश किए जा रहे थे। आप उनकी आँखों में उस ख़ून से लगा रहे थे यहाँ तक कि मैं भी पेश हुआ और मैंने अ़र्ज़ किया : मैं मुक़ाबले में नहीं गया था। आपने फ़रमायाः तू उसकी ख़्वाहिश तो रखता था। फिर आपने उंगली से मेरी तरफ़ इशारा किया। पस मैं उस वक़्त से अंधा हो गया।

(अस्सवाइके़ मुहरिक़ा स० 194)

हज़रत अहमद अबू रजा अल-अत्तारदी ने फ़रमाया लोगो! अह्ले बैते नुबुव्वत में से किसी को बुरा न कहो

क्योंकि हमारा एक पड़ोसी था जो बेलहजीम में से था और कूफ़ा से आया था। उसने कहा तुमने उस फ़ासिक़ इब्ने फ़ासिक़ (हुसैन बिन अ़ली) को नहीं देखा कि अल्लाह ने उसको क़त्ल कर डाला। (मआज़ल्लाह) पस उसी वक़्त अल्लाह ने (आसमान से) दो तारे उसकी आँखों में मारे तो उसकी बसारत जाती रही। (तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 355/2)

अ़ल्लामा अल-बारज़ी हज़रत मंसूर से रिवायत फ़रमाते हैं कि उन्होंने

शाम में एक शख़्स को देखा जिसका चेहरा खिंज़ीर जैसा था। उन्होंने उस से उसका सबब पूछा तो उसने कहा :

कि वह हर रोज़ हज़रत अ़ली (रज़ि अल्लाहु अ़न्हु) पर एक हज़ार मरतबा और जुमा के रोज़ चार हज़ार मरतबा उन पर और उनकी औलाद पर लानत किया करता था (मआज़ल्लाह) तो एक रात उसने ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को देखा और उसने तवील ख़्वाब का ज़िक्र किया, उसमें यह भी था कि हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने उसकी हुज़ूर की बारगाह में यह शिकायत की तो हुज़ूर ने उस पर लानत की और उसके मुँह पर थूक दिया तो उसका मुँह खिंज़ीर जैसा हो गया और वह लोगों के लिए एक दर्से इबरत बन गया।

(अस्सवाइके़ मुहरिक़ा स० 194)

जब मारक-ए-करबला में बेदीन अश्क़िया ने अह्ले बैते नुबुव्वत पर पानी बन्द कर दिया और सब शिद्दते प्यास से बहुत बेताब हुए तो एक बदबख़्त ने इमाम पाक को मुख़ातब करके कहा :

उसको देखो यह शख़्स अपने आप को गोया जिगर गोश-ए- आसमान समझता है मगर यह एक क़तरा भी इसके पानी से नहीं चखेगा यहाँ तक कि प्यासा ही मरेगा। इमाम हुसैन ने उसके मुतअ़ल्लिक़ दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह! उसको प्यासा ही मारना। उसके बाद उसकी यह हालत हो गई कि बहुत ज़्यादा पानी पीने के बावजूद भी सैराब न होता यहाँ तक कि प्यास की हालत ही में मर गया।

(अस्सवाइके़ मुहरिक़ा स० 195, इब्ने असीर स० 22/4)

जिस बदबख़्त ने मासूम अ़ली असग़र के हलक़ में तीर पैवस्त किया था वह ऐसे मरज़ में मुब्तला हुआ कि उसके मुँह और पेट में सख़्त हिद्दत और गर्मी पैदा हो गई गोया कि आग सी लगी रहती और पुश्त की तरफ़ बहुत बरूदत यानी सर्दी पैदा हो गई। चुनांचे उसके मुँह और पेट पर तो पानी छिड़कते बर्फ़ रखते और पंखा हिलाते और उसकी पुश्त की तरफ़ आग जलाते मगर किसी तरह भी चैन न पड़ता और वह चीख़ चीख़ कर कहता : प्यास प्यास! तो उसके लिए सत्तू, पानी और दूध लाया जाता अगर उसको पाँच घड़े भी पिलाए जाते तो वह पी जाता और फिर भी प्यास कह के चीख़ता। आख़िर उसी तरह पीते पीते उसका पेट फट गया।

(अस्सवाइके़ मुहरिक़ा स० 195)

हज़रत अबू मुहम्मद सुलेमान अल-आमश कूफ़ी ताबई रज़ि अल्लाहु

अन्हु फरमाते हैं कि मैं हजे बैतुल्लाह के लिए गया। दौराने तवाफ़ मैंने एक शख़्स को देखा कि ग़िलाफ़े काबा के साथ चिमटा हुआ यह कह रहा था कि "ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे और मैं गुमान करता हूँ कि तू मुझे नहीं बख़्शेगा" मैं उसकी बात पर बहुत मुतअज्जब हुआ कि सुब्हानल्लाहिल-अज़ीम उसका कैसा गुनाह है कि जिसकी बख़्शिश का उसको गुमान नहीं ख़ैर मैं ख़ामोश रहा और तवाफ़ में मसरूफ़ रहा। दूसरे फेरे में सुना वह फिर यही कह रहा था। मेरी हैरानी में इज़ाफ़ा हुआ मैंने तवाफ़ से फ़ारिग़ हो कर उस से कहा कि तू ऐसे अ़ज़ीम मक़ाम पर है जहाँ बड़े से बड़ा गुनाह भी बख़्शा जाता है। तो अगर तू अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला से मग़्फ़िरत और रहमत माँगता है तो उस से उम्मीद भी रख क्योंकि वह बड़ा रहीम व करीम है। उस शख़्स ने कहा : ऐ अल्लाह! के बन्दे! तू कौन है? मैंने कहाः मैं सुलेमान अल-आमश हूँ! उसने कहा ऐ सुलेमान! तुम माँगो और उम्मीद भी रखो मैं भी कभी तुम्हारे ही जैसा ख़्याल रखता था लेकिन अब नहीं यह कहा और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे एक तरफ़ ले गया और कहा मेरा गुनाह बहुत बड़ा है। मैंने कहाः क्या तेरा गुनाह पहाड़ों, आसमानों, ज़मीनों और अ़र्श से भी बड़ा है? कहने लगा हाँ मेरा गुनाह बड़ा ही है! सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ वह बड़ी अ़जीब बात है जो मैंने देखी है। मैंने कहाः सुनाओ अल्लाह तुम पर रहम करे। उसने कहाः ऐ सुलेमान! में उन सत्तर आदमियों में से हूँ जो हज़रत हुसैन बिन अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के सर को यज़ीद के पास लाए थे। फिर यज़ीद ने उस सर को शहर के बाहर लटकाने का हुक्म दिया। फिर उसके हुक्म से उतारा गया और सोने के तश्त में रख कर उसके सोने (नींद) की जगह रखा गया। आधी रात के वक़्त यज़ीद की बीवी उठी तो अचानक उसने देखा कि एक नूरानी शुआअ़ इमाम के सर से लेकर आसमान तक चमक रही है। वह यह देख कर सख़्त ख़ौफ़ज़दा हुई और उसने यज़ीद को जगाया और कहाः उठ कर देखो मैं एक अ़जीब मंज़र देख रही हूँ। यज़ीद ने भी उस रौशनी को देख कर कहाः चुप रहो मैं भी देख रहा हूँ जो तुम देख रही हो। जब सुबह हुई तो उसने सरे मुबारक निकालने का हुक्म दिया। चुनांचे वह निकाला गया और ख़ेम-ए-दीबा-ए-सब्ज़ में रखा गया और उसकी निगरानी के लिए सत्तर आदमी मुक़र्रर हुए मैं भी उनमें था। फिर हमें हुक्म हुआ जाओ खाना खा आओ। यहाँ तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया और काफ़ी रात गुज़र गई तो हम सो गए। अचानक मैं जाग पड़ा और देखा कि आसमान पर एक बड़ा बादल छाया हुआ है और उसमें

पहाड़ की सी गरज और परों के हिलने की सी आवाज़ आ रही है फिर वह बादल क़रीब होता गया यहाँ तक कि ज़मीन से मिल गया और उसमें से एक मर्द नमूदार हुआ जिस पर जन्नत के हुल्लों में से दो हुल्ले थे और उसके हाथ में एक फ़र्श और कुर्सियाँ थीं। उसने वह फ़र्श बिछाया और उस पर कुर्सियाँ रख दीं और पुकारने लगा ऐ अबुल-बशर ऐ आदम सल्लल्लाहु अ़लैका! तशरीफ़ लाइए। पस एक बड़े बुज़ुर्ग निहायत हसीन व जमील तशरीफ़ लाए और सरे मुबारक के पास खड़े हो कर कहा :

सलाम हो तुझ पर ऐ अल्लाह के वली सलाम हो तुझ पर ऐ बक़ियतुस्सालेहीन! ज़िन्दा रहे तुम सईद हो कर और क़त्ल हुए तुम तुरीद यानी ख़लफ़ हो कर, प्यासे रहे हत्ता कि अल्लाह ने तुम्हें हम से मिला दिया। अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए और तुम्हारे क़ातिल के लिए बख़्शिश नहीं, तुम्हारे क़ातिल के लिए कल क़ियामत के दिन दोज़ख़ का बहुत बुरा ठिकाना है।

यह फ़रमा कर वह वहाँ से हटे और उन कुर्सियों में से एक कुर्सी पर बैठ गए। फिर थोड़ी देर के बाद एक और बादल आया वह इसी तरह ज़मीन से मिल गया और मैंने सुना कि एक मुनादी ने निदा की : ऐ नबी अल्लाह! ऐ नूह! तशरीफ़ लाइए नागाह एक साहब वजाहत ज़रदी माइल चेहरा जन्नत के हुलों में दो हुले पहने हुए तशरीफ़ लाए और उन्होंने भी वही अल्फ़ाज़ कहे और एक कुर्सी पर बैठ गए फिर एक और बड़ा बादल आया और उसमें से हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह नमूदार हुए। उन्होंने भी वही कलिमात फ़रमाए और एक कुर्सी पर बैठ गए। इसी तरह हज़रत मूसा और हज़रत ईसा तशरीफ़ लाए और इसी तरह के कलिमात फ़रमा कर कुर्सियों पर जा बैठे। फिर एक बहुत ही बड़ा बादल आया उसमें से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत फ़ातिमा और हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा और मलाइका नमूदार हुए। पहले हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सर के पास तशरीफ़ ले गए और सर को सीने से लगाया और बहुत रोए। फिर हज़रत फ़ातिमा को दिया उन्होंने भी सीने से लगाया और बहुत रोईं फिर हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आकर यूँ ताज़ियत की।

सलाम हो पाकीज़ा फ़ितरत व ख़सलत वाले पाक फ़रज़न्द पर! अल्लाह आपको बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाए और आपके फ़रज़न्द हुसैन के (इस इम्तिहान) में अहसन सब्र दे।

इसी तरह हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा हज़रत ईसा अ़लैहिमुस्सलाम ने भी ताज़ियत फ़रमाई। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम से फ़रमाया कि आप गवाह रहें ख़ुद अल्लाह ही काफ़ी गवाह है मेरी उम्मत के उन लोगों पर जिन्होंने मेरे बाद मेरी औलाद को इस तरह क़त्ल करके मुझे यह बदला दिया है। फिर एक फ़रिश्ते ने आपके क़रीब आ कर अ़र्ज़ किया: ऐ अबुल-क़ासिम (इस वाक़िया से) हमारे दिल पाश पाश हो गए हैं। मैं आसमान व दुनिया का मुवक्किल हूँ। अल्लाह तआ़ला ने मुझे आपकी इताअ़त का हुक्म दिया है। अगर आप मुझे हुक्म दें तो मैं उन लोगों पर आसमान ढा दूँ और उनको तबाह कर दूँ। फिर एक और फ़रिश्ता ने आकर अर्ज़ किया: ऐ अबुल-क़ासिम! मैं दरियाओं का मोक्किल हूँ। अल्लाह तआ़ला ने मुझे आपकी इताअ़त का हुक्म दिया है। अगर आप फ़रमाएं तो मैं उन पर तूफ़ान बरपा करके उनको तबाह व बरबाद कर दूँ। आपने फ़रमाया: ऐ फ़रिश्तो! ऐसा करने से बाज़ रहो।

तो हज़रत हसन ने कहा नाना जान! यह जो सोए हुए हैं यही वह लोग हैं जो मेरे भाई के सर को लाए हैं और यही निगरानी पर मुक़र्रर हैं। तो नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ऐ मेरे रब के फ़रिश्तो! उन को क़त्ल कर दो मेरे बेटे के क़त्ल के बदले में। तो ख़ुदा की क़सम! अभी कुछ देर ही गुज़री थी कि मैंने देखा वह मेरे सब साथी क़त्ल कर दिए गए। फिर एक फ़रिश्ता मुझे भी क़त्ल करने को आया तो मैंने पुकारा: ऐ अबुल-क़ासिम! मुझे बचाइए और मुझ पर रहम फ़रमाइए अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए! तो आपने फ़रिश्ता से फ़रमाया: इसे रहने दो फिर आपने मेरे क़रीब आ कर फ़रमाया: तो उन सत्तर आदमियों में से है जो सर लाए थे? मैंने कहा हाँ! पस आपने अपना हाथ मेरे कन्धे में डाल कर मुझे मुँह के बल गिरा दिया और फ़रमाया: ख़ुदा तुझ पर रहम न करे और न तुझे बख़्शे! अल्लाह तेरी हड्डियों को नारे दोज़ख़ में जलाए! तो यह वजह है कि मैं अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद हूँ। हज़रत आमश ने यह सुनकर फ़रमाया: बदबख़्त जो मुझ से दूर हो कहीं तेरी वजह से मुझ पर भी अ़ज़ाब न नाज़िल हो जाए। (नूरुल-अबसार स० **149**)

अ़ल्लामा इमाम हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी ने हज़रत सालेह शहाम से रिवायत नक़्ल फ़रमाई कि वह फ़रमाते हैं कि मैंने हलब में ख़्वाब देखा कि एक काला कुत्ता मारे प्यास के ज़ुबान निकालता है। मैंने इरादा किया उसको पानी पिलाऊँ कि इतने में हातिफ़े ग़ैबी ने आवाज़ दी: ख़बरदार!

इसको पानी मत पिलाओ। यह क़ातिले हुसैन बिन अ़ली है। इसके लिए क़ियामत तक यह सज़ा है कि इसी तरह प्यासा ही रहे।

(तस्दीदुल-क़ौस फ़ी तल्ख़ीस मसनदुल-फ़िरदौस)

अ़ल्लामा इमाम जलालुद्दीन सुयूती मुहाज़िरात व मुहावरात में नक़्ल फ़रमाते हैं।

कि कूफ़ा में एक साल चेचक हुइ और डेढ़ हज़ार औलाद उन लोगों की अंधी हो गई जो हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के क़त्ल के लिए गए थे।

इब्ने ऐनिया अपनी दादी उम्मे अबी से रिवायत फ़रमाते हैं कि दो आदमी ज़ईफ़ैन में से क़तले हुसैन में शरीक थे।

फ़रमाती हैं : उन में से एक का आल-ए-तनासुल तो इतना लम्बा हो गया कि वह अपनी कमर (या गर्दन) पर (रस्सी की तरह) लपेट लेता और दूसरे को इस क़द्र प्यास लगती कि वह पूरी पखाल पी जाता मगर उसकी प्यास न बुझती यहाँ तक कि दूसरी लाई जाती। (हज़रत) सुफ़ियान फ़रमाते हैं उन में से मैंने एक के बेटे को देखा कि वह पागल था।

(तहज़ीबुत्तहज़ीब स० **354/2**, सिर्रुश्शहादतैन स० **33**, सवाइक़े मुहरिक़ा स० **193**)

गुज़श्ता सफ़्हात में गुज़र चुका है कि कूफ़ियों ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु को ख़ुतूत लिख कर बुलाया और जानी व माली इम्दाद का यक़ीन दिलाया था लेकिन बाद में वह बेवफ़ा हो गए और उनकी बेवफ़ाई ही हज़रत मुस्लिम बिन अ़क़ील और हज़रत इमाम और आपके अक़्रेबा और आवान व अंसार की शहादत का सबब बनी। इस बेवफ़ाई पर अक्सर कूफ़ी बहुत ज़्यादा नादिम थे और चाहते थे किसी तरह इस ग़लती की तलाफ़ी हो जाए और बदनामी का दाग़ धुल जाए चुनांचे इन तव्वाबीन ने हज़रत सुलेमान बिन सर्द के हाथ पर बैअ़त की कि ख़ूने हुसैन का इंतिक़ाम लेंगे।

शुरू में तो हज़रत सुलेमान बिन सर्द के इर्द गिर्द बहुत ज़्यादा लोग जमा हो गए बाद में उन में से अक्सर साथ छोड़ गए और मुख़्लेसीन की तादाद कम रह गई मगर यह लोग अपने अ़हद पर क़ाइम रहे और उन्होंने यह तय किया कि सबसे पहले शाम जा कर इब्ने ज़्याद से जंग की जाए बाद में दूसरे लोगों से निपटा जाए। यह लोग इब्ने ज़्याद के मुक़ाबले के लिए निकले। रास्ता में यह लोग करबला में हज़रत इमाम के मरक़दे मुनव्वर पर हाज़िर हुए और ज़ारी व तज़र्रुअ़ के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार

के तालिब हुए। जब यहाँ से रवाना हो कर शाम के क़रीब पहुँचे और इब्ने ज़्याद को उनके आने की ख़बरें मिलीं तो उसने हिसीन बिन नुमैर को बारह हज़ार फ़ौज के साथ मुक़ाबला के लिए भेजा। मुख़्तसर यह कि जंग हुई और सुलेमान के साथियों ने बावजूद क़लील होने के हज़ारों शामियों को मौत के घाट उतार दिया। इब्ने ज़्याद की तरफ़ से बराबर लश्कर और मदद पहुँचती रही आख़िर हज़रत सुलेमान हिसीन बिन नुमैर के हाथ से क़त्ल हुए और इसी तरह उनके रुफ़क़ा भी क़त्ल होते रहे और चन्द बाक़ी जो रह गए थे वह अपनी शिकस्त यक़ीनी समझ कर रात के वक़्त भाग निकले।

फिर मुख़्तार बिन उबैदा सक़फ़ी ने जो अपने दिल में हुब्बे जाह रखता था ख़ूने हुसैन का बदला लेने के लिए अलम बुलन्द किया और अपने आपको हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया का ख़लीफ़ा ज़ाहिर करके कहा कि उन्होंने मुझे हुक्म दिया है कि मैं ख़ूने हुसैन का बदला लूँ। इसलिए लोगो मेरा साथ दो। लोगों ने उस पर ऐतमाद न किया और हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया से उसकी तस्दीक़ की तो अगरचे वह मुख़्तार को अच्छा नहीं समझते थे मगर उन्होंने फ़रमायाः बिला शुबह हम पर ख़ूने हुसैन का बदला लेना वाजिब है। इस से लोगों को तसल्ली हो गई और वह मुख़्तार के झंडे तले जमा होने लगे और यह तहरीक काफी ज़ोर पकड़ गई। उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की तरफ़ से अ़ब्दुल्लाह बिन मुतीअ़ हाकिमे कूफ़ा थे उन्होंने इस तहरीक को रोकने की काफ़ी कोशिश की। यहाँ तक कि चन्द बार लड़ाई भी हुई लेकिन हर बार हाकिमे कूफ़ा की फ़ौज को शिकस्त हुई, आख़िर इब्ने मुतीअ़ ने क़िला का दरवाज़ा बन्द कर लिया और अपनी शिकस्त का ऐतराफ़ करके अमान तलब की। उनको अमान दे दी गई। चुनांचे वह बसरा चले गए और मुख़्तार को इराक़, कूफ़ा, ख़रासान और उनके अतराफ़ व जवानिब पर तसल्लुत और जुमला ख़ज़ाइने हुकूमत पर क़ब्ज़ा हासिल हो गया तो उसने अपनी हुकूमत का ऐलान कर दिया और लोगों से अच्छी तरह पेश आने लगा और कहता मैं ख़लीफ़ा अल-मेहदी हूँ।

मुख़्तसर यह है कि उसने लोगों से कहा मुझे हर उस शख़्स का पता बताओ जो इब्ने सअ़द के लश्कर में था और इमाम हुसैन के मुक़ाबले में गया था या जो उनके क़त्ल से ख़ुश हुआ था। लोगों ने बताना शुरू किया ओर मुख़्तार ने उनको मारना और सूली पर लटकाना शुरू कर दिया और इस तरह सैंकड़ों आदमियों को मारा।

अ़मर बिन सअ़द :

एक दिन मुख़्तार ने अपने दोस्तों से कहा कि कल मैं एक ऐसे शख़्स को मारूँगा जिससे तमाम मुमिनीन और मलाइका मुक़र्रेबीन भी ख़ुश होंगे। उस वक़्त उसके पास हसीम बिन असवद नहफ़ी बैठा था वह समझ गया कि मुख़्तार का इरादा अ़मर बिन सअ़द को मारने का है। चुनांचे उसने एक आदमी को अ़मर बिन सअ़द के बुलाने के लिए भेजा। अ़मर बिन सअ़द ने अपने बेटे हफ़्स को भेज दिया। जब वह आया तो मुख़्तार ने उस से पूछा तेरा बाप कहाँ है? उसने कहा घर में हैं। मुख़्तार ने कहाः अब "रय" की हुकूमत छोड़ कर क्यों घर बैठा हुआ है हज़रत हुसैन के क़त्ल के दिन क्यों न घर बैठा? फिर उसने अपने ख़ास मुहाफ़िज़ अबू उमरा को भेजा कि इब्ने सअ़द को क़त्ल करके उसका सर काट कर ले आ। वह गया और उसने इब्ने सअ़द को क़त्ल किया और उसका सर काट कर अपनी क़ुबा में छुपा कर ले आया और मुख़्तार के आगे ला के रख दिया। मुख़्तार ने हफ़्स से कहाः पहचानते हो यह किस का सर है? उसने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ कर कहाः हाँ यह मेरे बाप का सर है और अब उनके बाद ज़िन्दगी में कुछ मज़ा नहीं। मुख़्तार ने कहा सच कहते हो। हुक्म दिया इसको भी क़त्ल करो। वह भी क़त्ल हुआ। मुख़्तार ने कहाः अमर का सर हुसैन के सर का बदला है और हफ़्स का सर अली बिन हुसैन के सर का। अगरचे यह दोनों के बराबर नहीं हो सकते। ख़ुदा की क़सम! अगर मैं एक तिहाई क़ुरैश को भी क़त्ल कर दूँ तो वह सब हुसैन की एक उँगली के बराबर भी नहीं हो सकते।

मुख़्तार ने उन दोनों सरों को हज़रत मुहम्मद बिन हन्फ़ीया के पास भेज दिया और साथ लिख भेजा कि जिस जिस पर मुझे क़ुदरत हासिल हुई है उसको मैंने क़त्ल कर दिया है और जो बाक़ी रह गए हैं वह भी अल्लाह की गरिफ़्त से नहीं बच सकते और जब तक मैं उनके नापाक वजूद से ज़मीन को पाक न कर दूँगा उनकी तलाश से बाज़ न रहूँगा

(तबरी स० 1277, इब्ने असीर 94/4, अल-बिदायह वन्निहायह स० 273/4)

इमाम इब्ने सीरीन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन :

हज़रत अ़ली (कर्रमल्लाहु वज्हहू) ने अ़मर बिन सअ़द से फ़रमायाः उस वक़्त तेरा क्या हाल होगा जब कि तू एक ऐसे मक़ाम पर खड़ा होगा कि तुझे जन्नत व दोज़ख़ के दरम्यान इख़्तियार दिया जाएगा पस तू दोज़ख़ ही को इख़्तियार करेगा। (इब्ने असीर स० 94/4)

अल्लामा इब्ने कसीर इमाम वाक़ेदी की नक़्ल फ़रमाते हैं कि –

एक दिन हज़रत सअ़द बिन अबी वक़ास रज़ि अल्लाहु अ़न्हु तशरीफ़ फ़रमा थे कि आपका गुलाम इस हालत में आया कि उसकी दोनों एड़ियों पर ख़ून बह रहा था। हज़रत सअ़द ने उस से पूछाः यह किसने तेरे साथ ऐसा किया है? उसने कहा कि बेटे अ़मर ने। हज़रत सअ़द ने कहाः ऐ अल्लाह! उसको क़त्ल कर और उसका भी ख़ून बहा! और हज़रत सअ़द की दुआ़ कुबूल होती थी। (अल-बिदायह वन्निहायह स० 273/8)

ख़ौली बिन यज़ीद :

ख़ौली वह बदबख़्त इंसान था जिसने हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु को क़त्ल किया और सरे अनवर को जिस्मे अक़्दस से जुदा किया था। उस बदबख़्त की गरफ़्तारी के लिए मुख़्तार ने मआ़ज़ बिन हानी और अपने मुहाफ़िज़े ख़ास अबू उमरा को चन्द सिपाहियों के साथ भेजा। उन्होंने आकर ख़ौली के मकान का मुहासरा कर लिया। उस बदबख़्त को मालूम हुआ तो वह अपने मकान के अन्दर एक जगह छुप गया और बीवी से कह दिया कि तुम ला इल्मी ज़ाहिर कर देना। मआ़ज़ ने अबू उमरा से कहाः तुम आवाज़ दो। आवाज़ सुन कर ख़ौली की बीवी बाहर निकली। उन्होंने कहाः तुम्हारा शौहर कहाँ है? उसने ज़ुबान से तो कहा कि मुझे नहीं मालूम वह कहाँ है और हाथ के इशारे से उसके छुपने का मक़ाम बता दिया। यह उस जगह पहुँचे और उसको गरिफ़्तार कर लिया। मुख़्तार के सामने पेश किया गया। उसने उसके क़त्ल और जलाने का हुक्म दिया। चुनांचे उस बदबख़्त को पहले क़त्ल किया गया और फिर जला दिया गया।

फ़! ख़ौली की बीवी उयूफ़ बिन्ते मालिक बिन नहार हज़रे मौत की रहने वाली थी। जिस दिन से ख़ौली हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु का सर लाया था उस दिन से वह उसकी दुश्मन हो गई थी। (तबरी स० 127/7, इब्ने असीर स० 94/4, अल-बिदायह वन्निहायह स० 272/8)

शिम्र ज़िल-जौशन :

मुस्लिम बिन अ़ब्दुल्लाह अज्जबाबी कहता है कि हम शिम्र ज़िल-जौशन के हमराह तेज़ रौ घोड़े पर सवार हो कर कूफ़ा से निकले। मुख़्तार के गुलाम ज़रबी ने हमारा तआ़कुब किया हमने बड़ी तेज़ी से अपने घोड़े दौड़ाए लेकिन ज़रबी ने हमें आ लिया और शिम्र पर हमला आवर हुआ। शिम्र उसके हमले को रोकता रहा आख़िर शिम्र ने एक ऐसा वार किया कि उसकी कमर तोड़ दी। जब मुख़्तार को मालूम हुआ तो उसने कहा कि

अगर वह मुझ से मशवरा करता तो मैं उसको इस तरह शिम्र पर हमला करने का हुक्म न देता।

शिम्र वहाँ से चल कर कूफ़ा और बसरा के तक़रीबन दरम्यान दरिया के किनारे पर वाक़े एक गाँव कल्तानिया में पहुँचा और एक दिहाती मज़्दूर को बुला कर उसको मार पीट कर मज्बूर कर दिया कि मेरा यह ख़त मुसअ़ब बिन ज़ुबैर तक पहुँचाए। उस ख़त पर यह पता लिखा था। शिम्र ज़िल-जौशन की तरफ से अ़मर मुसअ़ब बिन ज़ुबैर के नाम। वह मज़्दूर उस ख़त को लेकर रवाना हुआ। रास्ता में एक बड़ा गाँव आबाद था उसमें पहुँच कर वह मज़्दूर अपने एक जानने वाले मज़्दूर दोस्त से मिला और उससे शिम्र की सख़्ती और ज़्यादती की शिकायत कर रहा था। इत्तिफ़ाक़ से उसी गाँव में मुख़्तार के मुहाफ़िज़ दस्ते का रईस अबू उमरा चन्द सिपाहियों के साथ जंगी चौकी क़ायम करने के लिए आया हुआ था। ऐन उस वक़्त जब कि वह दोनों मज़्दूर बातें कर रहे थे मुख़्तार का एक सिपाही अ़ब्दुर्रहमान बिन उबैद वहाँ से गुज़रा उसने उस मज़्दूर के हाथ में शिम्र का वह ख़त देखा और पता पढ़ कर मज़्दूर से पूछा कि शिम्र कहाँ है? मज़्दूर ने बता दिया उस सिपाही ने फ़ौरन आ कर अबू उमरा को बताया। यह उसी वक़्त अपने सिपाहियों के साथ उसकी तरफ चले। मुस्लिम बिन अ़ब्दुल्लाह कहता है मैंने शिम्र से कहा हमें यहाँ से चले जाना चाहिए क्योंकि यहाँ मुझे ख़ौफ़ सा महसूस होता है। शिम्र ने कहाः मैं तीन दिन से पहले यहाँ से नहीं जाऊँगा और में समझता हूँ कि तुम्हें यह ख़ौफ़ मुख़्तार कज़्ज़ाब की वजह से महसूस हो रहा है और तुम मरऊब हो गए हो। चुनांचे रात को मैं घोड़ों की टापों की आवाज़ सुन कर जाग पड़ा और अपनी आँखें मल रहा था कि इतने में उन्होंने आकर तक्बीर कही और हमारी झोंपड़ियों को घेरे में ले लिया। हम तो अपने घोड़े वग़ैरा छोड़ कर पैदल ही भाग निकले और वह सब शिम्र पर टूट पड़े। वह कपड़े और ज़ेरह वग़ैरह भी न पहन सका, एक पुरानी सी चादर ओढ़े हुए सिर्फ़ नेज़ा हाथ में लेकर उनका मुक़ाबला करने लगा। थोड़ी ही देर के बाद मैंने तक्बीर की आवाज़ के साथ सुना कि अल्लाह ने ख़बीस को क़त्ल कर दिया। फिर उसकी लाश को कुत्तों के लिए फेंक दिया गया। (तबरी स० 121/7, इब्ने असीर स० 92/4, अल-बिदायह वन्निहायह स० 270/8)

मालिक बिन आयन अल-जेहनी ब्यान करते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन दबास जिसने मुहम्मद बिन अम्मार बिन यासिर को क़त्ल किया था उसने क़ातिलाने

हुसैन में से चन्द आदमियों के नाम मुख़्तार को बताए जिनमें अ़ब्दुल्लाह बिन सैयद बिन अन्ज़ालुल-जेहनी मालिक बिन अन्नसीर अल-बदी और हमल बिन मालिक अल-महारबी भी थे और क़ादसीया में रहते थे। मुख़्तार ने अपने सरदारों में एक सरदार अबू नमर मालिक बिन अ़मर अन्नहदी को उनकी गरिफ़्तारी के लिए भेजा। उसने वहाँ पहुँच कर उनको गरिफ़्तार कर लिया और मुख़्तार के सामने लाकर पेश किया मुख़्तार ने उन से कहा।

ऐ अल्लाह और अल्लाह की किताब और अल्लाह के रसूल और ऑले रसूल के दुश्मनो! हुसैन इब्ने अ़ली कहाँ हैं? मेरे सामने हुसैन का हक़ अदा करो। ज़ालिमो! तुमने उसको क़त्ल किया जिस पर नमाज़ में तुम्हें दुरूद पढ़ने का हुक्म दिया गया था। उन्होंने कहा। अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए हमें ज़बरदस्ती भेजा गया था हालाँकि हम पसन्द नहीं करते थे। अब हम पर एहसान फ़रमाएं और हमें छोड़ दें। मुख़्तार ने कहाः क्या तुमने अपने नबी के नवासे पर एहसान किया और उनको छोड़ा और उनको पानी पिलाया?

फिर मुख़्तार ने मालिक अल-बदी से कहा तूने उनकी टोपी उतारी थी? अ़ब्दुल्लाह बिन कामिल ने कहाः जी हाँ उसी ने उतारी थी। मुख़्तार ने हुक्म दिया उसके दोनों हाथ और दोनों पाँव काट कर छोड़ दो ताकि यह इसी तरह तड़प तड़प कर मर जाए। चुनांचे उसके हुक्म पर अ़मल किया गया और वह तड़प-तड़प कर मरा और दूसरे दोनों यानी अ़ब्दुल्लाह अल-जेहनी को अ़ब्दुल्लाह बिन कामिल ने और हमल बिन मालिक अल-मुहारबी को सअ़र बिन अबी सअ़र ने मुख़्तार के हुक्म से क़त्ल कर दिया। (तबरी स० **124/7**, इब्ने असीर स० **93/4**)

हकीम बिन तुफ़ैल अत्ताई :

उसने करबला में हज़रत अ़ब्बास अलमदार के लिबास और असलहा पर क़ब्ज़ा किया था और हज़रत हुसैन को तीर मारा था। यह कहा करता था कि मेरा तीर उनके पाइजामे में लगा था जिससे उनको कोई ज़रर न पहुँचा था। मुख़्तार ने अ़ब्दुल्लाह बिन कामिल को उसकी गरिफ़्तारी के लिए भेजा। उसने जा कर गरिफ़्तार कर लिया। हकीम के घर वाले अ़दी बिन हातिम के पास जा कर फ़रियादी हुए कि उसको छुड़ाएं। मुख़्तार अ़दी की क़द्र और एहतेराम करता था। अ़दी मुख़्तार के पास बराय सिफ़ारिश आए। सिपाहियों को रास्ता में मालूम हुआ तो उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन कामिल से कहा कि मुख़्तार अ़दी की सिफ़ारिश क़ुबूल कर लेंगे और यह ख़बीस बच जाएगा हालाँकि आप इसके जुर्म से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं। बेहतर

यह है कि हम इसको मुख़्तार के पास न ले जाएं और क़त्ल कर दें। इब्ने कामिल ने इजाज़त दे दी। चुनांचे उसको एक मकान में ले गए और कहा तूने इब्ने अ़ली का लिबास उतारा था हम तेरा लिबास उतारते हैं। चुनांचे उन्होंने उसके सब कपड़े उतार दिए और बरहना कर दिया फिर कहाः तूने हज़रत हुसैन को तीर मारा था अब हम तुझे तीरों का निशाना बनाते हैं। यह कह कर तीरों से उसको हलाक कर दिया।

उधर अ़दी मुख़्तार के पास पहुँचे मुख़्तार ने उनका एहतेराम किया और आने की ग़रज़ पूछी। अ़दी ने ब्यान की। मुख़्तार ने कहाः अबू ज़रीफ़! तुम क़ातिलाने हुसैन की सिफ़ारिश करते हो। अदी ने कहाः उस पर झूठा इल्ज़ाम है। मुख़्तार ने कहाः अगर यह सच है तो हम उसको छोड़ देंगे। अभी यह गुफ़्तगू हो रही थी कि इब्ने कामिल ने आकर हकीम के क़त्ल की इत्तिला दी। मुख़्तार ने कहा तुमने उसको मेरे पास लाए बग़ैर इतनी जल्दी क्यों क़त्ल कर दिया? देखो यह अ़दी उसकी सिफ़ारिश के लिए आए हैं और यह इस बात के अह्ल हैं कि इनकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाए। इब्ने कामिल ने कहाः आपके शीओं ने न माना और मैं मज्बूर हो गया। अ़दी ने इब्ने कामिल को बुरा भला कहा। इब्ने कामिल भी जवाब देने लगे मगर मुख़्तार ने उसको ख़ामोश रहने की हिदायत की। अदी नाराज़ हो कर आ गए। (तबरी स० **138/8**, इब्ने असीर **94/4**, अल-बिदायह वन्निहायह स० **272/4**)

अबू सईद अस्सैफ़ल कहते हैं कि सअ़र अल-हनफ़ी ने मुख़्तार को चन्द क़ातिलाने हुसैन का पता बताया। मुख़्तार ने अ़ब्दुल्लाह बिन कामिल को उनकी गरिफ़्तारी के लिए भेजा। उसने उनमें से ज़्याद बिन मालिक, इमरान बिन ख़ालिद, अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी ख़शकारह अल-बिजली और अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस को गरिफ़्तार किया और मुख़्तार के सामने पेश किया। मुख़्तार ने उन से पूछा :

ऐ सालेहीन और जन्नत के नौजवानों के सरदार के क़ातिलो! बेशक अल्लाह आज तुम से बदला लेगा। बेशक वह वर्ष आज तुम्हारे लिए बड़ा मंहूस दिन लेकर आई है वह वर्ष जो हज़रत हुसैन के साथ थी जिस पर उन्होंने क़ब्ज़ा किया था। मुख़्तार ने हुक्म दिया। सरे बाज़ार उनकी गर्दनें मारो। पस उनके साथ ऐसा ही किया गया। (तबरी स० **125/7**, इब्ने असीर स० **94/4**)

ज़ैद बिन रक़ाद :

इस ज़ालिम ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अ़क़ील के तीर मारा था जो उनकी पेशानी में लगा था। उन्होंने अपनी पेशानी को बचाने

के लिए उस पर अपना हाथ रख लिया मगर तीर ऐसा लगा कि हाथ भी पेशानी के साथ पैवस्त हो गया और जुदा न हो सका। उस वक़्त उनकी ज़ुबान से निकला ऐ अल्लाह! जिस तरह इन दुश्मनों ने हमें हक़ीर व ज़लील करके क़त्ल किया है तू भी इनको ऐसा ही ज़लील करके क़त्ल कर। फिर उसी ज़ालिम ने एक और तीर मारा जो हज़रत अ़ब्दुल्लाह के पेट में लगा और वह शहीद हो गए। यह बदबख़्त कहा करता था कि मैं नौजवान के पास आया। वह तीर जो उसके पेट में लगा था वह तो मैंने आसानी से निकाल लिया मगर वह तीर जो पेशानी में लगा था उसको निकालने की बहुत कोशिश की तीर तो निकल आया मगर पैकान न निकल सका। मुख़्तार ने अ़ब्दुल्लाह बिन कामिल को उस बदबख़्त की गरिफ़्तारी के लिए भेजा। इब्ने कामिल ने अपने दस्ता के साथ आकर उसके मकान का मुहासरा कर लिया। यह बदबख़्त ज़ैद बड़ा बहादुर आदमी था तल्वार लेकर मुक़ाबला के लिए निकला। लोग उस पर टूट पड़े। इब्ने कामिल ने कहा उसको नेज़ा या तल्वार से न मारो बल्कि तीरों और पत्थरों से हलाक करो। लोगों ने इस क़द्र उस पर तीर बरसाए और पत्थर मारे कि वह गिर पड़ा। इब्ने कामिल ने कहा देखो अगर उसमें जान बाक़ी हो तो उसको लाओ। चूँकि उसमें अभी जान थी उस को लाए। इब्ने कामिल ने आग मंगवाई और उसको फ़ना फ़िन्नार कर दिया।

(तबरी स० 129/7, इब्ने असीर स० 95/4, अल-बिदायह वन्निहायह स० 272/4)

अ़मर बिन सबीह :

यह बदबख़्त कहा करता था कि मैंने हुसैन के रुफ़क़ा को तीरों से ज़ख़्मी किया था किसी को क़त्ल नहीं किया था। मुख़्तार ने आधी रात के वक़्त उसकी गिरफ़्तारी के लिए पुलिस को भेजा। यह उस वक़्त अपने मकान की छत पर अपनी तल्वार तकिए के नीचे रखे बेख़बर सो रहा था पुलिस ने चुपके से छत पर चढ़ कर उसको पकड़ लिया और उसकी तल्वार पर भी क़ब्ज़ा कर लिया। कहने लगा खुदा इस तल्वार का बुरा करे! यह मुझ से किस क़द्र क़रीब थी और अब किस क़द्र दूर हो गई है पुलिस ने उसको मुख़्तार के सामने ला कर पेश किया। उसने हुक्म दिया सुबह तक इसको क़ैद में रखो। जब सुबह हुई दरबारे आम लगा और बहुत से लोग जमा हो गए तो उसको लाया गया। उसने भरे दरबार में कहा ऐ गरोहे कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जारः अगर मेरे हाथ में तल्वार होती तो तुम्हें मालूम हो जाता कि मैं बुज़्दिल और कमज़ोर नहीं हूँ। यह बात मेरे लिए मुसर्रत का बाइस

होती अगर मैं तुम्हारे अ़लावा किसी और के हाथ से क़त्ल होता क्योंकि मैं तुम लोगों को बदतरीन ख़लाइक़ समझता हूँ। काश! इस वक़्त भी तल्वार मेरे हाथ में होती और मैं थोड़ी देर तक तुम्हारा मुक़ाबला करता उसके बाद उसने अपने पास खड़े हुए इब्ने कामिल की आँख पर मुक्का मारा। इब्ने कामिल ने हंस कर उसका हाथ पकड़ा और कहने लगा कि यह शख़्स कहता है कि मैंने ऑले रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नेज़ों से ज़ख़्मी किया है। अब इसके बारे में आप हमें हुक्म दीजिए। मुख़्तार ने कहाः नेज़े लाओ और इसको नेज़ों से घायल कर दो। चुनांचे उसको नेज़े मार मार कर हलाक कर दिया गया। (तबरी स० 129/7, इब्ने असीर स० 95/4)

मूसा बिन आमिर फ़रमाते हैं :

बेशक मुख़्तार ने कहा क़ातिलाने हुसैन को तलाश करके मेरे पास लाओ क्योंकि जब तक मैं उनके नापाक वजूद से पूरी ज़मीन और शहर को पाक न कर दूँगा मुझे खाना पीना अच्छा नहीं लगता। (तबरी स० 124/7)

मुख़्तार के इस जज़्बे और ख़ूने हुसैन के इंतिक़ाम लेने की वजह से अवाम व ख़्वास कसीर तादाद में उसके साथ और उसके मोतक़िद हो गए थे। मुख़्तार जब अमर बिन सअ़द, शिम्र ज़िल-जौशन और ख़ौली बिन यज़ीद वग़ैरह जैसे अश्क़िया के क़त्ल से फ़ारिग़ हुआ तो अब उसको इब्ने ज़्याद बदनिहाद की फ़िक्र हुई क्योंकि वाक़िया-ए-करबला की यज़ीद के बाद सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी उस पर आइद होती थी। इस बदबख़्त का वजूद उसको बहुत ज़्यादा खटकता था जब तक वह उसको ख़त्म न कर लेता उसको कैसे चैन आ सकता था। चुनांचे उसने इब्राहीम बिन मालिक अश्तर को एक ज़बरदस्त और तजरेबाकार फ़ौजे कसीर के साथ उसके मुक़ाबले के लिए भेजा। उधर इब्ने ज़्याद को भी मालूम हुआ तो वह भी लश्करे कसीर के साथ मुक़ाबला के लिए आया। शहर मूसल से पाँच कोस के फ़ासिले पर दरिया के किनारे पर दोनों लश्करों के दरम्यान ख़ूब जंग हुई। आख़िर शदीद जंग के बाद इब्ने ज़्याद के लश्कर को शिकस्त हुई। शिकस्त ख़ूरदा लश्कर मआ इब्ने ज़्याद भागा। इब्राहीम अश्तर ने उनका तआ़क़ुब करने और उनको मारने का हुक्म दिया। चुनांचे इब्ने ज़्याद के बहुत से लोग मारे गए और खुद यह बदनिहाद भी मारा गया। इब्राहीम ने उसका सर जिस्म से जुदा किया और लाश को जला दिया।

वह तख़्त है किस क़ुबर में वह ताज कहाँ है
ऐ ख़ाक! बता ज़ोर उबैद आज कहाँ है

जब इब्ने ज़्याद का सर कूफ़ा में आया तो मुख़्तार ने दरबारे आम किया और इब्ने ज़्याद के सर को पेश करने का हुक्म दिया। जब सर पेश हुआ तो इत्तिफ़ाक़ से उस दिन भी 67 हिजरी का यौमे आशूरा था। मुख़्तार ने कूफ़ियों से कहाः देखो आज से छः साल पहले इसी जगह इस बदबख़्त के सामने हज़रत हुसैन का सर पेश हुआ था और आज इसका सर मेरे सामने रखा है। मैंने ख़ूने हुसैन का बदला लेने में कोई कमी नहीं की है।

इब्ने ज़्याद बद निहाद और दीगर रुउसा के सरों को बतौर नुमाइश के एक जगह रखा गया तो लोगों ने देखा कि एक पतला सा साँप आया और उसने सब सरों को देखा और फिर इब्ने ज़्याद के मुँह में दाख़िल हो कर नाक के नथुने से और नाक से दाख़िल हो कर मुँह से निकला और कई मरतबा ऐसा किया। चुनांचे हज़रत अम्मारह बिन उमैर फ़रमाते हैं कि –

जब उबैदुल्लाह बिन ज़्याद और उसके साथियों के सर लाए गए तो मस्जिद के मैदान में तरतीब से रखे गए। मैं जब उनके क़रीब पहुँचा तो वहाँ जो लोग थे वह कह रहे थे वह आ गया, वह आ गया, तो अचानक एक साँप आया और वह सरों में फिरने लगा। हत्ता कि उबैदुल्लाह बिन ज़्याद के नथुनों में दाख़िल हो गया और थोड़ी सी देर ठहर कर फिर निकला और चला गया यहाँ तक कि वह ग़ायब हो गया। फिर लोग कहने लगे वह आ गया। वह आ गया। पस उस साँप ने इसी तरह दो तीन बार किया। यह हदीस हसन सही है।

हज़रत मुग़ीरह फ़रमाते हैं कि –

हज़रत हुसैन की शहादत के बाद मरजाना (इब्ने ज़्याद की माँ) ने अपने बेटे उबैदुल्लाह से कहाः ओ ख़बीस! तूने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नवासे को क़त्ल किया है। ख़ुदा की क़सम! तू कभी भी जन्नत को नहीं देखेगा। (तहज़ीबुत्तहज़ीब स० 357/2, इब्ने असीर स० 103/4)

इब्ने ज़्याद के क़त्ल के वक़्त इब्ने मुफ़र्रिग़ ने यह अश्आर कहे।

जब मौतें किसी ज़ालिम व जाबिर के पास आती हैं तो वह हाजिबों और दरवाज़ों के पर्दे चाक कर देती हैं यानी रुसवा कर देती हैं।

मैं उस ख़बीसा के बच्चे और उस फ़रो माया व नाकस के बच्चे की मौत के वक़्त कहता हूँ कि शुक्र है वह हलाक हुआ।

तू (उन बदबख़्तों में से है) जिनके मुर्दों को दफ़न के वक़्त ज़मीन भी क़ुबूल नहीं करती और मल्बूसे नजासत व ग़लाज़त को कैसे क़ुबूल करे।

(इब्ने असीर स० 103/4)

उमैर बिन अल-हब्बाब अस्सलमी ने लश्कर इब्ने ज़्याद की मज़म्मत में कहा।

वह लशकर जो अपने क़ियाम के दौरान शराब नोशी और ज़ना को जमा करे वह ताक़तवर दुश्मन के मुक़ाबले में फ़तहमन्द नहीं हो सकता।

(इब्ने असीर स० 104/4)

हक़ीक़त यह है कि मुख़्तार ने शोहदा-ए-करबला के मुक़द्दस ख़ून का ख़ूब बदला लिया। हज़ारों दुश्मनाने अह्ले बैत को तहे तेग़ किया और चुन चुन कर वासिल बेही जहन्नम किया और किसी के साथ किसी क़िस्म की कोई रिआयत न की। यहाँ तक कि शिम्र मल्ऊन जो एक रिवायत के मुताबिक़ उसका बहनोई था और शिम्र का बेटा जो उसका भांजा था उसकी गर्दन मारने का भी हुक्म दिया। जब उसने यह उज़्र पेश किया कि मैं तो मारक-ए-करबला में शरीक ही न था मेरा क्या क़ुसूर है? तो मुख़्तार ने कहाः बेशक तू शरीक तो न था मगर तू फ़ख़्र किया करता था कि मेरे बाप ने हुसैन को क़त्ल किया है।

मुख़्तार का दाव-ए-नुबुव्वत :

मुख़्तार ने क़ातिलाने हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के बारे में जो शानदार किरदार अदा किया था अफ़सोस कि वह इस अ़ज़ीम नेकी को अपने हक़ में क़ाइम न रख सका और उस पर शक़ावते अज़ली ग़ालिब हुई और उसने नुबुव्वत का दावा कर दिया और कहा कि मेरे पास जिब्रीले अमीन वह्य लाते हैं और अल्लाह तआ़ला ने मुझ में हलूल किया है (मआ़ज़ल्लाह) और उसके कज़्ज़ाब होने की ख़बर हुज़ूरे अकरम आलिमे माकाना वमा यकूनु सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहले ही दे दी थी कि **सयकूनु फ़ी सक़ीबिन कज़्ज़ाबुन वमबीर।** बेशक अ़क़रीब सक़ीफ़ में एक कज़्ज़ाब और एक हलाक करने वाला होगा चुनांचे तिर्मिज़ी शरीफ़ में तो **बाबु मा जाआ फ़ी सक़ीफ़िन कज़्ज़ाबुन व मबीर।** क़ाइम है और सही मुस्लिम शरीफ़ में भी हदीस मौजूद है। शारेहीने हदीस का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि सक़ीफ़ के कज़्ज़ाब से मुराद मुख़्तार और मबीर से मुराद हज्जाज बिन यूसुफ़ है। हज़रत अबू बकर बिन शैबा फ़रमाते हैं कि किसी ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अ़न्हु से कहा कि मुख़्तार कहता है कि मुझ पर वह्य आती है। फ़रमाया सच कहता है फिर यह आयत पढ़ी **इन्नश्शयातीना लयूहूना इला औलियाइहिम।** कि बेशक श्यातीन अपने दोस्तों की तरफ़ वह्य किया करते हैं।

मुख़्तार ने अहनफ़ बिन क़ैस को ख़त लिखा कि तुम अपनी क़ौम को दोज़ख़ की तरफ़ लिए जा रहे हो जहाँ से वापसी मुम्किन नहीं।

और मुझे यह बात पहुँची है कि तुम लोग मेरी तक्ज़ीब करते हो अगर तुम मेरी तक्ज़ीब करते हो तो मुझ से पहले रसूलों की भी तो तक्ज़ीब की गई है और मैं उन से बेहतर नहीं।

(तबरी स० 132/7, अल-बिदायह वन्निहायह स० 275/8)

ईसा बिन दीनार फ़रमाते हैं कि मैंने अबू जाफ़र (हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़र रज़ि अल्लाहु अ़न्हु) से मुख़्तार के मुतअल्लिक़ पूछा तो आपने फ़रमाया कि मैंने अपने बाप हज़रत अ़ली बिन हुसैन (ज़ैनुल-आ़बेदीन) को देखा कि कअ़बतुल्लाह के दरवाज़े पर खड़े हुए मुख़्तार पर लानत कर रहे थे। एक शख़्स ने उन से कहा अल्लाह मुझे आप पर निसार करे! आप उस शख़्स पर लानत कर रहे हैं जो आप ही लोगों के मुआमले में ज़ब्ह किया गया। आपने फ़रमाया। बिला शुबह वह कज़्ज़ाब था क्योंकि वह अल्लाह और उसके रसूल पर झूठ बाँधा करता था। (तब्क़ात इब्ने सअ़द स० 213/5)

अ़ल्लामा इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं।

और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की ख़िलाफ़त के अय्याम में मुख़्तार कज़्ज़ाब ने जिसने नुबुव्वत का दावा किया था, ख़ुरूज किया तो इब्ने ज़ुबैर ने उसके मुक़ाबला के लिए 67 हिजरी में लश्कर तैयार करके भेजा जिसने उस मल्ऊन को शिकस्त देकर क़त्ल किया। (तारीख़ुल-ख़ुलफ़ा स० 82)

साहिल को देख देख के यूँ मुत्मइन न हो
कितने सफ़ीने डूबे हैं साहिल के पास भी

बाज़ लोग जब इस क़िस्म की कोई बात सुनते या पढ़ते हैं तो हैरान हो जाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जिस शख़्स को अपने हबीब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अह्ले बैत के दुश्मनों से इंतिक़ाम लेने के लिए मुंतख़ब किया वह गुम्राह, कज़्ज़ाब और मल्ऊन कैसे हो सकता है? मल्ऊन व कज़्ज़ाब को भी क्या ऐसा शानदार कारनामा अदा करने की तौफ़ीक़ हासिल हो सकती है? इस शुबह का जवाब यह है कि ऐसा होना शरअ़न या अ़क्लन किसी तरह भी मुहाल और नामुम्किन नहीं। देखिए इब्लीसे लईन कितना बड़ा आ़बिद व ज़ाहिद और आ़लिम व फ़ाज़िल था बिल-आख़िर मल्ऊन हो गया। बल्अ़म बिन बाऊर का वाक़िया देख लीजिए कैसा आ़बिद व ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दावात था। आख़िर क़अ़रे मुज़िल्लत में गिर गया और कुत्ते की शक्ल में दोज़ख़ में जाएगा। इसी तरह बहुत से लोग ऐसे हुए

हैं जिन्होंने बड़े बड़े शानदार कारनामे अंजाम दिए और आख़िर क़िस्मत की बदनसीबी का शिकार हो कर तबाह व बरबाद हुए।

यह नाचीज़ मुअल्लिफ़ अ़र्ज़ करता है कि जहाँ तक हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के ख़ूने नाहक़ के इंतिक़ाम का तअ़ल्लुक़ है अगर आप गुज़श्ता सुतूर में पढ़ चुके हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वह्य फ़रमाई कि मैंने यहिया बिन ज़करिया के क़त्ल के एवज़ सत्तर हज़ार अफ़राद मारे थे और तुम्हारे नवासे के एवज़ उन से दो गुना मारूँगा तो तारीख़ शाहिद है कि हज़रत यहिया बिन ज़करिया के ख़ूने नाहक़ का बदला लेने के लिए अल्लाह तआ़ला ने बख़्त नसर जैसे ज़ालिम, बदतरीन ख़लाइक़ को मुक़र्रर फ़रमाया जो ख़ुदाई का दावा करता था। इसी तरह हज़रत इमाम के ख़ूने नाहक़ का बदला लेने के लिए अल्लाह तआ़ला ने मुख़्तारे सक़फ़ी जैसा कज़्ज़ाब बदतरीन ख़ल्क़ मुक़र्रर फ़रमाया चुनांचे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है। **वकज़ालिका नुवल्ली बाज़ज़्ज़ालेमीना बअ़्ज़न बेमा कानू यक्सेबूना।** (क़ुरआन 6/129) और इसी तरह हम मुसल्लत करते हैं बाज़ ज़ालिमों को बाज़ (ज़ालिमों) पर बवज्हे उन (करतूतों) के जो वह करते रहते थे। यानी ज़ालिमों को ही ज़ालिमों पर मुसल्लत करके फिर ज़ालिमों के हाथों से ज़ालिमों को ज़लील व ख़्वार और तबाह व बरबाद करते हैं चुनांचे अ़रब का एक शाइर कहता है।

और नहीं है कोई हाथ यानी कोई ताक़त मगर उसके ऊपर अल्लाह का हाथ यानी अल्लाह की ताक़त है और नहीं है कोई ज़ालिम मगर वह किसी दूसरे ज़ालिम के सबब रंज व मुसीबत में मुब्तला होगा।

हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :

बेशक अल्लाह इस दीने इस्लाम की मदद फ़ाजिर यानी बदकार आदमी के ज़रिआ़ से भी करा लेता है।

(सिराज मुनीर शरह जामे सग़ीर स० 371/1)

फ़ज़ीलते आ़शूरा

आ़शूरा, अ़श्र से मुश्तक़ है और अ़श्र के मानी दस अ़दद के हैं। आ़शूरा से मुराद माहे मुहर्रम का दसवाँ दिन है बाज़ अह्ले इल्म फ़रमाते हैं कि उस दिन को आ़शूरा इसलिए कहते हैं कि उस दिन में अल्लाह तआ़ला ने दस नबियों पर दस करामतों का इंआ़म फ़रमाया है। उस दिन में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की तौबा क़ुबूल हुई। हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कुश्ती

कोहे जूदी पर रुकी। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को फ़िरऔन से नजात मिली और फ़िरऔन गर्क़ हुआ, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की विलादत हुई और उसी दिन वह आसमान पर उठाए गए। हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को मछली के पेट से ख़ुलासी मिली और उसी दिन उनकी उम्मत का कुसूर मुआफ़ हुआ। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम कुएँ से निकाले गए। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को मशहूर बीमारी से सेहत हासिल हुई। हज़रत इद्रीस अ़लैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की विलादत हुई और उसी दिन उन पर आग गुलज़ार हुई। हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम को मुल्क अ़ता हुआ।

अ़लावा अज़ीं और भी इंआ़मात व करामात और वाक़िआ़त उस दिन में हुए जो शारेहीन हदीस और उलमा-ए-तारीख़ व सियर ने नक़्ल फ़रमाए हैं। साबित हुआ कि यौमे आ़शूरा वाक़िया करबला से पहले भी मुकर्रम व मुअ़ज़्ज़म दिन समझा जाता था और हदीस शरीफ़ में आया है कि क़ियामत भी 10 मुहर्रम बरोज़ जुमा यौमे आ़शूरा ही आएगी। (गुनियतुत्तालेबीन मुलख़्ख़िसन)

आमाले आ़शूरा :

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आ़शूरा (मुहर्रम) के दसवीं दिन का रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया।

आ़शूर-ए-मुहर्रम के रोज़े की बहुत फ़ज़ीलत और अज्र व सवाब है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है।

कि रमज़ान के बाद अफ़्ज़ल रोज़े अल्लाह के महीना मुहर्रम के हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं।

कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को न देखा कि आप किसी दिन के रोज़े को दूसरे दिनों पर फ़ज़ीलत देकर तलाश करते हों। सिवाए यौमे आ़शूरा के। आ़शूरे के रोज़े से एक साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :

यौमे आ़शूरा का रोज़ा मैं अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से उम्मीद रखता हूँ कि अल्लाह उसको गुज़श्ता साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना दे।

और उलमा ने लिखा है कि उस दिन वहशी जानवर भी रोज़ा रखते हैं।

फ : चूँकि उस दिन यहूद भी रोज़ा रखते थे इसलिए कि उस दिन उनको उनके दुश्मन ज़ालिम फ़िरऔन से नजात मिली थी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है कि यहूद की मुख़ालिफ़त करो

इसलिए उलमा फ़रमाते हैं कि तन्हा दसवीं का रोज़ा न रखा जाए बल्कि नवीं का भी रखा जाए यानी दो रोज़े रखे जाएं ताकि यहूद के साथ मुशाबिहत न रहे और नवीं के रोज़ा के बारे में हदीस भी मौजूद है। इस तरह दोनों हदीसों पर अ़मल हो जाएगा।

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि –

जो मुहर्रम के पहले जुम्अ़तुल-मुबारक का रोज़ा रखे उसके पिछले सब गुनाह बख़्श दिए जाते हैं और जो मुहर्रम के तीन दिन यानी जुमेरात, जुमअ़, हफ़्तह के रोज़े रखे अल्लाह तआ़ला उसके लिए नौ सौ साल की इबादत (का सवाब) लिख देता है। (नुज़्हतुल-मजालिस स० 176/1)

उम्मुल-मुमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

जो मुहर्रम के पहले दस दिनों के रोज़े रखे वह फ़िरदौसे आला का वारिस हो जाता है। (नुज़्हतुल-मजालिस स० 177/1)

सुलतानुल-औलिया हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन महबूब इलाही रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि शैख़ुल-इस्लाम वल-मुस्लेमीन कुतबुल-अक़्ताब हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकर रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने आ़शूरे के रोज़े की फ़ज़ीलत के बारे में फ़रमाया –

कि आ़शूरा के रोज़े में जंगल की हिरनियाँ भी खानदाने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दोस्ती के सबब अपने बच्चों को दूध नहीं देतीं पस क्यों इस रोज़े को छोड़ा जाए। (राहतुल-कुलूब स० 58)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

जो आ़शूरे के दिन चार रकअ़तें पढ़े हर रकअ़त में सूरः फ़ातिहा के बाद ग्यारह मरतबा **कुल हुवल्लाहु अहद** पढ़े अल्लाह तआ़ला उसके पचास बरस के गुनाह मुआ़फ़ कर देता है और उसके लिए नूर का मिंबर बनाता है। (नुज़्हतुल-मजालिस स० 178/1)

और फ़रमाया रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने :

जो आ़शूरे के दिन अपने अह्ल व अ़याल पर उस्अ़त करे (तआ़म वग़ैरह की) अल्लाह तआ़ला उस पर सारा साल उस्अ़त फ़रमाता है।

(बैहक़ी, नुज़्हतुल-मजालिस स० 178/1)

मिस्र में एक शख़्स था जिसके पास एक कपड़े के सिवा कुछ न था उसने आ़शूरे के दिन मस्जिद हज़रत अ़मर बिनुल-आस रज़ि अल्लाहु अ़न्हु

में सुबह की नमाज़ पढ़ी वहाँ क़ाइदा यह था कि आशूरे के दिन औरतें उस मस्जिद में दुआ करने के लिए जाया करती थीं तो एक औरत ने उस शख़्स से कहा कि लिल्लाह मुझे कुछ मेरे बाल बच्चों के लिए दो? उस शख़्स ने कहा अच्छा मेरे साथ चलो। घर में जा कर वह कपड़ा उतारा और दरवाज़े की दराज़ से उस औरत को दे दिया उस औरत ने दुआ दी कि अल्लाह तुझे जन्नत के हुल्ले पहनाए।

उसी रात उस शख़्स ने ख़्वाब में एक निहायत ख़ूबसूरत हूर देखी जिसके पास एक खुशबूदार सेब था उसने सेब को तोड़ा तो उसमें एक हुल्ला पाया। उस शख़्स ने उस हूर से पूछा तू कौन है? उसने कहा मैं आशूरा हूँ जन्नत में तेरी ज़ौजा! फिर वह शख़्स जाग पड़ा और सारे घर को खुशबू से महकता पाया। वुज़ू करके दो रकअतें पढ़ीं और दुआ की ऐ अल्लाह अगर वाक़ई वह जन्नत में मेरी ज़ौजा है तो मेरी रूह क़ब्ज़ कर ले और मुझे उसके पास पहुँचा दे। अल्लाह ने उसकी दुआ कुबूल की और वह उसी वक़्त मर गया।

पहुँचा मरीज़ अपने मसीहा के पास

इमाम अब्दुल्लाह याफ़ई मक्की रहमतुल्लाह अलैह नक़्ल फ़रमाते हैं कि शहर "रय" (तेहरान) में एक बड़ा अमीर क़ाज़ी था उसके पास आशूरे के दिन एक फ़क़ीर आया और उसने क़ाज़ी से कहा अल्लाह आपको इज़्ज़त दे मैं एक फ़क़ीर अह्ल व अयाल वाला हूँ आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ। इस दिन की हुर्मत व इज़्ज़त के सदक़ा में मुझे दस मन आटा, पाँच मन गोश्त और दो दिरहम दे क़ाज़ी ने ज़ुहर के वक़्त देने का वादा किया वह फ़क़ीर ज़ुहर के वक़्त आया। क़ाज़ी ने कहा अस्र के वक़्त दूँगा। जब अस्र का वक़्त आया तो उसने फ़क़ीर को टाल दिया और कुछ भी न दिया। फ़क़ीर शिकस्ता दिल हो कर चला। रास्ता में एक नसरानी अपने मकान के दरवाज़े में बैठा हुआ था। फ़क़ीर ने उस से कहा इस दिन की इज़्ज़त व हुर्मत के सदक़ा में मुझे कुछ अता कीजिए। नसरानी ने कहा इस दिन की खुसूसियत क्या है? फ़क़ीर ने इस दिन की इज़्ज़त व हुर्मत ब्यान की (और बताया कि यह दिन फरज़न्दे रसूल दिल बन्द बतूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत का दिन है) नसरानी ने फ़क़ीर से कहा कि तुमने अपनी हाजत के सिलसिले में बहुत बड़े अज़ीम दिन की हुर्मत का वास्ता और क़सम दी है लिहाज़ा अपनी हाजत ब्यान करो। फ़क़ीर ने वही आटे गोश्त और दिरहमों का सवाल किया। नसरानी ने दस बोरी

गन्दुम अढ़ाई मन गोश्त और बीस दृहम देकर कहा कि यह तेरे और तेरे अयाल के लिए है और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ इस माह के इस दिन की करामत की वजह से हर साल इतना ले जाया करो। फ़क़ीर यह सब कुछ लेकर अपने घर चला गया। जब रात हुई और वह क़ाज़ी सोया तो उसने ख़्वाब में हातिफ़े ग़ैबों से सुना कि अपना सर ऊपर उठा कर देखो क़ाज़ी ने सर उठा कर देखा तो दो महल थे। एक की दीवारें सोने चाँदी की थीं और दूसरा सुर्ख़ याक़ूत का। क़ाज़ी ने कहा या इलाही यह दोनों महल किस के हैं?

उसको कहा गया यह दोनों तेरे लिए थे अगर तू फ़क़ीर की हाजत पूरी कर देता। पस जब तूने उसको रद्द कर दिया तो अब यह दोनों महल फलाँ नसरानी के हो गए हैं। क़ाज़ी घबरा कर नींद से चौंक पड़ा और हाए वाए करने लगा। सुबह को नसरानी के पास आ कर कहा तूने गुज़श्ता रात क्या नेकी की है? उसने वजहे सवाल पूछी। क़ाज़ी ने अपना ख़्वाब बताया और कहा कि अपनी उस अच्छी नेकी जो तूने फ़क़ीर के साथ की है मेरे हाथ सौ हज़ार दिरहम के एवज़ बेच दे नसरानी ने कहा अगर कोई ज़मीन भर दिरहम भी दे तब भी मैं उसको न बेचूँगा यह कितना अच्छा मआमला रब्बे करीम के साथ हुआ है यह कह कर वह नसरानी कलिम-ए-शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया और कहा बिला शुबह यह दीन सच्चा है। (रौज़ुर्रियाहीन स० 151)

एक शख़्स ने बाज़ उलमा से सुना कि अगर कोई आशूरा के दिन एक दिरहम सदक़ा करे तो अल्लाह तआला उसके बदला में उसको एक हज़ार दिरहम देगा उस शख़्स ने सात दिरहम सदक़ा किए थे। एक साल के बाद फिर किसी आलिम से सुना तो कहने लगा यह सही नहीं है। मैंने सात दिरहम सदक़ा किए थे एक साल हो गया है मुझे तो उसके बदले में एक कौड़ी भी नहीं मिली यह कह कर चला गया रात को उसके दरवाज़ा पर किसी ने आवाज़ दी वह बाहर आया तो आवाज़ देने वाले ने कहा ऐ झूठे यह ले सात हज़ार दिरहम अगर तू क़यामत तक सब्र करता तो न मालूम कितनी जज़ा पाता। (रौज़ुल-अफ़्कार)

इन रिवायात से साबित हुआ कि आशूरा के दिन रोज़ा रखना, सदक़ा व ख़ैरात करना, नवाफ़िल पढ़ना और ज़िक्र व अज़्कार वग़ैरह करना बहुत ही फ़ज़ीलत और अज्र व सवाब का बाइस है।

अल्लाह तआला को मंजूर यही था कि उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम का नवासा और जन्नत के नौजवानों का सरदार भी इसी बरगुज़ीदा और मुबारक दिन में शहादते उज़्मा का मरतबा हासिल करे। (1)

याद रखिए : उस दिन में इमाम रज़ि अल्लाहु अन्हु पर जो मसाइब व आलाम आए वह उनके दरजात की बुलन्दी और मक़ाम की रिफ़अत का सबब बने। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम उनकी बेमिसाल क़ुरबानी से जो उन्होंने सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा और इस्लाम की बक़ा के लिए दी और फ़िस्क़ व फ़ुजूर के ख़िलाफ़ हक़ व सदाक़त की आवाज़ बुलन्द की ओर लरज़ा देने वाले मसाइब के बावजूद भी हक़ पर साबित क़दम रहे सबक़ और इबरत हासिल करें और हक़ व सदाक़त पर क़ाइम रहने और अल्लाह की रज़ा और इस्लाम की बक़ा के लिए कुरबानी देना अपना शेवा व तरीक़ा बनाएं और उन दिन में नेकी व भलाई में कसरत करें और ऐसे अक़्वाल व अफ़आल से इज्तिनाब करें जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मर्ज़ी और तालीमात के सरासर ख़िलाफ़ हैं। अल्बत्ता उनकी शहादत और उन आने वाले आलाम व मसाइब के ज़िक्र के वक़्त अगर दर्द व मुहब्बत के बसबब आँसू आ जाएं और गिरिया तारी हो जाए तो यह महमूद और मुस्तहसन है और ऐने सआदत है। लेकिन सीना कूबी वग़ैरह न करना चाहिए यह नाजाइज़ और हराम है।

ज़िक्रे शहादत पर आँसू बहाना :

शुरू सफ़हात में अहादीस गुज़र चुकी हैं कि जब जिब्रीले अमीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु की शहादत की ख़बर दी तो आपने यह ख़बर सुन कर आँसू बहाए और शहादत के रोज़ भी उम्मुल-मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा ने हुज़ूरे अकरम को ख़्वाब में रोते हुए देखा। आपने फ़रमाया मैं अभी अपने बेटे हुसैन की शहादतगाह में गया था। उस से अंदाज़ा किया जा सकता है कि सरकारे दो आलम के क़ल्बे अक्दस को किस क़द्र रंज व ग़म पहुँचा होगा। अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहू जब सफ़रे सफ़्फ़ैन से वापसी के मौक़ा पर ज़मीने करबला से गुज़रे थे तो आपने भी रोते हुए फ़रमाया था कि उस मैदान में कितने जवानाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद होंगे और उन पर ज़मीन व आसमान रोएंगे। शहादत के वक़्त भी ज़मीन व आसमान का ख़ून के आँसू रोना और जिनों का नौहा करना और मरसिया ख़्वानी करना ज़िक्रे शहादत में ब्यान हुआ है। अलावा अज़ी तीन रोज़ तक दुनिया का तारीक हो जाना और आसमान का सुर्ख़

हो जाना यह साबित करता है कि यह वाक़्या इस क़द्र दर्द अंगेज़ और अलमनाक था जिसने हर एक को तड़पा के रख दिया था। क़ुतबुल-अक़्ताब, ग़ौसुस्सक़लैन, महबूबे सुब्हानी सैयद अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ि अल्लाहु अन्हु की तरफ़ मंसूब किताब गुनीयतुत्तालिबीन में है।

हज़रत हम्ज़ा बिन ज़्यात फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम को ख़्वाब में देखा कि वह दोनों हज़रत हुसैन बिन अली की क़बर पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहे हैं।

और उसी में है कि हज़रत उसामा हज़रत इमाम जाफर सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत फ़रमाते हैं कि :

जिस दिन हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि अल्लाहु अन्हु शहीद हुए हैं उस दिन से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उनकी क़बर पर उतरे हैं जो उन पर क़्यामत तक रोते रहेंगे। (गुनियतुत्तालिबीन स० 432)

सुलतानुल-औलिया हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन महबूबे इलाही देहलवी क़ुदुस सिर्रहू फ़रमाते हैं कि मैं माहे मुहर्रम शरीफ़ 656 हिजरी में सुल्तानुल-मशाइख़, शैख़ुश्शुयूख़ अल-आलम, सैयदुल-आबेदीन, बदरुल-आरेफ़ीन, उम्दतुल-अबरार क़ुदवतुल-अख़्यार, ताजुल-अस्फ़िया सिराजुल-औलिया, बुरहानुश्शरअ वद्दीन, शैखुल-इस्लाम वल-मुस्लेमीन हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मरऊद गंज शकर रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुआ आपने आशूरा के गुर्रा मुतबर्रेका की फ़ज़ीलत में फ़रमाया:

इस अशरा में किसी और काम में मशगूल नहीं होना चाहिए सिवाए इताअत, तिलावत दुआ व नमाज़ वगैरह के इस वास्ते कि इस अशरा में क़हरे इलाही भी हुआ है और बहुत रहमते इलाही भी नाज़िल होती है बादे अज़ाँ फ़रमाया कि क्या तुझे मालूम नहीं कि इस अशरा में हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर क्या गुज़री? और आपके फ़रज़न्दों को किस तरह बेरहमी से शहीद किया गया बाज़ प्यास की हालत में हलाक हुए कि इन बद-बख़्तों ने इन अल्लाह के प्यारों को पानी का एक क़तरा तक न दिया जब शैखुल-इस्लाम ने यह बात फ़रमाई तो एक नारा मार कर बेहोश हो कर गिर पड़े जब होश में आए तो फ़रमाया कैसे संगदिल, काफ़िर ने आक़िबत, बेसआदत और ना महरबान थे हालाँकि उन्हें ख़ूब मालूम था कि यह दीन व दुनिया और आख़िरत के बादशाह के फ़रज़न्द हैं फिर भी उन्हें बड़ी बेरहमी से शहीद किया और उन्हें यह ख़्याल न आया कि कल क़ियामत के दिन हज़रत ख़्वाज-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क्या मुँह दिखायेंगे।

(राहतुल-कुलूब : स० 57)

हज़रत ख़्वाजा अमीर ख़ुसरू निज़ामी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि मुहर्रम की 5 तारीख़ को सुल्तानुल-औलिया हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया, महबूब इलाही क़ुद्दुस सिर्रहू की क़दम बोसी का शर्फ़ हासिल हुआ।

दौराने इरशादात हज़रत ख़्वाजा ने आब दीदह हो कर फ़रमाया कि हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा के जिगर गोशों का हाल सबको मालूम है कि ज़ालिमों ने उनको दश्ते करबला में किस तरह भूखा प्यासा शहीद किया फिर फ़रमाया कि इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु की शहादत के दिन सारा जहाँ तीरह व तार हो गया। बिजली चमकने लगी। आसमान और ज़मीन जुंबिश करने लगे। फ़रिश्ते अक़ब में थे और बार बार (हक़ तआला से) इजाज़त तलब करते थे कि हुक्म हो तो तमाम ईज़ा दहिन्दों को मलिया मेट कर दें। हुक्म होता कि तुम्हें उस से कुछ वास्ता नहीं है तक़्दीर यूं ही है मैं जानूं और मेरे दोस्त तुम्हारा इसमें दख़ल नहीं।

मैं क़्यामत के दिन उन ज़ालिमों के बारे में उन्हें (अपने दोस्त) से फ़ैसला कराऊंगा जो कुछ वह कहेंगे उसी के मुताबिक़ होगा।

(अफ़ज़लुल-फ़वाइद तरजमा उर्दू स० 75)

मजालिसे मुहर्रम का इंइक़ाद और ईसाले सवाब की नीयत से नज़र व नियाज़ करना सबील लगाना और शरबत दूध वग़ैरह पिलाना

हज़रत सअ़द बिन उबादा रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह! मेरी माँ फ़ौत हो गई है

तो कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है (जो माँ के लिए करूँ) फ़रमाया पानी तो उन्होंने कुवाँ खुदवाया और कहा कि यह सअ़द की माँ के लिए है।

इस हदीस में यह अल्फ़ाज़ **हाज़ेही लेउम्मे सअ़दिन** कि यह कुवाँ सअद की माँ के लिए है। यानी उनकी रूह को सवाब पहुँचाने की ग़रज़ से बनवाया गया है उस से सराहतन साबित हुआ कि जिसकी रूह को सवाब पहुँचाने की ग़रज़ से कोई सदक़ा व ख़ैरात की जाए अगर इस सदक़ा और ख़ैरात और नियाज़ पर मजाज़ी तौर पर उसका नाम लिया जाए यानी यूं कहा जाए कि यह सबील हज़रत इमाम हुसैन और शोहदाए करबला रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम के लिए है या यह खाना या यह नियाज़ सहाबा-ए-कबार या अह्ले बैते अत्हार या हज़रत ग़ौसे आज़म या हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के लिए है तो हरगिज़ हरगिज़ उस सबील का पानी और वह खाना व नियाज़ वग़ैरह हराम न होगा। वरना फिर यह भी कहना

पड़ेगा कि उस कुएँ का पानी भी हराम था जिस कुएँ के पानी के मुतअ़ल्लिक़ यह कहा गया कि यह सअ़द की माँ के लिए है। इस कुएँ का पानी हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, सहाब-ए-किराम, ताबईन, तबा ताबईन और अह्ले मदीना के नज़्दीक हलाल व तैयब है तो जिस सबील के पानी के मुतअ़ल्लिक़ यह कहा जाए कि यह इमाम हुसैन और शोहदाए करबला रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम के लिए है या यह नियाज़ वग़ैरह फलाँ के लिए है तो वह भी मुसलमानों के नज़्दीक हलाल व तैयब है।

मज़्हबे हन्फ़ी की मोतबर व मशहूर किताब हिदाया शरीफ़ में है कि

बेशक इंसान अपने अ़मल का सवाब किसी दूसरे शख़्स को पहुँचा सकता है ख़्वाह नमाज़ का हो या रोज़ा का हो या सदक़ा व ख़ैरात वग़ैरह का हो। यह अह्ले सुन्नत व जमाअ़त का मज़्हब है।

हज़रत शाह अ़ब्दुल-अ़ज़ीज़ मुहद्दिस रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं।

हज़रत अ़ली और उनकी औलाद पाक को तमाम अफ़रादे उम्मत पीरों व मुर्शिदों की तरह मानते हैं और तकवीनी उमूर को इन हज़रात के साथ वाबस्ता जानते हैं और फ़ातिहा व दुरूद व सदक़ात और नज़्र व नियाज़ उनके नाम की हमेशा करते हैं चुनांचे तमाम औलिया अल्लाह का यही हाल है। (तोहफ़ा इस्ना अ़शरीया स० 396)

यही शाह साहब दूसरी जगह फ़रमाते हैं।

वह खाना हज़रत इमाम हसन व हुसैन की नियाज़ के लिए पकाया जाए और जिस पर फ़ातिहा, कुल शरीफ़ और दुरूद पढ़ा जाए वह तबर्रुक हो जाता है और उसका खाना बहुत ही अच्छा है। (फ़तावा अ़ज़ीज़ी स० 75)

हज़रत शाह वलीयुल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं :

दूध, चावल (खीर) किसी बुज़ुर्ग की फातिहा के लिए उनकी रूह को सवाब पहुँचाने की नीयत से पकाने और खाने में कोई मुज़ाइक़ा नहीं है जाइज़ है और अगर किसी बुज़ुर्ग की फ़ातिहा दी जाए तो मालदारों को भी खाना जाइज़ है। (ज़ुब्दतुन्नसाइह स० 132)

हज़रत शैख़ अहमद मजदा शैबानी रहमतुल्लाह अलैह जो हज़रत इमाम मुहम्मद शैबानी रज़ि अल्लाहु अन्हु के शागिर्दे रशीद इमामुल-अइम्मा सिराजुल-उम्मा हज़रत इमाम आज़म इमाम अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु अन्हु की औलाद अम्जाद से हैं और उलूमे शरीअत व तरीक़त के जामे और साहिबे वरअ व तक़्वा और ज़ौक़ व शौक़ थे जिनकी सारी ज़िन्दगी अम्र मारूफ़ और

नहिय मुंकर में गुज़री उनके हालाते शरीफ़ा में शैख़ मुहक़्क़िक़ हज़रत अल्लामा शाह अ़ब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं।

और वह खानदाने नुबुव्वत अ़लैहित्तहीया के साथ इंतिहाई मुहब्बत व अ़क़ीदत रखने में अपने पीर व मुर्शिद के तरीक़ा पर थे, कहते हैं कि अ़शरा आ़शूरा और रबीउल-अव्वल के पहले बारह दिनों में नए और अच्छे कपड़े न पहनते और उन दिनों की रातों में ज़मीन पर ही सोते और मक़ाबिर सादात में ऐतकाफ़ करते और हर रोज़ बक़द्र इम्कान हज़रत रिसालत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रूह पाक और आप के खानदाने मुक़द्दस की अरवाह को सवाब हदिया करने के लिए तआ़म में तौसीअ़ करते और आ़शूरा के दिन नए कूज़े शर्बत से भर कर अपने सर पर रख कर सादात के घरों में जाते और उनके यतीमों और फ़क़ीरों को पिलाते और इन अय्याम में इस तरह गिरया करते कि गोया वाक़या करबला उनके सामने हो रहा है। (अख़्बारुल-इख़्यार स० 184)

हज़रत शाह अ़ब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं कि बिल-फ़ेअ़ल जो कुछ मामूल इस फ़क़ीर का है लिखता है इसी से क़यास कर लेना चाहिए कि साल भर में दो मज्लिसें फ़क़ीर के यहाँ होती हैं एक मज्लिस ज़िक्रे वफ़ात शरीफ़ दूसरी मज्लिसे ज़िक्र शहादते हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु और मज्लिस बरोज़ आ़शूरा या उस से एक दो दिन पहले होती है क़रीब चार पाँच सौ बल्कि हज़ार आदमी या उस से भी ज़्यादा जमा हो जाते हैं और दरूद शरीफ़ पढ़ते हैं। बादे अज़ाँ यह फ़क़ीर आ कर बैठता है। और हज़रत हसनैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा के फ़ज़ाइल जो हदीस शरीफ़ में वारिद हुए हैं ब्यान में आते हैं और उन बुज़ुर्गों की शहादत की ख़बरें जो अहादीस में वारिद हुई हैं और बाज़े हालात की तफ़्सील और उन हज़रात के क़ातिलों का बद अंजाम ज़िक्र किया जाता है।

इस ज़िम्न में बाज़े मरसिए जो जिन्न व परी से हज़रत उम्मे सलमा व दीगर सहाबा रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम ने सुने हैं वह भी ज़िक्र किए जाते हैं और वह ख़्वाब हाए वहशतनाक ज़िक्र किए जाते हैं जो हज़रत इब्ने अ़ब्बास व दीगर सहाबा ने देखे थे जो दलालत करते हैं रूहे मुबारक जनाबे रिसालत मआ़ब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के निहायत रंज व ग़म पर। इस के बाद क़ुरआन मजीद ख़त्म किया जाता है और पंज आयत पढ़ कर खाने की जो चीज़ मौजूद होती है उस पर फ़ातिहा की जाती है और इस असना में अगर कोई शख़्स खुश इल्हान सलाम पढ़ता है या मरसिया मशरूअ़

पढ़ने का इत्तिफ़ाक़ होता है तो अक्सर हाज़िरीने मज्लिस और इस फ़क़ीर को भी हालते रिक़्क़त व गिरिया व बुका लाहिक़ होती है, इस क़द्र अ़मल में आता है पस अगर यह सब कुछ जो ज़िक्र किया गया है फ़क़ीर के नज़्दीक जाइज़ न होता तो फ़क़ीर हरगिज़ उस पर इक़्दाम न करता। (फ़तावा अज़ीज़ी स० 110/1)

हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन साहब मुहद्दिस देहलवी जो साहिबे तरजमा क़ुरआन भी हैं एक फ़तवा में फ़रमाते हैं :

दूसरे यह कि मुक़र्रर करना दिन और महीने का मूलिद शरीफ़ के लिए और लोगों के लिए जगह इकट्ठा होने के वास्ते रबीउल-अव्वल में और यूं हीः

इंइक़ादे मज्लिस ज़िक्रे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मुहर्रम के महीने में उसके सिवा और सुनना सलाम और मरसिया मशरूअ़ का और गिरिया व बुका हाले शोहदाए करबला पर जाइज़ और दुरुस्त है।

मौलाना अ़ब्दुल-हई साहब लखनवी अपने फ़तावा में फ़रमाते हैं।

सवाल : करबला के मसाइब का ख़्याल और इमाम के अहवाल का तसव्वुर करते हुए आँखों से आँसू जारी हो जाएं तो कोई मुज़ाइक़ा है या नहीं?

जवाब : कोई मुज़ाइक़ा नहीं बैहक़ी और हाकिम ने रिवायत की है कि आँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की चश्माने मुबारक इसी ग़म से अश्कबार हुईं और वाक़ेअ़-ए-कबरला के दिन हज़रत इब्ने अ़ब्बास हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा ने आँ सरवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि आप परेशान व मलूल (और) बाल गुबार आलूदा थे चुनांचे इस मज़्मून को अहमद व बैहक़ी ने रिवायत किया है और यह गिरिया ग़ैर इख़्तियारी बात है। (मज्मूआ़ फ़तवा स० 127/3)

आला हज़रत इमामे अह्ले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत, हकीमुल-उम्मत अ़ल्लामा शाह अहमद रज़ा खान साहब बरैलवी रहमतुल्लाह अ़लैह फ़रमाते हैं।

जो मज्लिसे ज़िक्र शरीफ़ हज़रत सैयदना इमाम हुसैन व अह्ले बैते किराम रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम की हो जिसमें रिवायाते सहीहा मोतबेरह से उनके फ़ज़ाइल व मक़ामात व मदारिज ब्यान किए जाएँ और मातम व तज्दीदे ग़म वग़ैरह उमूरे मुख़ालिफ़-ए-शेरअ़ से यक्सर पाक हो फ़ी नफ़्सेही हसन व महमूद है ख़्वाह उसमें नस्र पढ़ें या नज़्म अगरचे वह नज़्म बवज्हे एक मुसद्दस होने के जिसमें ज़िक्रे हज़रत सैयदुश्शोहदा है उर्फ़े हाल में बनाम मरसिया मौसूम हो कि अब यह वह मरसिया नहीं जिसकी

निस्बत है।

इसी रिसाला में दूसरी जगह फ़रमाते हैं :

ज़िक्रे शहादत शरीफ़ जब कि रिवायात मौज़ूआ व कलिमात मम्नूआ व नीयत ना मशरूआ से ख़ाली हो ऐने इबादत है।

सालेहीन के ज़िक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती है

इसी रिसाला में तीसरी जगह ताज़ियादारी के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं:

ताज़िया की असल इस क़द्र थी कि रौज़-ए-पुर नूर हुज़ूर शहज़ाद-ए-गुलगुलों कुबा हुसैन शहीदे ज़ुल्म व जफ़ा सलवात अल्लाह तआला व सलामुहू अला जद्देहिल-करीम व अलैह कि सहीह नक़्ल बना कर बनीयत तबर्रुक मकान में रखना इसमें शरअन कोई हरज न था कि तस्वीर मकानात वग़ैरहा हर ग़ैर जानदार की बनाना रखना सब जाइज़ और ऐसी चीज़ें कि मुअज़्ज़माने दीन की तरफ मंसूब हो कर अज़्मत पैदा करें उनकी तिम्साल बनीयत तबर्रुक पास रखना क़तअन जाइज़ है सदहा साल से तब्क़ा फतब्क़ा अइम्मा दीन व उलमा-ए-मोतमेदीन नअ्लैन शरीफ़ैन हुज़ूर सैय्युदल-कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शे बनाने और उनके फ़वाइदे जलीला व मनाफ़े जज़ीला में मुस्तक़िल रिसाले तस्नीफ़ फ़रमाते हैं जिसे इश्तिबाह हो इमाम अल्लामा तिलम्सानी की फ़त्हुल-मुतआल वग़ैरह मुताला करे। मगर जुहाल बेख़िरद ने इस असल जाइज़ को बिल्कुल नीस्त व नाबूद करके सदहा ख़ुराफ़ात वह तराशें कि शरीअ़ते मुतह्हरा से अल-अमान अल-अमान की सदाएं आईं अव्वल तो नफ़्से ताज़िया में रौज़-ए-मुबारक की नक़्ल मल्हूज़ न रही हर जगह नई तराश नई गढ़त जिसे इस नक़्ल से कुछ इलाक़ा न निस्बत फिर किसी में परियाँ किसी में बुराक़ किसी में और बेहूदा तुम्तुराक़ फिर कूचा बकूचा व दश्त ब-दश्त इशाअ़ते ग़म के लिए उनका गश्त और उनके गिर्द सीना ज़नी और मातम साज़ी की अफ़्गनी, कोई इन तस्वीरों को झुक-झुक सलाम कर रहा है, कोई मशग़ूल तवाफ़, कोई सज्दे में गिरा है कोई इन माया बिदआत को मआज़ल्लाह जल्वागाह हज़रत इमाम अला जद्देही व अलैहिस्सलातु वस्सलाम समझ कर इस अबरक पन्नी से मुरादें माँगता मिन्नतें मानता है हाजत रवा जानता है। फिर बाक़ी तमाशे बाजे ताशे मर्दों औरतों का रातों का मेल और तरह तरह के बेहूदा खेल उन सब पर तुर्रह हैं। ग़रज़ अशर-ए-मुहर्रमुल-हराम कि अगली शरीअ़तों से इस शरीअ़त पाक तक निहायत बाबरकत कुल इबादत ठेहरा हुआ था इन बेहूदा रुसूम ने जाहिलाना और फ़ासिक़ाना मेलों का ज़माना कर दिया फिर वबाले इब्तिदा का वह जोश हुआ कि ख़ैरात को

भी बह तौर ख़ैरात न रखा रेया व तफ़ाख़ुर ऐलानिया होता है फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मुहताजों को दें बल्कि छतों पर बैठ कर फेंकेंगे रोटियाँ ज़मीन पर गिर रही हैं रिज़्क़े इलाही की बेअदबी होती है पैसे रेते में गिर कर गायब होते हैं माल की इज़ाअ़त हो रही है मगर नाम तो हो गया कि फुलां साहब लंगर लुटा रहे हैं अब बहारे अशरा के फूल खिले ताशे बाजे बजते चले तरह तरह के खेलों की धूम बाज़ारी औरतों का हर तरफ़ हुजूम। शहवानी, मेलों की पूरी रुसूम जश्न यह कुछ और इसके साथ ख़्याल वह कुछ कि गोया यह साख़्ता तस्वीरें बेऐनेहा हज़रात शोहदा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम के अरिंज़वान वस्सना का हमारे भाईयों को नेकियों की तौफ़ीक़ बख़्शे और बुरी बातों से तौबा फ़रमाए आमीन! अब कि ताज़ियादारी इस तरीक़ाना-ए-मुर्ज़िया का नाम है क़तअ़न बिदअ़त व नाजाइज़ व हराम है हाँ अगर अह्ले इस्लाम जाइज़ तौर पर हज़रात शोहदा-ए-किराम अलैहिमुर्रिज़वान वस्सना की अरवाहे तैयबा को ईसाले सवाब की सआदत पर इक्तिसार करते तो किस क़द्र ख़ूब व महबूब था और अगर नज़रे शौक़ व मुहब्बत में नक़्ल रौज़-ए-अनवर की भी हाजत थी तो इसी क़द्र जाइज़ क़नाअ़त करते कि सही नक़्ल बग़र्ज़ तबर्रुक व ज़्यारत अपने मकानों में रखते और इशाअ़ते ग़म व तसन्नोअ़ अलम व नौहा ज़नी व मातम कुनी व दीगर उमूरे शनीआ व बिदआते क़तईआ से बचते इस क़द्र में भी कोई हरज न था मगर अब इस नक़्ल में भी अह्ले बिदअ़त से एक मुशाबेहत और ताज़ियादारी की तोहमत का ख़दशा और आइंदा अपनी औलाद या अह्ले ऐतक़ाद के लिए इब्तिलाए बिदआत का अन्देशा है और हदीस में आया :

तरजमा : तोहमत की जगहों से बचो। और वारिद हुआ कि जो शख़्स अल्लाह और क़ियामत पर ईमान रखता है तो चाहिए कि तोहमत (वहम) की जगहों को ख़त्म करे।

(लिहाज़ा रौज़-ए-अक़्दस हुज़ूर सैयदुश्शोहदा रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम की ऐसी तस्वीर भी न बनाए बल्कि काग़ज़ के सही नक़्शे पर क़नाअ़त करे और उसे बक़सद तबर्रुक बेआमेज़िश मन्हीयात अपने पास रखे जिस तरह हरमैन मोहतरमैन से काब-ए-मुअज़्ज़मा और रौज़-ए-आलिया के नक़्शे लिखे हैं या दलाइलुल-ख़ैरात शरीफ़ में क़ुबूर पुर नूर के नक़्शे लिखे हैं।)

इसी रिसाला में चौथी जगह फ़रमाते हैं।

पानी या शर्बत की सबील लगाना जबकि बनीयत महमूद और ख़ालिसन लेवज्हिल्लाह सवाब रसानी अरवाहे तैयबा अइम्मा अत्हार मक़्सूद हो बिला

शुबह बेहतर व मुस्तहब व कारे सवाब है हदीस में है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं।

जब तेरे गुनाह ज़्यादा हो जाएं तो पानी पर पानी पिला गुनाह झड़ जाएंगे जैसे सख़्त आंधी में पेड़ के पत्ते (रवाहुल-ख़तीब अन अनस रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

इसी तरह खाना खिलाना लंगर बांटना भी मन्दूब व बाइसे अज्र है हदीस में है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं।

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से जो लोगों को खाना खिलाते हैं। फ़रिश्तों के साथ मुबाहात फ़रमाता है कि देखो यह कैसा अच्छा काम कर रहे हैं। (रवाहुश्शैख़ फ़िस्सवाब अनिल-हसने मुर्सिलन)

मगर लंगर लुटाना जिसे कहते हैं कि लोग छतों पर बैठ कर रोटियाँ (वग़ैरह) फेंकते हैं कुछ हाथों में आती हैं कुछ ज़मीन पर गिरती हैं कुछ पाँव के नीचे आती हैं यह मना है कि इसमें रिज़्के इलाही की बेताज़ीमी है।

सब्र और जज़अ़ व फ़ज़अ़ :

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

और ख़ुशख़बरी दे दो सब्र करने वालों को कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं यही वह लोग हैं जिन पर उनके रब की तरफ़ से सलवात और रहमत है और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं। (अल-बक़रा)

इस आयत से साबित हुआ कि जो लोग बवक़्ते मुसीबत सब्र व तहम्मुल से काम लेते हुए कहते हैं कि हमारा जीना मरना अल्लाह तआ़ला ही के लिए है इन्हीं के लिए अल्लाह तआ़ला की बशारत सलात और रहमत है। फ़रमाया :

इन्नल्लाह मअ़स्साबेरीन।

बेशक अल्लाह तआ़ला साबिरों के साथ है।

इससे मालूम हुआ कि साबिरों को अल्लाह तआ़ला की ख़ास मईयत हासिल होती है।

इन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरूना अज्रहुम बेग़ैरे हिसाबिन।

कि सब्र करने वालों को बेहिसाब अज्र दिया जाएगा।

अह्लुल्लाह और अह्ले ईमान का तरीक़ा और शेवा सब्र करना ही है क्योंकि उनके माबूदे बरहक़ और महबूबे हक़ीक़ी को यही पसन्द है और बेसब्री, शिक्वा व शिकायत और जज़अ़ व फ़ज़अ़ सख़्त नापसन्द है।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

कोई मुसलमान ऐसा नहीं है जिसको कोई मुसीबत पहुँची हो अगरचे इस

पर एक ज़माना गुज़र चुका हो और वह उसका ज़िक्र करके इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन कहे तो अल्लाह तआ़ला उसके वास्ते उसको ताज़ा करके उसको उस दिन की मिस्ल अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाता है जिस दिन उसको मुसीबत पहुँची थी। (अहमद इब्न माजा : स० 156/1)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया।

नहीं है कोई मुसीबत अगरचे उसको एक ज़माना हो गया हो तो बन्दा जब उसको याद करके इन्ना लिल्लाह कहता है अल्लाह तआ़ला उसके लिए उसको नया और ताज़ा करके उसको फिर उसका अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाता है। (दुर्रे मंसूर स० 156/1)

इन अहादीसे मुबारका से साबित हुआ कि हज़रत इमाम पाक रज़ि अल्लाहु अ़न्हु के ज़िक्रे मसाइब पर इन्ना लिल्लाह कहने वाले को उस दिन की मुसीबत का सा अज्र व सवाब मिलता है।

क़ारेईन हज़रात गुज़श्ता सफ़्हात में पढ़ चुके हैं कि इन अश्क़िया क़ातिलों ने हज़रत इमाम पाक और आपके रुफ़क़ा को शहीद करके उनके सरों को नेज़ों पर चढ़ाया और गली कूचों में फिराया था अलावा अज़ीं यह भी आता है कि शोहदा की कमानों, उनके अ़मामों और बाज़ मस्तूरात तैयबात की चादरों और ओढ़नियों को जो उन्होंने लूटीं थीं अपने झण्डों पर बांध कर नक़्क़ारे और शादयाने बजाते हुए बशक्ल जुलूस दारुल-इमारत की तरफ़ रवाना हुए थे इससे साबित हुआ कि अह्ले बैते अत्हार के मुतबर्रक नामों को बतौर हतक गली बाज़ारों में लेते फिरना और अलमों को बुलन्द करके नक़्क़ारे वग़ैरह बजाना बहुत बुरी बात है इससे परहेज़ करना चाहिए कि यह यज़ीदियों का शिआ़र है। इसी तरह सियाह कपड़े पहनना, कपड़ों का फाड़ना, गरीबाँ चाक करना बाल बिखेरना सर पर खाक डालना, सीना कूबी और रानों पर हाथ मारना और घोड़ा और ताज़िया वग़ैरह निकालना यह सब नाजाइज़, हराम और बातिल हैं। अगर यह बातें जाइज़, दलीले मुहब्बत और बाइसे सवाब होतीं तो इमाम ज़ैनुल-आबेदीन या दीगर अइम्मा अह्ले बैत रज़ि अल्लाहु अ़न्हुम उनको करते कोई साबित नहीं कर सकता कि उन्होंने ऐसा किया हो बल्कि उनसे उनकी मुमानेअ़त साबित है।

बाज़ लोग यह कहते हैं कि शहादत के दिन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा ने ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलेही व सल्लम के सरे अनवर और दाढ़ी मुबारक पर खाक पड़ी देखी तो मालूम हुआ कि उस दिन सर पर खाक डालना सुन्नत है उसका जवाब यह है कि खाक का पड़ जाना और बात है और डालना और बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

ने खुद खाक डाली न थी बल्कि पड़ गई थी क्योंकि आप मारक-ए-करबला के वक़्त वहाँ मौजूद थे और ख़ूने मुबारक जमा फ़रमा रहे थे। इस वक़्त यक़ीनन खाक उड़ रही थी और तेज़ मसाफ़ते बईदा तय करके तशरीफ़ लाए थे जैसा कि फ़रमाया था कि "मैं अभी हुसैन की शहादतगाह से आया हूँ।" इस तरह भी गर्द व गुबार का पड़ जाना एक यक़ीनी अम्र है।

सैयद अम्मार अ़ली साहब जो हालांकि एक ग़ाली क़िस्म के शीआ़ हैं वह अपनी तफ़्सीर उम्दतुल-ब्यान में ज़ेरे आयत **वलनब्लुवन्नकुम बेशैइन अल-आयह** फ़रमाते हैं। अक्सर आदमी मुहर्रम में बिदअ़तें करके सवाब को ज़ाए करते हैं बाजे बजाते और बजवाते हैं और मर्सियों में झूठी हदीसें अपनी तरफ़ से ईजाद करके दाख़िल करते हैं और ग़ुलू और तंक़ीस की रिवायतों को जलसों में ब्यान करके लोगों के ईमानों को फ़ासिद करते हैं और जो राग कि शिरा में मम्नूअ़ हैं उन्हीं में मर्सियों को पढ़ते हैं और औरतें बुलन्द आवाज़ से मर्सियों को पढ़ती हैं और नामहरम उनकी आवाज़ को सुनते हैं इन उमूर में मुमिनीन को इज्तिनाब लाज़िम है।

शीआ़ मज़्हब की मोतबर कुतुब से इरशादाते अइम्मा अह्ले बैत

किताब व सुन्नत में जा बजा मुमिनों को सब्र की तरग़ीब दी गई है और जज़अ़ व फ़ज़अ से मना किया गया है अइम्मा अह्ले बैत की भी यही तालीम है तो अगर हम वाक़ई इन से सच्ची अ़क़ीदत व मुहब्बत रखते हैं और उनके सच्चे पैरू हैं तो हमें उनकी तालीम पर अ़मल करना चाहिए चुनांचे मुलाहिज़ा हो।

(1) जाबिर कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू जाफ़र (इमाम मुहम्मद बाक़र) अलैहिस्सलाम से पूछा।

कि जज़अ़ क्या है? फ़रमाया वैल और बुलन्द आवाज़ से चीख़ मारना यानी वावेला और शोर करना और मुँह पर तमांचा मारना और सीना ज़नी करना और माथे के बाल नोचना और जिसने रोने (की मज्लिस) को क़ाइम किया बिलाशुबह उसने सब्र को तर्क किया और हमारे तरीक़े को छोड़ कर ग़ैर तरीक़ा इख़्तियार किया और जो सब्र करे और इन्ना लिल्लाह कहे और अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल्ला की हम्द करे और जो कुछ अल्लाह ने किया है उस पर राज़ी रहे उसका अज्र व सवाब अल्लाह के ज़िम्मा करम पर वाजिब हो गया और जो ऐसा न करे जब कि उस पर कोई क़ज़ा वाक़े हो तो वह बुरा आदमी है और अल्लाह तआ़ला उस का अज्र व सवाब बरबाद कर देता है। (फ़ुरूए काफ़ी स० 121/1)

इस रिवायत में जज़अ़ व फ़ज़अ़ और सब्र दोनों की तारीफ़ के साथ साथ दोनों पर अ़मल के अंजाम का भी ब्यान है।

(2) हज़रत अ़बू अ़ब्दुल्लाह (इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं।

बेशक सब्र, और तक्लीफ़ व मुसीबत दोनों मोमिन को पेश आते हैं (जब) मोमिन को तक्लीफ़ व मुसीबत आती है तो वह सब्र करता है और बेशक जज़अ़ और तक्लीफ़देह मुसीबत दोनों काफ़िर को पेश आते हैं तो (जब) काफ़िर को मुसीबत आती है तो वह जज़अ़ व फ़ज़अ़ करता है।

(फ़रोए काफ़ी स० 121/1)

इस रिवायत में हज़रत इमाम ने मोमिन और काफ़िर का तरज़े अ़मल और शिनाख़्त ब्यान फ़रमाई है और वह यह है कि मोमिन की तरफ़ सब्र और मुसीबत दोनों सबक़त करते हैं यानी मुसीबत के साथ सब्र भी आता है इसलिए मोमिन मुसीबत के वक़्त सब्र ही का मुज़ाहरा करता है जज़ा तो उसकी तरफ़ आता ही नहीं जिसका मुज़ाहरा हो और काफ़िर की तरफ़ मुसीबत के साथ सब्र आता ही नहीं बल्कि जज़अ़ ही आता है इसलिए काफ़िर से बवक़्त मुसीबत जज़अ़ का ही मुज़ाहरा होता है खुलासा यह है कि सब्र मोमिन का शेवा है और जज़अ़ व फ़ज़अ़ काफ़िर का।

(3) हज़रत इमाम रज़ि अल्लाहु अ़न्हु से ही रिवायत है कि फ़रमायाः

सब्र बमंज़िला सर ईमान है जब सर ही न रहे तो जसद भी नहीं रहता इसी तरह जब सब्र जाता रहता है ईमान भी नहीं रहता यानी सब्र और ईमान दोनों लाज़िम व मल्ज़ूम हैं। (साफ़ी शरह उसूल काफ़ी स० 171/4)

(4) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात शरीफ़ पर अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने आपके ग़ुस्ल और तज्हीज़ व तक्फ़ीन के वक़्त फ़रमाया मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों आपकी वफ़ात से वह उमूर मुन्क़तअ़ हो गए हैं जो किसी और की वफ़ात से न होते वह उमूरे नुबुव्वत, वह्य इलाही, आसमानी ख़बरें वग़ैरह हैं और आपका फ़ैज़े आ़म था जिससे सब लोग यक्सां मुस्तफ़ीज़ हुए हैं।

और अगर आपने हमें सब्र करने का हुक्म न दिया होता और जज़अ व फज़अ़ से मना न किया होता तो हम आपकी वफ़ात पर इतना रोते कि रतूबते बदन खुश्क हो जाती। (नहजुल-बलाग़ा)

इस इरशाद में चन्द बातें क़ाबिले ग़ौर हैं अव्वल यह कि आपकी वफ़ात सबसे बड़ा हादसा है किसी और की वफ़ात आपकी वफ़ात के बराबर नहीं है। दोम यह कि हज़रत अ़ली रज़ि अल्लाहु अ़न्हु सराहतन यह फ़रमा रहे हैं कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें सब्र का हुक्म न दिया होता और जज़अ़ व फजअ़ से मना न किया होता तो हम बहुत ही ज़्यादा रोते। सोम यह कि हज़रत अ़ली ने ऐसे अलमनाक मौक़ा पर भी सब्र किया और

जज़अ व फज़अ नहीं किया क्योंकि उसकी मुमानेअत थी।

(5) जब अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू की शहादत का वाकि़या हुआ उस वक़्त हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु मदाइन में थे। हज़रत इमाम हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उनको बजरिया तहरीर इत्तिला फ़रमाई।

तो जब उन्होंने ख़त पढ़ा फ़रमाया कैसी बड़ी मुसीबत पेश आई है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि तुम में से जिसको कोई मुसीबत पेश आ जाए उसको चाहिए कि वह मेरी वफ़ात की मुसीबत याद कर ले क्योंकि वफ़ाते रसूल से बढ़ कर मुसलमान के लिए कोई और बड़ी मुसीबत न होगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सच फ़रमाया है। (फ़रोए काफ़ी स० 119/1)

देखिए हज़रत अ़ली की शहादत से जिस क़द्र सदमा हज़रत हुसैन को हुआ होगा वह किसी और को हरगिज़ नहीं हो सकता था मगर आप ने शहादत की अंदोहनाक ख़बर पढ़ कर बिल्कुल जज़अ फज़अ नहीं किया बल्कि सब्र से काम लिया और फ़रमाया कि वफ़ाते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बढ़ कर कोई मुसीबत नहीं हो सकती। जब इस आज़म मुसीबत पर सब्र का हुक्म है तो फिर किसी और मुसीबत पर बेसबरी कब जाइज़ हो सकती है।

(6) हज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं :

जो मुसीबत के वक़्त अपना हाथ अपनी रान पर मारे उसके आमाल बरबाद हो जाते हैं। (नहजुल-बलाग़ा स० 185/3)

(7) हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान मुसीबत के वक़्त अपना हाथ अपनी रान पर मारता है वह अपने अज्र व सवाब को बरबाद कर देता है। (फ़रोए काफ़ी स० 121/1)

(8) इन्हीं से रिवायत है फ़रमाते हैं कि :

मैयत पर चीखना चिल्लाना और कपड़े फाड़ना लाइक़ और मुनासिब नहीं है।

दूसरी रिवायत में यह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं। लेकिन लोग उसको नहीं समझते और सब्र बेहतर है।

(9) अल-ग़लाबिन कामिल कहते हैं कि मैं हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम जाफ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम के पास बैठा था कि एक मकान से एक चीखने वाली के चीखने की आवाज़ आई। हज़रत इमाम (नाराज़ हो कर) खड़े हो गए फिर बैठ गए और इन्ना लिल्लाह पढ़ कर वही हदीस ब्यान

फ़रमाई जो ऊपर मज़्कूर हुई।

फिर फ़रमाया बेशक हमें यही महबूब व मत्लूब है कि हमारी जानों में और हमारी औलाद में और हमारे मालों में ख़ैर व आ़फ़ियत रहे लेकिन जब कोई क़ज़ा वाक़े हो जाए तो फिर हम वही पसन्द करें जो अल्लाह ने हमारे लिए पसन्द किया है। (फ़रोए काफ़ी स० 122/1)

(10) सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अ़न्हु ने मैदाने करबला में अपनी हमशीरा हज़रत सैयदा ज़ैनब रज़ि अल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया :

ऐ बहन जो मेरा हक़ तुम पर है उसी की क़सम देकर कहता हूँ कि मेरी मुसीबते मफ़ारिक़त पर सब्र करना। पस जब मैं मारा जाऊँ तो हरगिज़ अपना मुँह न पीटना और अपने बाल न नोचना और गरिबान चाक न करना कि तुम फ़ातिमा ज़हरा की बेटी हो जैसा उन्होंने पैग़म्बरे ख़ुदा की मुसीबत में सब्र फ़रमाया था उसी तरह तुम भी मेरी मुसीबत में सब्र करना। अलख़ (अनारतुल-बसाइर स० 297/2)

अब देखिए कि पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलेही द सल्लम ने अपनी वफ़ात के वक़्त सैयदा फ़ातिमा ज़हरा रज़ि अल्लाहु अ़न्हा को क्या वसीयत फ़रमाई।

इब्ने बाबू बसनद मोतबर इमाम मुहम्मद बाक़र से रिवायत करते हैं कि हज़रत रसूल ने अपनी वफ़ात के वक़्त अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया कि ऐ बेटी जब मैं इंतिक़ाल कर जाऊँ तो अपना मुँह न पीटना। बाल न बिखेरना और वावेला न करना और मुझ पर नौहा न करना और न नौहा गरों को बुलाना। (हयातुल-कुलूब स० 852/2, फ़रोए काफ़ी स० 214/2)

उस वसीयत के मुताबिक़ ही सैयदा ने किया उसके ख़िलाफ़ न किया हज़रत इमाम भी सैयदा ज़ैनब से फ़रमा रहे हैं कि अपनी वालिदा माजिदा की तरह तुम भी मेरी मुसीबत में सब्र करना (चुनांचे उन्होंने भी वसीयत के मुताबिक़ किया।)

जिला-उल-उयून उर्दू स० 178/1 में है कि फ़रमाया :

ऐ ख़्वाहिर नेक अख़्तर ख़ुदा से ख़ौफ़ लाज़िम है क़ज़ाए हक़ तआ़ला पर राज़ी रहना चाहिए वाज़ेह हो कि सब अह्ले ज़मीन शरबते नागवार मर्ग नोश करेंगे और साकिनाने आसमान भी बाक़ी न रहेंगे मगर ज़ात हक़ तआ़ला बाक़ी है और सब चीज़ें मूरिज़े ज़वाल व फ़ना में हैं ख़ुदा सबको मार डालेगा और फिर ज़िन्दा कर लेगा फ़क़त इसी को बक़ा है। देखो हमारे पिदरे मादर व बरादर शहीद हुए और सबसे बेहतर थे। जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कि अशरफुल-मख़्लूक़ात थे

दुनिया में न रहे और बजानिब सरा-ए-बाक़ी रिहलत फ़रमाई। इसी तरह बहुत मवाइज़ अपनी ख़्वाहिर से ब्यान करके वसीयत की और कहा ऐ ख़्वाहिर ग्रामी तुमको मैं क़सम देता हूँ कि जब मैं शहीद हो कर बआलम बक़ा रिहलत करूं गरीबान चाक न करना और मुँह न नोचना वावेला न कहना.......(201/1 में है) और बसब्र व शकीबाई हुक्म फ़रमा के बवादा सवाब हाए ग़ैर मुतनाही इलाही तस्कीन देकर इरशाद फ़रमाया चादरें सर पर ओढ़ लो और आमाद-ए-लश्करे मुसीबत व बला हो कि ख़ुदा ही तुम्हारा हामी व हाफ़िज़ है शर्रे आदा से तुमको वही नजात देगा और तुम्हारी आक़िबत बख़ैर करेगा और तुम्हारे दुश्मनों को बअनवा अ़ज़ाब व बला मुब्तला करेगा और तुम्हें उन बलाओं मुसीबतों के एवज़ दुनिया व उक़्बा में बअनवा नेअ़मत व करामत हाए बेअंदाज़ा सरफ़राज़ फ़रमाएगा हरगिज़ हरगिज़ सब्र शकीबाई से दस्तबरदार न होना और कलामे नाख़ुश ज़ुबान पर न लाना कि मूजिब नक़्से सवाब होगा।

(11) जामेअ़ अ़ब्बासी उर्दू मत्बूआ मत्बअ़ यूसुफ़ी दिल्ली के सफ़ः 267 में है।

मक्रूह है सियाह लिबास पहनना कि इमाम जाफ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फरमाते हैं कि हक़ तआ़ला ने एक नबी के पास वह्य भेजी कि मुमिनों से कह दे कि मेरे दुश्मनों का लिबास न पहनें। यानी काले कपड़े।

(12) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से सवाल किया गया कि सियाह टोपी पहन कर नमाज़ दुरुस्त है? फ़रमाया सियाह टोपी पहन कर नमाज़ न पढ़िए क्योंकि सियाह लिबास दोज़ख़ियों का है और (अमीरुल-मुमिनीन हज़रत अ़ली ने अपने अस़हाब से फ़रमाया कि काले कपड़े न पहनो क्योंकि यह फ़िरऔ़न का लिबास है।) (मन ला यहज़ुरुल-फ़ेक़्हीया स० 51)

यह अइम्मा अह्ले बैत के इस्ना अशरा यानी बारह इरशादात उनके मुबारक अ़दद के मुताबिक़ इस्ना अ़शरियों की ख़िदमत में ख़ुद उनकी निहायत मोतबर कुतुब से हदिया हैं उनमें बारह इरशादात में वाज़ेह तौर पर बारह ही हिदायात हैं।

(1) मुसीबत के वक़्त सब्र व शकीबाई हरगिज़ न छोड़ो कि मुसीबत पर सब्र ही मोमिन का शेवा और निशानी है।
(2) मुसीबत के वक़्त जज़अ़ व फ़ज़अ़ यानी चीख़ना चिल्लाना वावेला व शोर करना यह काफ़िरों का शेवा और निशानी है।
(3) मुसीबत के वक़्त मुँह न पीटो।
(4) सीना ज़नी (मातम) न करो।
(5) बाल न बिखेरो।

(6) बाल न नोचो।
(7) नंगे सर न हो।
(8) रानों पर हाथ न मारो।
(9) कपड़े न फाड़ो गरीबान चाक न करो।
(10) ज़ुबान पर कलामे नाख़ुश यानी रज़ाए इलाही के ख़िलाफ़ बोल न लाओ।
(11) रोने की मज्लिसें क़ाइम न करो कि यह सब्र व रज़ा के ख़िलाफ़ हैं और इस्लाम में सब्र व रज़ा का हुक्म है।
(12) काले कपड़े न पहनो कि यह दोज़ख़ियों और फ़िरऔन का लिबास है।

अब देखिए कि कौन ज़िद, हटधर्मी और जिहालत को छोड़ कर अइम्मा किराम की सच्ची अ़क़ीदत व मुहब्बत और पैरवी का मुज़ाहरा करते हुए इन हिदायात पर अ़मल करता है और कौन तावीलाते फ़ासिदा करके अपना ईमान और आमाल तबाह करता है।

बाज़ लोगों ने निहायत नाइंसाफ़ी करते हुए लिख दिया है कि सही रिवायात के साथ ज़िक्रे शहादत करना भी तशब्बहे रवाफ़िज़ की वजह से हराम है, नीज़ हदीस में मर्सियों के पढ़ने की मुमानिअ़त है।

इसके मुतअल्लिक़ अ़र्ज़ यह है कि अव्वल तो ज़िक्रे शहादत हसनैन करीमैन करना हरगिज़ हरगिज़ रवाफ़िज़ का शिआ़र नहीं बल्कि अह्ले सुन्नत व जमाअ़त भी ज़िक्रे शहादत करते हैं अल्बत्ता ख़्वारिज ज़िक्र शहादत नहीं करते बल्कि शहादत से जलते हैं और उसे सख़्त नापसन्द करते हैं तो ज़िक्रे शहादत से रोकने वाले ख़वारिज से मुशाबेहत करने वाले ठहरे। दोम, रवाफ़िज़ तो सही रिवायात के साथ ज़िक्रे शहादत करते ही नहीं वह तो अक्सर झूठी रिवायतें ब्यान करते हैं और अह्ले बैते अत्हार के मुतअ़ल्लिक़ ऐसी बातें करते हैं जो उनके शाने रफ़ीअ़ के हरगिज़ लाइक़ नहीं होतीं मसलन उन्होंने मुँह सर पीट लिया। गरीबान चाक कर दिया वग़ैरह और वह मरसिए भी ऐसे पढ़ते हैं जिनमें अहवाल वाक़ई नहीं होते बल्कि झूठ और बुहतान ज़्यादा होता है नीज़ वह सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अ़लैहि अज्मईन की तौहीन व तन्क़ीस करते हैं अ़लावा अज़ीं उनकी मजालिस में नौहा, मातम और बतकल्लुफ़ रुलाना वग़ैरह होता है और अह्ले सुन्नत व जमाअ़त की मजालिस में शाने सहाबा किराम भी ब्यान होती है और रवाफ़िज़ के इल्ज़ामात और बुहतानात का जवाब भी होता है और ज़िक्रे शहादत सही रिवायात के साथ होता है और मातम वग़ैरह बिल्कुल नहीं

होता तो मुशाबेहत कैसे हुई और हदीस में जिन मर्सियों की मुमानेअत है वह ही मर्सिये हैं जिन में वाही तबाही ग़लत बातें हों और जिन में अहवाल वाक़ई हों तो इस क़िस्म के मरसिए और इस क़िस्म के ज़िक्र व मवाइज़ की हरगिज़ मुमानेअत नहीं है यह बिल्कुल जाइज़ है। हदीस शरीफ़ में है **इन्दा ज़िक्रस्सालेहीना तनज़्ज़ुलुर्रहमा** कि सालेहीन के ज़िक्र के वक़्त रहमत नाज़िल होती है और सैयदना इमाम हसन और हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा तो सालेहीन के इमाम हैं उनके ज़िक्रे मुबारक के वक़्त तो बिला शुबह कसीर रहमतें नाज़िल होती हैं नीज़ उनकी मुहब्बत हर मोमिन पर वाजिब है तो ऐसे महबूबों के मसाइब पर बवज्हे दर्दे मुहब्बत दिल भर आए और बिला क़सद व इख़्तियार रिक़्क़त तारी हो जाए और आंखों से अश्क जारी हो जाएं तो यह रोना भी ऐन रहमत और अलामते मुहब्बत व ईमान है। अल्बत्ता जज़ा व फ़ज़अ और सीना ज़नी वग़ैरह बिलाशुबह हराम व नाजाइज़ है, जैसा कि ब्यान हो चुका है।

हुज्जतुल-इस्लाम हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं :

ऐ अज़ीज़! जान तू कि लोग रोते और अंदोहगीन जो होते हैं उसके सबब से सब्र की फज़ीलत नहीं जाती बल्कि चीखें मारने कपड़े फाड़ने बहुत शिकायत करने से अल्बत्ता सब्र का सवाब जाता रहता है।

(इक्सीरे हिदायत तरजमा कीमियाए सआदत स० 459)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रज़न्दे अरजुमन्द हज़रत इब्राहीम की जब वफ़ात हुई तो आपकी आँखों से आंसू जारी हो गए बाज़ सहाबा ने उस रोने को बेसबरी ख़्याल करके अर्ज़ किया हुज़ूर आप भी रोते हैं? फ़रमाया यह बेस नहीं (दर्दे मुहब्बत से बेइख़्तियार अश्क बहना) यह तो रहमत है फिर फ़रमाया।

बेशक आंखें बह रही हैं और दिल ग़मगीन है मगर हम वही कहेंगे जिससे हमारा रब राज़ी हो। ऐ इब्राहीम हम तुम्हारी जुदाई से ग़मगीन हैं। (मिश्कात)

ज़िक्रे शहादत के मुख़्तसर फ़वाइद :

ज़िक्रे शहादत में सहाबा व अह्ले बैत खुसूसन इमामैन करीमैन के फ़ज़ाइल का तज़्किरा हुर्मते दीन व मज़्हब को क़ाइम रखने के लिए मैदान में निकलना और आला-ए-कलिमतुल हक़ करना। दीन की इज़्ज़त व हुर्मत और इस्तेहकाम के लिए लरज़ा देने वाले मसाइब बर्दाश्त करके दीन की इज़्ज़त की अहमीयत ज़ाहिर करना और मसाइब पर सब्र व तहम्मुल का दामन न छोड़ना। अहबाब अइज़्ज़ा व अक़्रेबा औलाद और खुद अपनी जान तक क़ुरबान कर देना मगर बातिल के सामने न झुकना। अज़ीज़ों की लाशें

ख़ाक व ख़ून में पड़ी देख कर भी ज़ुबान पर हरफ़े शिकायत न लाना बल्कि हर हालत में हम्दे इलाही करना। पस्मांदगान को इंतिहाई बेकसी की हालत में देख कर भी राहे हक़ में हिम्मत न हारना। राज़ी बरज़ाए इलाही रहना। इम्तेहान और मक़ामे सिद्क़ व सफ़ा में साबित क़दम रहना। इन बातों के ब्यान से सामईन के क़ुलूब में जहाँ इमाम पाक की मुहब्बत व अज़्मत और आपके मक़ाम की रिफ़अत पैदा होती है वहाँ रज़ाए इलाही के हुसूल, दीन की इज़्ज़त व हुर्मत की अहमीयत और उसके लिए जानी व माली क़ुरबानी देने और राहे हक़ में साबित क़दम रहने का वलवला अंगेज़ जज़्बा पैदा होता है।

दूसरी तरफ़ कूफ़ियों की बेवफ़ाई। सिर्फ़ ज़ुबानी कलामी मुहब्बत के दावे बेकार महज़ ऐज़ाज़े दुनियवी की ख़ातिर आक़िबत की बरबादी। खानदाने नुबुव्वत के साथ गुस्ताख़ी व बेअदबी पर अज़ाबे इलाही का शिकार होना। दुनिया ही में उसका अंजामे बद देखना। ख़ासाने ख़ुदा के वेसाल पर ज़मीन व आसमान का रोना और उनमें तग़ैयुरात का रूनुमा होना। मज़्लूमाना क़त्ल के बदले हज़ारहा लोगों का क़त्ल होना वग़ैरह सुन कर सामईन सबक़ व इबरत हासिल करते हैं और अह्लुल्लाह की एहानत और उनकी शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी करने और दुनिया की ख़ातिर दीन की बरबादी वग़ैरह करने से बचते हैं। ग़रज़ कि बहुत से फ़वाइद हैं।

इन मजालिस के ज़रिए लोगों के अक़ाइद व आमाल की इसलाह होती है बशर्तेकि ज़िक्रे शहादत करने वाले उलमा दयानत व सदाक़त के साथ किताब व सुन्नत की रौशनी में हक़ ब्यान करें। ख़्वाह मख़्वाह ग़लत इस्तिदलाल और नामुनासिब बातों से फ़ित्ना व फ़साद और इफ़्तिराक़ की राहें हम्वार न करें। इन्हीं मजालिस में लोगों को यह बताया जाता है कि फ़रज़न्दे रसूल से अक़ीदत व मुहब्बत के तक़ाज़े महज़ चन्द रस्मों के बजा लाने से पूरे नहीं होते बल्कि इमाम आली मक़ाम के ज़िक्रे शहादत को सुन कर हमें यह अहद करना चाहिए कि इमाम पाक ने जिस तरह मैदाने करबला में हक़ पर इस्तिक़ामत, सब्र व रज़ा और तस्लीम व वफ़ा का बतमाम व कमाल अमली मुज़ाहरा फ़रमा कर रज़ा-ए-इलाही का बुलन्द तरीन दरजा व मरतबा हासिल किया। इंशाअल्लाह हम शरीअत व सुन्नते मुस्तफ़वी अला साहिबहा अस्सलातु वस्सलाम के सच्चे पक्के पाबन्द हो कर नेकी व भलाई पर इस्तिक़ामत अख़्तियार करेंगे और हक़ व सदाक़त के तहफ़्फ़ुज़, दीन व ईमान की सलामती और तक़्वा की बक़ा के लिए किसी क़ुरबानी से दरेग़ नहीं करेंगे और अपने क़ौल व फ़ेअल को इमाम पाक की

सीरत व तालीमात के मुताबिक़ बना कर उनके नसबुल-ऐन को बाक़ी और ज़िन्दा रखेंगे।

इसी मक़सद को ज़िन्दा यादगारे करबला समझो
हुसैन इब्ने अ़ली की ज़िन्दगी का मुद्दआ़ समझो

अल्हम्दुलिल्लाह कि इस आ़जिज़ सगे कूच-ए-अह्ले बैत अत्तार ने हक़ाइक़ के साथ सही वाक़ेआ़त करबला और चन्द ज़रूरी मुतअ़ल्लेक़ा मसाइल तहरीर किए हैं ताकि बरादराने इस्लाम ग़लत रिवायतों और मन घड़त कहानियों की बजाए असल वाक़ेआत से आगाह हो जाएं और उन से सबक़ व इबरत हासिल करें।

आख़िर में जिगर गोश-ए-रसूलुल्लाह, नूरे निगाहे सैयदा फ़ातिमा ज़हरा, लख़्ते दिल सैयदना अ़ली मुर्तज़ा, राहते जान सैयदना हसन मुज्तबा, रूहे इस्लाम जाने ईमान, ख़ुलास-ए-शहादत, शेर बेश-ए-शुजाअ़त पैकरे सब्र व रज़ा, जाने सिद्क़ व वफ़ा, शहज़ाद-ए-कौनैन सैयदुश्शोहदा हज़रत सैयदना व मौलाना इमाम हुसैन सलवातुल्लाहे तआ़ला व सलामुहू अ़ला जद्देही व अ़लैहिम अज्मईन की बारगाह में इल्तिजा करता हूँ कि ऐ सरदारे नौजवानाने जन्नत महज़ लेवज्हिल्लाहे तआला, सदक़ा अपने प्यारे नाना जान फ़ख़्रे आदम नबवी आदम रहमते आलम नूरे मुजस्सम शफ़ीअ़ मुअ़ज़्ज़म हुज़ूरे अकरम हज़रत अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व अ़ला आलेही व असहाबेही व बारिक व सल्लम का, मुझ नालाइक़, गुनाहगार पर निगाहे लुत्फ़ व करम रखना, क़्यामत के दिन अपने रऊफ़ुर्रहीम और करीम नाना जान सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुज़ूर मेरी और मेरे अह्ले ख़ाना की शफ़ाअत फ़रमाना और हर ज़िल्लत व रुसवाई से बचाना। रब्बे करीम आप पर करोड़ों रहमतें फ़रमाए।

नूरे निगाहे सरवरे आ़लम मेरा सलाम
इस्लाम के शहीदे मुअ़ज़्ज़म मेरा सलाम
दीने ख़ुदा की हुज्जते मुहकम मेरा सलाम
ऐ करबला के फ़ातहे आज़म मेरा सलाम
लाखों सलाम राकिबे दोशे रसूल पर
आ़जिज़ की तरफ़ से हों पोरे बतूल पर

(मुहताज नज़रे करम मुहम्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी गुफ़ेरा लहू)



ISBN 01-89201-23-1

9780189201238

RAZVI KITAB GHAR

425, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph:.011-23264524 Mobile. 9350505879

Rs.100/-